प्रेम योग

(Translation of The Beloved, Vol 1.)

अनुक्रम

1. मधु—माखी उसे भली भांति जानती है 2
2. चाँद की बांहों में 22
3. लाखों मीलों का अंतराल 44
4. तुम्हारी आत्मा में गलता शून्य का संगीत 63
5. मेरी त्वचा और अस्थियां स्वर्णमय हो गईं 83
6. नृत्य करने योग्य बनो 100
7. उसके चरणों में भावों के पुष्प अर्पित हैं 118
8. तुम स्वयं धुलकर तरल हो जाओ 137
9. दो वृक्षों के जोड़े से उत्पन्न हुआ फल 156
10. वह गाता है, नाचता है और आंसू बहाता है 176

पहला प्रवचन

मधु—माखी उसे भली भांति जानती है

दिनांक 21 जून 1976; श्री ओशो आश्रम, पूना।

बाऊलगीत—
प्रेम की गंध और स्वाद
और प्रेमी के हृदय की भाषा को
केवल गुणग्राही रसिक शिरोमणि ही
समझ सकता है
दूसरों को तो उसका कोई संकेत तक नहीं मिलता
नीबू का स्वाद तो
फल के केंद्र में होता है!
और विशेषज्ञ भी उस तक पहुंचने का
कोई सरल मार्ग नहीं जानते!
शहद तो कमल पुष्ट के अंदर
छिपा होता है
लेकिन शहद की माखी उसे जानती है
गोबर में बसे गुबरैले
शहद का पूर्वानुमान कैसे कर सकते हैं?
विनम्रता और समर्पण ही ज्ञान का रहस्य है

मैं तुम्हें बाउलों के संसार से परिचित कराते हुए अत्यधिक आनंदित हूं। मुझे आशा है कि तुम इससे विकसित और समृद्ध होगे। यह बहुत असाधारण विचित्र और पागल संसार है। इसे ऐसा होना ही चाहिए। है यह दुर्भाग्य की बात, लेकिन इसे ऐसा होना ही था, क्योंकि तथाकथित समझदार लोगों का संसार इतना अधिक पागल है कि यदि तुम वास्तव में समझदार बनना चाहो, तो उसके अंदर जाने में तुम्हें पागल बनना ही पड़ेगा। तुम्हें अपना मार्ग चुनना होगा जो तुम्हारा अपना स्वयं का मार्ग होगा। यह संसार के सामान्य मार्ग के विरुद्ध उससे बिलकुल अलग मार्ग है।

बाउलों को बाउल या बावरा कहा जाता है क्योंकि ये पागल जैसे लोग हैं। बाउल शब्द संस्कृत के मूल शब्द 'वतुल' से आता है जिसका अर्थ पागल होता है जो हवा के प्रभाव से पागल हुआ हो। बाउलों का कोई धर्म नहीं होता। न तो वह हिंदू होते हैं, न मुसलमान, न ईसाई और न ही बौद्ध। वह साधारण मनुष्य होते हैं।

वे समग्रता से विद्रोही हैं। वे किसी के होकर नहीं रहते। वे केवल स्वयं के ही होकर स्वयं के ही छंद से जीते हैं।

वे मनुष्यों के बीच किसी बस्ती में नहीं रहते, न उसका कोई देश है, न उनका कोई धर्म है, न कोई उनका धर्म शास्त्र है। उनका विद्रोह झेन सद्गुरुओं के अहिंसात्मक तथा आध्यात्मिक विद्रोह से भी कहीं अधिक गहरा है— क्योंकि औपचारिक रूप से वे सभी बौद्ध धर्म के अनुयायी हैं, कम से कम वे औपचारिक रूप से ही बुद्ध की

पूजा या वंदना करते हैं। औपचारिक रूप से उनके धर्मशास्त्र भी है—पर ऐसे धर्मशास्त्र, जो धर्मशास्त्रों के विरुद्ध घोषणाएं करते हैं—लेकिन फिर भी वे हैं तो। कम से कम उनके पास कुछ धर्मशास्त्र तो ऐसे हैं, जिन्हें जलाना है।

पर बाउलों के पास कुछ भी तो नहीं है। न धर्मशास्त्र, न ऐसे शास्त्र जिन्हें जलाना है, न चर्च, न मंदिर, न मस्जिद, कोई भी किसी तरह का पूजाघर नहीं। एक बाउल ऐसा मनुष्य है, जो हमेशा सड़क पर ही रहता है। न इसका कोई घर है न कोई द्वार। केवल परमात्मा ही उसका घर है और पूरा खुला आकाश ही उसका शरणस्थल है। एक गरीब आदमी की गुदड़ी के सिवाय उसके पास कुछ भी तो नहीं होता, बस एक हाथों से बना एक तार का वाद्ययंत्र, जिसे ' एकतारा ' कहते हैं। एक छोटी थी डफली और पानी भरने का एक डोल। बस सब कुछ यही उनकी सम्पूर्ण सम्पत्ति होती है। उसके पास बस एकतारा और ढफली ही होती है। वह एक हाथ से एकतारा बजाता है और दूसरे हाथ से डफली पीटता जाता है। ढफली उसकी बगल में लटकी रहती है और वह गीत गाता हुआ नाचता है। बस यही उसका धर्म होता है।

नृत्य ही उसका धर्म है और गीत गाना ही उसकी पूजा। वह ' परमात्मा ' शब्द का भी प्रयोग नहीं करता। परमात्मा के लिए बाउलों का शब्द है—' आधार मानुष ' अर्थात् सारभूत मनुष्य। वह मनुष्य की ही पूजा करता है। वह कहता है—' अंदर तू और मैं ' और प्रत्येक के अंदर वही सारभूत अस्तित्व ही है। वही सारभूत अस्तित्व ही सब कुछ है। उसी सारभूत मनुष्य या आधार मानुष की खोज करना ही पूरी खोज

इसलिए तुम्हारे बाहर वहां परमात्मा जैसा कोई भी नहीं, और न वहां कोई मंदिर बनाने की जरूरत है। क्योंकि तुम पहले ही से स्वयं उसका मंदिर हो। पूरी खोज ही अपने स्वयं के अंदर ही है। और गीतों की तरंगों पर नृत्य की लहरों द्वारा वह स्वयं अपने अंदर प्रवेश करता है। वह एक भिखारी की तरह गीत गाता हुआ घूमता रहता है। वह कोई भी उपदेश नहीं देता। उसका पूरा उपदेश और देशना उसकी कविता है और उसका काव्य भी कोई साधारण कविता नहीं है, वह मात्र कविता ही नहीं है। वह सचेतन रूप से कवि है भी नहीं, वह गाता भी इसलिए है क्योंकि इसका हृदय ही गाता है। कविता एक छाया की तरह उसका अनुसरण करती है, इसलिए वह अत्यंत सुंदर और मधुर है। वह कोई नाप तौल कर उसे गढ़ता नहीं। वह अपनी कविता के साथ स्वयं जीता है। वही उसकी भाव दशा और वही उसका जीवन है। उसका नृत्य लगभग दीवानापन है। वह नृत्य करने के लिए कभी कोई प्रशिक्षण नहीं लेता, वह नृत्य की कला के बारे में कुछ भी नहीं जानता। वह एक पगले की भांति तेजी से एक हवा—चक्की की भांति घूमता है। और वह बहुत सहज स्वाभाविक बन कर रहता है। क्योंकि बाउल कहते हैं—''यदि तुम ' आधार मानुष ' तक पहुंचना चाहते हो, उस सारभूत मनुष्य को खोजना चाहते हो—तब उसका मार्ग, सहज मानुष के द्वारा स्वाभाविक और स्वयं प्रवर्तित मनुष्य होकर ही जीना है।'' उस सारभूत मनुष्य तक पहुंचने के लिए तुम्हें सहज स्वाभाविक मनुष्य के द्वारा होकर ही जाना होगा। सहज स्वाभाविक मार्ग ही उस सारतत्व तक पहुंचने का एकमात्र मार्ग है. इसलिए जब उसे गाने या रोने जैसा कुछ अनुभव होता है वह बिलख—बिलखकर रोता और गाता है। तुम उसे गांव की सड़क पर फूट—फूटकर रोते और गाते हुए बिना किसी बात के अकारण ही खड़ा हुआ देख सकते हो। यदि तुम उससे पूछो—तुम आखिर क्यों रो हो?

वह हंसेगा .'गैर कहेगा, '' यहां ' क्यों ' है ही नहीं। मैंने बस ऐसा अनुभव किया कि रोऊं और में रोने लगा। हंसने जैसा कुछ महसूसता है तो वह हंसता है, यदि उसे लगता है की वह गाये तो वह गाने लगता है। लेकिन प्रत्येक चीज का गहरी भावना से उद्‌भूत होना आवश्यक है।''

वह मस्तिष्क या बुद्धिप्रधान नहीं है, और न किसी भी भांति अनुशासित या नियंत्रित। वह कोई संस्कार या कर्मकाण्ड नहीं जानता। वह सभी संस्कारों के पूरी तरह विरुद्‌ध है और वह कहता है, '' एक संस्कारित मनुष्य एक मुर्दा मनुष्य है। वह सहज स्वाभाविक नहीं हो सकता। और एक व्यक्ति जो संस्कारों और

औपचारिकताओं का अनुसरण करता है, वह अपने चारों ओर बहुत अधिक आदतें उत्पन्न कर लेता है और फिर उसे सजग बने रहने की कोई जरूरत होती ही नहीं। जब आदतें निर्मित हो जाती हैं तो सजगता खो जाती है। तब संस्कारों में रहने वाला एक व्यक्ति आदतों के द्वारा जीता है। यदि वह मंदिर जाता है तो वहां सिर झुकाता है, किसी भी भांति वह जो कुछ वहां करता है, वह किसी सजग सचेतन रूप से नहीं, बल्कि केवल इसलिए करता है क्योंकि उसे वैसा करना सिखाया गया है और उसने वैसा करना सीखा है। वैसा करना एक अनुशासित आदत बन चुकी है, वह ' कंडीशनिंग ' हो गई है जैसे एक।

इसलिए वे किन्हीं संस्कारों का अनुसरण नहीं करते, उनकी न कोई विधि है और न उनकी कोई आदतें ही हैं। इसलिए तुम दो बाउलों को एक जैसा नहीं पा सकते। इनकी अपनी वैयक्तिकता होती है। उनका विद्रोह उन्हें प्रामाणिक व्यक्तिगत इकाई बनने की दिशा में ले जाता है।

यह बात समझ लेने जैसी है कि जितने अधिक तुम समाज के एक भाग बन जाते हो तुम्हारी निजता और वैयक्तिकता उतनी ही कम होती जाती है। तुम कम से कम सहज स्वाभाविक बनते जाते हो, क्योंकि समाज के सदस्य बने रहने में समाज तुम्हें स्वाभाविक बने रहने की अनुमति नहीं देता। तुम्हें उसके खेल के नियमों का पालन करना ही होगा। यदि तुम एक समाज में प्रवेश करते हो, तुम्हें उसके नियमों का अनुसरण करना ही होगा, जो समाज ने उस खेल के लिए तै कर रखे हैं, अथवा समाज जिस खेल को खेल रहा है। उस समाज के सदस्य होने का अर्थ है, तुम जिस विशिष्ट संस्था में प्रवेश करते हो, तुम्हें उसका खेल खेलना ही होगा।

बाउलों की कोई संस्था या संगठन होता हो नहीं, इसलिए प्रत्येक बाउल वैयक्तिक होता है।

और वास्तविक या सच्चा धर्म वही है जिसमें सता तक पहुंचने का प्रत्येक का वैयक्तिक ढंग हो। प्रत्येक को अकेला ही जाना होता है, प्रतीक को अपने ही रास्ते से जाना होता है और प्रत्येक को अपना रास्ता स्वयं खोजना हाता है। तुम किसी दूसरे का अनुसरण नहीं कर सकते, तुम किसी बने—बनाये पथ पर नहीं चल सकते। जितना अधिक तुम अपना मार्ग स्वयं खोजते हो, तम परमाता। के अथवा सत्य के अथवा वास्तविकता के उतने ही अधिक निकट होते। वास्तव में मार्ग तो चलने से ही बनता है। जैसे—जैसे तुम चलते हो मार्ग तैयार होता जाता है। वह मार्ग तुम्हारे लिए पहले से कोई बना—बनाया मार्ग नहीं है, जो तुम्हारे चलने की प्रतीक्षा कर रहा हो। तुम चलते हो, तुम उसे निर्मित करते हो।

यह ठीक ऐसा ही है, जैसे तुम जंगल में रास्ता भटक गए हो। तुम करोगे क्या? न तो तुम्हारे पास कोई नक्शा है और न कहीं कोई रास्ता ही है, जो कहीं ले जा रहा हो—पेड़ और पेड, बस चारों ओर पेड और पेड हैं और तुम खो गए हो उसमें। तुम करोगे क्या? तुम चलना शुरू कर दोगे, तुम खोजोगे, मार्ग ढूंढोगे। तुम्हारे इस तरह चलने से, खोजने से पथ स्वयं निर्मित हो जाता है।

जीवन उग्र या जंगली है, और यह अच्छा है कि वह जंगली है। यह अच्छा ही है, कि उसके पास कोई नक्शे नहीं है, वह किसी के अधिकार में नहीं है, उसे ज्ञात बनाने का कोई उपाय नहीं है, अन्यथा उसका सारा सौंदर्य ही खो जाता, सारा आकर्षण ही समाप्त हो जाता। तब जीवन तुम्हें आश्चर्यचकित नहीं कर पाता और मधु— माखी उसे भली भाति जानती है यदि आश्चर्य खो जाता है तो सब कुछ खो जाता है। तब वहां न कोई आश्चर्य रह जाता है, और न आश्चर्य करने वाला। तब तुम्हारी आंखें मुर्दा हो जाती हैं और तुम्हारा हृदय धड़कना बंद कर देता है, सारे भाव मिट जाते हैं। तब प्रेम करना सम्भव न हो सकेगा। तब आदरपूर्ण भय, आश्चर्य चमत्कार, यह सभी, किसी करिश्मे के अंश हैं अथवा जीवन का रहस्य है। इसलिए अच्छा है कि यहां कोई धर्म शास्त्र हो ही नहीं, यह अच्छा है कि यहां कोई संस्कारों युक्त धर्म हो ही नहीं, और यह अच्छा है कि तुम किसी राजमार्ग पर नहीं चल रहे हो।

एक बाउल एक विद्रोही व्यक्ति होता है और मैं विद्रोही शब्द भी बहुत अधिक सोच—विचार के बाद ही कह रहा हूं। वह क्रांतिकारी नहीं है। एक क्रांतिकारी अभी भी समाज के सम्बन्ध में ही सोच रहा है कि उसे कैसे बदला जाये यही है एक क्रांतिकारी का सतत् चिंतन। वह सदा समाज की ओर ही केंद्रित बना रहता है, वह केवल उसी दिशा की ओर सोचता रहता है कि उसे कैसे बदला जाए?

एक विद्रोही व्यक्ति संसार के बारे में फिक्र करता ही नहीं, क्योंकि वह समझता है कि उसके द्वारा संसार को नहीं बदला जा सकता और मैं संसार को बदलने वाला होता ही कौन हूं? संसार को बदलने का मेरा अधिकार क्या है? और यदि संसार जिस तरह से बने रहने का निश्चय करता है, तो मैं दखल देने वाला होता कौन हूं न; वह संसार को स्वयं उसी पर छोड देता है। वह उसमें कोई हस्तक्षेप नहीं करता, उसमें कोई विघ्न नहीं डालता। वह स्वयं को बदलना शुरू करता है। उसका विद्रोह अंदर होता है, उसका विद्रोह पूरी तरह से आंतरिक है।

एक विद्रोही व्यक्ति छोड़ने वाला होता है। वह उस समाज को छोड देता है, जो उसे अनुकूल नहीं पडता। वह यह प्रतीक्षा नहीं करता कि समाज बदल जाए जिससे वह अपने को उसके अनुसार अनुकूल बना सके। यह इच्छा ही मूर्खता और मूढ़तापूर्ण है। तब तुम भटक जाओगे। और वह दिन कभी नहीं आएगा। जब तुम्हारे स्वप्नों का आदर्श संसार बने और संसार इतना अधिक बदल जाए कि तुम उसके अनुकूल हो सको और समाज तुम्हारे अनुकूल हो जाए। ऐसा कभी हुआ ही नहीं है। क्रांतिकारी सदियों से रहते आए हैं और वे मर भी गए लेकिन कमोवेश संसार वैसे का वैसा ही बना रहा, बल्कि उन क्रांतिकारियों के जीवन उसे बदलने के प्रयास में व्यर्थ नष्ट हो गए।

जरा सोचें यदि मार्क्स, लेनिन और ट्राटस्की फिर से वापस लौटकर इस संसार को देखें—तो वे सभी चीखना शुरू कर देंगे। क्या यह वही संसार है जिसके लिए उन्होंने अपना पूरा जीवन बरबाद किया? पूरे जीवन को जुए के दांव पर लगा दिया था? वे सभी अपने जीवन को ठीक से जी भी न सके। क्योंकि वे लोग संसार को बदलने की कोशिश कर रहे थे वे लोग इसलिए संसार को बदलने की कोशिश कर रहे थे क्योंकि उनका खयाल था उनकी इच्छाओं के अनुरूप जब यह संसार बदल जाना, केवल कि तभी वे जीने में समर्थ हो सकेंगे— अन्यथा वे कैसे रह सकते हैं उस संसार में। तुम एक दुखी संसार में सुख से कैसे रह सकते हो? यह प्रश्न एक क्रांतिकारी के लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण प्रश्न है, तुम दुखी संसार में सुखी कैसे रह सकते हो? इसीलिए वह संसार को प्रसन्न बनाने की कोशिश करता है।

विद्रोही व्यक्ति कहता है—संसार को उसके हाल पर यूं ही छोड़ दो। कोई कभी भी उसे आज तक बदल न सका। वह अधिक व्यावहारिक और जमीन से जुड़ा व्यक्ति है। वह कहता है, " मैं अपनी तरह से जी सकता हूं। मैं स्वयं अपने अंदर ही अपना संसार निर्मित कर सकता हूं।"

वह एक त्याज्य है। सभी बाउल समाज को छोड़ देने वाले लोग हैं। उनका न तो कोई धर्म है, न समाज और न कोई अपना देश। वे भिखारी हैं, घुमक्कड़ हैं, आवारा हिप्पी या जिप्सियों जैसे हैं, जो एक गांव से दूसरे गांव में गीत गाते और नाचते अपने ढंग से काम करते और जीते हुए परिभ्रमण करते रहते हैं।

वही होता है एक विद्रोही व्यक्ति जो कहता है — " मैं अब प्रतीक्षा करने नहीं जा रहा हूं। मैं ठीक अभी से अपने ढंग से जीने जा रहा हूं।" क्रांतिकारी, भविष्य के लिए आशाएं संजोता है। वह कहता है। मैं प्रतीक्षा करने जा रहा हूं। मैं उचित क्षण की प्रतीक्षा करूंगा। जबकि विद्रोही व्यक्ति कहता है, उचित और ठीक क्षण तो अभी और यही है। मैं अब किसी के आने की प्रतीक्षा नहीं करूंगा। मैं ठीक अभी से ही अपने छंद से जिऊंगा। विद्रोही व्यक्ति वर्तमान में जीता है।

और एक अन्य बात भी समझ लेने जैसी है, एक विद्रोही व्यक्ति किसी के विरुद्ध नहीं होता है। वह किसी के विरुद्ध लगता जरूर है, क्योंकि वह अपने ढंग से अपना जीवन जीने की कोशिश कर रहा है, लेकिन वास्तव में वह किसी के भी विरुद्ध नहीं है। वह किसी मस्जिद में भले ही न जाता हो, लेकिन वह मुसलमानों के विरुद्ध नहीं है। वह भले ही किसी मंदिर में न जाता हो, लेकिन वह हिंदुओं के विरुद्ध नहीं है। वह सरलता से कहता है—मेरा किसी से कुछ लेना—देना ही नहीं, यह सब कुछ असंगत है मेरे लिए। वह सिर्फ यही कहता है, कृपया मुझे अकेला छोड़ दो। तुम अपना काम करो और मुझे अपना कार्य करने दो। न तुम मेरे काम में दखल दो और न मैं तुम्हारे कार्य में दखल दूंगा।

एक विद्रोही मन का दृष्टिकोण बहुत यथार्थवादी होता है। जीवन क्षणभंगुर है। कोई भी नहीं जानता कि कल आयेगा भी या नहीं। भविष्य अनिश्चित है और यह क्षण अकेला ही है, जिसमें कोई जी सकता है। दूसरों से लड़ने में उसे क्यों व्यर्थ मधु— माखी उसे भली भाति जानती है?

बरबाद किया जाए? दूसरों को कायल करने या समझाने की कोशिश में इसे क्यों व्यर्थ—बरबाद किया जाए? उसका आनंद लो। उसका आनंद लो। उसमें प्रसन्नता का अनुभव करो। एक बाउल, जीवन को उत्सव आनंद से इपीक्यूरस की भांति स्वयं अपने छंद से जीता है। वह जीवन से प्रेम करता है और उसमें प्रसन्न रहता है।

जब एक बाउल की मृत्यु आती है, वह मृत्यु से डरता नहीं—वह उसके लिए तैयार होता है। वह अपना जीवन जी चुका। वह पके हुए फल के समान है, जो बिना किसी झिझक के कभी भी पृथ्वी पर गिर सकता है। तुम तो उससे डर जाओगे। तुम उससे पहले ही से डरे हुए हो, क्योंकि तुम जीवन को जीने में भी समर्थ न हो सके हो। तुमने अभी उसे जीया ही नहीं, और मृत्यु आ पहुंची है अथवा आ रही है। तुम तो अभी जीवन जीने में भी समर्थ न हो सके हो और मृत्यु ने तुम्हारे दरवाजे पर दस्तक दे दी है। तुम मृत्यु को स्वीकार कैसे कर सकते हो? तुम उसका स्वागत कैसे कर सकते हो?

एक बाउल किसी भी क्षण मरने को तैयार रहता है, क्योंकि उसने जीवन का एक भी क्षण बरबाद नहीं किया है। उसने उसे इतनी गहराई से जीया है, जितना जीना सम्भव था। उसे जीवन से न तो कोई शिकवा है और न शिकायत और उसके पास प्रतीक्षा करने के लिए कुछ भी नहीं है। इसलिए यदि मृत्यु आती है, तो वह मृत्यु का आलिंगन करता है। वह कहता है—'' अंदर पधारो " वह मृत्यु के लिए भी मेजबान बन जाता है।

यदि तुम ठीक तरह से जीए हो, तो तुम शांति और आनंद से मरने के लिए तैयार रहोगे। यदि तुम ठीक से नहीं जीए हो, यदि तुम मरने को टालते आये हो यदि तुम अपने जीवन से किनारा काट कर उसका आनंद उठाने के स्थान पर, प्रसन्नता पाने के स्थान पर वस्तुत : एक हजार एक अन्य दूसरे कार्यों में व्यस्त रहे हो, तब वास्तव में स्वाभाविक रूप से तुम्हें मृत्यु से भय लगेगा। और जब मृत्यु आती है तो मृत्यु के सामने तुम कायर बन जाओगे।

एक बाउल नृत्य करते हुए ही प्राण त्यागता है, एक बाउल गीत गाते हुए अपना एकतारा और अपनी ढफली बजाते हुए ही देह विसर्जित करता है। वह भली भांति जानता है कि कैसे जीया जाये, और कैसे मरा जाए। और वह परमात्मा के बारे में भी कोई फिक्र नहीं करता। वह केवल ' आधार—मनुष्य ' के बारे में चिंता करता है। वह सारभूत मनुष्य, जो उसके अंदर ही रहता है। उसकी पूरी खोज उसी सारभूत मनुष्य को, जैसा वह है, उसे पा लेने की है। मैं कौन हूं? यही उसकी आधारभूत तलाश है। और वह दूसरे मनुष्यों को बहुत अधिक सम्मान देता है, क्योंकि उन सभी में वही सारभूत स्वभाव एक ही है। उसके सभी दूसरे रूप और आकृतियों उसी

सारभूत अरूप स्वभाव से ही जन्मी हैं, वे सभी उस एक सागर की ही लहरें हैं। वह सभी के प्रति सम्मानपूर्ण ही नहीं, अत्यधिक आदर देता है सभी को। एक बाउल कभी किसी चीज को बुरा कहता ही नहीं।

मेरे लिए एक धार्मिक मनुष्य की यही सबसे बड़ी कसौटी है। उसका व्यवहार बुराई करने वाला नहीं है। वह प्रत्येक चीज को स्वीकार करता है। उसके संसार में प्रत्येक चीज सम्मिलित है। वह किसी चीज की वर्जना करता ही नहीं। वह सेक्स भी स्वीकार करता है और समाधि भी। उसका संसार बहुत अधिक समृद्ध है, क्योंकि वह किसी चीज की वर्जना करता ही नहीं।

वह कहता है, प्रत्येक वस्तु तुम्हारे अस्तित्व के उसी सारभूत केंद्र से ही आती है, इसलिए उससे इंकार क्यों किया जाए? और यदि तुम उससे इन्कार करते हो, तो फिर तुम उसके स्रोत तक कैसे पहुंच सकोगे?

जहां कहीं भी तुम किसी चीज से इन्कार करते हो, तुम वहीं रुक जाते हो? उससे बंध जाते हो। तब यात्रा जारी रखते हुए तुम उस केंद्र तक नहीं पहुंच सकते।

जीवन जैसा वह है, समग्रता से स्वीकार है। इसका यह भी अर्थ नहीं कि एक बाउल केवल सभी कामनाओं को तुष्ट करने वाला मनुष्य मात्र है। वह तुच्छ को उच्च में रूपांतरित करने का रसायन जानता है। वह जानता है लोहे को कैसे स्वर्ण में बदला जाए। वह जानता है कैसे सेक्स को समाधि में रूपांतरित किया जा सकता है, वह इस रहस्य को जानता है। वह इस जीवन को शाश्वत जीवन में बदलने और समय को शाश्वत बनाने की कीमिया और उसका रहस्य जानता है। और वह रहस्य है प्रेम। सेक्स और समाधि के मध्य का सेतु है—प्रेम। प्रेम दोनों में ही सम्मिलित है—एक ओर सेक्स में और दूसरी ओर समाधि में। वह दोनों के मध्य एक सेतु है। एक किनारा है सेक्स और दूसरा किनारा है समाधि। प्रेम दोनों में सम्मिलित है, इसी को समझ लेना है। बाउल कहते हैं—कोई प्रेम के द्वारा ही अपने शाश्वत घर पहुंचता है। उनके मार्ग (प्रेम) पर चलने के लिए यही उसकी तैयारी है। उनके लिए प्रेम ही पूजा है, प्रेम ही उनकी प्रार्थना है, प्रेम करना ही उनके लिए ध्यान है। बाउल का मार्ग ही प्रेम का मार्ग है। वह बहुत अधिक प्रेम करता है।

भारत में दो परम्पराएं हैं—एक परम्परा है वेदों की ओर दूसरी है तंत्र की। वेदों की परम्परा अधिक औपचारिक है, जिसकी प्रकृति में संस्कार है। वेद कहीं अधिक सामाजिक और संगठनात्मक है जबकि तंत्र वैयक्तिक अधिक है। उसका सम्बन्ध, संस्कारों, आदतों और रूपों से बहुत कम है, उसका सम्बंध आधारभूत तत्व से अधिक है, वह बाह्य रूप आकृति से कम, आत्मा से अधिक सबंधित है।

वेदों में सब कुछ सम्मिलित नहीं है, काफी कुछ वर्जनाएं हैं। उसमें कहीं अधिक कट्टर धार्मिकता और नैतिकता है। तंत्र में उदारता है, उसमें सभी कुछ सम्मिलित है, वह अधिक मानवीय और इसी पृथ्वी से जुड़ा हुआ है। तंत्र कहता है कि प्रत्येक चीज का प्रयोग करना चाहिए और कुछ भी— अस्वीकारने जैसा नहीं है। बाउल, वेदों की अपेक्षा, तंत्र के अधिक निकट हैं। तंत्र में वहां केवल एक ही सुधार और प्रगति है और वही दोनों में एकमात्र अंतर है। तंत्र में सब कुछ समाहित है। यह पुरुष प्रधान की अपेक्षा स्त्री प्रधान अधिक है, जबकि वेद अधिक पुरुष प्रधान है। तंत्र में स्त्री की अधिक प्रमुखता है। वास्तव में पुरुष की अपेक्षा उसमें स्त्री की भागीदारी अधिक है। पुरुष स्त्री में ही सम्मिलित है, लेकिन स्त्री पुरुष में सम्मिलित नहीं है।

पुरुष होना एक तरह की विशेषता लगता है। स्त्री कहीं अधिक सामान्य, अधिक तरल और कहीं अधिक स्वीकार है। तंत्र का मार्ग ताओ की भांति स्त्रैण मार्ग है।

लेकिन बाउल तंत्र से अधिक विकसित हैं। तंत्र अत्यधिक यांत्रिक है। तंत्र शब्द का अर्थ ही है—विधि। यह अधिक वैज्ञानिक लेकिन थोड़ा सख्त है। बाउल लोग कहीं अधिक काव्यात्मक हैं। बाउल लोग कहीं अधिक कोमल गायक और नर्त्तक है।

तंत्र सेक्स का प्रयोग उससे ऊपर उठने के लिए करता है, लेकिन वह उसका प्रयोग करता है। सेक्स एक उपकरण या माध्यम बन जाता है। बाउल कहते हैं—यह बहुत अधिक असम्मानपूर्ण है : तुम किसी ऊर्जा का प्रयोग कैसे कर सकते हो? उस ऊर्जा को तुम माध्यम या उपकरण कैसे बना सकते हो? वे सेक्स का माध्यम की भांति प्रयोग नहीं करते, वे उसमें प्रसन्नता और आनंद का अनुभव करते हैं। वे बिना किसी यांत्रिकता के उसे एक पूजा या आराधना बना देते हैं। प्रेम करना कोई यांत्रिकता नहीं है। वे प्रेम करते हैं और प्रेम के द्वारा रूपांतरण स्वत: घटता है।

तंत्र में तुम्हें उससे तादात्म्य न जोड़कर अनासक्त रहना होता है। यहां तक के सेक्स का प्रयोग समाधि के लिए एक माध्यम के रूप में करते हुए भी तुम्हें सेक्स के प्रति अनासक्त रहना होता है, पूरी तरह तटस्थ, पूरी तरह एक दर्शक बने रहना होता है, ठीक एक साक्षी बनकर या उस वैज्ञानिक की भांति जो अपनी प्रयोगशाला में कार्य कर रहा है। तांत्रिक कहते हैं—तंत्र की विधियां उस स्त्री के साथ, जिससे तुम प्रेम करते हो, नहीं की जा सकतीं। क्योंकि प्रेम ही बाधक बन जाता है। तुम उसके प्रति आसक्त हो जाओगे। तुम उससे निरासक्त बने रहकर उससे बाहर नहीं, इसलिए तांत्रिक किसी ऐसी स्त्री को खोजेंगे जिसके साथ वे प्रेम नहीं करते, जिससे उनका पूरा व्यवहार पूरी तरह तटस्थ दर्शक का बना रह सके।

यहीं पर बाउल उनसे पृथक हैं। वे कहते हैं कि यह कहीं अधिक निर्दयता है। यह भावनाशून्य व्यवहार बहुत अधिक कूर है। वहां इतना कठोर और रूखा बने रहने की कोई आवश्यकता नहीं। प्रेम के द्वारा रूपांतरण सम्भव है। यही कारण है कि मैं उनके व्यवहार और आचरण को कहीं अधिक काव्यात्मक, कहीं अधिक मानवीय और कहीं अधिक कीमती मानता हूं। बाउल कहते हैं कि तुम संसार से बंध कर रहते हुए भी उससे निरासक्त भी रह सकते हो, तुम एक स्त्री से प्रेम करते हुए भी प्रेम के साक्षी बने रह सकते हो और तुम बाजार के बीच खड़े हुए भी उसके पार हो सकते हो।

तुम संसार में जीते हुए भी उससे पृथक हो सकते हो।

यही दृष्टि मेरी भी दृष्टि है। यही मेरे संन्यास का नाम है—संसार में रहो पर उसके होकर मत रहो। और किसी भी चीज का कोई मूल्य नहीं, यदि वह प्रेम के द्वारा न की जाए।

इसी वजह से जहां तंत्र में कुछ भी कमी है, तो वह मनुष्यता की कमी है। यदि तुम किसी स्त्री से प्रेम करते हो, तो तंत्र सम्भव नहीं है। तुम्हें प्रेम से बिलकुल पृथक, अलिप्त रहना होगा। तब सेक्स बहुत अधिक वैज्ञानिक प्रक्रिया बन जाती है। वह विधि बन जाती है—कुछ ऐसी चीज नहीं, जिसे नियंत्रित करना है, कुछ ऐसी चीज जिसे किये जाना है, कोई ऐसी चीज जिसके अंदर बने रहना है, कोई ऐसी चीज नहीं है जो तुम्हें अपने में जज्व कर लेती है कोई ऐसी चीज नहीं ,जिसमें सागर में डब जाने की या समाहित होकर सर्वोच्च परमानंद पाने की अनुभूति होती है, बल्कि वह ऐसी क्रिया बन जाती है, जिसे तुम कर रहे हो। किसी स्त्री अथवा किसी पुरुष में कोई भी चीज करने का विचार इसीलिए उठता है, क्योंकि तुम समाधि को उपलब्ध होना चाहते हो, दूसरे व्यक्ति को साधन या एक माध्यम बनाने का विचार ही कुरूप और अनैतिक है।

इसीलिए जहां कहीं भी बाउल होते हैं उनकी एक भिन्न सुवास होती है। वे कहते हैं—वहां इतना अधिक कठोर होने की कोई आवश्यकता ही नहीं है। वहां किसी को माध्यम की भांति प्रयोग करने की या साधन प्रधान होने की कोई आवश्यकता ही नहीं। प्रेम सब कुछ स्वत: कर देगा और हम यह समझने का प्रयास करेंगे कि उनका प्रेम करने से अर्थ क्या है।

पहली कविता. .यह कविताएं भिन्न—भिन्न बाउलों द्वारा गाई जाने वाली कविताएं हैं, लेकिन मैं उनके नामों का प्रयोग करने नहीं जा रहा हूं। वह असंगत है। उन सभी की दृष्टि एक ही है। वे भिन्न—भिन्न कविताएं

गाते हैं, लेकिन गहरे में वे सभी ठीक वैसे ही बने रहते हैं। जैसे प्रत्येक कविता में भिन्न शब्द और भिन्न छंद होता है, लेकिन उनमें एक ही धारा दौड़ती रहती है। यह ठीक वैसे ही है जैसे एक माला में बहुत से पुष्प साथ—साथ गुंथे रहते हैं, लेकिन उसके अंदर केवल एक धागा ही सभी को बांधे रखता है।

हम केवल उसी धागे पर जोर देंगे। हम इस बारे में फिक्र नहीं करेंगे कि किसने लिखीं वे कविताएं? वास्तव में बहुत सी कविताएं किसने लिखीं, यह ज्ञात ही नहीं, वे अनाम हैं। कभी कोई जान ही न सका कि उन्हें लिखा किसने, क्योंकि वास्तव में वे कभी भी लिखी ही नहीं गईं।

बाउल अशिक्षित हैं, और शायद यही कारण है कि उनमें इतनी अधिक निर्मलता और शुद्धता है। वे सुसंस्कृत लोग नहीं है और न सांसारिक दृष्टि से शिक्षित हैं। शायद इसी कारण उनमें इतनी अधिक निर्दोषिता है। वे इसी पृथ्वी की ही संतान हैं, अशिक्षित, निर्धन, विनम्र लेकिन बहुत अधिक ईमानदार। इसलिए मैं तुम्हें यह न बता सकूंगा कि आने वाले बीस दिनों में उन्हीं गीतों का अनुसरण करते हुए मैं अन्य किन गीतों के बारे में बतलाने वाला हूं। वह सभी कुछ असंगत है, उन सभी की एक ही दृष्टि है। उनकी एक विशिष्ट रागिनी है, इतनी अधिक वैयक्तिक, कि इसे बाउल—सर, कहा जाता है, बाउलों की रागिनी—बाउल—राग जिसका स्वाद इतना विशिष्ट है, जिसकी सुवास इतनी वैयक्तिक है कि जब भी कहीं तुम बाउलों से गीत सुनते हो, तुम उन्हें तुरंत पहचान जाओगे। उनकी अपनी वैयक्तिकता है, अपना जंगलीपन अशिक्षा और असंस्कृत होना, उनकी अपनी वैयक्तिकता है। ठीक वैसे ही जैसे सागर का स्वाद हर जगह एक ही होता है, उसे कहीं से भी चखो, वह खारा ही होता है। इन गीतों में भी तुम्हें तुरंत इस बात का अनुभव होगा कि वे सभी एक ही दृष्टि एक ही व्यवहार, एक हीर तीव्र भावोद्वेग और एक ही अनुभव को अभिव्यक्त कर रहे हैं।

और वे कभी भी लिखे नहीं गए। बाउल उन्हें सदियों से गाते आ रहे हैं। प्रत्येक बाउल ने उनमें कुछ चीजें छोड़ दीं और कुछ चीजें जोड़ दीं, और अपने या तो नये गीत बना लिए अथवा पुराने गीतों का जो उसने अपने गुरु से सुने थे उनका ऐसा प्रयोग किया, जिससे उनकी दृष्टि इतनी अधिक स्पष्ट रही कि जब भी तुम कोई बाउल गीत सुनते हो, तुम कभी भी न उसे भूल सकते हो और न उससे चूक सकते हो। पहला गीत है

गुण ग्राही रसिक शिरोमणि ही
केवल प्रेम की सुवास और
प्रेमी के हृदय की भाषा समझ सकता है।
दूसरों को तो उसका कोई आभास तक नहीं होता।
नींबू का स्वाद तो उसके केंद्र में होता है
उसके बीज में होता है
और विशेषज्ञ भी उस तक पहुंचने का
कोई भी सरल मार्ग नहीं जानते।
शहद तो कमल पुष्प के अंदर छिपा होता है।
लेकिन शहद की मक्खी उसे भली भांति जानती है।
गोबरमें बसे गुबरैले
शहद का पूर्वानुमान कैसे कर सकते हैं?
समर्पण और विनम्रता ही ज्ञान का रहस्य है।

पहली बात तो यह है कि प्रेम केवल प्रेम करने से ही जाना जा सकता है। यह कोई ऐसी चीज नहीं है कि उसके बारे में की गई बौद्धिक चर्चा से उसे समझा जा सके। प्रेम कोई सिद्धांत नहीं है। यदि तुम उससे कोई

सिद्धांत बनाने की कोशिश करो, तो वह बेबूझ हो जाएगा। यह बाउल गीत का पहला दृष्टि बिंदु है, वहां ऐसी चीजें हैं, जिसे तुम केवल करने के बाद या वैसा होने के बाद ही जान सकते हो।

यदि तुम तैरना नहीं जानते, तो यह भी नहीं जानते कि वह है क्या, और उसके बारे में जानने का फिर कोई उपाय है ही नहीं। तुम बाहर जाकर एक हजार एक तैराकों से उसके बारे में चर्चा सुन सकते हो, लेकिन फिर भी वह है क्या, तुम इसे कभी जान न सकोगे। यह किसी भी तरह से समझ में न आने वाली बात है, तुम्हें उसे समझने के लिए तैरना सीखना ही होगा। तम[एं नीचे नदी में जाना होगा, तुम्हें जोखिम उठानी होगी, डूबने का खतरा उठाना होगा। यदि तुम बहुत—बहुत चालाक हो, तो तुम कह सकते हो—" मैं नदी में तब तक कदम न रखूंगा, जब तक तैरना न सीख लूं।" बात है तो तर्कपूर्ण, मैं नदी में कदम कैसे रखूं जब तक मैं तैरना न सीख लूं? इसलिए पहले मुझे तैरना सीखना चाहिए केवल तभी मैं नदी में कदम रख सकता हूं। लेकिन तब तुम तैरने के बारे में कुछ भी जानने में समर्थ न हो सकोगे, क्योंकि तैरना सीखने के लिए तो तुम्हें नदी में कदम रखना ही होगा।

तैरना केवल तैरने के द्वारा ही जाना जा सकता है, प्रेम केवल प्रेम करने से जाना जा सकता है, प्रार्थना केवल प्रार्थना करने के द्वारा ही जानी जाती है, इसके अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग है भी नहीं। यहां ऐसी भी चीजें हैं, जिन्हें बिना उनमें गतिशील हुए भी जाना जा सकता है, लेकिन वे व्यर्थ की तुच्छ वस्तुएं हैं यह बौद्धिक चीजें हैं, दर्शनशास्त्र, अंधविश्वास अथवा किसी पंथ या धर्म का अनुयायी बनना। लेकिन जो कुछ वास्तविक या सच्चा है उसे जीया जाता है और जो कुछ भी आस्तित्वगत होता है उसमें प्रवेश करना होता है और जोखिम उठानी होती है। इसके लिए उस व्यक्ति को साहसी और निडर होना होगा और यह सबसे बड़ा साहस का काम है, क्योंकि जब तुम किसी से प्रेम करते हो, तुम स्वयं को खोना शुरू कर देते हो। किसी को प्रेम करना अपने अहंकार को मिटाना है, किसी जो प्रेम करना स्वयं का खो जाना है, किसी को प्रेम करने का अर्थ होता है कि तुम उसे अपने ऊपर सत्ता सौंप रहे हो और प्रेम करने का अर्थ होता है किसी के अधिकार में रहना और समर्पित होना। ज्ञान का रहस्य है—विनम्रता।

.....क्योंकि बाउल के लिए वहां प्रेम ही केवल ज्ञान होता है। तुम वेदों का अध्ययन कर सकते हो लेकिन इसके लिए समर्पित और विनम्र होने की कोई जरूरत नहीं, तुम बाइबिल पढ़ सकते हो और उसके लिए समर्पण की कोई जरूरत नहीं। तुम बहुत प्रवीण, बहुत कुशल और बहुत बड़े विद्वान बन सकते हो, लेकिन उसके लिए समर्पित होने की कोई आवश्यकता नहीं। यदि वहां समर्पित होने की कोई जरूरत नहीं, तो बाउल के लिए वह ज्ञान है ही नहीं।

बाउल की तो केवल कसौटी यही है कि जब भी कोई चीज समर्पण मांगती है, केवल तभी वहां वास्तविक ज्ञान की सम्भावना होती है, अन्यथा नहीं। यदि तुम मेरे पास आते हो और मैं बस तुम्हारे सामने ज्ञान के सारे रहस्य खोल देता हूं

बहुत से लोग मेरे पास आते हैं और मुझसे कहते हैं, " यदि हम संन्यासी न बनना चाहें और आपको समर्पण न करना चाहें, तो वहां क्या कोई कठिनाई है? और फिर भी जो कुछ आप कहते हैं, हम उससे प्रेम करते हैं। फिर भी हम आपको सुनना चाहते हैं। क्या वहां कोई समस्या है? क्या हम ऐसा नहीं कर सकते?"

मैं कहता हूं—" तुम उसे कर तो सकते हो और उसमें कोई समस्या भी नहीं है, लेकिन तब तुम उथला ज्ञान ही संग्रहीत करोगे, तब तुम केवल शब्द ही बटोरोगे। तब तुम भोजन की मेज से नीचे गिरे हुए टुकड़े ही बटोरोगे और वास्तव में तुम मेरे मेहमान नहीं बनोगे। जो कुछ सारभूत है, तुम्हारा भाग्य होगा। अब तै तुम्हें करना है।"

एक बार तुमने समर्पण कर दिया, तो पूरी तरह से तुम्हारे और मेरे मध्य एक दूसरे संसार का द्वार खुल जाता है हृदय का हृदय से संवाद होना शुरू हो जाता है। तब तुम मेरे शब्द सुन सकते हो, लेकिन तुम उन्हें एक भिन्न रूप में सुनोगे, तुम उन्हें ऐसी गहरी सहानुभूति, प्रेम, कृतज्ञता, और ग्रहणशीलता से सुनोगे, तब वे शब्द फिर शब्द नहीं रह जाएंगे, वे जीवन्त होना शुरू हो जाएंगे। अपनी ग्राह्यता के कारण तुम उन्हें जीवंत बना देते हो। फिर जो कुछ मैं तुमसे कह रहा हूं जो कुछ तुम्हें प्रतिसंवेदित कर रहा हूं वह तुम्हारे अंदर पहुंचकर गर्भ की तरह विकसित होता है। तब शब्द तो मात्र बहाने होते हैं, तब वहां कुछ स्थानांतरित होता है। शब्दों के चारों और लिपटा हुआ मैं तुम्हें कुछ ऐसी चीज प्रेषित कर रहा हूं जिसकी व्यवस्था शब्दों '। नहीं की जा सकती। तब न केवल शब्द तुम तक पहुंचते हैं, बल्कि वे मेरे हृदय कं द्वारा उसकी जलवायु तुम तक ले जाते हैं।

यदि तुम्हें मुझसे प्रेम है, तब तुम्हारे और मेरे मध्य पूरी तरह से भिन्न किस्म की एक समझ होती है। यदि तुम्हारे साथ मेरा प्रेम नहीं है, तब हम लोग काफी दूर हैं। तब तुम किसी दूसरे ग्रह पर हो, मुझसे हजारों मील दूर। मैं चिल्ला कर जो कहूंगा, तुम उसमें से थोड़े से शब्द ही सुन सकोगे लेकिन इस तरह से कुछ भी विशेष घटने का नहीं। तुम मुझे सुनकर अधिक जानकारी इकट्ठी कर सकते हो। लेकिन आवश्यक बात यह है ही नहीं। तुम्हें अधिक जानकारी नहीं, तुम्हें अधिक अस्तित्व चाहिए। यदि तुम वास्तव में समृद्ध बन रहे हो और यहां मेरे सान्निध्य में हो, तब तुम्हारा अस्तित्व विकसित हो रहा है। तब अधिक से अधिक तुम्हारी चेतना केंद्रित होती जा रही है, वह अधिक से अधिक जीवंत और दिव्य होती जा रही है। यह सब कुछ बिना प्रेम के सम्भव ही नहीं है।

और समर्पण क्या है? समर्पण का अर्थ है—' अपने अहंकार का समर्पण। समर्पण का अर्थ है कि तुम जो कुछ जानते हो उसका समर्पण। समर्पण का अर्थ होता है कि तुम अपने ज्ञान को बुद्धि को और मन को भी समर्पित कर रहे हो। ' समर्पण करना एक तरह की आत्महत्या करना है। अपने अतीत के प्रति मर जाना। यदि तुम गुप्त रूप से अपने अंदर अपने अतीत को ढोए जा रहे हो, तब तुम्हारे संन्यास की भावाभिव्यक्ति नपुसंक है। तुम संन्यास भी ले सकते हो, और फिर भी एक खजाने की तरह अपने अतीत को छिपाकर और उसकी रक्षा करते हुए तुम अपने साथ ढोये लिए जा रहे हो।

तब केवल परिधि पर ही तुम संन्यासी रहोगे, लेकिन तुम्हारा मेरे प्रति समर्पण न होगा। और तब यदि तुम परिपूर्ण नहीं हो, तो कोई दूसरा इसके लिए जिम्मेदार नहीं है।

एक बाउल का पहला दृष्टिकोण यही है कि अस्तित्वगत चीजें केवल अस्तित्वगत मार्गों द्वारा जानी जा सकती हैं। प्रेम को केवल प्रेम करने के द्वारा ही जाना जा सकता है।

किसी ने जीसस से पूछा— " प्रार्थना कैसे की जाए?"

और उन्होंने उत्तर दिया, " प्रार्थना।''

लेकिन उस व्यक्ति ने कहा, " यही तो मैं आपसे पूछ रहा हूं। मैं नहीं जानता कि प्रार्थना कैसे की जाए?"

इसलिए जीसस ने कहा, " मैं प्रार्थना करूंगा। तुम मेरे साथ बैठकर कोशिश करो उसे करने की।"

पर प्रार्थना कैसे सिखाई जा सकती है? वह तो पकडी जा सकती है, सीखी नहीं जा सकती। यदि तुम मेरे प्रति खुले हुए नहीं हो तो कुछ भी नहीं सिखाया जा सकता है।

प्रार्थना तो एक छूत की तरह होती है। प्रेम भी एक छूत के रोग की तरह होता है। इसके जाल में पकड़ा जा सकता है पर सिखाया नहीं जा सकता। तुम उसे पकड़ सकते हो। वह तुम्हारे चारों ओर प्रवाहित हो रही है, लेकिन तुम यदि एक द्वीप की भांति चारों ओर से बंद रहते हो तब तुम्हें सिखाने का कोई रास्ता नहीं है।

जब तुम अपना मन बहलाने के लिए

शंख फूंकते हो, या घंटे बजाते हो

तो परमात्मा घबराकर तुम्हारा मंदिर छोड़ देता है।

उस तक पहुंचने का रास्ता

मंदिरों और मस्जिदों से रुका हुआ है।

मैं तुम्हें पुकारते हुए सुनता हूं—मेरे मालिक।

लेकिन मैं आगे कदम नहीं उठा पाता।

क्योंकि गुरु और शिक्षक रास्ता रोक लेते हैं।

परमात्मा तुम्हारे चारों ओर है, लेकिन तुम शास्त्रों से, थोथे ज्ञान से और अपने ही अहंकार से इतने अधिक भरे हुए हो कि वहां अंदर कोई खाली स्थान बचा ही नहीं है, जहां तुममें परमात्मा प्रवेश कर सके और तुम उसका अनुभव कर सको। यह असम्भव हो गया है। और यह असम्भव केवल तुम्हारे ही कारण हुआ है।

जीसस ठीक कहते हैं—यदि तुम जानना चाहते हो कि प्रार्थना क्या है तो प्रार्थना करो। और वह मनुष्य भी ठीक है, जो कहता है—प्रार्थना कैसे करूं? यही मेरी समस्या है। तुमने इसका उत्तर अभी दिया ही नहीं है। और जीसस कहते हैं— "सिर्फ यही रास्ता है कि जब मैं प्रार्थना करूंगा और घुटने झुकाकर प्रार्थना में बैठ जाऊंगा, तो तुम भी बस मेरे साथ ही बैठ जाना, लेकिन पूरी तरह खुले हुए और होशपूर्ण और तुम उसे पकड़ लोगे।"

यही सब कुछ मैं यहां करने की कोशिश कर रहा हूं। तुम केवल मेरे लिए अपने द्वार खोले रहो और तुम उसे पकड़ लोगे। और एक बार जब तुम अपने रास्ते को स्वयं ही नहीं रोक रहे हो, एक बार जब तुम बाहर निकलकर अपने पथ पर चलना शुरू कर दोगे, तब वहां तुम्हारे लिए प्रत्येक संभावना है। वहां कोई समस्या है ही नहीं क्योंकि वह सारभूत मनुष्य जो तुमसे बोल रहा है, वही तुम्हारे द्वारा सुन

भी रहा है। तब अस्तित्व ही अस्तित्व से मिल सकता है। बस, अपने अहंकार को एक और उठाकर रख दो, वह अनावश्यक है। अपने सार तत्व अथवा परम चेतना के साथ मेरे सामने आओ और उसका मुझसे आमना—सामना होने दो, तब अचानक तुम देखोगे कि तुममें एक नई अग्नि प्रज्वलित हो रही है और एक नया प्रेम उत्पन्न हो रहा है।

हां, विनम्रता ही ज्ञान का रहस्य है। और समर्पण ही ज्ञान का रहस्य है। यह कोई बौद्धिक प्रयास नहीं है। बल्कि यह पूरी तरह डूबना है, अपने स्वयं का घुल कर उसके साथ एक हो जाना है। यही कारण है कि बाउल जानकारी और ज्ञान के बाबत कम, और प्रेम के बाबत अधिक बात करते हैं, क्योंकि संसार में प्रेम अकेली एक ऐसी चीज है जो प्रेम करने के सिवा किसी और तरह से प्राप्त नहीं किया जा सकती।

अब किसी दिन यह भी सम्भव है कि तुम्हें तैरना भी बिना नदी पर ले जाये। : " ही सिखाया जा सके। उन्होंने ऐसी विधियों की ईजाद की है कि वे तुम्हें सड़क पर ले जाये बिना ही ड्राइविंग सिखा सकते हैं।

तुम बस एक कमरे में रखी कार में बैठ जाओ, कहीं भी न घूमना है और न मलना है क्योंकि वहां चलने के लिए कोई स्थान है ही नहीं। तुम बस कार में स्टीयरिंग व्हील के पीछे बैठ जाते हो, और दीवाल पर सामने एक फिल्म दिखाई जाती है। पर्दे पर सड़क घूमती है जिससे तुम्हें अनुभव होता है जैसे तुम सड़क पर ही चल रहे हो। तुम्हें दोनों ओर सड़क घूमती दिखाई देती है। वह फिल्म बहुत तीव्रगति से चलाई जाती है जिससे लगता है तुम तेजी से कार चला रहे हो। वहां घुमाव होते हैं और वस्तुओं के अवरोध भी और तुम्हें स्टीयरिंग व्हील से सभी चीजें ठीक—ठीक करनी होती है।

शिक्षक तुम्हें दिखा सकता है कि तुम ठीक कर रहे हो या गलत और तुम केवल कार में बैठे रहते हो। कार चल नहीं रही है, फिल्म में केवल सड़क चल रही है, केवल किनारों पर। तुम उससे सीख सकते हो। यह सुरक्षात्मक है। मेरा खयाल है कि किसी भी दिन तुम बस चटाई पर लेटे हुए होगे और तुम्हारे चारों ओर बहती नदी की फिल्म चल रही होगी और तुम तैरने के प्रशिक्षण। की शुरुआत कर सकते हो। यह सम्भव है। कम से कम एक प्रार्थामक जानकारी तो पाना सम्भव है।

लेकिन प्रेम? इसके लिए वहां कोई रास्ता दिखाई ही नहीं देता। बहुत से लोग फिल्में देखकर प्रेम के बारे में सीखने का प्रयास कर रहे हैं? बहुत से लोग प्रेम के बारे में जानने के लिए अश्लील साहित्य पढ़कर कोशिश कर रहे हैं। बहुत से लोग उपन्यास, कहानियां और दूसरों के प्रेम पत्र पढ़कर प्रेम के बारे में जानने की कोशिश करते हैं। हां, पर इस सभी से वहां एक खतरा है क्योंकि तुम प्रेम के बारे में बहुत सी बातें जान भी सकते हो, लेकिन प्रेम के बारे में जानना प्रेम को जानना नहीं है। वास्तव में तुम प्रेम के बारे में जितना अधिक जानते हो प्रेम को जानने की संभावना उतनी ही कम हो जाएगी। तुम अपनी जानकारी में ही खो जाओगे। तुम सोचना शुरू कर दोगे कि तुम जानते हो।

क्या तुमने यह निरीक्षण किया है कि फिल्मी अभिनेता जो लगभग प्रेम का व्यापार करते हैं हमेशा उन्हें जीवन में प्रेम की विफलता का सामना करना होता है। वे कभी सफल नहीं होते। यहां तक कि मर्लिन मनरो जैसी प्रसिद्ध अभिनेत्री भी आत्महत्या कर लेती है। वह अपनी सफलता के चरम—शिखर पर थी। प्रेसीडेन्ट केनेडी भी उससे प्रेम करते थे। पूरा संसार उसे प्रेम करता था। लेकिन फिर भी किसी तरह उसके पूरे जीवन में एक रिक्तता थी। इतनी सुंदर अभिनेत्री ने अपनी प्रसिद्धि के चरम शिखर पर पहुंच कर आत्महत्या कर ली।

हुआ क्या? अभिनेता और अभिनेत्रियां हमेशा अपने वास्तविक जीवन में प्रेम में क्यों विफल होते हैं? उन्होंने तो प्रेम के बारे में इतना अधिक सीखा है कि वे प्रेम के बारे में वास्तविक नहीं हो सकते। वे उन्हीं चरित्रों का अभिनय किये चले जा रहे है, वे वही पुराना खेल खेल जा रहे हैं।

रंगमंच पर तो सबकुछ ठीक है, क्योंकि वहां कोई भी कठिन परिस्थिति या उलझन में नहीं फंसता है। लेकिन उनके वास्तविक जीवन में एक रिक्तता है। इसीलिए वे केवल खाली मुद्राएं ही बनाए चले जा रहे हैं।

स्मरण रखें, तुम प्रेम के बारे में बहुत अधिक जान सकते हो लेकिन वह प्रेम को जानने में सहायता नहीं कर सकता। प्रेम को तो केवल प्रेम करने से ही जाना जा सकता है। इसका अर्थ है कि तुम्हें उसके बारे में कोई भी बात जाने बिना ही उसमें उतरना होगा। यही कारण है कि उसके लिए साहस की जरूरत होती है। तुम्हें बिना किसी नक्शो, बिना किसी मार्गदर्शक और बिना किसी टार्च के घोर अंधेरे में गतिशील होना होगा। तुम्हें बिना यह जाने हुए कि तुम अंधेरे में कहां किस ओर जा रहे हो, वह रास्ता ठीक है भी या नहीं, और बिना यह जाने हुए भी चलना ही होगा कि तुम अपना रास्ता खोज सकोगे अथवा किसी खाई या खन्दक में गिरकर हमेशा के लिए खो जाओगे।

इसी का नाम साहस है। बाउल बहुत साहसी होते हैं। वे कहते हैं—

केवल प्रेम की सुवास का गुणग्राही रसिक शिरोमणि ही : प्रेम की बहुत सी सुवास होती हैं.....प्रेम के बहुत से आयाम होते हैं, भावनाओं के विभिन्न रंग और प्रकार होते हैं। प्रेम अकेली कोई चीज नहीं है। वह बहुत समृद्ध है, अत्यन्त समृद्ध।

उसके बहुत से पहलू होते हैं। उसके अनेक चेहरे होते हैं। वह एक हीरे की तरह होता है। जिसके अनेक पहलू होते हैं और प्रत्येक पहलू उसे समृद्ध बनाता है।

केवल एक ' रसिक शिरोमणि ' ही—ऐसा व्यक्ति जिसने कई तरह से प्रेम किया है, जो प्रेम करते हुए साहस से जीया है, जिसने जोखिम और खतरे उठाए है और जिसे प्रेम की सभी सुवास का ज्ञान और अनुभव है...

क्या तुमने कभी इस बात पर गौर किया है? Love (लव) अर्थात् प्रेम सब। हुक अभिव्यक्त नहीं करता। अंग्रेजी में अकेला एक ही शब्द लव है। सभी प्राचीन "भाषाओं में प्रेम के लिए कई शब्द है क्योंकि वहां अनेक तरह के प्रेम हैं। इन अर्थों में अंग्रेजी भाषा निर्धन है। क्योंकि तुम एक कार से भी लव करते हो, तुम एक स्त्री गे भी ' लव ' करते हो, तुम अपने घर से भी ' लव ' करते हो। केवल एक शब्द। Love (लव)। तुम एक विशिष्ट ब्रांड की सिगरेट से भी ' लव ' करते हो। यह ' लव ' शब्द बहुत निर्धन है, क्योंकि प्रेम के बहुत से पहलू होते हैं। यह लव शब्द बहुत निर्धन है, क्योंकि प्रेम के बहुत से पहलू होते हैं।

जब तुम एक बच्चे से प्रेम करते हो, तो वह प्रेम किसी और तरह का होता है। वह उस प्रेम की तरह नहीं होता, जैसा प्रेम तुम एक स्त्री से करते हो। उसमें तीव्र लालसा या उत्कंठा नहीं होती। जब तुम अपनी मां से प्रेम करते हो, तो वह पूरी तरह भिन्न होता है। उसमें श्रद्धा होती है, एक गहरी कृतज्ञता होती है। लेकिन जब तुम स्त्री से प्रेम करते हो, तो वह पूरी तरह भिन्न तरह का प्रेम होता है। उसमें अत्यंत तीव्रता होती है, लगभग पागलपन जैसी—लेकिन यह वह प्रकार नहीं है जिस तरह तुम अपनी मां को प्रेम करते हो। तुम अपने मित्र को प्रेम करते हो, वह पूरी तरह भिन्न होता है। यह अनुराग होता है। लेकिन यह उस प्रकार का नहीं होता।

यदि तुम गौर करो तो तुम प्रेम की अभिव्यक्ति में बहुत से नाजुक अंतर, भावनाओं के उतार—चढ़ाव और उसके कई रंग पाओगे। अकेले एक शब्द लव या प्रेम में कई संसार छिपे हुए हैं। और प्रत्येक व्यक्ति को सभी दिशाओं में गति करते हुए प्रेम के बारे में जानना चाहिए।

यदि तुम प्रेम का कोई भी पहलू नहीं जानते हो। तो प्रेम के बारे में तुम्हारी समझ में बहुत कमी होगी। एक व्यक्ति को प्रेम के सभी पहलू और सभी सूक्ष्म अंतर को जानना चाहिए। यही अर्थ है बाउलों का जब वे गाते हैं—

केवल प्रेम की सुवास का गुणग्राही या रसिक शिरोमणि ही
प्रेमिका के हृदय की भाषा समझ सकता है।
दूसरों को तो उसका कोई संकेत तक नहीं मिलता।

हां! प्रेम की पूरी एक भाषा है। लव के अकेले एक शब्द से कुछ नहीं होने का, यह तो पूरी एक भाषा है। और एक बार तुम इसे जान लो, तो तुम आश्चर्यचकित हो जाओगे, तुम किसी का हाथ एक मित्र की तरह स्पर्श करते हो, तब उसका स्वाद और सुगंध भिन्न होगी। और तुम किसी का भी हाथ एक प्रेमी की भांति स्पर्श करते हो, तब उस स्पर्श का गंध और स्वाद जुदा होगा।

एक गुणग्राही रसिक शिरोमणि अपनी बंद आंखों से ही तुम्हारे हाथ को महसूस करता हुआ उन्हें देख सकता है और तुम्हारे प्रेम की भाषा समझ सकता है। क्या कभी तुमने इसका निरीक्षण नहीं किया है? तुम्हें तुरंत महसूस हो जाता है—जब कोई भी तुम्हें तीव्र वासना की दृष्टि से देखता है। जब कोई गहरे प्रेम के साथ देखता है, तुम उस अंतर को देख सकते हो। जब कोई सेह और अनुराग से देखता है, तब भी तुम उसका अंतर देख सकते हो। लेकिन यह सभी बहुत प्राथमिक चीजें हैं, क्योंकि करुणा के भी कई तल होते हैं।

जब वहां एक बुद्ध होता है, तो उसकी करुणा का पूरी तरह एक भिन्न गुण होता है। जब तुम करुणा करते हो, तो वह कुछ अधिक सहानुभूति जैसा होता है और करुणा से कम होता है। जब एक बुद्ध करुणा करता है तो उसमें सहानुभूति जैसा कुछ भी नहीं होता। वह शुद्ध होता है।

जब बुद्ध का प्रेम तुम पर बरसता है तो वह वैसे प्रेम जैसा कुछ भी नहीं होता, जिसे तुमने अभी तक जाना है। उसे केवल एक बुद्ध ही जान सकता है। उसमें कोई लालसा या वासना नहीं होती, वह बहुत शीतल होता है। वह गर्म नहीं होता—यह बात नहीं कि उसमें उष्णता नहीं होती, उसमें ऊष्मा तो होती है, लेकिन फिर भी वह शीतल होता है। यदि तुम किसी बुद्ध के निकट सान्निध्य में आते हो तो उसका सान्निध्य ही तुम्हें शांत और शीतल कर देता है।

यह तुम्हारी उत्तेजना को शांत कर अधिक संग्रह करने योग्य बनाने में तुम्हारी सहायता करता है। यह तुम्हारे अंदर कोई भी कोलाहल या उपद्रव उत्पन्न न कर सारे कोलाहल को विसर्जित कर देगा और यह एक शांतियुक्त शक्ति बन जाएगा। वह एक सूक्ष्म जलवायु के समान तुम्हें चारों ओर से घेर लेगा। और तुम्हें अद्‌भुत शांति देगा। वह एक लोरी की भांति होगा। तुम्हें नींद में जाने का अनुभव होना शुरू हो जाएगा। जैसे मानो तुम अपनी मां के वक्ष से चिपके हुए हो। इसमें कुछ चीज मां के प्रेम की तरह, कुछ चीज पिता के प्रेम की तरह, कुछ चीज प्रेमी के प्रेम की तरह और कुछ चीज बच्चे के प्रेम जैसी होगी। उसमें प्रत्येक सूक्ष्म और नाजुक भावों का स्पंदन और विभिन्न रंग होंगे। उसमें प्रेम के सभी आयाम एक महान लयबद्धता में होंगे।

जब तुम एक बुद्ध के सान्निध्य में आते हो, तो उसके प्रेम में सभी गंध, स्वाद और ध्वनियों का एक अनूठा आस्केस्ट्रा होता है।

कभी वह एक शिशु के समान दिखाई देता है, तुम उसके साथ खेल सकते। ने। उसकी मुस्कान अथवा उसका अस्तित्व मात्र ही तुम्हें ऐसी अनुभूति कराता है। कि जैसे वह एक शिशु हो— और तुम उसे मां जैसा प्यार दे सकती हो। कभी—कभी वह एक मां जैसा हो जाता है और तुम एक छोटे बच्चे के समान होते हो। कभी—कभी वह प्रेमी जैसा दिखाई देता है—तुम उसे, केवल उसे ही प्रेम कर सकते हो, पर किसी और को नहीं। लेकिन कभी—कभी वह केवल एक मित्र के समान होता है। वह सब कुछ एक साथ होता है।

यह सभी परिवर्तन तुम्हारे कारण ही घटित होते हैं। तुम्हारा दृष्टिकोण बदलता है। तुम्हारी दृष्टि बदलती है। तुम्हारी आंखें अभी भी स्पष्ट और थिर नहीं हैं। तुम उसे उसकी समग्रता में नहीं देख सकते। तुम उसे केवल परिधि पर देखते हो। एक बार में तुम एक पहलू देखते हो, दूसरी बार में तुम दूसरा पहलू देखते हो—क्योंकि तम उसे पूर्णता में नहीं समझ सकते।

प्रेम की गंध और स्वाद का गुणग्राहक रसिक शिरोमणि ही

प्रेमी के हृदय की भाषा को समझ सकता है।

दूसरों को उसका संकेत तक नहीं मिलता।

दूसरों को तो उसका संकेत तक मिलना सम्भव नहीं है। तुम्हें प्रेम के संसार में विचरण करना होगा और यह मत पूछो—कैसे? तुम्हें अंधेरे में भटकना होगा। और किसी नक्शो की मांग करना ही मत, क्योंकि उसके बाबत पूछना ही प्रेम के विरुद्ध होगा। यही कारण है कि विश्वास और श्रद्धा की जरूरत है। यदि तुम एक व्यक्ति पर विश्वास करते हो तो तुम कहते हो—" ठीक है यदि आप मुझे अंधेरे में भेज रहे हो तो मैं जाऊंगा। यदि आप मुझे मृत्यु का आलिंगन करने भेज रहे हैं, तो मैं जाऊंगा।"

प्रेम के पथ पर विश्वास ही सबसे अधिक आवश्यक चीज है। ध्यान के पथ पर तुम बिना समर्पण किए भी गतिशील हो सकते हो, लेकिन प्रेम के पथ पर बिना विश्वास और बिना समर्पण चलना होता ही नहीं, क्योंकि प्रेम ही पहला द्वार होता है।

प्रेम बहुत कुछ मांगता है, वह लगभग असम्भव की मांग करता है और पहले ही कदम पर। प्रेम का मार्ग सरल है लेकिन वह बहुत कुछ मांगता है। यही कारण है कि भले ही मार्ग आसान हो, बहुत कम लोग इस पर पर

यात्रा करते हैं। ध्यान का पथ बहुत मुश्किल है लेकिन उसकी इतनी अधिक मांग नहीं है। यही कारण है कि पथ कठिन और श्रमपूर्ण है, लेकिन फिर भी इस पथ पर बहुत से लोग यात्रा करते

जब तुम प्रेम के बारे में सुनते हो तो वह बहुत सरल दिखाई देता है, लेकिन उसकी मांग की ओर देखो। ध्यान के पथ पर जिसकी अंतिम कदम पर मांग की जाती है, प्रेम के पथ पर वही पहली मांग है।

ध्यानी से अपना अहंकार समर्पित करने को कहा जाता है और वह भी केवल अंतिम चरण पर जब वह समाधि से निर्विकल्प समाधि की ओर गतिशील होता है। जब वह मन से— अमन की ओर गति करता है। पहले वह अपने मन को शुद्ध करता चला जाता है, वह उसे अधिक से अधिक सूक्ष्म, परिष्कृत और सुसंस्कृत बनाए चला जाता है। तब केवल एक सूक्ष्म मात्रा रह जाती है। आखिरी चरण पर उसे उस सूक्ष्म मात्रा को भी छोड़ देना होता है।

प्रेम असम्भव की मांग करता है। वह कहता है तुम्हें पहले ही कदम पर अपना अहंकार छोड़ना होगा। वहां उसके परिष्कृत और युद्ध करने की कोई जरूरत नहीं और न उस पर कुछ कार्य करने की जरूरत है। क्योंकि किसी भी व्यक्ति को उसे छोडना होता है, इसलिए उसे साथ ले जाने की फिक्र क्यों? उसे यहीं और अभी गिरा दो।

ध्यान के पथ पर अंतिम चरण में ही श्रद्धा का जन्म होता है। श्रद्धा केवल तभी होती है जब तुम घर पहुंचने के निकट होते हो। जब पहुंच जाना इतना निकट लगता है कि तुम लगभग बस पहुंच ही जाते हो, और तुम द्वार भी देख सकते हो, और घर भी और तुम देख सकते हो, कि तुम पहुंच गए तभी श्रद्धा का जन्म होता है, तुम कहते हो— " हां!"

लेकिन प्रेम के पथ पर श्रद्धा की मांग पहले ही कदम पर होती है। प्रेम के पथ पर पर उठाया गया पहला कदम ध्यान के पथ पर उठाए गए अंतिम कदम के ही समान होता है। यदि तुम साहसी हो तो यह मार्ग बहुत सरल है। यदि तुम लगभग एक शैतान की तरह साहसी हो, यदि तुम लगभग पागल ही हो और बिना कोई शर्त हर जोखिम उठाने को तैयार हो, तो यह मार्ग बहुत आसान है—क्योंकि यह पहले कदम पर ही पूर्ण हो जाता है। पहला कदम ही आखिरी कदम बन जाता है। यहां पर तुम समर्पण करते हो और एक क्षण का छोटा सा भाग भी बीत नहीं पाता और तुम पहुंच जाते हो।

……एक प्रेमी के हृदय की भाषा का

दूसरों को उसका कोई संकेत तक नहीं मिलता।

जो लोग ध्यान के मार्ग के गहरे विद्वान हैं, जो बौद्धिक चिंतन, गहन विचार और एकाग्रता में लगे हैं, उन सभी को प्रेम के बारे में कोई इशारा तक नहीं मिलता। वे साधारण रूप से प्रेम की भाषा जानते ही नहीं।

नींबू का स्वाद फल के केंद्र में होता है।

और यहां तक कि विशेषज्ञ भी उस तक पहुंचने का

कोई सरल मार्ग नहीं जानते।

और बाउल लोग इसी प्रेम के ही सम्बंध में बातचीत करते हैं। वे इसके ही बारे में गीत गाते हैं, इसी के लिए नृत्य करते हैं और यही वस्तुत: तुम्हारे अस्तित्व के केंद्र में ही छिपा है। वह पहले ही से वहां है। तुम्हें अपने ही आंतरिक केंद्र तक पहुंचने के लिए वह मार्ग खोजना है। उस ' आधार—मानुष ' और ' सारभूत मनुष्य ' को खोजना है। वह कोई ऐसी वस्तु नहीं है, जिस तक पहुंचना है, वह तो पहले ही से वहां है। वह कोई ऐसी वस्तु नहीं है, जिसे पाना या अर्जित करना है, वह तो परमात्मा का उपहार है।

जिस क्षण तुम्हारा सृजन किया गया उसी क्षण वह मूल्यवान खजाना तुम्हें सौंपा गया क्योंकि अभी तक ऐसा कौन है, जिसने बिना प्रेम से जीते हुए उसे जाना हो? क्या तुम किसी भी ऐसे व्यक्ति को जानते हो, जो बिना श्वांस लिए हुए जीवित रहा हो। प्रेम आत्मा की श्वास—प्रश्वास है।

बाउल कहते हैं—जैसे बिना श्वास के शरीर जीवित नहीं रहता। आत्मा भी बिना प्रेम के अस्तित्व में नहीं रह सकती। इसलिए तुम उसे जान सकते हो, तुम उसे नहीं भी जान सकते हो, लेकिन निरंतर प्रेम ही घट रहा है। वहीं वहां धड़क रहा है, वही तुम्हारी धड़कन है। तुम्हें बस वहां तक पहुंचने का मार्ग खोजना है, क्योंकि तुम दूसरे खजानों की खोज में, जो तुम्हारे है नहीं, और न कभी तुम्हारे हो सकते हैं, भटक कर दूर चले गए हो।

यही कारण है कि एक बाउल एक भिखारी की तरह रहता है। वह कहता है— " मैं किसी दूसरे खजाने की खोज नहीं कर रहा हूं। मैं स्वयं अपने में ही बहुत अधिक हूं मेरा खजाना बहुत समृद्ध है। मैं पहले ही से एक सम्राट हूं। मुझे किसी दूसरे दूसरे साम्राज्य की कोई जरूरत नहीं मेरा साम्राज्य यहां पहले ही से है।" वह एक भिखारी की तरह रहता जरूर है, लेकिन यदि तुम किसी बाउल को निकट जाकर उसे देखोगे तो तुम्हें अनुभव होगा कि वह एक सम्राट की भांति रहता है। यहां तक कि सम्राट भी इतनी गरिमा और गौरव से नहीं रहते, सम्राट भी उतने परमानंद में नहीं रहते, जितना आनंदमग्न एक बाउल रहता है। उसका पूरा जीवन आनंद और आशीर्वाद से ओतप्रोत है, वह और कोई दूसरा स्वाद जानता ही नहीं। वह व्यग्र होना जानता ही नहीं और न वह किसी चिंता या दुख को जानता है। वह किसी अज्ञात आयाम में तीव्र अनुग्रह से रहता है। उसके पास कुछ भी न होते हुए भी सब कुछ होता है। किसी भी चीज पर अधिकार न होते हुए भी, उसका पूरे संसार पर अधिकार होता है।..... और वह गाता है।

आकाश का दर्पण मेरी आत्मा को प्रतिबिम्बित करता है।
ऐ सड़क पर घूमते बाउल। ओ रे मेरे पागल हृदय!
आकाश का दर्पण मेरी आत्मा को प्रतिबिम्बित करता है।
ओ रे मेरे मूर्च्छित हृदय!
तू मानुष भूमि को जोतने में असफल रहा है
उसे ऐसा जोत, जिससे वह स्वर्ण बालियों की फसल उगा सके,
जब तेरे जीवन में
मन और दृष्टि में एक लयबद्धता हो जाती है,
वे एक तान हो जाते हैं
तो लक्ष्य तेरी पहुंच के अंदर ही होता है।
फिर तू उस अरूप को अपनी नंगी आंखों से भी देख सकता है।

जब जीवन, मन और दृष्टि तीनों एक तान हो जाते हैं। तो अपने अंदर उतरने का वही रास्ता है। जब तुम्हारी इन तीनों के बीच एक सहमति बन जाती है, जब तुम्हारे अंदर कोई संघर्ष नहीं रह जाता, तो वही मार्ग है अन्दर उतरने का। यही कारण है कि बाउल हमेशा संघर्षहीन बने रहने पर सहज स्वाभाविक और स्वयं प्रवर्तित बनने पर जोर देते हैं। अपने अंदर कोई विभाजन निर्मित मत करो, अन्यथा तुम वहां पहुंचने में कभी सफल न हो सकोगे—क्योंकि इसके लिए एक विराट गुणवत्ता युक्त सहमति की आवश्यकता है। जब शरीर और आत्मा के बीच लयबद्धता हो जाती है, द्वार खुल जाता है। जब जीवन, मन और दृष्टि के मध्य सहमति बन जाती है, तो लक्ष्य तुम्हारी पहुंच में होता है। तुम उस अरूप को अपनी नग्न आंखों से देख सकते हो। बाउल गाता है:

इसे भूलो मत

कि तुम्हारे पिण्ड में ही सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड समाया है।

मैं परिपूर्ण हूं

तुम्हारी अपनी श्वांस की फूंक से ही तुम्हारी बांसुरी बज उठती है,

इससे अधिक मेरी चाह और क्या हो सकती है

कि ऐसी मधुर रागिनी, सांसों के सरगम से

मन की बांसुरी द्वारा बजती ही रहे

बजती ही रहे.....

एक बाउल प्रत्येक क्षण परिपूर्णता से जीते हुए स्वयं अपने साथ एक गहरे स्विकार भाव से जीता है। उसका गाना और नाचना और कुछ भी नहीं, बल्कि स्वयं के साथ सहमति में डूबने का एक प्रयास है।

क्या नृत्य करते हुए किसी व्यक्ति का तुमने निरीक्षण किया है? घटता क्या है? क्या तुमने कभी स्वयं नृत्य करते हुए अपना ही निरीक्षण किया है? होता क्या है? नृत्य सबसे अधिक गहरे में उतर जाने वाली चीज की तरह होता है, जिसमें कोई भी डूबकर लयबद्ध हो जाता जाता है। तुम्हारा शरीर तुम्हारा मन और तुम्हारी आत्मा नृत्य में सभी एक साथ एक तान हो जाती है।

वहां नृत्य सबसे बड़ी आध्यात्मिक चीजों में से एक है। यदि तुम वास्तव में नृत्य करते हो, तो तुम सोच नहीं सकते। यदि तुम वास्तव में नृत्य करते हो, तो शरीर का इतना गहराई से उसमें प्रयोग होता है कि पूरी ऊर्जा तरल बन जाती है। एक नर्त्तक रूप और थिरता खो देता है। एक नर्त्तक केवल गति या एक क्रिया बन जाता है। उसकी कोई पृथक सत्ता नहीं रह जाती। वह केवल एक गत्यात्मकता अथवा एक ऊर्जा बन जाता है वह पूरी तरह पिघल जाता है।

महान नर्त्तक आहिस्ते— आहिस्ते पिघलते हैं। और एक नर्त्तक अपने अहंकार को बचाये हुए नहीं रख सकता, क्योंकि यदि उसका अहंकार बना रहता है तो उसके नृत्य में एक असंगति और कठोरता होगी। एक सच्चे नर्त्तक का नृत्य में अहंकार विसर्जित हो जाता है। तब उसका द्वार खुलता है, क्योंकि तुम अस्तित्व के साथ एक इकाई बन जाते हो। अब आत्मा, मन और शरीर यह तीनों पृथक—पृथक नहीं रहते। यह तीनों एक साथ मिलकर पिघलकर एक दूसरे में समाहित होकर एक ही हो जाते हैं। विश्व के सबसे महान नर्त्तक निझित्सकी के बारे में कहा जाता है कि उसके नृत्य में वहां ऐसा एक क्षण आता था, जब वह ऊंची उछाल लेता था और फिर इतनी आहिस्ता— आहिस्ता जमीन पर वापस आता था और वैसा करना असम्भव जैसा कृत्य लगता था। जैसे मानो पृथ्वी ने उसे अपने गुरुत्वाकर्षण शक्ति से मुक्त कर दिया हो। वैज्ञानिक उसे देख कर उलझन में पड़ जाते थे। और कहते थे— " ऐसा होना तो नहीं चाहिए ऐसा हो भी नहीं सकता।" लेकिन ऐसा घट रहा था। कोई अन्य नर्त्तक ऐसा करने में आज तक समर्थ न हुआ।

और वास्तव में निझित्सकी पागल हो गया था, वह एक बाउल बन गया था। उसे इस तरह का पागलपन था, जिसे आज तक नहीं समझा जा सका, और क्योंकि वह पश्चिम में था इसलिए यह समझना और भी अधिक असम्भव बन गया कि उसके साथ आखिर क्या घटता था? उसे मनोचिकित्सालय में बल का प्रयोग करके देखा गया, उसे बिजली के झटके दिए गए इंसुलिन लगाया गया। यदि वह पूरब में हुआ होता, तो वह सबसे महान बाउल बन गया होता। उसका पागलपन कुछ ऐसा नहीं था, जिसका उपचार किए जाने की आवश्यकता थी, उसके पागलपन में कुछ ऐसा था जो उसके प्रति श्रद्धा उत्पन्न करता था।

पर वह ऐसा पागल किस तरह बनता था? वह अपने नृत्य के द्वारा ही पागल बनता था जब उससे पूछा गया कि उसे क्या हो जाता है तो उसने उत्तर दिया— " ऐसा केवल तभी घटता है, जब मैं नृत्य करते हुए पूरी

तरह खो जाता हूं इसलिए मैं इस बारे में कुछ भी कह नहीं सकता। यदि मैं बचा रहूं तब ऐसा घटता नहीं। मैंने ऐसा करने की कोशिश भी की। पर यदि ' मैं " वहां ' उपस्थित रहता हूं तो ऐसा कभी भी नहीं घटता। लेकिन ऐसे भी क्षण आते हैं, जब मैं पूरी तरह खो जाता हूं। तब वास्तव में मैं नहीं जानता कि कौन कैसे उछलता है और तब वैसा घटता है। मैं स्वयं आश्चर्यचकित रह जाता हूं। मेरे पास इसका कोई स्पष्टीकरण नहीं है। लेकिन यह केवल घटता तभी है जब मैं पूरी तरह खो जाता हूं।"

यह वही है जिसके बाबत बाउल कहते हैं—" जब तुम नृत्य करना शुरू करते हो और धीमे — धीमे गोल—गोल घूमते हुए पूरी तरह नृत्य में खोकर एक चक्रवात बन जाते हो तब तुम्हारे अंदर कोई चीज टूटती हैं जिससे अंदर के सारे अवरोध मिट जाते हैं—तुम अस्तित्व के साथ मिलकर एक इकाई बन जाते हो, और घटना घट जाती है। तुम्हारे अस्तित्व के चारों ओर एक महान परमानंद बरसने लगता है। तुम उन क्षणों में अस्तित्व के साथ लयबद्ध हो जाते हो। झेन कथाओं के अनुसार इन्हीं क्षणों को सतोरी कहा जाता है, लेकिन इस स्थिति तक पहुंचने के लिए बाउलों का मार्ग इससे बेहतर है। झेन को इसके लिए बारह वर्ष, पन्द्रह, बीस या तीस वर्षों तक साधना करनी होती है। यह बहुत धीमी विधि है। यह मार्ग है ध्यान का।

बाउल इस स्थिति को कहीं अधिक सरलता से उपलब्ध हो जाते हैं। ठीक जिस दिन तुम यह तय कर लेते हो, कि मैं अपने अहंकार को गिराने के लिए तैयार हूं—तुम परमात्मा को उपलब्ध हो जाते हो और परमात्मा तुम्हें उपलब्ध हो जाता है। अस्तित्वगत ' आधारमानुष ' अचानक तुम्हारे असार तत्व से जो व्यर्थ जीवन जैसा है, उदय होता है और एक रूपांतरण घटता है। और यह वह क्षण होता है, जब तुम प्रेम से परिपूर्ण होते हो, जब तुम प्रेम ही होते हो, जब तुम्हारी पूरी ऊर्जा ही प्रेम होती है। यही वह क्षण होता है जब तुम पूरे अस्तित्व से वरदान और आशीर्वाद ले सकते हो। जब तुम्हारे अंदर वहां कोई संघर्ष होता ही नहीं, तब तुम्हारे और अस्तित्व के मध्य कोई संघर्ष हो ही नहीं सकता।

इसका रहस्य यही है अपने अंदर के सारे संघर्ष गिरा दो और इसके साथ अस्तित्व के प्रति तुम्हारा संघर्ष भी मिट जाएगा, तुम उसके साथ एक हो जाओगे और साथ ही साथ तुम अपने अंदर भी एक हो जाओगे और बाहर अस्तित्व के प्रति —भी एक हो जाओगे।

वास्तव में उस तक पहुंचने का वहां कोई सरल मार्ग है ही नहीं, क्योंकि यहंकार को विसर्जित करना बहुत कठिन है... और वही अकेला एक मार्ग है।

शहद कमल पुष्प के अंदर ही छिपा हुआ है।

लेकिन एक भ्रमर उसे जानता है।

गुबरैले गोबर में रहते हुए

शहद के बारे में सोचते तक नहीं।

बाउल कहते हैं कि बुद्धिजीवी लोग गोबर में रहने वाले गुबरैले जैसे हैं। पंडित और विद्वान गोबर के गुबरैले हैं : वे कमल पुष्प तक जाने का मार्ग कभी पा न सकेंगे.....केवल शहद की मक्खी ही।

एक प्रेमी या एक भ्रमर ही बनो। क्योंकि भ्रमर शहद से प्रेम करता है और उस तक पहुंचने का मार्ग खोजता है। गोबर के गुबरैले यह मार्ग क्यों नहीं खोज सकते? वह अपना एक अलग मार्ग खोजता है वह गोबर तक जाने का मार्ग खोजता है, क्योंकि प्रेम करना ही एक मार्ग है।

तुम जिससे भी प्रेम करते हो।

तुम वही हो जाते हो।

और तुम्हारा प्रेम जैसा भी जिससे होता है।

तुम उसे पा ही लेते हो।

इसलिए अपने प्रेम के बारे में सजग बने रहो, अपनी कार को अपने घर को अथवा अपने बैंक एकाउंट से ही प्रेम मत करो, क्योंकि तुम उनके ही समान हो जाओगे। गोबर से प्रेम मत करो, अन्यथा तुम भी एक गुबरैला बन जाओगे।

यदि तुम्हें प्रेम ही करना है तब किसी ऐसी चीज से प्रेम करो, जो दिव्य हो, किसी ऐसी चीज से प्रेम करो जो वस्तुओं का रूपांतरण कर देती है, किसी ऐसी चीज से जो रूप और आकृति का अतिक्रमण कर दे, जिसके लिए तुम्हें अपनी आंखें आकाश की ओर ऊपर उठानी पड़े। हिमालय के सर्वोच शिखर गौरीशंकर से प्रेम करो। यदि तुम गोबर जैसी किसी चीज से प्रेम करते हो, तो तुम गोबर से होकर ही गुजरोगे क्योंकि हमें हमेशा वहीं से मार्ग खोजना होता है, जहां हम खड़े होते हैं, जब भी हमारा प्रेम गतिशील होता है हम उसके पीछे चलते हैं। भ्रमर कमल के पुष्प से प्रेम करता है। वह उसे खोज ही लेता है। प्रेम ही मार्ग है। कमल अपने को कितना भी छिपाकर रखे, भ्रमर उसे खोज ही लेता है।

सम्राट सोलोमन के सम्बन्ध में एक बहुत मधुर कहानी कही जाती है।

एक बार उसके दरबार में एक स्त्री आई। वह इथोपिया की रानी थी। वह सम्राट सोलोमन से प्रेम करना चाहती थी और उसकी प्रेयसी बनना चाहती थी। वह अत्यधिक सुंदर थी लेकिन वह संसार के सबसे बुद्धिमान व्यक्ति से ही प्रेम करना चाहती थी। इसलिए उसने सोलोमन की बुद्धि की परीक्षा लेने के लिए कहा, जैसा उसके बारे में कहा जाता है कि वह बहुत बुद्धिमान है, कुछ परीक्षण करने का प्रयास किया। उसने बहुत से प्रयोग किये उनमें से एक प्रयोग यह था.....वह अपने साथ कागज का बना एक फूल लाई थी, लेकिन वह इतनी सुंदरता से बनाया गया था, कि उसे देख कर यह जानना लगभग असम्भव था कि वह नकली था। वह सोलोमन के दरबार में दूर जाकर खड़ी हो गई और उसने कहा—" मेरे हाथ में जो फूल है क्या आप उतनी दूर बैठ यह बता सकते हैं कि वह असली है या नकली?"

सोलोमन ने कहा—'' प्रकाश काफी नहीं है वहां और मैं एक प्रौढ़ व्यक्ति हूं जो ठीक से देख नहीं सकता। कृपया उधर की खिड़कियां खोल दो।''

खिड़कियां खोल दी गईं। वह दो मिनट तक प्रतीक्षा करता रहा। फिर उसने उत्तर दिया—'' नहीं। यह फूल नकली है।''

तब उस स्त्री ने अपने थैले से दूसरा फूल निकाला और पूछा—'' इस फूल के बारे में क्या खयाल है?"

यह फूल ठीक पहले जैसा ही था, लेकिन असली था। सोलोमन ने इस फूल को देखने का बहाना किया और फिर कहा—'' हां! यह फूल असली है।''

वह स्त्री आश्चर्यचकित रह गई। पूरा दरबार विस्मय से भर गया। यह हुआ कैसे? उन्होंने सम्राट से पूछा—'' आप कैसे यह पहचान कर सके?"

उसने उत्तर दिया—'' बहुत आसान सी बात है। मैने खिड़कियां खुलवा दीं, जिससे मधुमक्खियां अंदर आ सकें। उन्हीं ने असली नकली की पहचान की। पहले फूल पर कोई मधुमक्खी नहीं आई लेकिन दूसरे फूल की ओर वे तुरंत दौड़ पड़ी।''

जब तुम किसी चीज या व्यक्ति को प्रेम करते हो तो वह कहां है, इस बारे में तुम्हारे पास एक अतीन्द्रिय ज्ञान होता है। तुम्हारा प्रेम ही तुम्हारी देखभाल करता है, वह तुम्हें निर्देशित करता है और वही तुम्हारा पथप्रदर्शक बनता है।

एक मधुमक्खी या भौंरा मीलों दूर से यह सूंघ सकते हैं कि पुष्प हैं किधर। इस बारे में मधुमक्खियों पर बहुत से प्रयोग किए गए बहुत सी खोजें की गई कि वे रास्ता कैसे खोज लेती हैं। फूल मीलों दूर खिले हों और मधुमक्खियां तुरंत आएंगी। उनमें लगभग एक अतीन्द्रिय ज्ञान होता है। और वह अतीन्द्रिय ज्ञान और कुछ भी नहीं, केवल प्रेम ही है।

तुम जिस वस्तु या व्यक्ति से प्रेम करते हो, तुम उस तक जाने का मार्ग खोज ० लोगे, इसलिए अपने प्रेम पात्र के बारे में बहुत सजग बन कर रहो, उससे ही तुम्हारी स्थिति तै होने जा रही है। तुम्हारा प्रेम ही तुम्हारी स्थिति है। प्रेम कुछ ऐसी चीज है, जो बहुत शानदार है, प्रेम अति विशिष्ट अस्तित्व की कोई चीज है, प्रेम में हाई चीज दिव्यता जैसी है और तुम अपना मार्ग खोज ही लोगे।

बाउल कहते हैं—

जब वहां कोई भय नहीं होता।

बस तो प्रेम ही यथेष्ट है।

वही तुम्हारी देखभाल करेगा।

और वही तुम्हारा पथ प्रदर्शित करेगा।

मधु तो कमल कोष के अंदर छिपा है।

लेकिन भौंरा या मधुमक्खी उसे भली भांति जानते हैं।

गुबरैले गोबर में ही रहते हैं

और मधु का उन्हें ख्याल तक नहीं आता।

समर्पण और विनम्रता ही ज्ञान का रहस्य है।

समर्पण और विनम्रता ही ज्ञान का रहस्य है, क्योंकि समर्पण ही प्रेम का रहस्य है और प्रेम ही केवल वह ज्ञान है जिसका कुछ मूल्य है।

आज बस इतना ही...।

दूसरा प्रवचन

चाँद की बांहों में

दिनांक 22 जून 1976; श्री ओशो आश्रम पूना।

प्रश्नसार:

प्रथम प्रश्न : प्यारे ओशो? आपके निकट बने रहने की मेरी हमेशा तीव्र कामना रहती थी लेकिन अब आपको देखते हुए मैं क्यों आश्चर्य और भय से भर जाती हूं।

ऐसा होना ही चाहिए। उस व्यक्ति को बरसते आशीर्वाद का अनुभव करना चाहिए क्योंकि आदरयुक्त भय ही केवल वह गुण है, जो मनुष्य को धार्मिक बना सकता है। केवल वही द्वार है। श्रद्धायुक्त भय, आश्चर्य के द्वारा ही तुम अपने चारों ओर दिव्यता का अनुभव करते हो। जिन आंखों में आदरयुक्त भय और आश्चर्य भरा हो वे परमात्मा को इंकार नहीं कर सकतीं, यह असम्भव है और वे लोग जो श्रद्धा, भय और आश्चर्य में डूबना भूल चुके हैं,

परमात्मा को स्वीकार नहीं कर सकते। प्रश्न परमात्मा का नहीं है। यह तुम तीव्र एवं गहन आश्चर्य के भाव में इतनी गहराई से डूबने में समर्थ हो जिससे विचार प्रक्रिया ही नहीं, प्रत्येक वस्तु थम जाये, अचानक समय रुक जाये, स्थान भी मिट जाए और तुम जहां हो, वहां उसे तुम रूप और आकृति न दे सको कि वह है क्या और उन क्षणों में श्रद्धा और आश्चर्य के साथ तुम उस अद्‌भुत उपस्थिति को महसूस कर सको।

लेकिन मनुष्य अत्यधिक आदर देने से भय से भर जाता है। यही कारण है कि पुराने दिनों की भाषा में आदरयुक्त भय एक धार्मिक और पवित्र शब्द था। अब जब तुम किसी भयानक चीज को देखते हो तुम कहते हो मुझे व्यग्रता का अनुभव हो रहा है। यहा तक कि शब्द भी अपना अर्थ खो देते हैं। लोग तब भी आदरयुक्त भय की स्थिति में होते थे जब वे प्रार्थना में गहरे डब जाते थे, जब वे दिव्यता के निकट सान्निध्य में होते थे जब उनके सम्मुख किसी दिव्यता का उद्घाटन होता था, तब वे आदरयुक्त भय की भावना से भर जाते थे। अब जब वे अति डरावने, बहुत बुरे और अति भयंकरतुम अनुभव से गुजरते हैं, तो वे कहते हैं मैं आदरयुक्त भय के अनुभव से गुजर रहा हूं। यह शब्द पूरी तरह भ्रष्ट हो चुका है। कभी इसका प्रयोग सर्वोच्च शिखर—अनुभव के लिए होता था। अब इसका प्रयोग निम्नवत नकारात्मक अनुभूति के किया जाता है। कभी इसका प्रयोग केवल विधायक अनुभव के लिए ही किया जाता था। ऐसा हुआ क्यों? इसके कुछ कारण है।

जब लोग किसी के प्रति अत्यधिक आदर का अनुभव करते है। वे इसके ही साथ—साथ भय का भी अनुभव करते हैं। यह स्वाभाविक है क्योंकि आदर देते हुए तुम उस अज्ञात, अनजाने, अजनबी और रहस्यमय के सम्पर्क में आते हो। तुम उसे अपने अधिकार में नहीं ले सकते, उस पर नियंत्रण नहीं रख सकते, उसमें हेर—फेर नहीं कर सकते। अचानक कुछ चीज या व्यक्ति जो तुमसे भी कहीं अधिक बड़ा और विराट है, तुम्हें चारों ओर से घेर लेता है और तुम्हें अपने खो जाने का अहसास होता है। भय उत्पन्न होता है और तुम भय से कांपने लगते हो।

सभी पुराने धर्म परमात्मा का वर्णन दोनों तरह से करते हैं— अत्यंत रहस्यमय और गढ़ और साथ ही एक भयंकर विस्फोटक शक्ति भी। रहस्यमय इसलिए क्योंकि वह एक रहस्य है, रहस्य भी ऐसा जो कभी भी सुलझ नहीं सकता और भयकंरतुम इसलिए क्योंकि कोई भी उसके सामने आते ही डर जाता है। ये दो अनुभव एक साथ होते हैं लेकिन तुम्हें पहले अनुभव की ओर अधिक ध्यान देना चाहिए अन्यथा मंदिर के द्वार तुम्हारे लिए

बंद हो जाएंगे। उसकी विधायकता पर अधिक जोर दो और यह सीखो कि अज्ञात के सान्निध्य में किसी ऐसी चीज की उपस्थिति में कैसे बना रहा जाए जिसमें तुम कोई हेर—फेर न कर सको, उस रहस्यमय अनुभूति की उपस्थिति में कैसे रहा जाए जिसके आगे तुम्हें समर्पण करना है, जहां केवल एक ही चीज की जा सकती है और वह है समर्पण, वही सब कुछ है और अन्य कुछ भी सम्भव नहीं है।

तुम्हें तो उसका अनुभव वरदान की भांति आनंदमय लगना चाहिए लेकिन तुम्हें श्रद्धायुक्त भय का अनुभव जरूर होता ही है और इसलिए यह प्रश्न है। तुम नकारात्मक भाग की ओर अधिक ध्यान देने के लिए जो उसकी छाया भर है, बाध्य हो जाते हो। यदि तुम वैसा करते हो, तो धीमे— धीमे तुम अपने आपको चारों ओर से बंद कर लोगे।

तब तुम्हें आदरयुका भय का अनुभव नहीं होगा और यदि तुम ऐसा अनुभव नहीं कर सकते तो तुम परमात्मा का भी अनुभव नहीं कर सकते।

वे कहते हैं कि दर्शनशास्त्र का जन्म आश्चर्य से होता है। और धर्म? धर्म आदरपूर्ण भाव से उत्पन्न होता है। और आश्चर्य तथा आदरयुक्त भय के बीच क्या अंतर है?

जब तुम आश्चर्य से भर जाते हो, तुम उसका संकेत खोजने की कोशिश करते हो कि कैसे उस आश्चर्य को समाप्त किया जाए। तुम उस बारे में सोचने की कोशिश करते हुए उसे साकार करके देखना चाहते हो कि वह है क्या? आश्चर्य एक प्रश्नचिह्न निर्मित करता है और तुम उसके साथ संघर्ष करना शुरू कर देते हो इसीलिए दर्शनशास्त्र आश्चर्य के साथ एक संघर्ष है। वह आश्चर्य से जन्मता है और तब उस आश्चर्य को समाप्त करने की कोशिश करता है, जिसकी अभिव्यक्ति नहीं की जा सकती, जो अस्पष्ट है, जिसका स्पष्टीकरण खोजा जाता है, जिससे आश्चर्य समाप्त हो जाए। आश्चर्य को एक बीमारी (dis—ease) अथवा एक जटिल तनाव के रूप में महसूस किया जाता है। इसलिए दार्शनिक निरंतर ऐसे साधन और तरीके खोजने की कोशिश करते हैं, जिससे वह फिर सरल हो जाए। वे कोई उत्तर खोजने की कोशिश कर रहे हैं, जिससे प्रश्न गिर सके, जिससे रहस्य फिर रहस्य न रह जाए। दर्शनशास्त्र आश्चर्य के विरुद्ध है।

धर्म श्रद्धायुक्त भय से जन्मता है। श्रद्धायुक्त भय भी एक भिन्न गुण का आश्चर्य ही है, लेकिन कुछ ऐसा, वस्तुत: वह गहन प्रेम, गहरी कृतज्ञता और विनम्रता उत्पन्न करता है। वह तुम्हारी चेतना में एक ऐसी स्थिति निर्मित करता है कि तुम उसके सामने झुकना चाहते हो। यह प्रश्न हल करने के लिए नहीं है, बल्कि एक गहन सम्मान प्रकट करने के लिए है।

तुम घुटनों के बल झुककर प्रार्थना करना चाहोगे। तुम उसके बारे में सोचना पसंद नहीं करोगे, क्योंकि वह उतना विराट है कि उसके बारे में सोचना ही असम्भव है। तुम तो प्रार्थना करना चाहोगे, तुम तो उसके साथ गहन प्रेम में डूबना चाहोगे।

आश्चर्य श्रद्धायुक्त भय बन जाता है जब वह तुम्हारे अंदर प्रश्नचिह्न निर्मित नहीं करता। दर्शनशास्त्र और धर्म के मध्य यही अंतर है और तब दोनों के मार्ग दो पूरी तरह विरोधी दिशाओं में चले जाते हैं एक दार्शनिक विचार और विचार किए ही चला जाता है और एक धार्मिक व्यक्ति सोच—विचार छोड़ता चला जाता है।

परमात्मा तुम्हारे अंदर श्रद्धायुक्त भय के द्वारा ही प्रविष्ट होता है। मैं हमेशा यहां बने रहने की तीव्र कामना हूं लेकिन न जाने क्यों तुम्हें देखते ही मैं श्रद्धायुक्त, भय और आश्चर्य से भर जाता हूं।

उसे इसी तरह का होना भी चाहिए। यदि तुम श्रद्धायुक्त, भय या आश्चर्य के भाव से नहीं भरते हो, तो तुम्हारा मेरे पास आना ही व्यर्थ है। यदि तुम प्रार्थनापूर्ण नहीं होते, यदि तुम मेरे सामने झुकने जैसे भाव का

अनुभव नहीं करते, यदि तुममें समर्पण करने का भाव उत्पन्न नहीं होता, तो तुम मेरे पास आये ही नहीं। शारीरिक रूप से तुम यहां हो सकते हो, आध्यात्मिक रूप से हम लोग एक दूसरे से काफी दूर है।

यह कई बार घटता है। प्रत्येक दिन मैं बहुत से ऐसे लोगों का निरीक्षण करता हूं जिनके पास अभी भी जीवंत हृदय है और जिन्हें श्रद्धायुक्त भय का अनुभव हो रहा है। लेकिन वे उसको दबाना शुरू कर देते हैं। वह ऐसा अनुभव करते हैं जैसे मानो वह एक तरह की बीमारी हो और उन्हें उसे प्रकट नहीं होने देना है। यदि वे चिल्लाना या रोना चाहते हैं तो अपने आंसू रोक लेते हैं। वे पूछने के लिए अनेक प्रश्नों के साथ आते हैं कि अचानक वे सभी प्रश्न वहां नहीं होते, क्योंकि श्रद्धायुक्तभय की चित्तवृत्ति में प्रश्न गिर जाते हैं। वे अपने प्रश्न ही भूल जाते हैं। और वे इस बारे में चिंतित हो जाते हैं कि उनके प्रश्न कहां चले गए और वे अंदर उत्तेजित, होकर कुछ ऐसी चीज खोजने लगते हैं, जो उन्हें बांध सके, जिससे श्रद्धायुक्त भय उन्हें अपने शक्ति पाश में न बांध ले। कभी—कभी वे बेवकूफी भरे प्रश्न पूछते हैं, बस केवल पूछने के लिए ही जिससे कोई भी उनके प्रति सजग न हो सके कि उन्होंने अपनी आधारभूमि ही खो दी है और वे किसी गहरे गढ़े में गिर पड़े हैं और वे उसका प्रतिरोध करने में उतने सक्षम नहीं हैं और तब वे मुझसे चूक जाते हैं। तब वे मेरे पास आते जरूर हैं। लेकिन फिर भी वे पास आते ही नहीं।

मेरे पास आने का अर्थ है—तैयार रहना। यह सवाल प्रश्न पूछने का नहीं है। वास्तव में वहां इसकी जरूरत है भी नहीं, बस केवल मेरे निकट बने रहने की बात है, मेरे साथ एक ही पंक्ति में खड़े होने की बात है। थोड़ी देर मेरे साथ सांस लो कुछ देर के लिए अपने हृदय की धड़कनें मेरी धड़कनों के साथ धड़कने दो, जिससे तुम मेरी आंखों द्वारा देख सको, जिससे तुम उसका थोड़ा सा स्वाद ले सको, जिसने मुझे पूरी तरह अपने अधिकार में ले रखा है और मैं आवेशित हूं।

लेकिन भय उठ खड़ा होगा, क्योंकि जब भी कोई चीज तुम्हारे मन से बड़ी होती है, तो तुम्हारा मन कहता है—'' आगे मत बढ़ो, वहां खतरा हो सकता है। तुम शायद वापस लौटने में समर्थ न हो सको।'' और मन यह भी कहता है—'' यह तो लगभग पागल है। अपनी बुद्धि पर काबू रखो, अपने सोचने की क्षमता बनाये रखो, तर्क—वितर्क करना भूलो मत। तुम करने क्या जा रहे हो?"

और तुम सभी को तर्क में प्रशिक्षित किया गया है। लेकिन किसी को भी किसी भी तरह से प्रेम करना नहीं सिखाया गया है। यह श्रद्धायुक्त भय की भावना केवल तुम्हारे हृदय पर किसी चीज का जोर देने की कोशिश करना है, जिसको समाज द्वारा और अन्य शक्तियों द्वारा और तुम्हारे मन द्वारा दबाया गया है। अथवा अपने अधिकार में लेने की कोशिश की गई है।

मन और कुछ भी नहीं, बल्कि तुम्हारे अंदर बैठा समाज है, अथवा वे पुरोहित और राजनीतिक लोग जो सत्ता और शक्ति के पीछे पागल हैं, वे ही तुम्हारा मन बन गए हैं। वे ही अंदर से तुम्हें नियंत्रित करने का प्रयास करते हैं। जब श्रद्धायुक्त भय और आश्चर्य का उदय होता है, तुम जैसे एक अनंत सागर में गिर जाते हो, बिना यह जाने हुए कि अब आगे क्या होने जा रहा है? उन क्षणों में तुम भाग जाना चाहते हो, तुम अपनी आंखें बंद कर लेते हो, तुम किसी तरह अपने पर नियंत्रण बनाए रखते हो, क्योंकि तुम्हें हमेशा यही बताया गया है कि नियंत्रण रखने का बहुत अधिक मूल्य है। इसीलिए प्रत्येक जगह तुम नियंत्रण किए चले जाते हो। तुम विश्वास नहीं कर सकते क्योंकि विश्वास करने का अर्थ है कि स्वयं पर से तुम्हारा नियंत्रण हट कर किसी अन्य के हाथों में चले जाना। तुम समर्पण नहीं कर सकते तुम प्रेम नहीं कर सकते और तुम प्रार्थना नहीं कर सकते। यहां तक कि जो लोग प्रेम कर रहे हैं, वे भी समर्पण नहीं कर सकते, वे गहरे में नियंत्रण किए चले जा रहे हैं। इसीलिए हम

वास्तविक शिखर से चूक जाते हैं। वे प्रेम करने की विधियां सिखा रहे हैं। वे बहुत चतुरता से प्रेम करने वाले बन सकते हैं। लेकिन वे प्रेम से चूक जाते हैं। क्योंकि तुम्हारे साथ उसे कुछ करना ही नहीं है।

प्रेम तो तभी घटता है जब तुम वहां नहीं होते। प्रेम तो तभी घटता है, जब तुम अस्तित्व को सब कुछ समर्पित कर देते हो। तब वहां एक परमानंद के शिखर का अनुभव होता है। तब तुम अपने अस्तित्व के चरम शिखर पर पहुंचते हो, और तुम पूरे अस्तित्व को जैसे हिमालय के सर्वोच्च शिखर गौरीशंकर से देखते हो।

और तब एक पूरी तरह भिन्न हृदय दिखाई देता है और वह देखना ही तुम्हारे जीवन को रूपांतरित कर देता है।

इसलिए जब तुम मेरे पास आओ तो अपने पर नियंत्रण खोने के लिए तैयार हो जाओ। यही तुम्हारे यहां आने का पूरा उद्देश्य भी है, अन्यथा यहां आओ ही मत। यदि तुम कोई चीज पूछ रहे हो तो अपनी जानकारी या ज्ञान से मत पूछो। तुम्हारा पूछना भी तुम्हारे प्रेम से ही उद्‌भूत होना चाहिए। तुम्हारा पूछना इसलिए होना चाहिए कि तुम कैसे रहस्य में गहरे उतर सकी, न कि उस रहस्य को समाप्त करने के लिए न कि उसे स्पष्ट करने के लिए बल्कि इसलिए कि कैसे अव्याख्य शाश्वतता में गहरे से गहरे उतरा जाये, क्योंकि यह वही है जिसे परमात्मा कहते हैं।

इसलिए मेरे साथ परमात्मा का थोड़ा सा स्वाद लो। मुझे एक द्वार बनने की अनुमति दो। परमात्मा से सीधे साक्षात्कार करना तुम्हारे लिए कठिन होगा। वह अपनी परिपूर्णता में इतना अधिक प्रकाशमय होगा कि तुम्हारी आंखें चुंधिया जायेंगी। तुम सूर्य की ओर प्रत्यक्ष देख ही नहीं सकते, तुम्हारी दृष्टि जाती रहेगी। एक सद्‌गुरु का यही अर्थ होता है वह तुम्हें उस मात्रा में परमात्मा के दर्शन कराता है, जिसे तुम बरदाश्त कर सकी। वह तुम्हें परमात्मा होम्योपैथिक दवा की तरह देता है, और धीमे— धीमे उससे अधिक शक्ति की डोज देता जाता है। तुम उसे अवशोषित करने में जितने समर्थ होते हो, वह उतनी ही ऊंची शक्ति की डोज देता है। एक दिन जब तुम प्रत्यक्ष रूप से सूर्य का सामना करने में समर्थ हो जाते हो, वह बस गायब हो जाता है। फिर वह तुम्हारे और परमात्मा के बीच रहता ही नहीं।

यह ठीक वैसा ही है, जैसे जब तुम तैरना शुरू करते हो। पहले तुम बस किनारे पर उथले पानी में सीखते हो। यह स्वाभाविक व्यावहारिक और बुद्धिमत्तापूर्ण है। तब तुम ज्यों—ज्यों अधिक से अधिक समर्थ होते हो, तुम नदी के गहरे भाग की ओर बढना शुरू कर देते हो। और तैयार होकर एक दिन तुम सागर में जाने के लिए समर्थ हो जाते हो।

जब तुम मेरे पास आते हो, तो तुम अपनी उपस्थिति पर जोर देने के बजाए वस्तुत वहां मुझे बने रहने की अनुमति दो। तुम पिघल कर मिट ही जाओ, और वहां मुझे बने रहने दो। तुम अपनी सभी खिड़कियां और दरवाजे खुले रखो। तुम अपने द्वारा मुझे गुजरने की अनुमति दो। इस तरह से बहुत कुछ घटेगा। तुम्हारे प्रश्नों से कुछ भी घटने वाला नहीं, क्योंकि वे और कुछ भी नहीं, केवल मन की उत्तेजना मात्र हैं। लेकिन मैं हमेशा देखता हूं कि जब लोग श्रद्धायुक्त भय का अनुभव करने लगते हैं, वे स्वयं अपने आप की सुरक्षा करना शुरू कर देते हैं। तब वे पूरे उद्देश्य को ही अनकिया कर देते हैं। अपना बचाव या सुरक्षा मत करो। यदि तुम अपनी सुरक्षा करोगे तो मैं तुम्हारी सहायता किस प्रकार कर सकूंगा?

वहां कोई दूसरा रास्ता है ही नहीं—मैं तुम्हारे विरुद्ध ही तुम्हारी सहायता नहीं कर सकता। मैं केवल तुमसे गहरा सहयोग मिलने पर ही तुम्हारी सहायता कर सकता हूं। यदि तुम उसमें शिरकत करते हो, केवल तभी यात्रा शुरू की जा सकती है।

लेकिन मैंने अनुभव किया है कि कई बार बहुत से लोग अंतर्यात्रा पर चलना चाहते हैं, लेकिन जब वह शुरू होती है, तो वे लोग उस जगह से, जहां वे खड़े हुए हैं, बंधना शुरू कर देते हैं, और अपनी जमीन को खोना नहीं चाहते। लेकिन तब यात्रा कैसे शुरू हो सकती है। जो कुछ तुम्हारे पास नहीं है और जो कुछ तुम्हें प्राप्त करना है, तो उसके लिए तुम्हें अपने आप को खोना ही होगा।

जीसस ने कहा है—'' जो लोग मेरा अनुसरण करना चाहते हैं, उन्हें प्रत्येक चीज से स्वयं अपने आप से भी इन्कार करना होगा। एक लंबा समय लगेगा, सद्गुरु और शिष्य के मध्य जो कुछ ठीक इसी क्षण घट सकता है। वह अधिक समय इसलिए लेता है क्योंकि शिष्य और कई तरह से अपने आपको बचाए चले जाते हैं और कई तरह से अपने को ठीक होना सिद्ध करते हैं।''

बाउल गाते हैं—

देख.....
उसके लिए अपने ही देह के मंदिर में
जरा झांक कर देखा।
बोलते हुए गाते हुए और धुनें गुनगुनाते हुए
वह लुका—छिपी के खेल का विशेषज्ञ है।
कोई भी उसे देख नहीं सकता।
ओ मेरे हृदय!
उसे पकड़ने की कोशिश मत कर।
तू पूरी श्रद्धा से
उसको पाने की केवल आशा कर सकता है।

जब तुम गहन श्रद्धा युक्त भाव और आश्चर्य में डूबे हो और यदि तुम्हारा इसी स्थिति में बने रहने का साहस है तो शीघ्र ही तुम्हारी चेतना एक सौ अस्सी डिग्री का घुमाव लेगी। वहां तभी वह घुमाव होगा यदि तुम इस श्रद्धायुक्त भय और आश्चर्य के भाव से अलग हुए बिना अपने विचारों, अपनी सुरक्षा और अपनी बात तर्क से सही सिद्ध करने की जिद से इस भावस्थिति को प्रदूषित किये बिना परिपूर्ण शुद्ध होकर कुछ समय इस बारे में बिना कुछ भी किए हुए बस परिपूर्णता से बने ही रहो— तो वहां एक मोड़ आयेगा।

यह वही है जिसे ईसाई धर्मातंरण कहते हैं। इसका यह अर्थ नहीं होता कि एक हिंदू ईसाई बन जाता है, यह तो एक मूर्खता है। इसका यह भी अर्थ नहीं कि एक ईसाई हिंदू बन जाता है। धर्म्मातरण का अर्थ है— तुम्हारी चेतना में एक महान मोड़ आना, घूमकर एक दिशा परिवर्तन होना। रूपांतरण हो जाना।

यदि तुम कुछ क्षण मेरे साथ बने रहो, बस केवल शुद्ध श्रद्धायुक्त आश्चर्य भाव से उस भावदशा को किसी भी तरह से भ्रष्ट न करते हुए कोई भी कैसी भी कुछ भी चीज न करते हुए केवल उसी स्थिति में बने हुए उसे वैसा ही बने रहने की अनुमति देते हुए—तो वहां एक सौ डिग्री का घुमाव, परिवर्तन और धर्मातंरण होगा ही। अचानक मैं गायब हो जाऊंगा, विसर्जित हो जाऊंगा और तुम अपने ही अस्तित्व के आमने—सामने होंगे। परमात्मा तुम्हारे ही अंदर छिप रहा है।

देखो.....
उसके लिए अपने ही देह के मंदिर में देखो।
संसार के स्वामी के रूप में
वह वहीं विराजमान है।

बोलते, गाते और धुनें गुनगुनाते हुए

वह लुकाछिपी के खेल का परम विशेषज्ञ है।

उसे कोई भी देख नहीं सकता.....

क्योंकि उसे देखने का प्रयास ही तुम्हें उससे पृथक कर देता है, उसे देखने का प्रयास ही उसे एक वस्तु बना देता है। और वह कोई वस्तु या पदार्थ नहीं है, वह तुम्हारी ही अपनी वैयक्तिकता है। अस्तित्व से घटाकर उसे एक वस्तु नहीं बनाया जा सकता। वह है ही नहीं। वह कोई खोज नहीं है, वह खोजने वाला है। वह तुम्हारी ही चेतना है, तुम्हारी शुद्धतुम चेतना। वह तुम्हारा ही ?—अन्तर्आकाश है। तुम उसे देख नहीं सकते, क्योंकि वह तुम्हारे ही अन्दर छिपा है।

वहां एक सुंदर बोध कथा है...

जब परमात्मा ने संसार बनाया, उसने इसी पृथ्वी पर रहना शुरू किया। लेकिन उसके लिए वहां बहुत बड़ी मुसीबत हो गई। शिकायतों और हर वक्त की शिकायतों के कारण वह ठीक से सो भी नहीं पाता था और सारे वह लोगों की समस्याओं को हल किया करता था और रात में भी वे उसका दरवाजा खटखटाते रहते थे और वहां संसार की हालत सुधारने की बाबत बहुत सारे सुझान्त्र भी थे जिन्हें प्रारंभ करते हुए ही वह लगभग पागल जैसा हो गया। ऐसा लगता था जैसे मानो कहीं भी कुछ भी ठीक न हो रहा हो—लाखों सलाह देने वाले थे मगर वह सभी की सुनते—सुनते थक गया। यदि वह एक मनुष्य की सलाह सुनता तो एक हजार एक लोग वहां उसका विरोध करने वाले थे। वहां कोई भी काम करना बहुत मुश्किल था। उसने अपने मंत्रियों और सलाहकारों से पूछा—'' आखिर किया क्या जाये? मैं किसी जगह जाकर छिप जाना चाहता हूं।''

किसी ने सुझाव दिया—'' आप गौरी शंकर शिखर पर कों नहीं चले जाते? अभी तक वहां कोई भी नहीं पहुंच सका है। आप वहां अपना घर बना सकते हैं।''

उसने कहा— " तुम भविष्य नहीं जानते। बस कुछ ही मिनटों बाद... " परमात्मा के लिए वे कुछ मिनट ही थे, हमारी शताब्दिया उसके लिए क्षण मात्र हैं, — 'बस कुछ ही मिनटों के बाद यह मनुष्य हिलेरी वहां पहनेगा और तब फिर वही मुसीबत फिर से शुरू हो जाएगी।''

और फिर किसी ने कहा—'' चांद पर क्यों नहीं?" उसने कहा— " वह भी कुछ ही मिनटों का सवाल है। शीघ्र ही मनुष्य चंद्रमा पर चहलकदमी करेगा। इससे किसी भी चीज का समाधान न निकलेगा। यह तो बस आधिक से अधिक स्थिति को थोड़ा स्थगित करने जैसा होगा।''

तब बूढ़ा मंत्री उसके निकट आया और उसके कानों में कुछ कहा और वह चांद की बांहों में? बहुत खुश होकर बोला—'' ठीक! यही समाधान सबसे अधिक पूर्ण दिखाई देता है।''

उस के व्यक्ति ने सुझाव दिया था—'' आप स्वयं मनुष्य के हृदय के अंदर जाकर छिप जाइए। वहां वह आपको न खोज सकेगा। और यदि वह आपको वहां खोज भी लेता है तो वह मनुष्य इतना अधिक प्रज्ञावान होना चाहिए कि वह आपके लिए कोई मुसीबत खड़ी न करेगा। हिलेरी मुसीबतें उत्पन्न कर सकता है, लेकिन आपको अपने अंदर खोज लेने वाले बुद्ध ऐसा नहीं कर सकते, क्योंकि जिस समय वे आपको अपने अंदर खोज लेंगे, वे लोग भी लगभग आपके ही समान हो जाएंगे। उनकी न तो कोई शिकायतें होगी, न उनके कोई प्रश्न होंगे। वे आप जैसे ही शांत और मौन होगे और उतने ही गहरे होंगे जितने आप स्वयं हैं। जिस समय वे अपने अंदर आप तक पहुंचेगे वे पूरी तरह रूपांतरित हो चुके होंगे। उनकी अंतर्यात्रा एक परिवर्तन ला देगी उनमें।

परमात्मा तुम्हारे ही अंदर छिपा है, लेकिन तुम वहां परमात्मा को प्रत्यक्ष रूप से नहीं देख सकते, क्योंकि तुम यह नहीं जानते कि वहां कैसे पहुंचा जाये।

एक विधि या एक रास्ता तो ध्यान है तुम अपने विचारों को छोड़ना शुरू करो। एक दिन जब कोई भी विचार न होगा, न उसकी कोई तरंग होगी और तुम अमन में होंगे, तुम वहां पहुंच जाओगे। धर्मातंरण घट जाएगा। और दूसरा रास्ता है प्रार्थना। वह सन्यासिन जिसने यह प्रश्न पूछा है—रामाभारती है। उसका पथ, प्रेम और प्रार्थना बनने जा रहा है। यही कारण है कि वह इतना अधिक श्रद्धा से भरे आश्चर्य भाव का अनुभव कर रही है। जब वह मेरे निकट आती है तो मैंने उसे लगभग कांपते हुए देखा है, जैसे मानो कोई अज्ञात हवा उससे होकर गुजर रही है। मैंने उसके हृदय को एक अज्ञात लय में धड़कते हुए देखा है। प्रेम ही उसका मार्ग है। उसे इसी श्रद्धायुक्त भय और आश्चर्य के गुण का जो बहुत दुर्लभ होता है, प्रयोग कर लेना है। बहुत कम लोगों को इसकी अनुभूति होती है। यह चीज संसार से लुप्त होती जा रही है।

लोग बहुत अधिक बुद्धि प्रधान हो गए हैं। अधिकतर लोग अपने सिर या बुद्धि के जाल में ही अटके रहते हैं। वे लोग हृदय की भाषा भूल ही गए हैं। श्रद्धायुक्त भय और आश्चर्य उसी भाषा की लिपि है। इसका अनुभव करो, उसे अनुमति दो कि वह तुम्हें अपने अधिकार में लेकर तुम्हें आवेशित कर दे। यह तुम्हें अपने गहनतुम मंदिर में, जो अपना ही अस्तित्व है, ले जायेगी। वहां एक संवाद घटित होगा और उसी क्षण में तुम्हारी चेतना में एक महान मोड़ आयेगा। अचानक वह दृष्टि मेरी ओर न देखते हुए स्वयं को ही देखना शुरू कर देगी। परमात्मा को जानने का केवल यही मार्ग है।

दूसरा प्रश्न :

प्यारे ओशो! जब आप एक ज़ेन सदगुरु की भांति बोलते हुए हमें बता रहे थे कि हमें अपना मार्ग चुनकर उसी से बंधे रहना चाहिए? तब मैने महसूस किया कि निश्चित रूप से मेरा मार्ग बुद्धिप्रधान ध्यान का है? क्योंकि मैं कभी भी किसी क?ए समर्पण करने में समर्थ न हो सकूगी लेकिन अब बाउल रहस्यदर्शियों पर आपका एक प्रवचन सुनने के बाद मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं किसी के प्रेम में बीमार कॉलेज की कोई छोकरी बन गई हूं पथ कैसे चुना जाए तब आपका कोई मार्ग है ही नहीं कैसे अपना ही दिया स्वयं बना जाये, जब आपके प्रकाश से प्रत्येक सुबह मैं चकाचौधं से भर जाती हूं।

मैं तुम्हारी कठिनाई समझ सकता हूं लेकिन यह जानबूझकर निर्मित की जा रही है। मैं तुम्हें एक मार्ग से दूसरे मार्ग पर कई बार फेंकूंगा, क्योंकि तुम्हारे लिए केवल वही एक रास्ता है, जिससे तुम खोज सको कि तुम्हारा मार्ग कौन सा है। कभी—कभी मैं तुम्हें प्रेम और प्रार्थना की ओर जाने के लिए विवश करूंगा। तुम्हें दोनों के ही स्वाद की जरूरत होगी, केवल तभी तुम इस बारे में निर्णय ले सकोगी, अन्यथा नहीं। केवल मुझे सुनकर ही तुम कोई निर्णय नहीं कर सकती क्योंकि जब तुम मुझे सुन रही हो, तुम मुझसे बहुत अधिक प्रभावित हो जाती हो।

इसलिए यह मेरी कार्यविधि का एक भाग है, एक मैं ध्यान पर बोलता ' और दूसरे दिन मैं प्रेम पर बोलता हूं। मैं तुम्हें दोनों ही मार्गों का स्वाद देना चाहता हूं, क्योंकि वह स्वाद ही निर्णय होगा। केवल वही तै करेगा तुम्हारा कौन सा मार्ग है तुम्हें कहां वास्तव में बहने का अनुभव होता है, तुम्हें कहां वास्तव में स्वाभाविकता का अनुभव होता है। कहां चीजें स्वत' आने आप घटती हैं, 'गो तनों उनके जोर नहीं लगाना पड़ता वही तुम्हारा मार्ग है। लेकिन उसे जानौगी कैसे? जब तुम मुझे सुनती हो, जब मैं प्रेम के बारे में चर्चा कर रहा होता है। तुम उससे प्रभावित हो जाती हो, यह एक तरह का सम्मोहन है। जब मैं प्रेम के बारे मैं गुनगुनाने और गाने लगता हूं तो तुम उससे सम्मोहित हो जाओगी। तुम सोचने लगोगी—'' हां! यही मेरा पथ है।'' लेकिन यह तो बस मेरे द्वारा निर्मित एक लहर है। वह तुम्हारी लहर भी हो सकती है। वह तुम्हारी लहर नहीं भी हो सकती है। और तुम उसे जान नहीं सकती।

और तुम्हारा पूरा जीवन दूसरों के द्वारा इतना अधिक आदतों और अनुशासन के सांचे में ढल चुका है कि तुम दूसरों से बहुत शीघ्र प्रभावित हो जाती हो। तुम तुरंत बाहर से विचार और प्रभाव ले लेती हो। यदि तुम मुझे ध्यान पर बोलते हुए सुनती हो, तुम उससे प्रभावित हो जाती हो। यही कारण है कि साधारण सद्गुरु वह सब कुछ नहीं करते, जो मैं यहां कर रहा हूं। वे निरंतर अपने पूरे जीवन भर एक ही मार्ग पर चलने का आग्रह करते हैं। लेकिन तब बहुत से लोग केवल उसी मार्ग का अनुसरण करते हैं, क्योंकि उनके सद्गुरु ने निरंतर उस बारे में इतना अधिक आग्रह किया था कि वे उसका अनुसरण करने लगे। वह उनका मार्ग नहीं भी हो सकता है। इसलिए बिना किसी बाहर के नियंत्रण के स्वतंत्र मार्ग ही मेरा मार्ग है, यह एक नया प्रयास है।

मैं सभी तरह के मार्गों और सभी तरह की विधियों पर चर्चा करता रहूंगा। शुरू—शुरू में तुम्हें यह सब कुछ बहुत उलझनपूर्ण लगेगा, लेकिन यह ऐसा लगे, यही मेरा मतलब है। मैं तुम सभी को इतना अधिक हक्का—बक्का कर देना चाहता हूं कि तुम लोग किसी के भी द्वारा प्रभावित होने की बात भूल ही जाओ। मेरा पूरा प्रयास यही है कि तुम्हें वापस तुम्हारे स्वयं के पास फेंक दिया जाए। तुम कितने समय तक ऐसे करते रह सकते हो? एक दिन तुम ध्यान के बारे में सोच रहे होते हो, और तब मैं प्रेम की चर्चा करने लगता हूं। और तुम प्रेम के बारे में सोचना शुरू कर देते हो। मैं फिर जब ध्यान के बारे में बोलूंगा तब फिर तुम्हारे लिए यही समस्या खड़ी होगी। तुम कितनी लंबी अवधि तक मुझसे और मेरे वचनों से प्रभावित होती रहोगी। एक दिन या अगले दिन तुम कहोगी—'' अब मुझे कुछ तै कर लेना है। यह शख्स तो मुझे पागल बना देगा।''

जे. कृष्णमूर्ति कहा करते थे—'' कभी किसी से प्रभावित मत होना।'' लेकिन वह बहुत ही नियमित व्यक्ति थे, सिद्धांतों में बहुत दृढ़। और उनकी नियमितता की उनके अनुसरण करने वालों पर गहरी छाप पड़ गई थी। वह कहा करते थे—'' कभी किसी से प्रभावित मत होना। लेकिन वह चालीस वर्षों तक इतनी नियमितता से इस वक्तव्य को दोहराते रहे कि लोग उस बारे में उन्हीं से प्रभावित हो गए। वे कहते, क्योंकि कृष्णमूर्ति कहते हैं—'' कभी किसी से प्रभावित मत होना, हम किसी से भी प्रभावित होने नहीं जा रहे हैं, लेकिन यह भी उनका प्रभाव ही तो है।''

जो कुछ कृष्णमूर्ति कहते थे, मैं ठीक वही कर रहा हूं। वह सिर्फ कह भर रहे थे, और मैं उसे कर रहा हूं।

मैं तुम्हें प्रभावित होने की भी अनुमति नहीं दूंगा। यदि भले ही तुम उसे चाहते ही क्यों न हो, वहां और कोई मार्ग ही नहीं है—'' मैं उसे निरंतर बदलता रहूंगा। मैं कुछ बीज आज बोऊंगा, कल मैं उन्हें वापस खोद लूंगा। मैं आज कुछ नये पौधे लगाऊंगा कल वह भी नहीं रहेंगे, तुम आखिर कब तक मेरी प्रतीक्षा करोगे?

एक दिन तुम कहोगे— '' जरा प्रतीक्षा करें, अब मुझे मार्ग चुन लेने दें। यह सब बहुत हो चुका अब। लेकिन उस समय तक तुम्हारी चेतना इस मार्ग से उस मार्ग और उससे इसकी ओर इतनी अधिक बार एक पटरी से दूसरी पटरी पर आ—जा चुकी होगी और तुम्हें दोनों की कुछ झलकें भी मिली होंगी। तुमने थोडा सा स्वाद प्रेम और प्रार्थना का, थोड़ा सा स्वाद ध्यान का, कुछ योग का, थोड़ा सा स्वाद मीरा और चैतन्य का और थोड़ा सा स्वाद बुद्ध और महावीर का भी जरूर लिया होगा। तुमने दोनों का ही स्वाद लिया होगा, और तब तुममें से ही एक निर्णय का उदय होगा। और वह मेरे कारण नहीं, तुम्हारे ही कारण होगा। और जब कोड चीज तुम्हारे कारण ही उद्भूत होगी तो वह असली होगी, वह प्रामाणिक होगा। तह रूपांतरण करती है, वह रूप और आकृति बदल देती है और वह तुम्हें दूसरे संसार में ले जाती है। यदि वह केवल एक प्रभाव है, क्योंकि मैं इस बारे में कुछ चीज निरंतर बार——बार कहता रहा हूं तब वह तुम्हारे मन की गहराई में ठीक एक सुझाव की भांति अपनी जड़ें जमा लेती है। तुम यह सोच सकते हो कि तुमने मार्ग तै कर लिया लेकिन वह तुम्हारा अपना निर्णय नही होता।''

कृष्णमूर्ति ने एक भी विरोधाभासी वक्तव्य कभी दिया ही नहीं, बस एक ही बात निरंतर दोहराते रहे। उनका समझाने के लिए दिया गया विवरण सरल और स्पष्ट है? उस बारे में वहां कोई भ्रम है ही नहीं।

तुम उससे सहमत हो अथवा सहमत न हो, यह दूसरी बात है— लेकिन इस बारे में वहां कोई भी भ्रम नहीं है। कोई भी यह नहीं कह सकता कि वे चकित कर रहे हैं, या तुम्हें उलझन में डाल रहे हैं। तुम यह तो कह सकते हो कि वह ठीक है, तुम उसे गलत भी कह सकते हो, लेकिन यह नहीं कह सकते कि वह भ्रम पूर्ण है।

मेरे बारे में तुम यह नहीं कह सकते कि मैं ठीक हूं अथवा गलत हूं। अधिक से अधिक तुम कह सकते हो कि मैं तुम्हें उलझन में डालकर हक्का—बक्का कर रहा हूं। लेकिन मेरी पूरी कार्यप्रणाली ही यही है कि तुम्हें जितना उलझन में डाल सकूं, डालूं। तुम कितनी अवधि तक मुझे अनुमति दोगे कि मैं तुम्हें यहां से हटाकर वहां, अथवा वहां से यहां हटा सकूं? एक दिन तुम चिल्लाओगे — " आप अपने हाथ अब अलग रखिये। अब मैं निर्णय लेना चाहता हूं।'' और वह निर्णय तुम्हारा अपना होगा। और वह इसलिए नहीं आयेगा क्योंकि वह विश्वास से आया है, वह दोनों मार्गों के वास्तविक अनुभव के बाद आया है। जब तुम सभी मार्गों का स्वाद ले लोगे तब तुम आसानी से निर्णय ले सकोगे 'गैर तब तुम उस निर्णय के साथ जीवन भर रह सकोगे।

यदि तुम मुझसे प्रभावित होते हो और तब कोई निर्णय लेते हो, तो कल तुम किसी और से भी प्रभावित हो सकते हो, और तब तुम दूसरा निर्णय ले लोगे। और यदि मेरे प्रभाव में आ सकते हो तुम तो कल किसी और के भी प्रभाव में आ सकते हो। इसी तरह से लोग एक सद्गुरु से दूसरे के पास जाते रहते हैं।

यहां आकर किसी अन्य दूसरी जगह जाने की कोई जरूरत नहीं है, क्योंकि मेरे अंदर ही सभी सद्गुरु एक साथ हैं। तुम यहीं बने रह सकते हो और सद्गुरु बदलता रहेगा, तुम्हें कहीं और जाने की आवश्यकता ही नहीं। मैं निरंतर स्वयं अपने कहे को ही उलटता रहता हूं इसलिए वहां कोई समस्या है ही नहीं। तुम्हें और कहीं जाने की कोई जरूरत ही नहीं, तुम बस वहीं बने रह सकते हो, जहां हो।

लोग सद्गुरु बदलते रहते हैं, क्योंकि एक दिन तुम्हें कोई बात प्रभावित करती है और तुम उस बारे में आवश्यकता से अधिक उत्तेजित हो जाते हो और तब वहा मधुयामिनी होती है लेकिन वह समाप्त भी हो जाती है। जिस किसी भी चीज की शुरुआत होती है उसका अंत भी होता है। कुछ दिनों बाद अति उत्साह समाप्त हो जाता है। अब सभी बातों से पहचान हो जाती है। अति उत्साह इसीलिए था क्योंकि चीज नई और अपरिचित थी। इसकी यांत्रिकता को समझने का प्रयास करें।

तुम एक स्त्री के प्रेम में पड़ जाते हो, क्योंकि वह नई है। उसकी शारीरिक संरचना उसके शरीर के अंगों का अनुपात, उसका चेहरा और उसकी आंखें, भौहें उसके बालों का रंग, जिस तरह वह चलती है, जिस तरह वह मुड़ती है। उसकी हर चीज नई है। उसका पूरा क्षेत्र अज्ञात है। तुम उसके क्षेत्र के बारे में पूरी खोज करते हो, वह तुम्हें आमंत्रित कर रही है, वह स्वयं एक निमंत्रण है। तुम सम्मोहित हो जाते हो, उसके आकर्षण में बंध जाते हो, और जब तुम उसके हो जाते हो, उसके आकर्षण में बंध जाते हो और जब तुम उसके पास पहुंचने की कोशिश करते हो, वह दूर भागना शुरू कर देती है। यह खेल का एक भाग है। वह जितनी अधिक दूर भागती है। वह उतनी ही आकर्षक हो जाती है। यदि वह सरलता से कह देती है— " हां मैं राजी हूं।'' तो आधा उत्साह उसी क्षण मुर्झा जाता है। वास्तव में तुम सोचने लगते हो कि कैसे उससे दूर भाग लिया जाए। इसलिए वह तुम्हें अपना पीछा करने का अवसर देती है। लोग उतने प्रसन्न कभी नहीं होते, जितना उसके प्रेम को जीतने में प्रसन्न होते हैं, क्योंकि वह पीछा करने जैसा होता है।

पुरुष आधारभूत रूप से एक शिकारी है, जब वह स्त्री के पीछे भागता हुआ उसका पीछा करता है, उसके पीछे भागता है और स्त्री इधर—उधर अपने को छिपाने का प्रयास करती है, टालती है, नहीं कहती है। पुरुष

अधिक से अधिक उत्तप्त होता है। चुनौती और अधिक बढ़ती जाती है कि स्त्री को किसी तरह जीतना है। अब वह उसके लिए मर जाने के लिए तैयार हो जाता है अथवा वह सब कुछ करता है जो

करनाना आवश्यक है लेकिन हर दशा में स्त्री को जीतना ही है। उसे यह सिद्ध करना है कि वह कोई सामान्य पुरुष नहीं है। लेकिन एक बार जब उनका विवाह हो जाता है तो प्रत्येक चीज... क्योंकि पूरी दिलचस्पी तो पीछा करने में थी, पूरी दिलचस्पी तो —अपरिचित रहने में थी, पूरी दिलचस्पी तो तब थी, जब स्त्री प्रत्यक्ष रूप से अविजित लगती थी। लेकिन अब उसे जीत लिया गया है अब फिर कैसे पुरानी दिलचस्पी बनी रह सकती है? अधिक से अधिक कोई ऐसा बहाना बना सकता है, लेकिन दिलचस्पी नहीं रह सकती। सभी चीजें ठंडी होना शुरू कर देती हैं। वे लोग एक दूसरे से ऊबना शुरू कर देते हैं। क्योंकि अब वहां दूसरी स्त्रियां हैं और फिर उनके नए क्षेत्र हैं, वे आकर्षित करती हैं, उत्तेजित बनाती हैं और आगे बढ़ने को प्रोत्साहित करती हैं।

यही सब कुछ विचारों के साथ भी घटता है। तुम एक तरह के विचारों की ओर आकर्षित होते हो, लेकिन कुछ समय गुजरने पर तुम उससे परिचित हो जाते हो। अपनी जान—पहचान बढ़ा लेते हो, मिलन मधुयामिनी गुजर जाती है और प्रेम का नशा ठंडा पड़ जाता है। अब तुम किन्हीं नये विचारों में रुचि लेना शुरू कर देते हो, कुछ नई बातें तुम्हें फिर से एक नई उत्तेजना देती हैं, तुम्हें झिझोड़ती हैं। जिस तरह से कोई पुरुष एक स्त्री से दूसरी के पीछे और एक स्त्री एक पुरुष से दूसरे पुरुष की ओर भागती है, वैसे ही तुम एक विचारधारा से दूसरी विचार धारा की ओर, एक मार्ग से दूसरे मार्ग की ओर, तथा एक सद्गुरु से दूसरे सद्गुरु की ओर भागते हो। इस तरह की खोज तुम्हें कभी यथेष्ट समय देगी ही नहीं, जिससे विश्वास और श्रद्धा निर्मित हो सके।

भारत में मध्यप्रदेश के बस्तर जिले में आदिवासी अंचल में एक आदिम कबीले के लोग लगभग तीन चार हजार वर्ष पुरानी परम्पराओं में जीते हैं। वे बिलकुल भी समकालीन नहीं है, लेकिन उनसे कुछ चीज सीखी जा सकती हैं। उसके समुदाय में एक चीज ऐसी घटित हुई है, जो इससे पहले कभी भी, कहीं भी नहीं हुई, और वह यह है कि एक बार पुरुष जब एक स्त्री से विवाह कर लेता है तो फिर कभी कोई तलाक होता ही नहीं। तलाक लेने की वहां अनुमति है, लेकिन फिर भी वहां कोई तलाक लेता या देता नहीं। और एक बार पुरूष ने स्त्री से विवाह कर लिया तो वह उसके साथ हमेशा वफादार रहता है, और इसी तरह स्त्री भी पुरुष के प्रति सत्यनिष्ठा निभाती है। पुरुष कभी भी किसी दूसरी स्त्री में किसी भी तरह की दिलचस्पी लेता ही नहीं, और न स्त्री ही किसी दूसरे पुरुष में दिलचस्पी लेती है। उन्होंने यह चमत्कार किया कैसे? उन्होंने इसे बहुत मनोवैज्ञानिक तरीके से किया है।

उसके समाज का ढांचा ऐसा है कि प्रत्येक लड़के को प्रत्येक लड़की से मिलने और उसके साथ घुलमिल जाने की पूरी छूट है और यही छूट प्रत्येक लड़की को प्रत्येक लड़के से भी मिलने की है। इसलिए कबीले का हर लडका प्रत्येक लड़की को भली भांति जानता है और प्रत्येक लड़की भी कबीले के प्रत्येक लड़के को भलीभांति जानती है। वास्तव में समय आने पर जब लड़के और लड़कियों की रुचि सेक्स में जागृत होती है, वे रात में अपने घरों में नहीं रहते।

उनके गांव के बीच एक मंदिर जैसी चीज एक बड़े झोंपड़े के रूप में होती है, जिसे वे घोटुल कहते हैं।

एक बार एक लड़का जब लड़कियों में दिलचस्पी लेने लगता है, तो उसे घोटुल में जाकर ठहरना होता है और जब कोई लड़की लड़कों में दिलचस्पी लेने लगती है तो उसे भी घोटुल में जाकर रहना होता है। गांव की सभी लड़कियां और सभी लड़के ये सभी घोटुल में ही रहते हैं और एक दूसरे से प्रेम करते हैं। केवल एक चीज पर ही जोर दिया जाता है, घोटुल का अधीक्षक यह आग्रह करता है कि किसी भी लड़के या लड़की को एक दूसरे के

साथ तीनों दिनों से अधिक नहीं रहना चाहिए। उन्हें एक दूसरे को इस तरह बदलते रहना चाहिए जिससे विवाह करने से पूर्व वे सभी एक दूसरे के बारे में भली भांति जान लें, और तब वे चुनाव कर सकते है।

जब तुम अपने समुदाय की सभी स्त्रियों को जानने के बाद निर्णय करते हो, तो वह निर्णय उस निर्णय से पूरी तरह भिन्न होता है जो समाजों में लिया जाता है। तुम दूसरी स्त्रियों को नहीं जानते, एक बेहतर स्त्री और एक बेहतर पुरुष की हमेशा संभावना होती है। तब तुम करोगे क्या? एक अधिक दिलचस्प व्यक्तित्व वहां हमेशा बना रहेगा, तब वहां आकर्षण होगा, वहां विकर्षण होगा और तब वहां समस्याएं होंगी।

यह बहुत छोटी आबादी के गांव हैं, जिनमें अधिक से अधिक जन समुदाय दो सौ या तीन सौ से अधिक नहीं होता। प्रत्येक लड़के को हर लड़की को जानने समझने की छूट होती है। जब वह सभी लड़कियों को जान लेता है और सभी लड़कियां भी सभी लड़कों को ठीक से जान लेती हैं तभी एक लड़का और एक लड़की विवाह करने का निर्णय लेते हैं। विवाह होने से पूर्व भी उन्हें साथ—साथ रहने को एक वर्ष कर समय और दिया जाता है, जिससे वे अंतिम निर्णय ले सकें— क्योंकि निर्णय लेने से पूर्व एक दूसरे को भली भांति न जानना खतरनाक होता है। निर्णय केवल तभी लिया जा सकता है, क्योंकि वे एक दूसरे को भली भांति जानना चाहते हैं। लेकिन एक बार जब वे एक दूसरे को भली भांति जान लेते हैं, तब फिर उनके निर्णय से होगा क्या? इसीलिए उन्हें एक दूसरे को एक वर्ष या दो वर्ष अथवा जितने समय की उन्हें जरूरत हो, वे साथ—साथ रह सकते हैं।

लेकिन जब एक बार वे विवाह करने का निर्णय ले लेते हैं, तो वास्तव में वह निर्णय बहुत ठोस और पक्का होता है, वह परिपूर्ण और बेशर्त होता है क्योंकि अब सभी जीतने वाली बात चली गई। शिकार करने वाली बात, और पीछा करना भी चला गया। उस समुदाय में विवाह से पूर्व ही मधुयामिनी हो जाती है, जो कहीं अधिक तर्कपूर्ण मनोवैज्ञानिक और मनुष्य मन के लिए अधिक प्रामाणिक होती है। विवाह से पूर्व ही मधुयामिनी या सुहाग रात्रि। विवाह केवल तभी सम्पन्न किया जाता है, जब सुहागरात्रि समाप्त हो चुकी होती है। जब दो व्यक्ति एक दूसरे को भली भांति जान लेते हैं, साथ—साथ रहने का निर्णय लेते हैं। अब यह किसी स्त्री को जीतने का अथवा किसी नवीनता का प्रश्न नहीं रह जाता, वे विवाह का निर्णय इसलिए नहीं करते, क्योंकि वे एक दूसरे को जानना चाहते हैं, वे विवाह करने का निर्णय इसलिए लेते हैं, क्योंकि वे एक दूसरे को जानते हैं। यह पूरी तरह भिन्न बात ही होती है।

लेकिन अब घोटुल की यह प्रथा उन समुदायों से भी समाप्त होती जा रही है। वे लोग हम लोगों के द्वारा सभ्य बनाये जा रहे हैं, उन्हें बदलने को विवश किया जा रहा है, क्योंकि यह प्रथा अनैतिक प्रतीत होती है। कम से कम ईसाई हिंदू और जैन समाज को तो वह अनैतिक दिखाई ही देती है। उनके समुदाय को नष्ट किया जा रहा है, उनके घोटुल को एक वेश्यावृत्ति करने का घर समझा जाता है। इसलिए उन्हें उनके अनुभव के विरुद्ध प्रशिक्षित किया जा रहा है। उन्हें घोटुल प्रथा समाप्त करने के बारे में और इस अनैतिक स्थिति को रोकने के बारे में सिखाया जा रहा है।

लेकिन मनुष्य पूरी तरह मूढ दिखाई देता है। वे लोग अनैतिक नहीं है, वे बहुत नैतिक, सरल और सहज लोग हैं। लेकिन ईसाई उनके बीच कार्य करते हुए उनका ईसाई धर्म में रूपांतरण करने का प्रयास कर रहे हैं। उन लोगों ने बहुत से गरीब लोगों का ईसाई धर्म में धर्मातंरण कर लिया है। अब वहां के समाज से घोटुल गायब होते जा रहे हैं, और सबसे अधिक ठोस और दृढ़ प्रणाली इस तरह से नष्ट की जा रही है। वास्तव में हम लोगों को उनसे कुछ सीखना चाहिए।

मेरी पूरी विधि ही तुम्हें आध्यात्मिक विकास के लिए सभी सम्भव अवसर दिए जाने की है, जिससे तुम्हें ठीक मार्ग का अनुभव हो सके। और यह अनुभव तुम्हारे द्वारा ही आना है। वह मेरे द्वारा नहीं आने का, और न वह मेरे प्रभाव के द्वारा ही आने का है।

तुम्हें प्रभावित न कर पाने के दो ही रास्ते हैं, एक रास्ता तो यह है कि कुछ बोला ही न जाए। कहीं ऐसी जगह जाकर गायब हो जाना चाहिए जहां कोई निकट आ ही न सके। बहुत से लोगों ने ऐसा किया भी है, लेकिन यह विधि काम में आती दिखाई नहीं देती। इस विधि में कोई करुणा नहीं है। दूसरी विधि है—तुमसे संवाद स्थापित कर तुम्हें उस बारे में बताया जाए जो मैंने प्राप्त किया है जो कुछ मैंने जाना है और जिसका मैंने स्वाद लिया है। ऐसा किया भी गया है, लेकिन तब लोग प्रभावित हो जाते हैं। वे इतने अधिक प्रभावित हो जाते हैं कि वे अपने स्वभाव के विरुद्ध लगभग घसीट लिए जाते हैं। ऐसा होना भी खतरनाक है। यदि सौ लोग प्रभावित हो जायें तब उनमें से दस पंद्रह या अधिक से अधिक बीस लोग लक्ष्य तक पहुंचेंगे और अस्सी लोग अपने स्वभाव के विरुद्ध चलेगे।

मेरा प्रयास तुम्हें सभी संभावनाएं उपलब्ध कराना है। मैं चाहता हूं कि सम्भावनाओं के द्वार तुम्हारे लिए खुले रहें, जिससे तुम गतिशील हो सको, तुम बदल सको, तुम अपना समय ले सको और अपना हर कदम आगे उठा सको। और तब एक दिन तुम्हें एक विशिष्ट अनुभूति होगी, और वह अनुभूति तुम्हारी अपनी अनुभूति होगी उसका मुझसे कोई भी लेना—देना नहीं होगा। तब तुम उस बिंदु पर पहुंचोगे, जब विवाह घटता है : तब एक विशिष्ट पथ के साथ तुम्हारा गठबंधन होता है।

मैं दूसरे मार्गों के बारे में बातचीत करना जारी रखूंगा, लेकिन उसी क्षण से तुम मुझे सुनोगे, तुम मुझसे प्रेम करोगे, तुम मेरे प्रति कृज्ञत होगे। लेकिन यदि मैं कुछ ऐसा कहता हूं जो तुम्हारे मार्ग के विरुद्ध जाये, तो तुम मुझे नहीं चुनोगे, तुम उससे प्रभावित नहीं होगे। यदि कोई चीज तुम्हारे मार्ग के अनुसार तुम्हें उपयुक्त लगती है, तुम उसे चुनोगे लेकिन वह निर्णय तुम्हारे चुने हुए मार्ग का होगा। अब कोई भी चीज जो इसके साथ उपयुक्त लगती है, तुम उसे लोगे और जो भी चीज उपयुक्त नहीं लगती तुम उसे नहीं लोगे। और तुम यह नहीं कहोगे, " वह गलत है।'' तुम जानते हो कि किसी अन्य मार्ग के लिए वह उपयुक्त है। इसलिए वह किसी और के लिए ठीक हो सकती है।

लेकिन एक बार तुमने अपना मार्ग चुन लिया तो जो कुछ भी मैं कहूं तुम उसे चुनने में समर्थ हो सकोगे। तुम चुनने वाले बनोगे, तुम्हारे पास एक आंतरिक मापदंड होगा कि क्या ठीक है और क्या ठीक नहीं है।

मैं यहां बहुत तरह के लोगों के लिए हूं। मैं एक आयामी नहीं हूं। मैं यहां सभी तरह के लोगों के लिए हूं और मैं उन सभी के लिए बोल रहा हूं। धीमे— धीमे मुझे सुनते हुए मेरी ओर ध्यान मग्न होकर, तुम अपने अनुभव के द्वारा निर्णय लिए जाओगे। लेकिन मैं बोलता ही रहूंगा, तुम मुझे सुनने से प्रेम करोगे, तुम उसे समझने से प्रेम करोगे लेकिन तुम्हें वह अप्रिय नहीं लगेगा। एक बार तुम्हारा घोटुल में रहने के बाद विवाह ये। गया, तब वह तुम्हें अप्रिय न लगेगा, तब वहां कोई तलाक नहीं होगा।

तुमने पूछा है—'' जब आप एक झेन सद्गुरु की भांति बोलते हुए हमें यह बतला रहे थे कि हमें अपना मार्ग चुनकर उसी से बंधे रहना चाहिए तब मैंने महसूस किया कि निश्चित रूप से मेरा मार्ग बुद्धिप्रधान ध्यान का है, क्योंकि मैं कभी भी किसी को भी समर्पण करने में समर्थ न हो सकूंगी। लेकिन अब बाउल रहस्यदर्शियों पर आपका एक प्रवचन सुनने के बाद मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं।rकसी के प्रेम में बीमार कॉलेज की कोई छोकरी बन गई हूं। पथ कैसे चुना जाए जब आपका कोई मार्ग है ही नहीं? कैसे अपना दीया अपने आप स्वयं बना जाए जब आपके प्रकाश से प्रत्येक सुबह मैं चकाचौंध से भर जाती हूं।''

एक दिन तुम इससे संतृप्त हो जाओगी। एक दिन एक सुबह तुम अपने होने में जागोगी, तुम अपनी जरूरतों के प्रति सजग होगी और तुम अपनी ही दिशा की ओर तुम होशपूर्ण होगी। एक बार वह दिशा समझ में आ गई, एक बार उसकी पहचान हो गई, तब वहां कोई समस्या ही नहीं रह जाएगी। लेकिन उसके लिए प्रतीक्षा करनी होगी, उसमें समय लगता है। और इससे पहले वह घटना घटे, मुझे तुम्हें उस स्थान से हटा देना होगा, तुम्हें मोड़ देकर एक पटरी से दूसरी पटरी पर यहां से वहां कर देना होगा।

मुझे खेद है.....लेकिन मुझे यह करना ही होगा।

बाउल गाते हैं—

एक अंधा व्यक्ति
सीधे स्वाभाविक पथ पर
गलत कदम कैसे उठा सकता है?
तुम स्वयं अपने में ही सहल सरल बने रहो।
और उस मार्ग को खोजो
जिसका जन्म तुम्हारे ही अंदर हुआ है।

यह वही मार्ग है, जिसके लिए मैं यहां प्रयास कर रहा हूं मैं एक दाई हूं। मैं तुम्हारे लिए कोई चीज सृजित करने नहीं जा रहा हूं वह पहले ही से तुम्हारे गर्भ में सृजित हो चुकी है। वह पहले ही से तुम्हारे आंतरिक गर्भ की समाधि में सृजित हो चुकी है। अधिक से अधिक मैं सरलता से उसके जन्म लेने में तुम्हारी सहायता कर सकता हूं। अधिक से अधिक यदि कुछ चीज गलत हो जाती है, तो उस बाधा को दूर करने में मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूं। लेकिन शिशु तो तुम्हारे अंदर पहले ही से तैयार है मैं तो केवल एक ' मिडवाइफ ' या दाई हूं।

एक बार तुमने अपना शिशु पा लिया, अपनी दिशा पकड़ ली, तब पथ तो बहुत सहज और सरल है।

एक अंधा व्यक्ति
सहज सरल पथ पर
गलत कदम कैसे उठा सकता है?
तुम बस अपने में ही सहज सरल बने रहो।
और उस मार्ग को खोजो
जिसका जन्म तुम्हारे ही अंदर हुआ है।
परमात्मा का वर्णन करने वाले प्रज्ञापूर्ण शब्द
अंधेरे कक्ष में उस सम्पदा की खोज नहीं कर सकते।
अंधेरे में कुछ भी खोजना भ्रमपूर्ण है।
अवरोध और बंधन तोड़कर खुले आकाश की ओर देखो
चांद की बांहों में वह अरूप
एक सुंदर रूप ले चुका है।

मैं उस सम्पदा और उस खजाने के बारे में भले ही कितना ही क्यों न बताऊं लेकिन तुम्हारी आंखों के चारों ओर अंधेरा घिरा है। मेरा वर्णन तुम्हें प्रभावित करता है, तुम्हारे अंदर लालच उत्पन्न करता है। तुम भी उस महान खजाने के मालिक बनना चाहते हो, लेकिन तुम्हारी आंखें अंधकार से भरी हैं।

यदि वह खजाना ठीक तुम्हारे सामने भी पड़ा हो, और मैं तुमसे उसका वर्णन कर रहा होऊं, तुम उस वर्णन से प्रभावित भी हो जाते हो लेकिन फिर भी तुम उस खजाने के लिए प्रति होशपूर्ण नहीं हो जो तुम्हारे ही सामने पड़ा हुआ है। मेरा वर्णन उसे पाने में तुम्हारी कोई भी सहायता करने वाला नहीं है।

परमात्मा का वर्णन करने वाले प्रज्ञापूर्ण शब्द
अंधेरे कक्ष में सम्पदा की खोज नहीं कर सकते।
अंधेरे में कुछ भी खोजना भ्रमपूर्ण है।
अवरोध और बंधन तोड़कर खुले आकाश की ओर देखो
चांद की बांहों में वह अरूप
एक सुंदर रूप ले चुका है।

इसलिए मेरे शब्दों से भी प्रभावित मत होना, और मुझे सुनते हुए ऐसा अनुभव करना शुरू मत करना, कि यकीनी रूप से वही तुम्हारा मार्ग है। लेकिन मैं जानता हूं कि यह होना स्वाभाविक है, आखिर यह मनुष्य का मन है। कई बार तुम्हें पूरे यकीन के साथ यह अनुभव होगा कि यही मेरा मार्ग है। लेकिन अगले ही दिन वह बदल जायेगा। इसलिए थोड़ा सा हिचकते हुए उस यकीन के बारे में पक्के मत हा जाना, अनिश्चित बने रहना।

जब मैं झेन पर चर्चा कर रहा था तो तुमने महसूस किया था कि यकीनी रूप से वही तुम्हारा मार्ग है। अब मैं बाउलों पर बोल रहा हूं। स्मरण रहे कल मैं किसी और पर या किसी अन्य के बारे में चर्चा शुरू कर सकता हूं। इसलिए कम से कम इस बार तो अपने अनुभव पर पूरा यकीन मत करना। मुझे सुनना, लेकिन जो भी सुनो उस पर पूरा यकीन मत करना। जरा प्रतीक्षा करना, वहां कोई भी जल्दी नहीं है। धैर्यवान बनो, बस सुनती ही रहना, लेकिन जो महसूस हो, उस पर पूरा यकीन मत करना, क्योंकि यकीनी रूप से निश्चित हो जाना बहुत खतरनाक है। केवल अनुभव पर पूरा विश्वास तभी करना जब तुम्हारा अपना बच्चा जन्म ले, जब तुम्हें उस मार्ग की दिशा का बोध स्वयं हो जाये।

और तुम इस अंतर को देखने में समर्थ होगी, क्योंकि वह बहुत अधिक भिन्न है। यह मेरे कारण नहीं होगा, अब तुम यह देखने में समर्थ होगी, कि यह वह मार्ग नहीं है जो तुमने मुझसे प्रभावित होकर जाना था। यहां प्रभावित होने जैसा कुछ है ही नहीं। अचानक तुम्हारे ही अंदर एक महान शक्ति का ऊर्ध्वगमन होने लगता है, और यह पूरी तरह से निश्चित है। लेकिन तुम यह देखने में समर्थ हो सकोगे, कि यह मेरी ओर से मेरे प्रभाव के कारण नहीं है। कभी—कभी जो कुछ मैं कह रहा हूं यह उससे उल्टा भी हो सकता है। कभी—कभी यह तब सम्भव हो जाता है, यदि तुम एक मार्ग से दूसरे मार्ग की ओर कई बार आये गये हो और उसे बदलते रहे हो—मैं प्रेम के बारे में चर्चा कर रहा हूं और प्रेम के बारे में मुझसे सुनते हुए तुम्हारे अंदर यह निश्चित विश्वास हो जाता है कि यह मेरा मार्ग नहीं है, मेरा मार्ग तो ध्यान है, अथवा उससे उल्टा भी हो सकता है। यह कहना कठिन है कि तुम यकीनी रूप से यह जानने में कैसे समर्थ होगे कि यह यकीन किसी प्रभाव के द्वारा नहीं आ रहा है। लेकिन मैं जानता हूं कि तुम इसे करने में सफल हो सकोगे।

जब तुम्हारे सिर में दर्द होता है तुम उसे जानते हो, यह भी ठीक इसी तरह का है। सिर में दर्द होने पर तुम किसी से यह पूछते नहीं— " कृपया मुझे बताएं कि यह सिर दर्द ही है और वास्तव में यह मुझे हो रहा है?" नहीं। तुम उसे जानोगे। जब वास्तविक यकीन और निश्चितता जागती है तो वह स्फुटिक की भांति स्पष्ट और साफ होती है, एक प्रकाश के स्तम्भ की भांति होती है। और बस उसके उत्पन्न होते ही तुम धुलकर साफ हो जाते हो।

बस केवल उसके जागने या उठने से ही तुम एक नये, पूरी तरह से नूतन अस्तित्व का अनुभव करते हो, जैसे की नया जन्म हुआ हो। यदि बौद्धिक नहीं होता, इसका अनुभव केवल सिर में नहीं होता, तुम्हें इसका

अनुभव अपने पूरे शरीर में अपने पूरे सिर और अपने पूरे हृदय में होगा, तुम्हारा रोम—रोम और तुम्हारी समग्रता उसे महसूसेगी। जब ऐसी निश्चितता और यकीन जन्मता है, तभी यह आस्था और श्रद्धा होती है। लेकिन दूसरों से प्रभावित होने के बाद, तुम जो कुछ भी पाते हो, वह और कुछ भी नहीं, बल्कि केवल एक विश्वास होता है। विश्वास एक बहुत ही नपुंसक चीज है, वह कभी भी किसी को बदल नहीं पाता।

तीसरा प्रश्न :

प्यारे ओशो? अनुसरण करने, विचार करने और समझ के मध्य क्या अंतर है? प्रतिक्रिया और प्रत्युत्तर विश्वास और श्रद्धा, सहानुभूति और करुणा तथा संचार और सम्पर्क के मध्य भी इसी तरह क्या अंतर है?

सोचना या विचार—विमर्श करना, समझ की अनुपस्थिति है। तुम सोचते इसलिए हो क्योंकि तुम उसे समझ नहीं पाते। जब समझ उत्पन्न होती है, विचार विसर्जित हो जाते हैं। यह एक अंधे मनुष्य के अपना मार्ग टटोलने जैसा है जब वहां आंखें होती हैं, तुम रास्ता टटोलते नहीं, वह तुम्हें दिखाई देता है। समझ आंखों के समान है, तुम देखते हो, तुम टटोलते नहीं। सोच टटोलने जैसा है। यह न जानना कि क्या चीज क्या है, तुम सोचे चले जाते हो, अनुमान लगाये चले जाते हो। सोचना तुम्हें ठीक उत्तर नहीं दे सकता क्योंकि जो कुछ ज्ञात या जाना हुआ है, सोचना केवल उसी को दोहरा सकता है। तुम बार—बार सोचे और सोचे ही जा सकते हो, कुछ भी नहीं होता। विचार—विमर्श या सोचने की अज्ञात के लिए कोई दृष्टि होती ही नहीं। क्या तुमने कभी अज्ञात के बारे में सोचने की कोशिश की है? तुम सोचोगे कैसे? तुम केवल उसी के बारे में विचार कर सकते हो, जिसके बारे में तुम जानते हो, यह दोहराने जैसा है। तुम बार—बार सोचो और सोचे ही जा सकते हो; तुम पुराने विचारों की ही नई संगत बना सकते हो, लेकिन वास्तव में नया कुछ भीं नहीं होता। समझ ताजी होती है, नूतन होती है। उसके अतीत से कुछ भी लेना—देना नहीं होता। समझ तो अभी और यही है। वह वास्विकता के अंदर एक अंतर्दृष्टि है।

सोच—विचार के साथ वहां प्रश्न ही प्रश्न होते हैं, और कोई उत्तर नहीं होते। यद्यपि कभी—कभी जब तुम्हें महसूस होता है कि तुमने उत्तर पा लिया है तो यह भी इस कारण ऐसा लगता है क्योंकि किसी भी व्यक्ति को यह अथवा वह कुछ न कुछ निर्णय लेना ही होता है।

वह वास्तव में उत्तर होता नहीं है, लेकिन तुम्हें कार्य करने के लिए कुछ न

कुछ निर्णय लेना ही होता है, इसलिए कोई भी उत्तर ग्रहण करना ही होता है। और यदि तुम अपने उत्तर की गहराई में झांको, तो तुम उससे उठते हुए एक हजार एक प्रश्न वहां पाओगे। समझ के पास प्रश्न नहीं है, केवल उत्तर होते हैं—क्योंकि उसके पास आंख हैं।

सोचना उधार होता है। तुम्हारे सभी विचार तुम्हें दूसरों के द्वारा दिए गए हैं। उनका निरीक्षण करो—क्या तुम ऐसा एक भी विचार खोज सकते हो जो तुम्हारा अपना हो, प्रामाणिक रूप से तुम्हारा ही हो, जिसका जन्म तुमसे हुआ हो? वे सभी उधार के हैं। उनके स्रोत ज्ञात या अज्ञात हो सकते हैं, लेकिन वे सभी उधार के हैं। मन ठीक एक कम्प्यूटर की भांति कार्य करता है लेकिन कम्प्यूटर द्वारा उत्तर तभी दिए जा सकते हैं, जब उसमें उत्तर पहले ही से ' फीड ' किए गए हों। तुम्हें सारी सूचनाएं सप्लाई करनी होती हैं, केवल तभी वह तुम्हें उत्तर दे सकेगा। यह सब कुछ वही है जो मन किए जा रहा है।

मन एक जैविक—कम्प्यूटर की भांति है। तुम उसमें जानकारियां सूचनाएं और सभी आंकड़े संग्रहीत करते जा रहे हो, संग्रह से ही उत्तर देता है। यह कोई वास्तविक उत्तर नहीं होता, यह केवल मृत अतीत से आया उत्तर होता है।

और समझ क्या है? समझ शुद्ध प्रज्ञा है। शुद्ध बुद्धि या प्रज्ञा मूल रूप से तुम्हारी अपनी होती है। तुम इसे लेकर ही उत्पन्न होते हो। प्रज्ञा कोई तुम्हें दूसरा नहीं दे सकता। तुम्हें जानकारी दी जा सकती है। लेकिन प्रज्ञा नहीं। प्रज्ञावान होना तुम्हारा अपना ही धारदार अस्तित्व है। गहरे ध्यान के द्वारा ही कोई व्यक्ति अपने अस्तित्व को धारदार बनाता है, ध्यान के द्वारा ही कोई व्यक्ति उधार विचारों को छोड़ता है, अपने स्वयं के अस्तित्व को विकसित करता है, अपनी मौलिकता में सुधार करता है, अपने बचपन का भोलापन निर्दोषिता और ताजगी फिर से प्राप्त करता है। इसी नूतन ताजगी से जब तुम कुछ भी करते हो, तुम्हारा कृत्य समझ से उद्‌भूत होता है। और तब प्रत्युत्तर अभी और यहीं से पूरी समग्रता से आता है और वह प्रत्युत्तर चुनौती के कारण आता है, न कि अतीत की जानकारी के कारण।

उदाहरण के लिए ' कोई भी व्यक्ति तुमसे कोई प्रश्न पुछता है — " तुम क्या कर रहे हो?" तुम तुरंत मन के अंदर जाते हो और उसका उत्तर खोजते हो। तुम तुरंत ही मन के तलघर या स्टोरहाउस में जाते हो, जहां तुमने सारी जानकारियां संग्रहीत कर रखी हैं और वहां उसका उत्तर खोजते हो—तब इसे सोचना या विचार करना कहते हैं। कोई भी व्यक्ति तुमसे एक प्रश्न पूछता है, और तुम खामोश रह जाते हो तुम प्रश्न के अंदर बेधक दृष्टि से देखते हो, स्मृति में नहीं बल्कि प्रश्न के अंदर, तुम प्रश्न का सामना करते हो उससे मुठभेड़ होती है तुम्हारी, यदि तुम उसे नहीं जानते तो कह देते हो मैं नहीं जानता।

उदाहरण के लिए कोई व्यक्ति पूछता है परमात्मा का अस्तित्व है अथवा नहीं। तुम तुरंत कहते हो—'' हां! परमात्मा है।'' यह उत्तर कहां से आ रहा है? तुम्हारी स्मृति से ईसाई स्मृति, हिंदू स्मृति या मुस्लिम धर्म की स्मृति से? तब यह उत्तर लगभग व्यर्थ और निरर्थक है।

यदि तुम्हारे पास साम्यवादी स्मृति है, तो तुम कहोगे—नहीं, वहां कोई भी परमात्मा नहीं है। यदि तुम्हारी स्मृति कैथोलिक है तो तुम कहोगे—'' हां! वहां परमात्मा है।'' यदि तुम्हारे पास बौद्ध धर्म की स्मृति है तो तुम कहोगे—'' वहां कोई तुम्हारे परमात्मा नहीं है। लेकिन यह सभी उत्तर स्मृति से ही आ रहे हैं। यदि तुम एक समझदार व्यक्ति हो, तो तुम सामान्य रूप से प्रश्न को सुनोगे, तुम प्रश्न के अंदर गहरे जाओगे तुम बस उसका निरीक्षण करोगे। यदि तुम नहीं जानते हो तो तुम कहोगे—'' मैं नहीं जानता।'' यदि तुम जानते हो, केवल तभी तुम कहोगे—'' मैं उसे जानता हूं और जब मैं कहता हूं अगर तुम जानते हो, तो मेरा इससे अर्थ है, क्या तुमने उसका अनुभव किया है।

एक समझदार व्यक्ति सच्चा और प्रामाणिक होता है। यदि वह कहता है— " मैं नहीं जानता तो उसका अज्ञान मन की जानकारी की अपेक्षा कहीं अधिक मूल्यवान है, क्योंकि कम से कम उसका अज्ञान, अज्ञान के बारे में उसकी स्वीकृति सत्य के निकट है। कम से कम वह बहाना बनाने की कोशिश तो नहीं कर रहा है, वह दम्भी नहीं है।''

निरीक्षण करो, और तुम देखोगे कि तुम्हारे सभी उत्तर तुम्हारी स्मृति से आ रहे हैं। तब ऐसा तरीका खोजने का प्रयास करो जहां स्मृति कार्य नहीं करती और केवल शुद्ध चेतना ही कार्य करती है। यही है वह जिसे ' समझ ' कहते हैं।

मैंने सुना है—

एक डॉक्टर ने एक रोगी के कमरे में प्रवेश किया। पांच मिनट पश्चात वह बाहर आया और उसने पेचकस मांगा। तब वह फिर अंदर मरीज के पास चला गया। अगले पांच मिनट बाद वह फिर बाहर आया और उसने छैनी और हथौड़ी मांगी। बुरी तरह से उत्तेजित रोगिणी का पति और अधिक समय तक अपने को रोक न सका। उसने गुहार लगाते हुए पूछा—'' डॉक्टर! परमात्मा के लिए मुझे बताओ, मेरी पत्नी के साथ क्या कुछ गलत है?"

मैं अभी तक स्वयं नहीं जानता। डॉक्टर ने उत्तर दिया, " मैं अभी तक अपना बैग ही नहीं खोल पाया हूं।"

यद्यपि जब कभी तुम कहते हो— " मैं नहीं जानता " तो यह जरूरी नहीं है कि वह उत्तर तुम्हारी समझ से ही आया यह भी हो सकता है कि तुम अभी तक अपने बैग को ही नहीं खोल पाये हो। यह भी सम्भव है कि तुम अपनी स्मृतियों का पिटारा न खोल सके हो, अथवा तुम स्मृतियों के भंडार में उसे न खोज पा रहे हो— तुम्हें समय की जरूरत हो। तुम कहते हो, मैं नहीं जानता; तुम कहते हो मुझे समय दीजिये। मुझे इस बारे में जरा सोचने दीजिए।"

लेकिन सोच कर तुम करोगे क्या? यदि तुम जानते हो तो जानते हो, यदि तुम रग नहीं जानते तो नहीं जानते। तुम उसके बारे में क्या सोचने जा रहे हो? लेकिन नम कहते हो—" मुझे समय दीजिए मैं उसके बारे में सोचूंगा।"

तुम कह क्या रहे हो? तुम कह रहे हो— " मुझे थोड़ा सा समय दीजिए मुझे अपने मन के स्टोरहाउस में जाकर उसे खोजना होगा। और वहां इतना अधिक कूड़ा कर्कट वर्षों से इकट्ठा पड़ा है कि उसे खोज पाना बहुत मुश्किल है। लेकिन तुम कहते हो—" मैं कोशिश करूंगा।"

ध्यान करो और मन के इस तलघर या स्टोर हाउस से मुक्त हो जाओ। ऐसा नहीं है कि यह तलघर उपयोगी नहीं है, इसका प्रयोग किया जा सकता है, लेकिन तुम्हें इसे समझ का प्रतिस्थापन नहीं बनाना चाहिए। एक समझदार व्यक्ति सभी चीजों को प्रत्यक्ष रूप से सीधे देखता है। उसकी अन्तर्दृष्टि सीधी होती है, लेकिन वह संग्रहीत स्मृति का प्रयोग करते हुए उत्तर तक पहुंचने में अन्तर्दृष्टि की सहायता करता है। वह प्रत्येक वस्तु तुम्हें स्पष्ट रूप से प्रति संवेदित करने के लिए अपनी सभी संग्रहीत स्मृतियों का प्रयोग कर सकता है लेकिन वह जो कुछ प्रतिसंवेदित करने का प्रयास कर रहा है वह उसका अपना है। शब्द उधार के हो सकते हैं, भाषा भी उधार ली हुई ही होगी, उसे उधार लेना ही होता है, सामान्य विचार भी उधार के हो सकते हैं, लेकिन वह उधार का नहीं होता जो वह तुम्हें प्रतिसंवेदित करने की कोशिश कर रहा है। कन्टेनर या विषयसामग्री रखने वाली वस्तु तो स्मृति से आयेगी लेकिन विषय सामग्री उसकी अन्तर्दृष्टि की होगी।

और वास्तव में एक व्यक्ति जो समझदार नहीं है। निरंतर ही ढेर सारे विचारों का शिकार हो जाता है, क्योंकि उसके अंदर कोई अन्तर्दृष्टि नहीं है, जो उसे केंद्र दे सके। उसके पास विचारों की भीड़ है। जो एक दूसरे से असम्बद्ध हैं, यहां तक कि वे एक दूसरे के घुर विरोधी हैं। एक दूसरे के विरोधाभासी हैं, उनमें गहरा सक्रिय विरोध है। उसके अंदर एक भीड़ है।

वे एक जैसे समूह और समाज के नहीं हैं, वे विचारों की भीड़ की तरह मन के अंदर शोर गुल कर रहे हैं इसलिए यदि सोचते—विचारते तुम उस भीड़ के साथ बहुत दूर तक चले जाते हो, तो एक दिन तुम पागल हो जाओगे। अत्यधिक विचार पागलपन उत्पन्न कर सकते हैं।

आदिम समाज में पागलपन होना दुर्लभ बात थी। जितना अधिक समाज सभ्य होता जाता है, उतने ही अधिक लोग पागल होते जाते हैं। और सभ्य समाज में वे लोग अधिक पागल होते हैं, जिन्हें बुद्धि से काम करना होता है। यह है दुर्भाग्यपूर्ण लेकिन यह एक वास्तविकता है कि किसी अन्य धंधे की अपेक्षा मनोविश्लेषक ही अधिक पागल होते हैं क्यों? बहुत अधिक सोचने से। इतने अधिक विरोधी विचारों की एक साथ व्यवस्था करना बहुत कठिन हो जाता है। उनकी व्यवस्था करने में तुम्हारा पूरा अस्तित्व कोलाहलपूर्ण और अव्यवस्थित हो जाता है।

समझ अकेली एक होती है। समझ केंद्र में होती है। वह सरल होती है, जब कि विचार बहुत जटिल होते हैं।

एक पत्नी का गुलाम पति एक मनोविश्लेषक के पास गया और उससे कहा—'' मुझे हर रात एक ही भयानक स्वप्न आता है। हर रात मैं सपने में देखता हूं कि मैं बाहर सुंदर स्त्रियों के साथ एक जहाज में बैठा प्रेमालाप कर रहा हूं।''

मनोविश्लेषक ने कहा—'' तो इसमें भयानक होने जैसी क्या बात है?''

उस व्यक्ति ने कहा—'' क्या आपने कभी बारह स्त्रियों से एक साथ प्रेमालाप करने का प्रयास किया है?''

यही उसकी समस्या थी—'' बारह स्त्रियों से कैसे एक साथ प्रेमालाप किया जाए? यहां तो एक स्त्री से ही प्रेमालाप करना कठिन है।''

विचार करना, हजारों हजार स्त्रियों से चारों ओर से घिरे हुए उससे प्रेमालाप करने जैसा है। स्वाभाविक रूप से कोई भी व्यक्ति इस स्थिति में पागल हो जाता है। समझदार होना बहुत सरल है, तुम्हारा विवाह एक ही अंतर्दृष्टि से होता है। लेकिन वह अंतर्दृष्टि एक प्रकाश की भांति कार्य करती है, जैसे वह एक टार्च हो, तुम जहां कहीं भी टार्च का प्रकाश केंद्रित करते हो, रहस्य उद्घाटित हो जाते हैं, तुम जहां कहीं भी टार्च से फोकस करते हो, अंधेरा विसर्जित हो जाता है।

अपनी छिपी हुई समझ को खोजने का प्रयास करो..... उसका रास्ता है.? विचारों को विसर्जित करना। और विचारों को गिराने की वहां दो ही सम्भावनाएं हैं या तो ध्यान अथवा प्रेम।

दूसरी चीज है—प्रतिक्रिया और प्रत्युत्तर। प्रतिक्रिया होती है विचारों से और प्रत्युत्तर आता है समझ से। प्रतिक्रिया होती है अतीत से और प्रत्युत्तर हमेशा वर्तमान और आता है। लेकिन साधारणतया हमारे अंदर प्रतिक्रिया होती है—हमारे पास हर चीज पहले ही से अंदर तैयार है।

कोई भी व्यक्ति कुछ भी कर रहा है और हमारे अंदर प्रतिक्रिया होती है। जैसे मानो किसी ने मेरा बटन या स्विच दबा दिया हो। कोई भी व्यक्ति तुम्हारा अपमान करता है तुम क्रोधित हो जाते हो। ऐसा पहले भी हुआ है हर बार ठीक ऐसा हमेशा ही होता है। यह लगभग एक बटन दबाने जैसा हो गया है। कोई भी व्यक्ति उस बटन को दबा देता है और तुम क्रोधित हो जाते हो। वहां एक क्षण के लिए भी तो तुम प्रतीक्षा नहीं करते, जहां तुम उस स्थिति को देख सको क्योंकि वह स्थिति भिन्न हो सकती है।

जो व्यक्ति तुम्हारा अपमान कर रहा है, वह ठीक भी हो सकता है, हो सकता है उसने तुम्हारे सामने केवल सच को ही उद्घाटित किया हो और उसी कारण तुम अपना अपमान होना समझ रहे हो। अथवा वह पूरी तरह गलत भी हो सकता है, या वह व्यक्ति गंदा भी हो सकता है। लेकिन तुम्हें उस व्यक्ति की ओर देखना होगा। यदि वह ठीक है तो तुम्हें उसे धन्यवाद देना चाहिए क्योंकि उसने तुम्हारे प्रति करुणा ही प्रदर्शित की है, तुम्हारे हृदय तक उसने मित्रवत होकर सत्य सम्प्रेषित किया है। यह हो सकता है उससे तुम्हें चोट पहुंची हो, लेकिन इसमें उसका कोई दोष नहीं। अथवा वह व्यक्ति मूर्ख और अज्ञानी हो सकता है, जिसे तुम्हारे बारे में कुछ भी ज्ञात न हो और उसने बिना सोचे—समझे कुछ भी बक दिया हो। तब फिर क्रोधित होने की कोई जरूरत ही नहीं है, वह व्यक्ति बस गलत है। कोई भी व्यक्ति उस बात के लिए जरा भी चिंतित नहीं होता, जो गलत हो। जब तक उसमें कुछ भी सत्य न हो तुम उस बारे में कभी भी उतेजित नहीं हो सकते। तुम उस पर हंस सकते हो जो पूरा का पूरा इतना अधिक मूर्खतापूर्ण और बेतुका है। अथवा वह व्यक्ति ही गंदा है, और यही उसका तरीका है। वह प्रत्येक व्यक्ति का अपमान करता रहा है। इसलिए विशेष रूप से वह तुम्हारे लिए कोई खास नहीं कर रहा है, वह ऐसा अपने साथ ही कर रहा है और बस किस्सा खत्म। इसलिए वास्तव में कुछ भी करने की जरूरत है ही नहीं। वह व्यक्ति है ही इसी तरह का।

किसी व्यक्ति ने गौतम बुद्ध का अपमान किया। उनके शिष्य आनंद ने कहा—'' मुझे बहुत अधिक क्रोध आ रहा है और आप मौन हैं। आपको कम से कम मुझे यह अनुमति तो देना चाहिए कि मैं उसे ठीक कर सकूं।''

बुद्ध ने कहा—'' तुम मुझे चकित कर रहे हो। पहले उसने मुझे चकित किया, और अब तुम मुझे चकित कर रहे हो। जो कुछ वह कह रहा था, वह बस असंगत था। वह हम लोगों से संबंधित है ही नहीं, इसलिए उसके अंदर जाने से लाभ क्या? लेकिन तुमने मुझे और भी आश्चर्यचकित कर दिया, तुम बहुत अधिक क्रोधित हो गए तुम क्रोध ही बन गए। यह बेवकूफी और मूढ़ता है। किसी और की गलती के लिए स्वयं अपने आप को सजा देना मूर्खता है। तुम अपने आप को दंड दे रहे हो। शांत हो जाओ। क्रोध करने की वहां कोई आवश्यकता है ही नहीं, क्योंकि क्रोध तो अग्नि की ज्वाला है। तुम स्वयं अपनी ही आत्मा को क्यों जला रहे हो? यदि उस व्यक्ति ने कुछ गलती की है, तो तुम स्वयं अपने आप को सजा क्यों दे रहे हो? यह मूर्खतापूर्ण है कि हम प्रतिक्रिया व्यक्त करें।''

मैंने सुना है :

एक व्यक्ति अपने एक मित्र को बतला रहा था—'' अपनी पत्नी को खुश करने के लिए मैंने सिगरेट और शराब पीना तथा ताश खेलना भी छोड़ दिया।'' उसके मित्र ने कहा—'' तब तो इस बात से उसे बहुत खुश होना चाहिए।''' नहीं ऐसा नहीं हुआ। अब प्रत्येक समय वह मुझसे बात करना शुरू तो करती है पर वह किस चीज के बारे में बात करे, यह उसके खयाल में नहीं आता।''

लोग यंत्रवत् एक रोबोट की तरह जीते हैं। यदि तुम्हारी पत्नी सिगरेट शराब पीने से तुम्हें रोकने के लिए ही तुमसे निरंतर झगड़ती रहती है और तुम सोचते हो कि यदि तुम पीना बंद कर दो तो वह खुश हो जाएगी तो तुम गलत सोच रहे हो। यदि तुम सिगरेट पीते हो, वह अप्रसन्न होती है, यदि तुम पीना बंद कर देते हो, वह तब भी अप्रसन्न ही रहेगी—क्योंकि तब वह तुमसे झगड़ा करने का कोई अन्य बहाना नहीं ढूंढ पाएगी।

एक स्त्री ने मुझसे कहा कि वह यह नहीं चाहती कि उसका पति दोषरहित हो।

मैंने पूछा—'' आखिर ऐसा क्यों?''

उसने उत्तर दिया—'' क्योंकि झगड़ा करने से मुझे प्रेम है।

यदि पति में कोई दोष या बुराई है ही नहीं, तो तुम क्या करने जा रही हो? तुम तो सिर्फ घाटे में ही रहोगी।''

तुम स्वयं अपना और दूसरों का निरीक्षण करो और देखो, वे लोग किस तरह यंत्रवत् आचरण करते हैं: जैसे वे मूर्च्छित हों, अथवा नींद में चलने वाले व्यक्ति की भांति आचरण कर रहे हों।

प्रतिक्रिया मन की होती है। और प्रत्युत्तर अमन से आता है।

विश्वास और श्रद्धा—ठीक फिर वैसा ही विश्वास होता है मन का, विचार। का ' श्रद्धा आती है अमन से, वह जन्मती है सजगता और समझ से।

पहाड के निकट एक गांव में ऐसा हुआ कि एक शिकारी ने गाइड से कहा— '' यह पहाड की चोटी तो बहुत खतरनाक प्रतीत होती है। यह बड़े आश्चर्य की बात है कि उन्होंने चेतावनी देने वाला कोई बोर्ड भी नहीं लगाया।''

स्थानीय गाइड ने स्वीकार करते हुए कहा—'' वह एक बोर्ड दो वर्षों तक टांगे रहे। लेकिन जब इस चोटी से कोई नीचे गिरा ही नहीं, तो उन्होंने उस बोर्ड को नीचे उतार लिया।''

विश्वास अंधा होता है। तुम विश्वास करते हो क्योंकि तुम्हें विश्वास करना सिखाया गया है, लेकिन यह कभी भी बहुत गहरे तक नहीं जाता, क्योंकि इसमें स्थिति की कोई समझ ही नहीं होती। यह केवल एक अनावश्यक धागा है, ठीक कुछ ऐसी चीज है जो तुममें जोड़ दी गई है। उसका जन्म और विकास तुमसे नहीं हुआ

है। यह केवल उधार लिया हुआ है इसलिए यह कभी भी तुम्हारे अस्तित्व को भेदता नहीं। कुछ दिनों तक तुम इसे साथ लिए चलते हो, और तब यह देखकर कि यह अनुपयोगी है और इसके रहते कुछ भी तो नहीं घट रहा है, तुम उसे उठाकर एक ओर अलग रख देते हो। यहां ईसाई लोग हैं, जो ईसाई नहीं है, यहां हिंदू हैं पर वे हिंदू नहीं है। वे केवल उन विश्वासों के कारण हिंदू हैं, जिनका उन्होंने कभी उपयोग नहीं किया, उन विश्वासों को उनके द्वारा कभी भी सम्मान नहीं दिया गया। उनका खयाल है कि वे ईसाई हिंदू या मुसलमान हैं लेकिन तुम एक मुसलमान कैसे हो सकते हो, यदि तुमने अपने विश्वास को जिया ही नहीं। लेकिन विश्वास को जिया नहीं जा सकता। यदि कोई भी व्यक्ति अधिक सजग बनकर जीवन का निरीक्षण करता रहे तो जीवन से स्वयं उत्तर आते हैं और धीमे— धीमे श्रद्धा का जन्म होता है। श्रद्धा तुम्हारी अपनी है, विश्वास किसी और पर किया जाता है। विश्वासों को गिरा दो जिससे श्रद्धा का जन्म हो सके और विश्वासों के साथ संतुष्ट मत हो जाना अन्यथा श्रद्धा का कभी जन्म होगा ही नहीं।

अब सहानुभूति और करुणा. फिर वही बात " प्रश्नकर्त्ता ने एक ही चीज को बार—बार पूछा है। सहानुभूति मन की होती है, तुम्हें लगता है कि कोई व्यक्ति मुश्किल में है, कोई व्यक्ति दुखी है। तुम इससे के कष्ट के बारे में सोचकर उसकी सहायता करते हो। तुम्हें दूसरों की सहायता करना, सेवा करना, कर्त्तव्य परायण बनना, एक अच्छा इंसान बनना, एक सुंदर नागरिक बनना, अथवा यह और वह बनना सिखाया गया है। तुम्हें सिखाया गया है, इसलिए तुम्हें सहानुभूति का अनुभव होता है। करुणा का तुम्हारे सिखाने से कोई भी लेना— देना नहीं है। करुणा एक शक्ति के रूप में जब किसी के प्रति जन्मती है तो उस व्यक्ति को जिसे दुख वेदना का अनुभव हो रहा होता है, वैसी ही पीड़ा उसे भी होती है, यह सहानुभूति नहीं होती। करुणा उठती है। जब तुम किसी भी व्यक्ति को जैसा वह है, उसे वैसा ही देखते हो। और जब तुम उसे इतनी समग्रता से देख सकते हो कि तुम्हें वह सब कुछ महसूस होना शुरू हो जाता है जो उस स्थिति में वह व्यक्ति महसूस कर रहा होता है।

कुछ लोग एक मछुवे को पीट रहे थे। रामकृष्ण परमहंस गंगा में नाव द्वारा एक किनारे से दूसरे किनारे की ओर दक्षिणेश्वर के पास जा रहे थे। दूसरे किनारे पर कुछ लोग एक व्यक्ति को पीट रहे थे। रामकृष्ण नदी की धारा के बीच में थे कि अचानक उन्होंने चीखना, चिल्लाना और रोना शुरू कर दिया। वह चिल्ला—चिल्ला कर कह रहे थे— " रुक जाओ, मुझे पीटो मत।''

जो लोग उनके आसपास बैठे हुए थे, उनमें उनके शिष्य तक यह समझ न सके कि यह सब कुछ क्या हो रहा है? उन्होंने उनसे पूछा—'' आपको कौन पीट रहा है? आपको पीट ही कौन सकता है? आप क्या कह रहे हैं परमहंस देव? आप पागल तो नहीं हो गए?"

उन्होंने कहा—'' देखो! वे लोग मुझे उस दूसरे किनारे पर पीट रहे हैं।'' तब उन लोगों ने देखा कि कुछ लोग वहां एक व्यक्ति को पीट रहे हैं और रामकृष्ण ने कहा—'' मेरी पीठ देखो।'' उन्होंने अपनी पीठ उघाड कर दिखाई—वहां चोट के निशान थे और वहां खून बह रहा था। यह विश्वास करना असम्भव था। वे लोग शीघ्रता से उस किनारे पहुंचे और उस व्यक्ति को पकड़ लिया जो पीटा जा रहा था। उन्होंने उसकी पीठ उघाड़ कर देखी, वहां भी चोट के ठीक वैसे ही निशान थे। यह है किसी भी व्यक्ति की पीड़ा को उसी स्थिति में अपने को रखकर महसूस करना, जिससे जो कुछ दूसरे के साथ घट रहा है वैसा ही घटना तुम्हारे साथ भी होने लगे। तभी करुणा जागती है। लेकिन यह सभी स्थितियां अमन की हैं। अब संचार और सहभागिता या अंतर्संवाद.....

संचार है मन द्वारा मौखिक, बौद्धिक और मानसिक रूप से विचारों और सूचनाओं का आदान—प्रदान। अंतर्संवाद और सहभागिता है अमन की चीज। गहन मौन में ऊर्जा का हस्तांतरण, निःशब्द एक हृदय से दूसरे हृदय की ओर एक उछाल, अभी और यहीं; तुरंत और बिना किसी माध्यम के।

सबसे आवश्यक और सारभूत चीज जो स्मरण रखने की है वह तुम्हारे जीवन को दो भागों में बांटती हैं। वह पूरे संसार को भी दो संसारों में बांटती है उसी सारभूत

वस्तु को यदि तुम विचारों के पर्दे या स्क्रीन द्वारा देख रहे हो, तब तुम जिस संसार रह रहे हो, वह संसार है विश्वास का, विचारों का और सहानुभूति का। यदि तुम उसी सारभूत वस्तु को स्पष्ट पारदर्शी आंखों से देख रहे हो, तब तुम्हारे बोध, या ज्ञान में जैसी वे हैं, तब तुम उनमें कोई किसी चीज का प्रक्षेपण नहीं करते। तब तुम्हारे पास एक समझ होती है, तब तुम ध्यान में होते हो। तब पूरा संसार बदल जाता है। और मन के साथ समस्या यह है कि वह तुम्हें धोखा दे सकता है। वह सहानुभुति उत्पन्न करता है वह नकली सिक्के बनाता है करुणा के स्थान पर वह सहानुभूति उत्पन्न करता है, जो एक नकली सिक्का है। इसी तरह सहभागिता और अंतर्संवाद के सामने मन के द्वारा सूचनाओं और विचारों का आदान—प्रदान नकली सिक्के की भांति है। श्रद्धा के सामने विश्वास भी एक नकली सिक्के की भांति है।

स्मरण रहे, मन प्रतिस्थापन देने की कोशिश करता है। तुम्हें किसी चीज के अभाव का अनुभव हो रहा है। मन उसके स्थान पर कुछ और उस जैसी ही चीज की प्रतिपूर्ति करता है। बहुत सजग बने रहो, क्योंकि मन जो कुछ भी करने जा रहा है, वह एक धोखा ही बनने जा रहा है। मन सबसे बड़ा धोखेबाज है, वह सबसे बड़ा छलिया है। वह तुम्हारी सहायता करता है, वह तुम्हें सान्त्वना देने की कोशिश करता है और तुम्हें कुछ चीज देता भी है।

उदाहरण के लिए यदि दिन में तुमने उपवास रखा है तो रात तुम सपनों में भोजन देखोगे, बड़े शानदार होटलों में विश्राम करोगे अथवा राजाओं के महलों में सुस्वादु भोजन करने के लिए आमंत्रित किए जाओगे। क्यों ?—तुम पूरे दिन भूखे रहे हो, अब भूख के कारण सोना कठिन हो रहा है। मन भोजन का प्रतिस्थापन स्वप्न निर्मित करके देता है। क्यों? तुम पूरे दिन भूखे रहे हो, अब भूख के कारण सोना कठिन हो रहा है। मन उसका प्रतिस्थापन स्वप्न निर्मित करता है।

क्या तुमने इस बात का निरीक्षण नहीं किया कि रात में जब तुम्हारा मसाना फूल जाता है और तुम बाथरूम जाना चाहते हो, लेकिन तुम्हारी नींद में इससे बाधा पड़ेगी। मन तुरंत एक स्वप्न निर्मित करता है कि तुम बाथरूम में हो। तब तुम फिर सोने जा सकते हो। वह तुम्हें एक प्रतिस्थापन देता है। यह प्रतिस्थापन तुम: शांत और संतुष्ट करने के लिए है यह असली नहीं हैं, लेकिन कुछ समय के लिए यह सहायक होता है।

इसलिए मन द्वारा दिए गए आश्वासन से सावधान रहो। वास्तविकता खोजो, क्योंकि वास्तविक यथार्थ ही आवश्यकता की गति कर सकता है। आश्वासन केवल माग को आगे के लिए टाल देगा। वे कभी भी उन्हें पूरा नहीं कर सकते हैं। तुम रात सपने में जितना भी भोजन करना चाहो, कर सकते हो, तुम भोजन के रंग, गंध, स्वाद और हर चीज का आनंद ले सकते हो, लेकिन उससे तुम्हारा पालन पोषण न हो सकेगा। विश्वास तुम्हें श्रद्धा की पूरी गंध दे सकता है, उसका रंग और स्वाद भी दे सकता है। तुम उसमें आनंदित भी हो सकते हो, लेकिन वह तुम्हारा पोषण नहीं करेगा। पोषण तो केवल श्रद्धा कर सकती है।

हमेशा याद रहे, जिससे भी तुम पुष्ट होते हो, तुम्हारा विकास होता है वही सच्ची और प्रामाणिक चीज है और जिस चीज से केवल आश्वासन मिलता है, वह बहुत खतरनाक है। क्योंकि इस आश्वासन के कारण फिर तुम वास्तविक भोजन की खोज ही न करोगे। यदि तुमने स्वप्नों में रहना ही शुरू कर दिया, और वास्तविक सच्चा भोजन नहीं किया, तो धीमे— धीमे बिखर जाओगे, विसर्जित हो जाओगे, सूख कर मर जाओगे।

इसलिए कार्यवाही तुरंत करो। जब कभी मन किसी जरूरत का प्रतिस्थापन देने का प्रयास करे, उसकी बात सुनो ही मत। मन बहुत बड़ा सेल्समैन और बहुत अधिक पथ भ्रष्ट करने वाला है। वह तुम्हें समझाता है और

तुमसे कहता है—'' ये चीजें बहुत सस्ती हैं। श्रद्धा को खोजना बहुत अधिक कठिन है, क्योंकि उसके लिए तुम्हें अपने जीवन को जोखिम में डालना होगा, विश्वास बहुत सरल और सस्ता है। तुम उसे मुफ्त ही पा सकते हो।''

वस्तुत— बहुत से व्यक्ति पहले ही से तैयार बैठे हैं — 'यदि तुम उनके विश्वास स्वीकार करने को तैयार हो जाओ, तो वे उसके साथ तुम्हें कुछ और भी चीज देने को तैयार हैं। ईसाई बनने, हिंदू बनने या मुसलमान बनने के लिए लोग तुम्हारा महान स्वागत सत्कार और सम्मान करने को तैयार हैं। हर चीज उपलब्ध है बस उनके विश्वास को स्वीकार कर लो। विश्वास न केवल सस्ता है, वह अपने साथ बहुत सी अन्य चीजें को भी साथ ला सकता है। श्रद्धा खतरनाक है। वह कभी भी सस्ती नहीं है। तुम्हें इसके लिए जीवन दांव पर लगाना होगा। इसके लिए साहस की जरूरत है, लेकिन केवल एक साहसी व्यक्ति ही धार्मिक बन सकता है।''

आज बस इतना ही।

तीसरा प्रवचन

लाखों मीलों का अंतराल

दिनांक 23 जून 1976; श्री ओशो आश्रम पूना।

बाउलगीत:

न कुछ भी हुआ है
और न कुछ भी होगा।
जो जहां है, वह वहां है।
मैं अपने स्वप्न में राजा बन गया
और मेरी प्रजा ने सम्पूर्ण पृथ्वी पर अधिकार जमा लिया।
मैं सिंहासन पर बैठकर शेर की तरह शासन करने लगा।
एक सुखी जीवन जीने लगा।
पूरा संसार मेरी आज्ञा का पालन करने लगा..।
पर जैसे ही मैंने अपने बिस्तरे पर करवट बदली
सब कुछ स्पष्ट हो गया
मैं शेर न होकर शेरका चाचा था
गांव का मूर्ख बैसाखनंदन, एक साधारण गदहा.....।
न कुछ भी हुआ है, और न कुछ भी होगा। जो जहां है,वहां है।

यह सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण वक्तव्यों में से एक है, जो अभी तक दिए गए हैं। यह ऐसा ही है वास्तविकता जैसी है, वैसी ही बनी रहती है। कोई भी चीज नहीं बदलती, न कुछ भी बदल सकता है। लेकिन हम अपने चारों ओर बहुत से परिवर्तन घटते हुए देखते हैं। हमारे लिए तो प्रत्येक वस्तु बदल रही है। जीवन एक अनवरत प्रवाह है।

तब कोई चीज हमारे साथ ही गलत हो रही है। तब वहां जो परिवर्तन दिखाई देता है, वह इस कारण नहीं कि वह वहां है, बल्कि इसलिए क्योंकि हम शाश्वत को नहीं देख सकते। हमारी सत्य को, शाश्वत को देखने की असमर्थता ही हमारे चारों ओर बातों की बाढ़ की तरह का कोलाहल उत्पन्न कर देती है। यह हमारी कांपती झिलमिलाती चेतना की ज्योति के कारण होता है।

क्या तुमने एक अंधेरे कमरे में कभी निरीक्षण किया है? एक छोटी सी मोमबत्ती जलती है तो उसकी लौ कांपती झिलमिलाती रहती है। क्योंकि उसकी लौ कांप या हिल रही है, इसलिए पूरा कमरा हिलता—डुलता और बदलता सा लगता है। यदि लौ थिर होकर एक सी जलती रहे तो कमरे का हिलना—डुलना और बदलना रुक जाता है।

हमारी चेतना ही मृगतृष्णा, भ्रम या स्वप्न सरीखा संसार निर्मित करती है जो हमें चारों ओर से घेर लेता है। इस बात को बहुत गहराई से समझ लेना चाहिए क्योंकि यही सभी सारभूत धर्मों का आधार है।

जहां तक साधारण समझ जाती है, यह सत्य है कि हर चीज बदलती दिखाई देती है, यहां कुछ भी स्थाई जैसा नहीं लगता। दो क्षणों अथवा एक के बाद आने वाले दूसरे क्षण के लिए भी कोई भी चीज एक जैसी समान

नहीं दिखाई देती। कुछ भी ज्यों की त्यों, वही का वही नहीं दिखाई देता, हर चीज नदी की भांति प्रवाहित हो रही है। यह सोचना कि कोई भी वस्तु स्थाई है, लगभग असम्भव है। किसी भी चीज के बारे में यह सोचना कि वह हमेशा, हमेशा के लिए ज्यों की त्यों बनी रहेगी, मन की समझ के बाहर की बात है। मन केवल परिवर्तशील जगत के बारे में जानता है। मन केवल स्वप्न या भ्रम के बारे में ही जानता है। मन के द्वारा जिए जाने वाला जीवन, सपनों का ही जीवन है। माया की धारणा का यही अर्थ है। यह वास्तविकता के बारे में कुछ भी नहीं बताती। स्मरण रहे माया यह भी नहीं कहती कि वास्तविकता सच नहीं है, वह यह भी नहीं कहती, कि अस्तित्व एक स्वप्न है। यह केवल यही कहती है कि इसे तुम जिस तरह से देखते हो, वह इतना अधिक मूर्च्छापूर्ण है, वह देखने का ढंग इतना अधिक अस्थिर और हिलने—डुलने वाला है, जिससे तुम्हारा अंदर से कंपना और हिलना—डुलना तुम्हें सपनों और वार्तालाप की बाढ़ जैसा एक कोलाहल देता है। आंतरिक सत्यनिष्ठा को उपलब्ध होने के लिए समग्र चेतना का तरल से ठोस होकर उसका एकीकरण किया जाए और तभी अचानक मछली बाजार जैसा कोलाहल विसर्जित हो जाता है और तुम अकस्मात् उस सत्य के आमने सामने होते हो जो शाश्वत और अति महत्त्वपूर्ण है और उसे तुम परमात्मा भी कह सकते हो। संसार और परमात्मा दो चीजें नहीं है, बल्कि एक ही सत्य दो भिन्न तरह से दिखाई देता है। एक देखा जाता है मन के द्वारा और दूसरा अमन के द्वारा क्योंकि यदि मन है वहां, तो कम या अधिक दृश्य हिलता—डुलता अस्थिर जरूर होगा।

मन स्थिर हो ही नहीं सकता। का तुमने कभी देखा है उसे? मन कुछ क्षणों के लिए भी स्थिर नहीं हो सकता। किसी दिन तुम अपनी घड़ी को तुम सिर्फ देखो, सिर्फ यह याद रहे कि तुम घड़ी की ओर देख रहे हो। और तुम इस स्मरण को अधिक देर तक संभाल रखने में समर्थ न हो सकोगे कि तुम घड़ी को ही देख रहे हो यहां तक कि कुछ सेकिंडों तक भी नहीं। तुम्हारा मन इसी बीच कहीं और फिसल जायेगा किसी की याद में, किसी चीज की कल्पना में। कोई अधूरा काम याद आ जायेगा, कोई चिंता कोई योजना खयाल में आ जायेगी अथवा तुम सोचने लगोगे कि तुम्हें कहीं और चल पड़ना चाहिए। तुम फिर यह महसूस करोगे और देखोगे कि कुछ क्षणों के लिए तुम यहां हो ही नहीं।

बार—बार कोशिश करो, लेकिन मन इधर—उधर भागेगा ही। मन थिर हो ही नहीं सकता। इसलिए मन को थिर करने के सारे प्रयास करना असम्भव है। ऐसी मन की प्रकृति है ही नहीं। इसे थिर बनाने का केवल एक ही उपाय है, कि पूरे मन को जैसा वह है उसे पूरा विसर्जित कर दिया जाये, वास्तविकता को बिना कुछ भी सोचे विचारे सीधे इस तरह देखा जाये कि माध्यम के रूप में भी वहां मन हो ही नहीं। तुरंत देखो, तभी अचानक परमात्मा प्रकट होता है। तब सभी रूपों में वह अरूप दिखाई देता है। तब तुम जो कुछ भी देखोगे, उसी के लिए बाउल गाते हैं

न कुछ भी हुआ है
और न कुछ भी होगा
जो जहां है, वह वहां है

और जो वहां नहीं है, वह वहां नहीं है। लेकिन जो वहां नहीं है, मन उसी को देखे ही चले जा रहा है, क्योंकि जो वहां नहीं है, हम उसे भी नहीं देख सकते जो वहां है। केवल उस नकली, प्रक्षेपित और उस स्वप्न के कारण ही हम उस वास्तविक सत्य को नहीं देख सकते। जब हम नकली चीज को हटा या गिरा देते हैं, तो वास्तविकता या सच्चाई प्रकट हो जाती है।

वास्तविक सच को खोजने का कोई दूसरा अन्य तरीका है ही नहीं। किसी भी व्यक्ति को उस यांत्रिक प्रणाली को ही हटा देना होगा, जो नकलीपन निर्मित करता है।

मन एक प्रोजेक्टर, चित्र प्रक्षेपित करने वाला यंत्र है। तुम सिनेमाघर में बैठकर, सामने पर्दे पर एक हजार एक चीजें गुजरती हुई देखते हो और पर्दा कोरा तथा खाली होता है, इस पर से वास्तव में सिवाय छायाओं के और कुछ भी नहीं गुजरता। तुम उस पर्दे को देखते रहते हो। और इस बात की पूरी संभावना है कि तुम्हें अपने पीछे चलने वाले उस प्रोजेक्टर का खयाल तक न आये, जो उन सभी तस्वीरों की छायाओं को प्रक्षेपित कर रहा है। तुम उन छायाओं के साथ लड़ सकते हो, लेकिन उन्हें रोकने का यह कोई तरीका नहीं है। तरीका है—पीछे देखो, एक सौ अस्सी डिग्री पर घूम कर पीछे जाओ और प्रोजेक्टर को बंद कर दो। एक बार प्रोजेक्टर रुक गया तो सामने का पर्दा कोरे का कोरा रह जायेगा। अचानक वहां कुछ भी नहीं होगा, अथवा होगी कोरे पर्दे की मात्र सफेदी। केवल शाश्वत शून्य होगा वहां और क्षण— क्षण बदलती तस्वीरों का संसार गायब हो जायेगा। लेकिन इसके लिए व्यक्ति को प्रोजेक्टर मशीन को बंद करना होगा।

यहां ऐसे बहुत से लोग हैं। जो ध्यान करने में रुचि लेने लगते है, लेकिन गलत रूप में। वे मन के साथ लड़ना शुरू कर देते हैं। वे मन से लडते हुए उससे कुश्ती लड़ते हैं। तब वे कभी भी मन को जीत न पायेंगे। तब वे एक हार जाने वाली लड़ाई लड़ रहे हैं। यह सम्भव ही नहीं है, क्योंकि वे प्रोजेक्टर को भुला बैठे हैं। वह प्रोजेक्टर है कहां? पहले उस व्यक्ति को वह प्रोजेक्टर खोजना होगा, जो उसके ही पीछे छिपा है। वह प्रोजेक्टर तुम्हारे ही अंदर गहरे में तुम्हारे अचेतन में छिपा हुआ कामनाएं कर रहा है और कुछ होना चाह रही है। यह वही है जिसे बुद्ध तृष्णा कहते हैं। और कुछ होना चाह रही है। यह वही है जिसे बुद्ध तृष्णा कहते हैं। कुछ होने या बनने की अनवरत कामना, कुछ बनना है बनकर उससे भी आगे कुछ और बनना है और यही कारण है मन के होने का, मन अपना सोचना निरंतर जारी रखता है।

उस प्रोजेक्टर रूपी मन को कैसे रोका जाये? यहीं और अभी में स्थिर होकर। किसी भी तरह कुछ बनने या कुछ होने का प्रयास करो ही मत, तुम जो कुछ हो उसे स्वीकार कर लो। प्रगति या सुधार करने के सभी विचारों को ही छोड़ दो। अपने आप को बेहतर बनाने का विचार ही त्याग दो। कोई भी चीज पाने के सभी खयाल गिरा दो, क्योंकि यहां पाने जैसा कुछ है ही नहीं। हम खाली हाथों यहां आये थे और खाली हाथों ही विदा हो जायेंगे और यदि तुम सोच रहे हो कि तुम्हारे हाथ भरे हुए हैं, तब तुम स्वयं अपने आपको बेवकूफ बना रहे हो। तब तुम सपनों को सच्चा मान रहे हो। तुम्हारे हाथ सपनों से भरे हो सकते हैं।

तुमने जापानी कराटे के अनुशासन के बारे में जरूर ही सुना होगा। यह शब्द कराटे बहुत अधिक अर्थपूर्ण है। इसका मूल शब्द जहां से आया है, उसका अर्थ होता है खाली हाथ।

इसका कहना है : एक मनुष्य महान योद्धा तभी बन सकता है, जब वह समग्रता से खाली होने का अर्थ समझता है। यदि कोई भी मनुष्य यह समझता है कि मैं खाली हाथ ही आया हूं खाली हाथों ही मैं विदा हो जाऊंगा और खाली हाथों ही मैं यहां हूं तब यहां खोने के लिए कुछ है ही नहीं। उस व्यक्ति को कौन जीत सकता है, जिसके पास खोने के लिए कुछ है ही नहीं? उस व्यक्ति को भी कौन हरा सकता है, जिसके पास खोने को कुछ भी नहीं है? उस व्यक्ति को कौन भयभीत कर सकता है, जिसके पास खोने के लिए कुछ भी नहीं है। खालीपन या शून्यता की इस समझ से ही वह एक महान योद्धा बनता है। उसे हराना असम्भव है, उसे लूट लेना असम्भव है। उसे जान से मारना 'भी असम्भव है क्योंकि वह पहले ही से शून्य है, खाली है। वह अपने हाथों में कुछ भी नहीं पकड़े हुए है। कोई भी चीज हाथों में न लेकर वह जीवन और मृत्यु के पार चला गया है।

जीसस के भी कहने का यही अर्थ है, जब वह बार—बार कहते हैं— अपने आप को खो दो। और वे जो अपने आप को नहीं खो रहे हैं, वे खो देंगे और वे जो सब कुछ खोने को तैयार हैं, वे ही पायेंगे। खोने वाले ही

जीत जायेगे, और जीतने वाले ही खोने वाले बन जायेगे। जो खाली हैं वे भर दिए जाएंगे और वे जो अपने आपको भरने की कोशिश कर रहे हैं, खाली ही बने रहेंगे। यहां यही विरोधाभास अथवा असंगति है।

सभी विचारों खयालों और कामनाओं के पीछे, कुछ होने या कुछ पाने की उस वृत्ति को समझो। यह बीज के समान ही है। उसके अंदर गौर से देखो तुम अभी और यहीं क्यों नहीं हो सकते? ऐसा क्यों है कि तुम्हें कहीं और होने का खयाल हमेशा बना रहता है? तुम जैसे हो, तुम वैसे ही प्रसन्न क्यों नहीं रह सकते? तुम ऐसा क्यों सोच रहे हो कि तुम कल प्रसन्न होगे? तुम कल कैसे खुश हो सकते हो, यदि तुम आज ही खुश नहीं हो? क्योंकि आने वाला कल इसी क्षण से जन्म लेने जा रहा है। इसी क्षण से ही अगले आने वाले क्षण का जन्म होने जा रहा है। आज ही आने वाले कल का पिता—माता बनने जा रहा है। यदि तुम आज नाखुश हो तो तुम कल और भी अधिक नाखुश होगे। उस समय तक अप्रसन्न होने की तुम कुछ और तरकीबें सीख चुके होंगे। तुम उसका अभ्यास कर रहे हो, और तुम कल प्रसन्न होने की आशा करते हो? तब तुम एक निराशाभरी लीक पर चले रहे हो। तुम कल के लिए कामना कर रहे हो, तब तुम निरंतर उस सभी से चूके जा रहे हो जो यहां अभी है और केवल यहां, यही वास्तविकता और सच्चाई है। यदि तुम एक क्षण के लिए कामना करने को एक ओर अलग हटाकर रख सकते हो तो मन रूपी प्रोजेक्टर रुक जाता है, सपने भी बंद हो जाते हैं। और तुम सच्चाई का सामना करने में समर्थ हो जाते हो।

कुछ भी नहीं घटा। वास्तविकता या सच्चाई जैसी पहले शुरू से हमेशा ही रही है, वैसी ही है। न कुछ भी हुआ है और न कुछ भी होगा। इसलिए तुम्हारी सारी कामनाएं निरर्थक हैं क्योंकि किसी चीज के घटित होने के लिए तुम प्रयास कर रहे हो। तुम्हारा पूरा प्रयास यही है कि कुछ घटे, धन, समृद्धि, शक्ति, सत्ता, सम्मान.....कुछ तो मिले। तुम्हारा पूरा प्रयास किसी चीज के घटने के लिए ही है।

लेकिन न कुछ भी हुआ है
और न कुछ भी होगा।
जो जहां है, वह वहां है।

यह अत्यधिक महत्वपूर्ण सूत्र है। इस सूत्र में सारे शास्त्रों का निचोड़ है। यदि तुम केवल इन तीन पंक्तियों को ही समझ सको, तो फिर कोई भी अन्य चीज समझने की यहां जरूरत ही नहीं। अपने बचपन से लेकर अपने अब तक के जीवन की ओर देखो। हुआ क्या है? बहुत सी चीजें घटती दिखाई देती हैं। लेकिन वास्तव में घटा क्या है? तुम ज्यों के त्यों बने रहे, तुम्हारी चेतना भी वैसी ही बनी रही, और शेष सभी जो कुछ भी घटा, केवल ऊपरी है, उथला है ,एक सपने जैसा है। यदि वह अभी तक नहीं घटा है,तो फिर भविष्य में भी वह कैसे घटेगा? यहां केवल वर्तमान ही है, अतीत और भविष्य मात्र स्वप्न हैं। फिर भी यदि तुम केवल क्षण मात्र के लिए ही सच्चाई में गहरे उतर कर उसका सामना करते हुए उसे देख सको तो तुम अपने प्रयासों की व्यर्थता पर हंसोगे। तुम क्या करने की कोशिश कर रहे थे? तुम किसी असम्भव जैसी वस्तु को पाने का प्रयास कर रहे थे, तुम वास्तविकता या सत्य के विरुद्ध संघर्ष कर रहे थे, सत्य जो है, वह है, वह कुछ बनना जानता ही नहीं, वह तो बस होना है। वह कोई भी भविष्य नहीं जानता, वह तो पहले ही से यहां है। वह यहां हमेशा पहले ही से रहा है। तुम्हें बस उसे देखना भर है— और एक बार यदि तुम उसे देख सको तो तुम्हारी सारी चिंताएं सारी पीड़ाएं विसर्जित हो जाएंगी। तब तुम कोशिश करना बंद कर दोगे, अपने जूते के फीतों को खींचकर अलग फेंक दोगे और तब तुम केवल विश्राम करोगे। तब वहां कोई तनाव होगा ही नहीं तब वस्तुत' तुम प्रसन्न होना शुरू कर दोगे, तुम आनंद का अनुभव करने लगोगे, जैसे कि तुम वास्तव में हो ही।

हम इसे ठीक से समझ सकें, उससे पहले कुछ चीजें सहायक होंगी। पहली बात तो यह कि सामान्यतया पूरब का मनोविज्ञान मनुष्य के मन को तीन भागों में विभाजित करता है। पहली है गहरी, बहुत गहरी नींद, जब वहां कोई स्वप्न भी नहीं होते सुषुप्ति, स्वप्नरहित निद्रा। इस स्थिति में निन्यानवे प्रतिशत अचेतन और केवल एक प्रतिशत चेतना होती है।

चेतना का जिसमें बहुत छोटा सा ही भाग होता है—पूरा महाद्वीप अंधकारमय होता है, बस रोशनी की केवल एक किरण होती है। इसी किरण के कारण ही सुबह तुम कह सकते हो— " मुझे आज बहुत गहरी और प्यारी नींद आई। वह पूरी तरह से मौन और शांत होती है। उसमें वहां एक 'भी स्वप्न नहीं होता।'' चेतना की इस एक किरण के कारण ही, तुम सुबह इसके बारे में कुछ कह सकते हो। यदि वहां कोई भी चेतना थी ही नहीं, तब यह बात याद किसे रहती? तब फिर कौन यह कहता कि नींद सुंदर और सुखपूर्ण थी?

बस एक छोटी सी किरण, बहुत छोटी सी किरण सपना में भी होती है। यह दूसरी स्थिति है मन की—स्वप्न देखने की थोड़ी सी अधिक चेतना आस्तित्व में आती है। तुम्हें सामान्य रूप से याद रहता है कि तुम अच्छी तरह सोये। तुम स्वप्नों का स्मरण भी कर सकते हो, उनके पूरे विस्तार सहित। यहां तक कि तुम सपनों की कहानी, उसका रंग, ढंग और उसका मुख्य विचार भी याद कर सकते हो। तुम पूरे स्वप्न को एक दूसरे से संबंधित कर सकते हो। स्वप्न में तुम थोड़े अधिक चेतन होते हो।

तब तुम सुबह जागते हो। वह तीसरी स्थिति है जागने वाली स्थिति, थोड़ी और अधिक सचेतन। लेकिन तुम्हारी आत्मा का विराट महाद्वीप फिर भी अंधकारमय ही रहता है। यहां तक कि तुम जागते हुए भी पूरी तरह जाग्रत नही होते हो। तुम्हारी जागृति की ही गहराई में दिवास्वप्न तैरते रहते हैं। तुम उन्हें भली भांति देख सकते हो।

किसी भी क्षण अपनी आंखें बंद कर लो, एक मिनट के लिए विश्राम करो और तुम वहां स्वप्नों को तैरते हुए देखते हो। इसलिए ठीक तुम्हारी चेतना के ही नीचे सपनों का विराट संसार चलता ही रहता है, और वह तुम्हारी चेतना को प्रभावित करता है। स्वप्न शक्तिशाली चीज है। वे प्रक्षेपण हैं, वे तुम्हारी चेतना पर छाया किये हुए हैं। और तुम अपने सपने की भी गहराई में फिर एक तरह की निद्रा पाओगे। जब रात तुम गहरी नींद में होते तो तो वही फिर घटती है। जब रात तुम सोते हो तो पहले स्वप्नों से ही शुरुआत होती है। यह दूसरी स्टेज है। तब तुम और तुम नींद में गहरे उतर जाते हो। तुम फिर परिधि की ओर तैरने लगते हो और यह स्थिति निरंतर पूरी रात चलती है, तुम ऊपर नीचे गति करते रहते हो। यदि तुम पूरी रात में पंद्रह मिनट के लिए भी नींद की इस गहरी पर्त को स्पर्श कर सको, तो उतना ही विश्राम काफी होता है। यही कारण है कि जो लोग ध्यान करते हैं, उन्हें अधिक नींद की जरूरत नहीं होती, क्योंकि गहरे ध्यान में वे आसानी से अपने अस्तित्व की गहराई तक पहुंच जाते हैं। शेष रात तो स्वप्न देखने में व्यर्थ नष्ट हो जाती है। ये तीन स्थितियां मन की साधारण स्थितियां हैं।

पूरब कहता है—'' जब तक तुम पूर्ण होश को प्राप्त न कर लो, तुम्हारा जीवन यह कभी न जान पाएगा कि सत्य या वास्तविकता है क्या, और क्या परमात्मा है। इस पूरे होश और परम चैतन्य का अर्थ है—पूरी तरह सजग और होशपूर्ण होना, जहां तुम्हारी चेतना का कोई कोना भी अंधेरा न रहे और पूरा अचेतन विसर्जित हो जाये। फ्रायडवादी इसी को धीमे— धीमे अचेतन मन का विसर्जित होना कहते हैं। यह ध्यान, प्रार्थना और प्रेम की विधियों द्वारा विसर्जित होती है, और तुम अधिक से अधिक होशपूर्ण होते जाते हो। एक क्षण ऐसा आता है, जब तुम्हारा अस्तित्व चैतन्य हो जाता है प्रकाश से भर कर आलोकित हो उठता है। तब न तो स्वप्न होते हैं, और न नींद ही। तब केवल होश या चैतन्य ही होता है, जो तुम्हारा सारभूत तत्व है। उसी क्षण मैं तुम यह जानने में में समर्थ हो सकोगे कि बाउलों के इस गीत का रहसय क्या है।

न कुछ भी हुआ है

और न कुछ भी होगा।

जो जहां है, वह वहां है।

और यदि तुम इसे समझ जाओ, इसकी एक झलक भी पा लो, तब फिर तुम कैसे इस अज्ञात अस्तित्व में बने रह सकते हो, तुम कैसे चिंतित और तनावग्रस्त रह सकते हो और कैसे बीमारियों का पोषण कर सकते हो।

हेनेरी थोरो कहा करता था कि मनुष्य सोचता है कि सोचना ही उसकी सम्पत्ति है—मनुष्य सोचता है कि विचार करने से वह धीमे— धीमे समृद्ध होता जाता है, तो समृद्ध होने की अपेक्षा वह उसकी बीमारी ही अधिक है। हम अधिक से अधिक इससे बीमार ही होते जाते हैं। इसके द्वारा अस्तित्व की सुंदरता कभी खिलती ही नहीं इसलिए इसे समृद्धि क्यों कहा जाए? मनुष्य सोचता है कि वह अधिक से अधिक शक्तिशाली होता जा रहा है, और अपने गहरे में वह अधिक से अधिक शक्तिहीन होता जाता है। बाहर परिधि पर तुम सोचते हो कि तुम बहुत सी चीजों को प्राप्त कर रहे हो, लेकिन अपने गहराई में तुम खाली और थोथे ही बने रहते हो। जितनी शीघ्र तुम इस असत्य और थोथेपन का अनुभव कर लो, उतना ही अच्छा हो क्योंकि तब तुम अपना समय और शक्ति फिर व्यर्थ नष्ट नहीं करोगे। तब तुम्हारा पूरा जीवन में पूरी तरह एक अलग गुणवत्ता होगी और खोज शुरू हो जायेगी। तब तुम सपनों के पीछे नहीं भागोगे।

और सपने बहुत वास्तविक और सच्चे प्रतीत होते हैं। वे असली हैं नही, लेकिन वे असली जैसे लगते हैं। अचेतन या मूर्च्छित मन के लिए सपने यों लगते हैं मानों केवल वे ही वास्तविक हों।

क्या तुमने इस बात का निरीक्षण नहीं किया कि प्रत्येक रात गहरी नींद में भी तुम सपनों के शिकार बन जाते हो? तुम फिर यह सोचना शुरू कर देते हो, कि वे वास्तविक हैं। केवल सुबह जागने पर ही तुम्हें अनुभव होता है कि वे झूठे थे, बस स्वप्न मात्र थे, लेकिन फिर रात में तुम बार—बार उनका शिकार बन जाते हो, और सोचना शुरू कर देते हो कि वे सने दें।

गुरुजियेफ अपने शिष्यों से कहा करता था — "अपने सपनों में तुम्हें जब तक यह अनुभव न हो कि वे सपने ही हैं, तुम जागने में समर्थ न हो सकोगे।"

इसलिए वह अपने शिष्यों को ऐसी विद्यियां दिया करता था कि स्वप्न देखते हुए यह अनुभव कैसे किया जाये, कि वह एक सपना ही है। कैसे यह पहचान की जाये कि तुम एक सपना ही देख रहे हो। लेकिन जिस क्षण तुम सपने को सपने के रूप में पहचान लेते हो वह टूट जाता है। वह तुरंत रुक जाता है। तब वह वहां हो ही नहीं सकता। सपने की पहचान के साथ ही तुम्हारे सपने की मृत्यु हो जाती है। वह केवल तुम्हारे सहयोग और पहचान के द्वारा ही अस्तित्व में होता है। तुम्हीं उसे वास्तविकता देते हो। तुम उससे अपने हाथ खींच लो, वह औंधा होकर गिर पड़ेगा और उसमें कुछ भी न रहेगा। स्वप्न में केवल तभी शक्ति होती है, क्योंकि तुम उसे शक्ति देते हो।

बाजार में सड़क पर चलते हुए लोगों का निरीक्षण करो। सड़क के एक किनारे खडे होकर जरा लोगों की ओर देखो तुम आश्चर्यचकित हो जाओगे। यह स्पष्ट दिखाई देगा कि वे जैसे नींद में चल रहे हैं। वे नींद में चलने वाले रोगियों की तरह मूर्च्छित चल रहे हैं। किसी न किसी तरह वे व्यवस्था भर कर रहे हैं, लेकिन वे गहरी नींद में ही चल रहे हैं। तुम देख सकते हो कि उनके होंठ हिल रहे हैं जैसे मानो वे किसी से बातचीत कर रहे हों, और वहां है कोई भी नहीं। यहां तक कि वे ऐसे व्यक्ति के लिए मुद्राएं बनाते हुए भी मिल जाते हैं जो वहां उपस्थित ही नहीं है। उनके चेहरों का निरीक्षण करो, उनके चेहरों पर होश की कोई आभा नहीं है एक गहरी छाया और

बुझापन जैसा कुछ है, जैसे मानो किसी तरह वे अपने को होश में बनाए रखना चाहते हों, लेकिन किसी भी क्षण वे नींद और सपनों में गिर जाने को जैसे पहले ही से तैयार हों। सपनों के नशे में गाफिल लोग चले जा रहे हैं।

पहले तुम दूसरों का ही निरीक्षण करो, क्योंकि तुम्हारे लिए दूसरों का निरीक्षण करना ही सरल होगा। तब फिर तुम स्वयं अपना निरीक्षण करना शुरू कर दो। तब अपने आप को रंगे हाथों पकड़ना शुरू कर दो। तब कभी—कभी सड़क पर चलते हुए अचानक बस रुक जाओ और देखो कि क्या तुम यहीं हो अथवा तुम कहीं किसी सपने में खो गये हो।

तुम अपने सपनों के बारे में जितने अधिक सजग हो जाते हो, तुम अपनी चेतना में उतने ही अधिक आने वाले अंतराल देखोगे। जब वहां सपने नहीं होते, तो सच्चाई तक पहुंचा जा सकता है। लेकिन हमने अपने स्वप्नों में बहुत अधिक पूंजी लगा रखी है। हम भयानक सपनों से तो डर सकते हैं, लेकिन फिर भी हम अभी तक सपनों से ऊबे नहीं है। हम अभी भी मधुर सपनों से आशा लगाये बैठे हैं।

मैंने सुना है:

एक व्यक्ति अपने एक मित्र से बात करते हुए कह रहा था—'' कल रात मैंने एक सपना देखा '' कैसे ने अपने मित्र पाल मैकगिन से कहा—'' और उसने मुझे एक बहुत बडा सबक सिखाया। ''

मैकगिन ने पूछा— " वह कौन सा?"

" मैंने सपने में देखा कि मैं रोम में हूं और पोप के साथ मेरा औपचारिक साक्षात्कार हो रहा था।'' उन्होंने मुझसे पूछा—''क्या मैं एक ड्रिंक लेना चाहूंगा?" मैं सोचने लगा यह पूछना तो वैसे ही है जैसे कोई बत्तख से पूछे कि क्या तुम तैरना पसंद करोगी? और मैं देख रहा था बगल ही कप बोर्ड में व्हिस्की, लेमन और शकर (रवी हुई थी। मैंने जवाब दिया—'' कोई हर्ज नहीं मैं एक पेग ले लूंगा।''

" हॉट ड्रिक या कोल्ड?" पोप ने मुझसे पूछा।

" मैं हॉट ड्रिंक ही लेना पसंद करूंगा। और मैं यहीं पर गलती कर बैठा। उसके मित्र ने कहा।

मैंने उत्तर दिया—'' मैं तो इसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं देखता।''

पवित्रतम पोप उबला पानी लाने के लिए किचन की ओर बड़े और जब तक वह वापस आते, मेरी आख खुल गई।

मैकगिन ने पूछा—'' आखिर इस बात से तुमने क्या सबक सीखा?"

कैसे ने कसम खाते हुए कहा—'' अगली बार मैं कहूंगा पवित्रता की मूर्ति श्रीमान। जब तक पानी उबलता है तब तक मैं उसे ठंडा ही लेना पसंद करूंगा।''

हमने अपने सपनों में बहुत बड़ी पूंजी लगाई है। बिना हमारी सहायता के वे आ ही नहीं सकते। हम ही उनके लिए द्वार खोलते हैं। मीठे, मधुर स्वप्न, सुनहरे स्वप्न, हमारा उनसे जैसे रोमांस हो गया है, कई जन्मों से एक बहुत लंबा रोमांस। हम सपनों में प्रेम प्रसंगों के लिए जाने जाते हैं और वास्तव में जब हम उन्हें प्रेम करते हैं वे वहां होते हैं लेकिन वे निराशा के सिवा यथार्थ जीवन में और कुछ भी नहीं देते, क्योंकि वे वास्तविकता के विरुद्ध होते हैं, वे कभी भी पूर्ण संतुष्टि नहीं ला सकते। वहां ऐसा कोई रास्ता है ही नहीं, कि दो और दो जोड़ने के बाद पांच हो जाये। तुम चाहे जो कुछ भी करो, दो और दो मिलकर हमेशा चार ही होते हैं 'और तुम आशा किये चले जाते हो कि किसी दिन वे पांच होने जा रहे हैं। तब तुम केवल एक गणितीय भूल कर रहे हो। सपने कभी 'भी सने होते ही नहीं, तुम्हारे विचार कभी वास्तविकता के निकट तक नहीं होते, तुम्हारी आशाएं कभी मिठे अहसास नहीं बनतीं, और तुम्हारी कामना कभी भी पूरी नहीं होती सभी का परिणाम केवल अधिक से अधिक निराशा ही देता है।

यही कारण है कि बच्चे इतने अधिक सुंदर लगते है, क्योंकि वे अभी भी आशाओं से भरे हुए हैं, अभी भी स्वप्नों में डूबे हैं और अभी तक उन्होंने निराशा को जाना ही नहीं है। बूढ़े व्यक्ति बहुत कुछ मुर्दों की तरह ही दिखाई देते हैं। धीमे—धीमे उनकी आशाएं ध्वस्त हो जाती हैं और वहां केवल निराशा ही रह जाती है, और जिह्वा पर एक कसैला सा स्वाद रह जाता है। अनुभव व्यक्ति को तल्स बना देते हैं। अनुभव लोगों से उनका भोलापन छीन लेते हैं। और वे अपनी सभी आशाएं और विश्वास खो बेठते हैं। लेकिन वास्तव में यह अनुभव भी नहीं है क्योंकि वे अपने सपनों को वास्तविकता में बदलना चाहते हैं और इसी कारण वे निराश होते हैं। अन्यथा अपने जीवन के अंत तक तुम वैसे ही भोले और मासूम बने रह सकते हो, जैसे कि शुरू में थे, और वास्तव में पहले से ही कहीं अधिक क्योंकि जो भोलापन और निर्दोषिता बचपन में घटती है। वह प्राकृतिक या स्वाभाविक होती है। उसे किसी अग्नि परीक्षा से नहीं, गुजरना पड़ता वह बहुत नाजुक होती है। उसके अंदर तरल से ठोस और सघन होने की कोई प्रक्रिया नहीं होती। वह ठीक एक उपहार होती है, उसे अर्जित नहीं करना पड़ता। लेकिन जब कोई एक का व्यक्ति बच्चे जैसा भोला और निर्दोष होता है, तो उसे कुछ भी नष्ट नहीं कर सकता। उसमें एक सघनता और एकीकरण होता है, तब वह वास्तविक होती है, क्योंकि उसने उसे अर्जित किया है।

लेकिन कोई व्यक्ति यह निर्दोषिता और भोलापन कैसे अर्जित कर सकता है। अपनी निराशाओं या कुंठाओं से सबक लेकर, अपनी निराशाओं में गहरे जाकर और इस तथ्य को महसूस करते हुए कि प्रत्येक निराशा एक विशिष्ट स्वप्न के टूटने से उत्पन्न हुई है। यदि तुम निराशाओं को नहीं चाहते, तो स्वप्न देखना छोड दो। जीवन निराश होने के लिए नहीं है, स्वप्न देखना ही निराशाओं को आमंत्रित करना है।

मैंने सुना है—मुल्ला नसरुद्दीन अपने पुत्र से कह रहा था, " यह जानने और जांच करने से तुम्हें कोई मतलब नहीं होना चाहिए कि मैं तुम्हारी मां से पहली बार मिला कैसे, लेकिन मैं तुम्हें एक बात बता सकता हूं कि उसने मेरे सीटी बजाने की आदत को ठीक कैसे किया।''

यदि तुम्हारा जीवन ही तुम्हें सीटी बजाने और स्वप्न देखने से निजात दिला सकता है, तो उतना ही काफी होगा? आवश्यकता से भी अधिक होगा, और जीवन तुम्हें उससे भी अधिक दे सकता है। यह एक महान अनुभव होगा।

लेकिन होता क्या है? जिस क्षण एक स्वप्न हमें निराश करता है, हम तुरंत उसके स्थान पर दूसरे सपने को उसकी प्रतिपूर्ति के लिए ले आते हैं, और वह सपना पहले सपने से भी बड़ा होता है। हम कभी भी वास्तविकता या सत्य की ओर नहीं देखते।

हम यह कहे चले जाते हैं कि मनुष्य जो कुछ भी मांगता या प्रस्तावित करता है, परमात्मा उसको पूरा करता है। परमात्मा ने कभी भी किसी चीज को पूरा नहीं किया। वह तुम ही हो, तुम ही अपने सपनों में मांगने और पूरा करने के दोनों ही काम करते हो। यह तुम्हारी ही अपनी योजना है जो अपने साथ उसकी पूर्ति के बीज साथ लिए चल रही है क्योंकि वास्तविकता के साथ उसका कोई तालमेल नहीं है। वह तुम्हारी ही अपेक्षा है, जो निराशा के बीज अपने साथ लिए चल रही है।

यह वही है जिसे मैं धार्मिक चर्चा कहता हूं — सत्य और वास्तविकता की बात सुनना और सपनों को गिराना ही धार्मिक चर्चा है। शुरू—शुरू में यह कठिन सख्त और श्रमपूर्ण लगेगी, क्योंकि सपने इतनी आसानी से तुम्हारा पीछा करते हुए तुम्हें ऐसे बहुत से आश्चर्यजनक और काल्पनिक दृश्य दिखलाते हैं। सपने महान कवि की भांति होते हैं—वे चित्रण करते हैं। वे काल्पनिक दृश्य काव्यात्मक रूप से दिखाते हैं, वे तुम्हारे अंदर स्वर्ग और बहिश्त की सुंदर आशाएं निर्मित करते हैं। ये सभी स्वप्न ही हैं। लेकिन तुम आशाओं में जीते हो, और कल के स्वप्नों की खातिर तुम आज की पीड़ाओं और दुखों को बरदाश्त करते जाते हो।

कल के सपनों का न देखना या उन्हें गिरा देना बहुत कठिन है, क्योंकि तब अचानक तुम उन दुखों के प्रति सजग हो जाते हो, जो आज और यहीं है। लेकिन स्मरण रहे, यह दुख और पीड़ा गुजरने वाले कल के सपनों के टूट जाने के कारण हैं। उनका आज से कोई लेना देना नहीं है। बीते हुए कल के सपनों ने ही आज यह दुख निर्मित किए हैं, आने वाले कल के स्वप्न फिर नये दुख निर्मित करेंगे। इसलिए जब तुम आने वाले कल के स्वप्नों को गिरा दोगे, तुम अचानक प्रसन्न नहीं हो जाओगे क्योंकि बीते हुए कल के स्वप्न अभी भी अटके हुए हैं। तुमने जो बीज बोये, उनकी फसल कौन काटेगा? लेकिन जब तुम आने वाले कल के स्वप्न छोड़ते हो, तो आधा काम पूरा हो जाता है। बीते कल के स्वप्न उनकी निराशाए आखिर गुजर ही जायेगी। इसी को हम भारत में तापस कष्टसाध्य तपस्या कहते हैं। बीते हुए कल का स्वप्न मेरा स्वप्न था। मैंने ही उसके बीज बोए थे, इसलिए उससे उत्पन्न दुखों से मुझे ही गुजरना होगा। मुझे उस निराशा और कुंठा से भी गुजरना होगा। मैं उसे स्वीकार करता हूं वह मेरा स्वयं का ही किया गया काम है। कोई दूसरा उसके लिए जिम्मेदार नहीं है, लेकिन अब मैं कोई भी अन्य बीजों को बोने नहीं जा रहा हूं।

पहले आने वाले कल के स्वप्नों को गिराओ। तब धीमे धीमे बीते कल के सपनों का खुमार और प्रभाव विलुप्त होगा। तभी एक मनुष्य सजग बनता है जब उसकी आंखें सपनों से नहीं, होश और सजगता से भरी होती हैं।

एक बार ऐसा हुआ मैकगोनीगल सड़क पर डगमगाते कदमों से टेलीफोन के खम्भे से बिजली के खम्भे की ओर फिर वापस जा रहा था। फादर डेली ने उसे रोककर उससे कहा—'' आज फिर पी ली शराब?''

'' अरे आप?'' मैकगोनीगल ने यह पूछते हुए स्वयं ही उत्तर दिया—'' हां! मैं ही हूं। फादर!''

पादरी ने उसे स्मरण दिलाते हुए कहा—'' दो सप्ताह पूर्व यह शपथ लेने और वायदा किये जाने के बाद कि तुम कभी शराब नहीं पियोगे यह तुम्हारा परमात्मा और चर्च के खिलाफ किया गया पाप है और यह कहते हुए मुझे बहुत अफसोस हो रहा है। ''

'' तो मुझे देखकर भी आपको अफसोस हो रहा होगा।''

' हां! वास्तव में मुझे अफसोस हो रहा है।''

'' क्या यह पक्की बात है कि आपको अफसोस हो रहा है?''

'' हां! बहुत बहुत अफसोस।''

'' तब यदि आपको इतना ही अफसोस है।'' शराबी बोला—'' तो मैं आपको माफ करता हूं फादर।''

शराब पिए हुए अपने सपनों में भी हम अपने ही ढंग से व्याख्या किए चले जाते हैं। हम उन चीजों को देखे चले जाते हैं जो वहां हैं ही नहीं, हम उन बातों को सुने चले जाते हैं जो कही ही नहीं गई। हम वैसा होने का बहाना बनाए चले जाते हैं जो हम वास्तव में हैं नहीं, और हम अपने स्वयं के चारों ओर एक सपनों का संसार निर्मित कर उसे साथ लिए चलते हैं।

नशे में धुत कुछ लोग एक लोहे की छड़ से लटक रहे थे, तभी दरवाजा खुला और किसी ने चीखते हुए कहा—'' मैक ग्वाइट! तुम्हारे घर में आग लग गई है।'' उनमें से एक व्यक्ति तेजी से भागा और एक ब्लाक तक तेजी से दौड़ने के बाद अचानक एक अवरोध पर रुक कर बड़बड़ाया—'' नर्क में जाये वह। उसने तो विशेष रूप से मुझसे न कहकर मैकग्वाइट से कहा था और मेरा नाम तो मैकग्वाइट है नहीं।''

यही है वह जो प्रत्येक के साथ घट रहा है : तुम अपना नाम नहीं जानते, तुम अपना सार तत्व नहीं जानते, तुम नहीं जानते कि तुम हो कौन, तुम यह नहीं जानते कि तुम यहां हो क्यों, और तुम यह भी नहीं जानते कि तुम इतनी तेज दौड़ क्यों रहे हो? तुम कहां जा रहे हो, तुम क्यों इतनी जल्दबाजी में हो?

यहां तुम्हारी वास्तविकता क्या है? तुम कहां जा रहे हो? कुछ आदतों मैं आबद्ध अनुशासन है, जिसने एक ढांचे में ढाल दिया है इसी को हिंदू लोग संस्कार कहते हैं। जन्म—जन्म से स्वप्न देखते और कामनाएं करते हुए— जो तुम्हारी एक वास्तविकता बन चुकी है। तुम उसके पीछे भागते हो, यह न जानते हुए भी कि आखिर क्यों? यह एक आदत बन चुकी है। तुम अपने आप को रोक नहीं पाते। तुम हमेशा भागे— भागे से रहते हो। वास्तविकता यह है और तुम हमेशा इधर—उधर आ— जा रहे हो, इसीलिए यहां मिलना होता ही नहीं। जब तक यह मुलाकात या मिलन घट न जाये, तुम कभी भी आनंदित न हो सकोगे।

आनंद तब मिलता है जब तुम वास्तविकता के साथ लयबद्ध होते हो। आनंद तुम्हारे और वास्तविकता अथवा अस्तित्व के मध्य एक लयबद्धता है। अप्रसन्नता या दुख तुम्हारे और सच्चाई के मध्य लयबद्ध न होना है।

इसलिए यदि तुम दुखी हो तो याद रखो तुम वास्तविकता से निश्चित रूप से भाग रहे हो। सजग हो जाओ। तुम्हें किसी न किसी तरह वास्तविकता के साथ पंक्तिबद्ध खड़ा होना जरूरी नहीं है। तुम्हारे और वास्तविकता के मध्य संघर्ष होना जरूरी है। वास्तव में तुम यथार्थ—सच्चाई से जीत नहीं सकते। जीतने का वहां कोई रास्ता है नहीं। तुमने सभी तरह से कोशिश करके देख ली है। पूरी मनुष्यता ने हर सम्भव तरीके से कोशिश कर ली है, लेकिन वास्तविक यथार्थ पर विजय प्राप्त करने का कोई रास्ता है ही नहीं।

तुम्हें वास्तविकता के साथ लयबद्ध होकर उसके साथ एक गहरी एकरूपता में आकर उसका अनुसरण करना है। वास्तविकता अथवा सत्य एक महान आरकेस्ट्रा की भांति है और तुम्हें उसके सुर की एक तान बनना है उससे संघर्ष न कर उसके प्रति समर्पित हो जाना, उससे निवेदन करना है और उसके साथ घुल कर विर्सार्जत हो जाने के लिए तैयार होना है। यह वही है जिसे बाउल प्रेम कहते हैं सत्र के साथ घुल कर विसर्जित हो जाने की तैयारी, उसके साथ पिघल कर उससे मिलकर वास्तविकता के साथ एक हो जाने की तैयारी। तुम कुछ चीजों को खो दोगे अपने सपनों को, अपनी वैयक्तिकता को, अपने अहंकार को और उससे अपने अलगाव को। पानी की एक बूंद की तरह तुम इसी वास्तविकता के सागर मैं खो जाओगे, लेकिन इस बारे में जरा भी फिक्र नहीं करनी है, कर्ण तूम स्वयं ही सागर हो जाओगे।

जो कुछ तुम अब तक रहे हो : अपने अहंकार और अपने नाम और रूप में सीमित, अब तुम वह सब कुछ नहीं रहोगे। तुम्हारी सारी बाड़ और सीमाएं विलुप्त हो जाएंगी। तुम एक द्वीप नहीं रहोगे, तुम महाद्वीप के एक भाग बन जाओगे, लेकिन यह कहना अधिक उचित है कि तुम स्वयं महाद्वीप ही बन जाओगे।

तुम अपने आप को खोकर भी कुछ भी नहीं खोओगे। प्रतिरोध करने से हर चीज खो जाती है। लेकिन हम वास्तविकता को, इस अस्तित्व अथवा इस सत्य को सदा गलत समझते रहे हैं। यदि वास्तविकता हमें अपने में जज्ब करने का प्रयास करती है तो वह हमें मृत्यु के समान दिखाई देता है।

कई बार, लगभग प्रत्येक दिन कोई न कोई मेरे पास आता ही रहता है। ध्यान की गहराइयों में उतरते हुए जब अस्तित्व हमें अपने में जज्ब करना शुरू करता है तुम डर जाते हो, क्योंकि वह तुम्हें मृत्यु जैसा दिखाई देता है। वह है मृत्यु के समान ही, लेकिन वह मृत्यु नहीं है। वह जीवन का द्वार है अत्यधिक समृद्ध, अनंत और शाश्वत जीवन का द्वार। लेकिन हां। वह एक तरह से मृत्यु भी है मृत्यु है अतीत की, मृत्यु है तुम्हारी कि तुम, तुम न रहे। लेकिन तब, तुम हो क्या? तुम? तुम मरने से इतने भयभीत क्यों हो? तुम्हारे पास खोने के लिए कुछ भी नहीं है। केवल एक संतप्त और तुम्हारा अपना दुखी अस्तित्व, केवल जन्म—जन्मों का बंदी जीवन, जो एक दिन चिता में जल जायेगा।

केवल पीड़ाओं और वेदनाओं का वह ढांचा जो जलकर राख हो जायेगा। तुम्हारे पास खोने के लिए कुछ भी तो नहीं है। तुम क्यों इससे इतने अधिक लिपटे हुए हो? लेकिन तुम इसके साथ बहुत परिचित और इसके

अभ्यस्त हो गये हो, और तुम भयभीत हो। जब कभी गहरे ध्यान में कभी—कभी संयोग से या इत्तिफाक से तुम सत्य के निकट आते हो, तो सत्य तुम्हारे अंदर फैलना शुरू हो जाता है और तुम भयभीत होकर उससे भाग खड़े होते हो।

तुम्हारी व्याख्या और नासमझी दूर होना चाहिए तुम्हें सीखना है कि तुम कैसे सुनो इस शाश्वत सत्य की ध्वनि, जिससे जब वह तुम्हारे पास आये, तुम उसका स्वागत कर सको। यदि परमात्मा तुम्हारी ओर आता है, यदि तुम उसकी ओर आगे नहीं बढ़ते, तो कम से कम भागना भी मत। और वह तुम्हारी ओर लाखों तरह से आ रहा है। वह तुम्हें अपने काबू में लेना चाहता है। तुम पर अपना अधिकार जमाना चाहता है। ऐसा नहीं कि केवल तुम ही उसे खोज रहे हो, वह भी तुम्हें ढूंढ रहा है। वास्तव में तुम्हारी खोज तो बस नकली है। तुम परमात्मा को खोजने की बात तो करते हो, लेकिन वास्तव में वह तुम्हारा अर्थ होता नहीं। तुम चाहते हो कि रास्ते से गुजरते हुए ही वह तुम्हें मिल जाए। तुम इसके लिए कुछ भी चीज दांव पर नहीं लगाना चाहते। तुम उसे अर्जित नहीं करना चाहते। तुम उसे बिल्कुल मुफ्त पाना चाहते हो। लेकिन उसे पाने का यह कोई तरीका नहीं है।

तुम्हें स्वयं अपने आप को रोकना होगा, तुम्हें सभी कुछ खोना होगा। लोगों का यह अर्थ होता ही नहीं, और जब परमात्मा उनके निकट पहुंचता है और वह तुम्हारे पास आकर अपने हाथ आगे बढ़ाता है और मैंने कई बार उसके हाथों को तुम्हारे निकट आते हुए देखा है और मैंने तुम्हें तुरंत भागते हुए भी देखा है और फिर जब तुम उससे दूर हो जाते हो, तो तुम फिर उसे खोजने लगते हो और पूछते हो— " परमात्मा को कैसे खोजा जाए?" अब यह खेल खेलते हुए बहुत अधिक समय गुजर चुका और यह लगभग तुम्हारी आदत ही बन चुकी है कि जब वह तुमसे दूर होता है तुम उसे खोजते हो और जब वह तुम्हारे निकट आता है, तुम उससे दूर भाग जाते हो। इस ढांचे को अब तोडना ही होगा।

मैंने सुना है:

वह एक रविवार की सुबह थी, जब क्लेरिनेट वादक जो हाल ही में निकट के छोटे चर्च से यहां आया था, उसने क्लेरिनेट पर एक उत्तेजक धुन बजानी शुरू कर दी, जिसे सुनकर उस चर्च का पादरी भागा हुआ उसके पास आकर उससे कहने लगा—'' यहां मेरी ओर देखिये। क्या आपने कभी वह धुन सुनी है अपने रविवार को पवित्र बनाए रखिये।''

वादक ने कहा—'' यदि आप कुछ धुने सीटी बजाकर सुनायें तो मैं अपनी ओर से सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करूंगा।''

हमारी समझ, हमारी ही समझ है। हमारी व्याख्याएं हमारी ही व्याख्याएं हैं। सावधान रहें जब अस्तित्व तुम्हारे निकट आये, उसकी व्याख्या करने की कोशिश मत करें। बस प्रतीक्षा करें, धैर्य रखें, अस्तित्व तुम्हारे पास और पास आता जा रहा है, वह स्वयं सब कुछ प्रकट कर देगा। लेकिन इससे पहले वह अपने को प्रकट करे, यदि तुमने अपने हृदय में अपनी कोई व्याख्या बना ली तो तुम फिर बंद हो जाओगे। तुम अपने द्वार बंद कर लोगे और तब वहा यह जानने का कोई मार्ग न होगा कि वास्तव में क्या घटने जा रहा था।

ठीक दूसरी रात एक सन्यासिन चीख भी रही थी, और रो भी रही थी। वह सक्रिय ध्यान को देखकर इतना अधिक भयभीत हो गई थी, क्योंकि उसने सक्रिय ध्यान में एक सन्यासिन को लगभग पागल हो जाते देखा। उसे देखकर वह बहुत अधिक डर गई। उसे भय हुआ कि यदि ऐसा कुछ एक व्यक्ति के साथ हो सकता है तो वैसा ही कुछ उसके साथ भी हो सकता है। वह अपने मुंह से सक्रिय ध्यान शब्द का भी उच्चारण नहीं कर पा रही थी, क्योंकि जैसे ही वह सक्रिय ध्यान शब्द कहने का प्रयास करती, वह कापना और चीखना शुरूकर देती। वह ठीक से याद भी नहीं कर पा रही थी कि आखिर हुआ क्या था क्योंकि सक्रिय ध्यान शब्द कहते ही.....वह इतना अधिक डर गई थी कि जो कुछ उस ध्यान में हुआ था, वह उस पूरी घटना को जोड्ने में समर्थ न हो पा

रही थी। केवल टुकड़ों टुकड़ों में वह इतना ही बता सकी कि उस ध्यान में कोई लगभग पागल ही हो गया था और केवल इतना ही नहीं, बल्कि जो पागल हो गया था, उसने अपने बगल में ध्यान करने वाले का हाथ पकड़ कर अपनी ओर खींचना शुरू कर दिया था। यह उसके लिए बहुत प्रतीकात्मक बन गया। पागल व्यक्ति तो स्वयं पागल हो गया था, वह उसे अपने साथ खींचने की भी कोशिश कर रहा था। उसे भय लगा जैसे वहां हर कोई पागल हो जाने वाला हो।

यदि तुम पागलपन से इतने अधिक भयभीत हो, तो तुम प्रेम भी नहीं कर पा सकते, तुम ध्यान भी नहीं कर सकते, तुम प्रार्थना भी नहीं कर सकते क्योंकि यह सभी आयाम एक तरह से पागल कर देने वाले आयाम ही हैं—तुम मनुष्यता की सामान्य सीमा के पार जा रहे होगे। तुम्हें सामान्य, रूटीन कामकाजी संसार, सामान्य तर्क सामान्य और तथाकथित सामान्य मनुष्यता के पार जा रहे होंगे। तुम इनका अतिक्रमण कर रहे होगे। यह पागलपन जैसा लगेगा ही।

बाउल गाते हैं :

पगले, दीवाने, हम सभी बावरे ही हैं।

तब यह संसार किसी की गरिमा के अनुपयुक्त क्यों है?

हृदय के झरने में गहरे गोता लगाओ

तुम पाओगे कि वहां उस व्यक्ति की तुलना में जो पागल है।

कोई भी किसी से बेहतर नहीं है।

पागलपन दो तरह से सम्भव है, या तो तुम सामान्य से नीचे चले जाओ, या सामान्य स्थिति से ऊपर उठ जाओ। दोनों ही स्थितियों में तुम पागल हो जाओगे। यदि तुम सामान्य स्थिति से नीच चले गये, तो तुम रुग्ण हो,तो तुम्हें मानसिक चिकित्सा की आवश्यकता है, जो तुम्हें खींच कर सामान्य स्थिति में ले आए। यदि तुम सामान्य स्थिति के पार चले गए उसका अतिक्रमण कर गये, तो तुम रुग्ण नहीं हो। तुम पहली बार ही वास्तव में स्वस्थ हुए हो, क्योंकि पहली बार ही तुम परिपूर्णता या समग्रता से भरे हो। तब भयभीत मत होना। यदि तुम्हारा पागलपन जीवन में अधिक समझदारी ला रहा है, तब डरना कैसा? और स्मरण रहे वह पागलपन जो सामान्य से नीचे होता है, वह हमेशा अनैच्छिक होता है। तुम उसे स्वयं कर नहीं सकते, वह अपने आप होता है। तुम उसमें खींच लिए जाते हो। और वह पागलपन जो सामान्य स्थिति से पार या उससे ऊपर होता है, वह ऐच्छिक होता है तुम उसे स्वयं कर सकते हो और क्योंकि तुम उसे कर सकते हो, तुम उसके मालिक बने रहते हो। तुम उसे किसी भी क्षण रोक सकते हो। यदि तुम और आगे नहीं जाना चाहते हो तुम वहीं रुक सकते हो, और यदि और आगे जाना चाहते हो तो तुम और आगे भी जा सकते हो लेकिन तुम्हारा उस पर हमेशा नियंत्रण बना रहता है।

यहां इन ध्यान प्रयोगों में हमारा पूरा प्रयास तुम्हें इसी पागलपन का स्वाद देना है, जो सामान्य के पार है, लेकिन तुम उसके मालिक बने रहते हो। किसी भी क्षण तुम वापस आ सकते हो। यह इस बात का संकेत है कि तुम्हें किसी मानसिक चिकित्सा की आवश्यकता नहीं है। यह साधारण पागलपन की सभी संभावनाओं को छोड़ सकोगे। तुम उन्हें इकट्ठा नहीं किए जाओगे। सामान्यत हम इनका दमन किये चले जाते है। वह सन्यासिन जो इतना अधिक भयभीत है उसने अपने अंदर स्वयं पागलपन का बहुत अधिक दमन किया है। अब वह इसीलिए ध्यान करने से डर रही है। वह उसके लिए किसी दिन मुसीबत खड़ी कर सकता है।

एक दिन जब प्याला पूरा भर जायेगा तो वह छलकेगा ही और तब वह उसे नियंत्रित करने में समर्थ न हो सकेगी। ठीक अभी यही वह क्षण है जब उसे रेचन करने की शुरुआत कर देनी चाहिए और दबे पागलपन को

बाहर उलीच देना चाहिए जिससे अंदर से सभी सफाई हो जाये। लेकिन जब वह व्याख्या करने लगती है तो भय उठ खड़ा होता है।

जब परमात्मा तुम्हारे निकट आता है, तुम देखोगे कि तुम पागल हो जाते हो। तुम एक नई लय में थिरकने लगोगे। तुम्हारा पूरा शरीर कम्पनों से भर जायेगा और तुम्हें अनुभव होगा कि तुम्हें एक ऊर्जा उड़ेल दी गई है और वह ऊर्जा तुम्हारी क्षमता से कहीं अधिक विराट होगी। धीमे— धीमे तुम्हारी क्षमता बढती जायेगी और आहिस्ते— आहिस्ते तुम उसे अपने में जज्ब करने में समर्थ होते जाओगे। धीमे— धीमे फिर कंपना और हिलना विसर्जित हो जायेगा और शनै : शनै तुम पूरी तरह से शांत हो जाओगे, लेकिन इसमें कुछ समय लगता है।

बाउल कहते हैं :

यह सुंदर और जादू भरी सरिता
उस अरूप के रूप को प्रतिबिम्बित करती है।
और पदार्थ के सारभूत का इन्द्रिय ज्ञान कराती है।
उसके रूप, गंध, स्वाद और स्पर्श का बोध कराती है।
तुम जीवन का केवल एक छोटा सा अंश ही देख पाते हो,
और उसी में डबे हुए एक शराबी जैसी गफलत में रहते हो।

तुम बहुत बहुत छोटे से अत्यंत लघु से लघु अंश से संतुष्ट हो जाते हो। जब कि तुम एक सम्राट हो सकते थे और भिखारी बने ही संतुष्ट रहते हो। तुम एक सम्राट होकर ही जन्मे हो लेकिन तुम भिखारी बने रहने के अभ्यस्त हो गये हो और तुम सोचते हो कि भिखारी बने रहना ही तुम्हारा व्यवसाय है। नींद में हम किसी ऐसी चीज का स्वप्न देखते हैं, जो हम हैं नहीं।

तभी तो आज की कविता कह रही है—

न कुछ भी हुआ है।
और न कुछ भी होगा।
जो जहां है, वह वहां है।
मैं अपने स्वप्न में एक सम्राट बन गया,
और मेरी प्रजा ने सम्पूर्ण पृथ्वी पर अपना अधिकार जमा लिया।
मैं सिंहासन पर बैठकर सिंह की ही भांति शासन करने लगा,
एक सुखी जीवन जीने लगा
पूरा संसार मेरी आज्ञा का पालन करने लगा..
पर जैसे ही अपने बिस्तरे पर मैंने करवट बदली
सभी कुछ साफ हो गया।
मैं शेर न होकर शेर का चाचा था
गांव का मूर्ख बैसाखनंदन, एक साधारण सा गदहा.....था।

अपनी नींद में करवट बदलो और तुम देखोगे: तुरंत स्वप्न बदल जाता है। मैं इसी को संन्यास कहता हूं अपनी नींद में करवट बदलना, मूर्च्छा से जागना। करवट बदलो और तुम देखोगे कि स्वप्न बदल गया। बस इधर से उधर थोड़ा सा घूमो और फिर उसी स्वप्न को कभी न पकड़ सकोगे क्योंकि सपने सच्चे नहीं है, वास्तविक नहीं है। तुम टूटे हुए सपने को फिर से जारी नहीं रख सकते। एक बार सपना टूटा, वह हमेशा के लिए टूट गया। वह

है. पर वहां उसे पकड़ने का कोई रास्ता है ही नहीं। तुम स्वयं को उस सपने से फिर जोड़ नहीं सकते। और स्वप्नों में हमारे पास बहुत सी चीजें होती हैं।

च्वांग्त्सु कहता है—'' मैंने सपने में देखा कि मैं एक तितली बन गया हूं। सुबह उठने पर मैं बहुत अधिक चिंतित था क्योंकि एक बहुत बड़ी समस्या उठ खड़ी हुई। यदि सपने में मैं तितली बन सकता हूं यदि च्वांग्त्सु सपने में तितली बन सकता है, तब ठीक इससे उल्टा होना भी सम्भव है। अब तितली भी सपना देख सकती है कि सपने में वह च्वांग्त्सु बन गई है। यदि च्वांग्त्सु तितली बन सकता है तो तितली च्वांग्त्सु क्यों नहीं बन सकती है। च्वांग्त्सु ने अपने सभी शिष्यों को इकट्ठा कर उनसे पूछा—'' कृपया मुझे बताएं मैं कौन हूं?" क्योंकि तितली के स्वप्न के अनुसार...। वास्तव में वह अपने शिष्यों को हल करने के लिए एक कुआन दे रहा था। मैं जानता हूं उसने कभी स्वप्न देखा ही नहीं। च्वांग्त्सु जैसे लोग स्वप्न देखते ही नहीं। जब स्वप्न आना रुक जाते हैं तभी एक व्यक्ति च्वांग्त्सु जैसा बनता है। वह एक कुआन दे रहा था, एक बहत सुंदर कुआन, ध्यान करते हुए उसे हल करने के लिए एक महान पहेली। जो लोग इस पर ध्यान करेंगे वे पायंगे तुम न तो च्वांग्त्सु हो और न तितली—दोनों ही स्वप्न हैं। तुम न शेर हो और न शेर के चाचा दोनों ही स्वप्न है। तुम वही एक हो, जो स्वप्न को पहचानता है, तुम केवल साक्षी हो। केवल साक्षी ही सत्य है।

दिन में जागे हुए तुम एक हजार एक काम करते हो। रात में जब तुम सो जाते हो, तो दिन के बारे में सब कुछ मूल जाते हो, तुम्हारी पत्नी, तुम्हारा पति, तुम्हारे बच्चे तुम्हारे अपने निकट के लोग भले ही अब वे वहां न हों। तुम संसार के बारे में सब कुछ भूल जाते हो। तुम पूरी तरह से भिन्न एक नये आयाम में प्रवेश करते हो। तुम अपनी योग्यता की डिग्री, अपनी समृद्धि अपना बैंक बैलेंस सब कुछ भूल जाते हो, यहां तक कि अपना नाम भी। एक दूसरे संसार का सामने द्वार खुल जाता है। तुम दूसरा नाम, दूसरी पहचान, दूसरी पत्नी दूसरे बच्चे और कोई दूसरे व्यवसाय में अपने को व्यस्त देखते हो। सुबह उठने पर तुम फिर अपने को वापस उसी पुराने सपने में पाते हो और यह चलता ही रहता है। यदि एक व्यक्ति नब्बे वर्ष जीता है तो वह तीस वर्ष स्वप्न देखेगा। यह कोई छोटा समय नहीं है। तुम्हारा एक तिहाई समय सोने में या स्वप्न देखने में चला जाता है। नब्बे में से तीस वर्ष तुम्हारे तथाकथित संसार के लिए बहुत बडा समय है।

यह संसार भी एक स्वप्न है, यह एक सामान्य स्वप्न हो सकता है, जिसमें हम स्वप्न भी एक साथ देखते हैं। और रात में सपना प्राइवेट होता है, क्योंकि तुम अकेले ही स्वप्न देखते हो, लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। स्वप्न प्राइवेट हो या सामान्य स्वप्न तो आखिर स्वप्न है। लेकिन तब आखिर स्वप्न की परिभाषा क्या है? तुम स्वप्न की व्याख्या कैसे करोगे, तुम उसे स्पष्ट कैसे बनाओगे और तुम यथार्थ से उसमें फर्क कैसे करोगे? पूरब की व्याख्या कहती है—यदि तुम्हारे मन में वहां कोई भी विचार है, तब वह सपना ही है। यदि मन निर्विचार है तब वहां जो कुछ भी है वही सत्य या वास्तविकता है—क्योंकि विचार प्रक्रिया ही बातों की बाढ़ जैसी प्रवाहित नदी निर्मित करती है। वहीं उसे एक स्थायी शक्ल जैसी देती है, जैसे मानो वह क्षणिक हो।

तभी बाउल कहते हैं

मेरे लिए एक अनजान व्यक्ति और मैं

हम दोनों साथ—साथ रहते हैं।

लेकिन फिर भी लाखों करोड़ों मीलों की दूरी के साथ।

इसी को बाउल लोग ' सारभूत मनुष्य ' या ' आधार मानुष ' कहते हैं। तुम दो हो एक तो केंद्र पर है सारभूत मनुष्य और दूसरा है परिधि पर अर्जित मनुष्य। और यह दोनों एक दूसरे से बहुत अधिक दूरी पर रहते हैं। और तुमने परिधि वाले के साथ बहुत अधिक तादात्म्य जोड़ लिया है। कैसे वापस केंद्र पर सारभूत मनुष्य

अथवा आधार—मनुष्य तक पहुंचा जाये? एक मार्ग है—साक्षी होना। तुम चाहे जो कुछ भी करो, लेकिन उसके साक्षी बने रहो। उसे देखते रहो, उसका निरीक्षण करते रहो और तुम स्वयं का स्मरण रखना निरंतर जारी रखो। सड़क पर चलते हुए याद रहे कि तुम्हारे अंदर की वह बिंदु या सारभूत है, जो तुम्हारे साथ नहीं चल रहा है, जो कभी चला ही नहीं है, जो तुम्हारे साथ चल ही नहीं सकता। उसके पास चलने के लिए पैर नहीं है, वह बिंदु ही तुम्हारा केंद्र है। उस केंद्र के द्वारा ही तुम अस्तित्व को अथवा उस वास्तविकता या सत्य को जानोगे जिसके बाबत बाउल गाते हैं—

न कुछ भी हुआ है
और न कुछ भी होगा
जो जहां, वह वहां है।

एक बार तुम उस स्थाई स्रोत का स्पर्श कर लो, जो शाश्वत है तो तुमने जीवन की नित्यता का स्पर्श कर लिया। तुम्हारे समानान्तर ही चीजें घट रही हैं। यदि तुम केंद्र पर हो, तो तुम अस्तित्व के केंद्र को भी देखने में समर्थ हो। यदि तुम परिधि पर हो तो तुम केवल जीवन की परिधि को ही देखने में समर्थ हो। यह परिधि निरंतर बदलती रहती है।

क्या तुमने किसी बैलगाड़ी को चलते हुए देखा है? पहिया घूमता है और घूमता ही रहता है, लेकिन पहिए के केंद्र पर कुछ चीज थिर बनी रहती है। पहिया उसी थिर धुरे पर घूमता रहता है। पहिये का घूमना, न घूमने वाले थिर धुरे पर निर्भर रहता है। ठीक इसी तरह से तुम्हारे पास भी एक धुरा है वह धुरा थिर है और तुम्हारा व्यक्तित्व भी एक पहिये जैसा है, जो निरंतर गतिशील रहता है। तुमने दूर—दूर की यात्राएं की हैं, हजारों जन्मों में तुम लाखों मील चले हों और तुम्हारा पहिया बहुत सी सड्कों और बहुत से मार्गों को जानता है, लेकिन उसका धुरा वहीं बना रहता है, जहां वह है। अब तुम अस्तित्व को दो तरह से देख सकते हो या तो पहिये से। तब प्रत्येक वस्तु तेजी से बदल रही है, अथवा धुरे से देख सकते हो तब वहां कुछ भी नहीं बदल रहा है।

न कुछ भी हुआ है
और न कुछ भी होगा।
जो जहां है, वहां ही रहेगा

जीवन के इस धुरे को कैसे खोजा जाये? कोई व्यक्ति इसे साक्षी बनकर पा लेता है। भोजन करो लेकिन याद रखो कि तुम्हारे अंदर वहां एक बिंदु ऐसा है, जिसने कभी भी भोजन नहीं किया। भोजन शरीर के अंदर जाता है, तुम्हारी चेतना निरीक्षण कर्त्ता बनी रहती है। कोई व्यक्ति तुम्हारा अपमान करता है, क्रोध उठता है लेकिन तुम साक्षी बने रहते हो। अपमान बाहर से आता है, क्रोध परिधि पर उठता है और तुम निरीक्षण करते हुए केंद्र पर बने रहते हो। हां, किसी भी व्यक्ति ने कुछ भी किया, तुम्हारी परिधि को उत्तेजित किया और वहां परिधि पर जो क्रोध उत्पन्न हुआ वह धुंवे के बादल की तरह तुम्हें चारों ओर से घेर लेता है, लेकिन तुम तो बुरे पर हो, वहां से निरीक्षण कर रहे हो। तुमने परिधि से तादात्म्य जोड़ा ही नहीं। तब अपमान बाहर ही रहा और क्रोध भी तुमसे बाहर ही प्रकट हुआ। दोनों अलग— अलग हैं और एक दूसरे से काफी दूर हैं। दोनों ही तुमसे भिन्न हैं।

जब यह सजगता विकसित होती है, तो धीमे— धीमे सपने देखना रुक जाता है। जब यह सजगता जागती है, पहिए के घूमने की गति धीमी से धीमी होती जाती है, क्योंकि अब तेजी से घूमने का मुद्दा रहा ही नहीं। तुम कभी चलते ही नहीं, गतिशील होते ही नहीं, इसलिए पूरी पृथ्वी की यात्रा करना कोई मुद्दा है ही

नहीं। तुम ज्यों के त्यों बने रहते हो, तब कामनाएं मंद हो जाती हैं। एक दिन यह भी होता है कि पहिया भी धुरे की भांति बिना घूमे हुए थिर हो जाता है। यह वह बिंदु है जहां बुद्धत्व घटता है।

बाउल गाते हैं:

ब्रह्मांड का सावधानी से अध्ययन करते हुए

तुम अपना समय ही नष्ट कर रहे हो।

वह तो इस छोटे से भाण्ड में ही मौजूद है।

इस छोटी सी देह ही में उसने अपना घर बना लिया है।

वह तुम्हारी देह के इस छोटे से भाण्ड (बर्तन) में यहीं मौजूद है।

वह परमात्मा का परमात्मा वहां है।

सम्राटों का सम्राट वह प्रीतम प्यारा।

ब्रह्मांड का सावधानी से अध्ययन करते हुए तुम अपना समय ही नष्ट कर रहे हो। इस बिंदु से गतिशील होकर तुम अपने आपको अनावश्यक रूप से कष्ट ही दे रहे हो, व्यर्थ की मुसीबत में पड़ रहे हो। अपने ही अस्तित्व में गहरे प्रवेश कर उस धुरे पर पहुंचो। और बाउल कहते हैं कि यह सम्भव तब है, जब तुम अति विनम्र बन जाओ।

तब है, जब तुम अति विनम्र बन जाओ।

इसीलिए वे गाते हैं

मैं अपने सपने में एक सम्राट बन गया,

और मेरी प्रजा ने पूरी पृथ्वी पर अधिकार जमा लिया।

सपना सदा अहंकारी होता है, अहंकार ही एक स्वप्न है।

मैं अपने सपने में एक सम्राट बन गया।

और मेरी प्रजा ने पूरी पृथ्वी पर अधिकार जमा लिया।

मैं एक सिंहासन पर बैठ गया।

और शेर की तरह शासन करने लगा

एक सुखी जीवन जीते हुए

संसार मेरी आज्ञा का पालन करता था।

यह केवल अहंकार ही है

जैसे ही मैंने अपने बिस्तरे पर करवट ली

सब कुछ साफ हो गया।

मैं एक नहीं था बल्कि शेर का चाचा था

एक बैसाखनंदन, गांव का मूर्ख गदहा....

जब कोई इसे समझ लेता है, वह अति विनम्र बन जाता है। तभी कोई कहता है—मैं तो बस एक मूर्ख, बैसाखनदन या गांव का मूर्ख गधा मात्र हूं।

बाउल गाते हैं:

उच्चतम शिखर तक पहुंचने के लिए कार्य नहीं करना होता।

विनम्र बनकर ही तुम जीवन के लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हो।

धंसी हुई पोली पृथ्वी पर बादल जल उड़ेलते रहते हैं

लेकिन सबसे नीचाई पर कुंए ही
पानी की सुरक्षा करते हैं
और वे एक वरदान की भांति
सभी की प्यास बुझाते हैं।

विनम्र बनकर। यदि तुम विनम्र अथवा ' कुछ नहीं ' बनना शुरु कर दो, तो स्वप्न विसर्जित होना शुरू हो जायेंगे क्योंकि केवल अहंकार के साथ ही सपनों के आने की संभावना होती है। अहंकार ही स्वप्न देखता है, वही स्वप्नों का निर्माता या प्रोजेक्टर है। यही कारण है कि सभी धर्म विनम्रता और तुच्छतुम होने पर जोर देते हैं। जीसस अपने शिष्यों से कहे चले जाते हैं:

निर्धन बनकर ही परमात्मा के राज्य में प्रवेश मिलता है
वे धन्यभागी हैं, जो निर्धन हैं।
वे धन्यभागी हैं, जो विनम्र हैं।
उनको ही उत्तराधिकार में पृथ्वी का राज्य मिलेगा।

किसी ने भी कभी निर्धनों को उत्तराधिकार में पृथ्वी का राज्य पाते देखा नहीं है। किसी ने कभी विनम्र लोगों को भी उत्तराधिकार में पृथ्वी का राज्य मिलते ही नहीं देखा है। तब फिर जीसस क्यों इसे बार—बार दोहराये चलते जाते हैं। उन्हें स्वयं क्रास पर चढ़ना पड़ा फिर भी वे पृथ्वी का राज्य पाने में समर्थ न हो सकें। लेकिन वह किसी दूसरी ही पृथ्वी के बाबत बता रहे हैं, किसी दूसरे अस्तित्व के बारे में, एक भिन्न सत्य के बारे में वे इस पृथ्वी के बारे में बात ही नहीं कर रहे हैं। यह पृथ्वी तो अहंकारों का युद्ध क्षेत्र है जहां अहंकार के लिए ही बहुत बड़ी प्रतियोगिताएं हो रही हैं, जहां संघर्ष, लड़ाइयां और युद्ध हो रहे हें।

वे धन्यभागी हैं, जो विनम्र हैं।
वे धन्यभागी हैं, जो निर्धन हैं।
उन्हीं को मिलेगा उत्तराधिकार में यह पृथ्वी का राज्य

उनके कहने का अर्थ है कि उत्तराधिकार में वे अस्तित्व या सत्य का साम्राज्य पाएंगे। वे व्यक्ति जो अहंकार में है, उत्तराधिकार में पृथ्वी कर साम्राज्य सपनों में ही पा सकते हैं, लेकिन उनके साम्राज्य व्यर्थ हैं, क्योंकि वे केवल उनके अपने सपने भर अन्य कुछ भी नहीं।

खोजने या पाने के लिए
उच्चतम शिखर पर पहुंचने के लिए कार्य करना ही बाधा है
विनम्र बनकर ही तुम जीवन के लक्ष्य तक पहुंच सकते हो।
धंसी हुई पोली पृथ्वी पर
बादल जल उड़ेलते रहते हैं
लेकिन सबसे अधिक नीचाई पर गहरे कुंए ही
पानी की सुरक्षा करते हैं
और वे एक वरदान की भांति
सभी की प्यास बुझाते हैं।

मैंने एक कहानी सुनी है :

विली जोन्स ने सपने में देखा कि वह मर गया है। दफन करने के संस्कारों के बाद उसने अपने आप को एक अत्यधिक सजे हुए विशाल कक्ष में पाया। उसने एक गद्देदार कोच पर कुछ देर विश्राम किया। लेकिन कुछ

समय या लगभग एक घंटे बाद वह वहां बोर होने लगा। वह चिल्लाया—'' क्या यहां कोई और है?'' एक मिनट बाद श्वेत परिधान पहले हुए एक सेवक प्रकट हुआ।

उसने पूछा—'' आप क्या चाहते हैं?''

विली ने कहा—'' मुझे यहां क्या मिल सकता है?''

सेवक ने कंधे उचकाते हुए कहा—'' कोई भी चीज जो आप लेना पसंद करें '' विली ने कुछ चीज खाने के लिए मांगी।

सेवक ने पूछा—'' आप क्या खाना चाहते हैं? आप जो भी चाहें आपको यहां हर वस्तु मिल सकती है।''

और जो कुछ मांगा, वे लोग खाने को वह सब कुछ लाये और वह खाना खाकर सो गया और उसका समय मजे से कट गया। कुछ समय बाद वह फिर बोरियत का अनुभव करने लगा और अंत में उसने चिल्लाकर फिर सेवक को बुलाकर आग्रह किया—'' मैं कुछ काम करना चाहता हूं।''

'' मुझे अफसोस है।'' सेवक ने उत्तर दिया—'' लेकिन बस यही एक ऐसी चीज है, जो हम आपको उपलब्ध नहीं करा सकते।''

विली ने चारों ओर देखा और कहा—'' मैं इस सभी से थक चुका हूं और अपने को अस्वस्थ महसूस कर रहा हूं। इससे तो अच्छा था कि मैं नर्क में ही चला जाता।''

सेवक ने कहा—'' जनाब! जरा खयाल करें, आप और हैं कहां?''

नर्क ही वह स्थान है, जहां तुम कुछ भी कर नहीं सकते, क्योंकि करना तो केवल वास्तविकता या यथार्थ में ही होना सम्भव है। नर्क में स्वप्न देखना ही सम्भव है। कुछ करना सम्भव ही नहीं। यदि तुम अपने सपनों में ही रह रहे हो, तो तुम नर्क में ही रह रहे हो। तुम एक हजार एक चीजों का स्वप्न देख सकते हो, लेकिन कोई भी काम कर नहीं सकते।

जरा निरीक्षण करें.....तुम खुश होना चाहते हो, लेकिन तुम खुश क्यों नहीं हो सकते? अचानक तुम अपने को असहाय पाते हो। तुम खुश होना चाहते हो, तुम उसके बारे में स्वप्न देखते हो, लेकिन तुम्हें खुश होने से कौन रोक रहा है? खुश कैसे हो? तब फिर अचानक तुम अपने को असहाय होने का अनुभव करते हो। तुम मौन और शांति चाहते हो, तुम अपने सपने में कामना करते हो। लेकिन तुम्हें कौन रोक रहा है? बस मौन हो जाओ। तब अचानक तुम पुन: अपने को शक्तिहीन पाते हो।

करना या क्रिया केवल तभी सम्भव है जब तुम यथार्थ के सम्पर्क में होते हो। तुम्हारे अपने कारण ही स्वप्न सम्भव है तुम स्वप्न ही देखते रह सकते हो।

इसलिए इसी को अपनी कसौटी बना लो, यदि तुम वास्तव में खुश होना चाहते हो तब ऐसा रास्ता खोजो जिससे तुम यथार्थ या वास्तविकता के सम्पर्क में बने रह सको, और तुम खुश बने रहोगे। यदि तुम बस सपने ही देखते रहे और वास्तविक यथार्थ को पाने का मार्ग खोजने की कोशिश नहीं की, तब तुम सपनों में ही रहोगे और अधिक से अधिक दुखी होते जाओगे, क्योंकि तुम बार—बार उसी खुशी कोही खोजोगे, जो घट नहीं रही है।

किया है असली अस्तित्व या यथार्थ का काम और सपने देखना कार्य है— नकली अस्तित्व का।

बाउल कहते हैं—

तुम्हें मेरी प्रेमिका की क्रीड़ास्थली को देखने के लिए

एक अकेले मन के ही साथ आना चाहिए।

यदि तुम्हारा मन दो टुकड़ों में बंट गया

तो तुम उलझन की नदी में ही तैरते रहोगे।

और कभी भी किनारे तक नहीं पहुंचोगे।

स्वप्न देखने वाले का मन दो हिस्सों में बंट जाता है, साक्षी होने में और स्वप्न देखने में। तब तुम एक नहीं हो, तुम विभाजित हो। जब तुम केवल साक्षी हो तुम एक हो। तब तुम्हारे अंदर कोई द्वैतता नहीं है। तुम हो इतना ही काफी है। इसलिए एक होने की कोशिश करो, चित्त एक ही हो। तुम जो कुछ भी कर रहे हो, एक ही बने रहने की कोशिश करो। यह कहना कि तुम विभाजित होकर दो हो जाते हो, एक भीड़ बन जाते हो। इन खण्डों को एक साथ लाओ। और निरंतर एक चीज का अनुसरण करने से तुम्हें चेतना के एकीकरण में सहायता मिलेगी।

उदाहरण के लिए ध्यानी, निरंतर ध्यान ही करने की कोशिश करते हैं। वे एक हजार एक चीजें या अन्य चीजें करते हैं, लेकिन एक चीज करेंट की भांति निरंतर अंदर प्रवाहित होती रहती है। जैसे एक अदृश्य धागा निरंतर कहीं नीचे दौड़ता हुआ स्मरण दिलाता रहता है। वे भोजन करते हैं, वे भोजन को भी ध्यान बना लेते हैं। वे चलते हैं लेकिन वे चलने को भी ध्यान बना लेते हैं। वे सुनते हैं, लेकिन वे बात करने को भी ध्यान बना लेते हैं। वे सुनते हैं, लेकिन वे सुनना भी ध्यान बना लेते हैं। वे बहुत सी चीजें करते हैं, लेकिन वे प्रत्येक चीज को ध्यान से जोड़ देते हैं। इससे उनका चित्र विभाजित नहीं होता, वह एक ही रहता है।

प्रेम के पथ का अनुसरण करने वाले बाउल प्रेमियों में प्रेम अंतर्प्रवाह की भांति प्रवाहित होता रहता है। वे भोजन करते हैं, लेकिन प्रेम के साथ, वे चलते हैं, लेकिन उनका एक एक कदम प्रेम को गुनगुनाते हुए उठता है क्योंकि पृथ्वी पवित्र भूमि है। वे एक वृक्ष के नीचे बैठते हैं, लेकिन बहुत प्रेम और श्रद्धापूर्वक क्योंकि वृक्ष में दिव्यता है। वे किसी की ओर देखते हैं, लेकिन बहुत प्रेमपूर्वक क्योंकि वहां भी दिव्यता है। प्रत्येक स्थान पर वे अपनी प्रेमिका को देखते हैं, अपनी प्रत्येक गति में वे अपनी प्रेमिका का स्मरण करते हैं। वह उनकी निरंतर सुरति बनी रहती है।

लेकिन चाहे ध्यान के पथ पर या चाहे प्रेम के पथ पर एक चीज तो करना ही है। एक हजार एक चीजें करते हुए तुम्हें सभी को एक चीज से जोड़ देना है। यह जोडना और उस धागे का अंदर ही अंदर दौड़ना तुम्हारी चेतना को एक नोंक वाला बना देता है। तुम्हारा मन अविभाजित ' एक ' बना रहता है वह तुम्हें एकीकरण देगा। इस एकीकरण में स्वप्न विसर्जित हो जाते हैं। यह तुम्हारे अंदर की भीड़ ही है जो स्वप्न देखती है। तुम्हारी वह विभाजित चेतना ही है जो स्वप्न देखती है। जब इस दो के विभाजन के मध्य सेतु बन जाता है, स्वप्न विसर्जित हो जाते हैं। क्योंकि तब तुम अभी और यहीं होने में इतना अधिक आनंद लेना शुरू कर देते हो, तब कामना की फिक्र ही कौन करता है? आने वाले कल के बारे में सोचने का समय किसके पास होता है। आज ही आवश्यकता से अधिक है। अविभाजित अस्तित्वका एक क्षण ही कितना विराट है, शाश्वतता से भी कहीं अधिक विराट।

तब कोई भी अतीत के बारे में भी नहीं सोचता—जो जा चुका वह जा चुका। और तब कोई भी भविष्य के बारे में भी नहीं सोचता जो अभी तक आया ही नहीं है, वह आया ही नहीं है अभी। केवल एकीकृत एक मन ही वर्तमान में गहरे और गहरे डूबता है और यही परमात्मा का द्वार है।

वर्तमान ही द्वार है और तुम्हारा एकीकृत एक चित्त ही वह कुंजी है।

आज बस इतना ही।

चौथा प्रवचन

तुम्हारी आत्मा में गलता शून्य का संगीत

दिनांक 24 जून 1976; श्री ओशो आश्रम पूना।

प्रश्नसार:

प्रथम प्रश्न :

प्यारे ओशो! अंतर्यात्रा प्रारंभ कैसे की जाए? सेक्स के अतिक्रमण करने का ठीक— ठीक क्या अर्थ है?

यात्रा का प्रारंभ तो पहले ही से हो चुका है, तुम्हें वह शुरू नहीं करना है। प्रत्येक व्यक्ति पहले से यात्रा में ही है। हमने अपने आपको यात्रा पथ के मध्य में ही पाया है। इसकी न तो कोई शुरुआत है और न कोई अंत। यह जीवन ही एक यात्रा है। जो पहली बात समझ लेने जैसी है वह यह है कि इसे प्रारंभ नहीं करना है, यह हमेशा से ही चली जा रही है। तुम यात्रा ही कर रहे हो। इसे केवल पहचानना है।

अचेतन रूप से तुम यात्रा में ही हो, इसलिए यह महसूस होता है कि जैसे मानो तुम्हें उसका प्रारंभ करना है। इसे पहचानो, इसके बारे में सचेत हो जाओ केवल पहचान ही शुरुआत बन जाती है। जिस क्षण यह पहचान लेते हो, कि तुम हमेशा से ही गतिशील हो, और कहीं जा रहे हो, जाने— अनजाने इच्छापूर्वक या अनिच्छापूर्वक लेकिन तुम चले जा रहे हो. कोई महान शक्ति तुम्हारे अंदर निरंतर कार्य कर रही है परमात्मा ही तुममें खिल रहा है। वह निरंतर तुम्हारे अंदर कुछ न कुछ सृजन कर रहा है, इसलिए ऐसी बात नहीं, कि इसे कैसे शुरू करें। ठीक प्रश्न तो यह होगा। इसे कैसे पहचानें 7 वह तो यहां है, लेकिन वहां उसकी पहचान न हो सकी है।

उदाहरण के लिए वृक्ष मर जाते हैं लेकिन वे इसे नहीं जानते, पक्षी और पशु मरते हैं, लेकिन वे यह नहीं जानते। केवल मनुष्य जानता है कि उसे मरना है। यह जानकारी भी बहुत धुंधली है। साफ नहीं है। और ऐसा ही जीवन के भी साथ है। पक्षी जीवित हैं लेकिन वे नहीं जानते कि वे जीवित हैं क्योंकि तुम जीवन को कैसे जान सकते हो, जब तक तुम मृत्यु को ही नहीं जानते। तुम कैसे जान सकते हो कि तुम जीवित हो, यदि तुम्हें यह भी नहीं मालूम कि तुम मरने जा रहे हो? दोनों पहचानें साथ—साथ आती हैं। वे जीवित हैं, लेकिन उन्हें यह पहचान नहीं है अपने जीवित होने की। मनुष्य को थोड़ी सी पहचान है कि वह मरने जा रहा है, लेकिन यह पहचान बहुत धुंधली गहरे धुंवे के पीछे छिपी रहती है। और इसी तरह जीवन के बारे में यह जानने कि जीवित रहने का अर्थ क्या होता है। यह भी बहुत धुंधला सा है, और स्पष्ट नहीं है।

जब मैं कहता हूं पहचान, तो मेरे कहने का अर्थ है— "सजग हो जाना जीवन ऊर्जा के प्रति, कि वह है क्या, जो इस पथ पर पहले ही से है।"

अपने स्वयं के अस्तित्व के प्रति सजग होना ही, इस यात्रा का प्रारंभ है और उस बिंदु पर आना, जहां आकर तुम पूरी तरह होशपूर्ण और सजग हो जाओ, जहां तुम्हारे चारों ओर अंधकार का कोई छोटा सा टुकड़ा भी न हो, और यही तुम्हारी यात्रा का अंत है। लेकिन वास्तव में यात्रा न तो कभी शुरू होती है और न कभी खत्म। तुम्हें उसके बाद भी यात्रा जारी रखनी होगी लेकिन तब यात्रा का पूरी तरह भिन्न एक अलग अर्थ होगा, पूरी तरह आपके भिन्न गुण होंगे, वह मात्र एक आनंद होगी, ठीक अभी तो वह एक पीड़ा के समान है।

इस यात्रा का प्रारंभ कैसे किया जाए? अपने कार्यों के प्रति अधिक सजग होकर और अपने सम्बन्धों तथा गतिविधियों के बारे में होशपूर्ण होकर। जो कुछ भी तुम करो यहां तक कि सड़क पर चलने जैसा एक साधारण कार्य भी उसके प्रति भी सजग होने की कोशिश करो, पूरे होश के साथ अपना एक—एक कदम उठाओ।

बुद्ध अपने शिष्यों से कहा करते थे जब तुम अपने दाहिने पैर के साथ कदम उठाओ तो स्मरण रखो कि वह दाहिना पैर है और जब बाएं पैर के साथ कदम उठे तो याद रहे कि वह बायां पैर है। जब तुम सांस लो तो याद रहे— "अब मैं साँस बाहर फेंक रहा हूं। ऐसा नहीं कि तुम्हें इसका मुंह से उच्चारण करना है।" मैं सांस अंदर ले रहा हूं— "बस केवल इसके प्रति सजग हो जाना है कि सांस अंदर जा रही है। मैं तुम्हें यह बता रहा हूं इसलिए मुझे शब्दों का प्रयोग करना पड रहा है। लेकिन जब तुम सजग हो जाते हो, तो तुम्हें शब्दों के प्रयोग करने की जरूरत नही रह जाती, क्योंकि शब्द तो धुंवे के समान हैं। शब्दों का प्रयोग मत करो, केवल सांस को अंदर जाते और अपने फेफड़ों में भरते हुए महसूस करो और तब फेफड़ों के सांस से खाली होने का अनुभव करो। बस केवल निरीक्षण करते रहो और शीघ्र ही तुम्हें इसकी पहचान ही नहीं, सघन प्रतीति होने लगेगी कि यह केवल सांस ही नहीं है जो अंदर और बाहर जा रही है, यह स्वयं जीवन ही है। प्रत्येक सांस तुम्हारे अंदर जीवन—ऊर्जा उड़ेल रही है और प्रत्येक बाहर जाती श्वास एक छोटी सी मृत्यु है। प्रत्येक सांस छोड़ने के साथ ही तुम्हारी मृत्यु होती है और फिर तुम्हारा पुनर्जन्म होता है। प्रत्येक सांस क्रूस पर लटकने जैसी मृत्यु है और प्रत्येक अंदर ली गई सांस कब्र से उठकर प्राप्त किया गया पुनर्जन्म है।"

और जब तुम इसका निरीक्षण करते हो तो तुम्हें विश्वास के एक सुंदर अनुभव को जानने का अवसर मिलता है। जब तुम सांस बाहर फेंकते हो तब यह सुनिश्चित नहीं होता कि तुम फिर से श्वास अंदर लेने में समर्थ हो सकोगे। निश्चय से कैसे कहा जा सकता है? कौन गारंटी से कह सकता है? कौन इस बात की गारंटी ले सकता है कि तुम फिर से सांस अंदर लेने में समर्थ हो सकोगे? लेकिन किसी तरह एक गहरे विश्वास के द्वारा तुम जानते हो कि मैं श्वास फिर से लूंगा। अन्यथा सांस लेना ही मुश्किल हो जाए। यदि तुम इतने अधिक भयभीत हो जाओ, कि कौन जाने यदि मैं सांस बाहर फेंक दूं और यदि मैं इस छोटी सी मृत्यु से होकर गुजरूं, तो इस बात की क्या गारंटी है कि मैं सांस फिर से अंदर लेने में समर्थ हो सकूंगा—" यदि मैं श्वांस अंदर ले नहीं सकता तो यह बेहतर होगा कि मैं श्वास बाहर फेंकूं ही नहीं।" फिर तुम तुरंत मर जाओगे। यदि तुम सांस बाहर फेंकना बंद कर दो तुम्हारी तुरंत मृत्यु हो जाएगी। लेकिन एक गहरा विश्वास बना रहता है। और वह विश्वास जीवन का एक भाग है, यह किसी ने तुम्हें सिखाया नहीं है।

जब बच्चा पहली बार चलना शुरू करता है तो उसमें एक गहरा विश्वास होता है कि वह चल सकेगा। किसी ने उसे सिखाया नहीं है। उसने दूसरे लोगों को बस चलते हुए देखा है और बस यही सब कुछ है। लेकिन वह इस निष्कर्ष पर कैसे पहुंचा—" मैं चलने मे समर्थ हो सकूंगा?" वह इतना अधिक छोटा है और दूसरे लोग उसके मुकाबले में बड़े देव जैसे हैं, और वह यह भी जानता है कि वह जब कभी भी खड़ा होता है वह नीचे गिर जाता है। लेकिन वह फिर भी प्रयास करता है। यह विश्वास उसमें जन्मजात है। यह तुम्हारे जीवन के प्रत्येक कोष में है। वह कोशिश करता है। कई बार वह गिरेगा भी, फिर भी वह बार—बार और हर बार कोशिश करेगा और एक दिन विश्वास जीतता ही है और चलना शुरू कर देता है। यदि तुम अपनी सांस का निरीक्षण करते रहो, तो तुम इस बारे में सजग हो जाओगे और निसंदेह बिना किसी हिचक के कहा जा सकता है कि तुम्हारे जीवन में एक सूक्ष्म विश्वास है और तुम्हारे अंदर उसकी एक गहरी पर्त है।

यदि तुम सजग होकर चलते रहे तो धीमे— धीमे तुम इसके प्रति होशपूर्ण हो जाओगे कि तुम नहीं चल रहे हो और तुम्हारे द्वारा कोई और चल रहा है। यह बहुत सूक्ष्म अनुभूति है कि जीवन ही तुम्हारे द्वारा चल रहा

है। जब तुम्हें भूख लगती है तो यदि तुम सजग हो, तो तुम देखोगे कि तुम्हारे अंदर जीवन ही भूख का अनुभव कर रहा है—तुम नहीं। अधिक होशपूर्ण बनने से तुम इस तथ्य के प्रति सचेत हो जाओगे कि तुम्हें वहां केवल एक चीज ही मिली है, जिसे तुम अपना कह सकते हो और वह है साक्षी। उसके अतिरिक्त हर चीज संसार की है और केवल साक्षी ही तुम्हारा है। लेकिन जब तुम साक्षी के प्रति सजग बन जाते हो फिर 'मैं' के होने का विचार भी विसर्जित हो जाता है।

वह भी तुम्हारा कोई होता नहीं है। वह अंधेरे का भाग है जो तुम्हें चारों ओर घेरे हुए हैं। स्पष्ट प्रकाश में जब आकाश मुक्त और खुला हुआ हो और बादल छंट गए हों, सूर्य, ऊष्मा और प्रकाश फैला रहा हो, तो फिर 'मैं' के होने या किसी विचार की भी संभावना नहीं रह जाती, तब केवल साक्षी के अतिरिक्त कुछ भी तुम्हारा नहीं होता है। वही साक्षी तत्व ही तुम्हारी अन्तर्यात्रा का लक्ष्य है।

यात्रा का शुभारंभ कैसे हो? अधिक से अधिक साक्षी बनो, जो कुछ भी तुम करो, उसे गहरी गहरी सजगता के साथ करो तब छोटी—सी चीजें भी पावन बन जाएंगी। तब खाना बनाना और सफाई करना भी धार्मिक कृत्य बन जायेगा वह तुम्हारा पूजा हो जाएगी। तुम क्या कर रहे हो, फिर यह प्रश्न न रह कर, प्रश्न यह रह जायेगा कि तुम कैसे कर रहे हो? तुम एक रोबो की भांति यांत्रिक रूप से भी फर्श साफ कर सकते हो, तुम्हें उसे साफ करना ही होता है, इसीलिए तुमने उसे साफ किया। तब तुम किसी सुंदर चीज से चूक गए। तब तुमने फर्श साफ करने में वे क्षण व्यर्थ गंवाए। फर्श को साफ करना भी एक महान अनुभव बन सकता था, लेकिन तुम उसे चूक गए। फर्श तो साफ हो गया, लेकिन कुछ चीज जो तुम्हारे अंदर घट सकती थी, नहीं घटी। यदि तुम होशपूर्ण थे, तो न केवल फर्श की बल्कि तुमने अपने अंदर गहरे में भी एक निर्मलता और शुचिता का अनुभव किया होगा। फर्श को पूरे होश से भरकर साफ करो, होश के साथ लेकिन एक चीज धागे से निरंतर जुड़े रहो, तुम्हारे जीवन के अधिक से अधिक क्षण होश और समझ से भरे हों। प्रत्येक कृत्य में प्रत्येक क्षण होश की शमा जलती ही रहे।

इन सभी बातों का लगातार बढता संचयी प्रभाव और उनका जोड़ ही बुद्धत्व है। सभी का प्रभाव, जहां सभी क्षण साथ—साथ होते हैं, सभी छोटी—छोटी मोमबत्तियां एक साथ जलकर प्रकाश का एक महान स्रोत बन जाती है।

और प्रश्न का दूसरा भाग है : सेक्स के अतिक्रमण करने का ठीक—ठीक क्या अर्थ है?

सेक्स का विषय बहुत सूक्ष्म और नाजुक है, क्योंकि सदियों से किए जाने वाला शोषण, भ्रष्टाचार, सदियों से चले आ रहे विकृत विचार, धर्म और समाज द्वारा दिया अनुशासन और आदतें इन सभी को जोड़कर ही जो शब्द बनता है वह है सेक्स। यह शब्द बहुत वजनी है। यह अस्तित्व में सबसे अधिक वजनी शब्दों में से एक है। तुम कहो परमात्मा—लेकिन यह शब्द ही खाली—खाली सा ही लगता है। तुम कहो सेक्स—तो यह शब्द अधिक वजनी लगता है। इस शब्द को सुनते ही मन में भय, विकारग्रस्तता, आकर्षण, तीव्र कामना और अकाम आदि एक हजार एक चीजों का जन्म होता है।

ये सभी भाव एक साथ उठते हैं। सेक्स यह अकेला एक शब्द ही अत्यधिक अव्यवस्था और भ्रम उत्पन्न करता है। यह ऐसा है जैसे मानो किसी व्यक्ति ने शांत तालाब में एक चट्टान फेंक दी हो, ओर उससे लाखों लहरें उत्पन्न हो गई हों। बस केवल एक शब्द सेक्स—मनुष्यता अभी तक बहुत ही गलत विचारों के तले जीती रही है।

इसलिए पहली चीज है — तुम यह क्यों पूछ रहे हो कि सेक्स का अतिक्रमण कैसे करें? पहली बात तो यह कि तुम सेक्स का अतिक्रमण क्यों करना चाहते हो? तुम एक बहुत सुंदर शब्द 'अतिक्रमण' का प्रयोग कर रहे

हो, अर्थात् सभी सीमाओं को पार चले जाना, लेकिन सौ में से निन्यानवे संभावनाएं यही हैं, कि तुम्हारा वास्तविक प्रश्न है कि कैसे सेक्स का दमन किया जाए?

.....क्योंकि एक व्यक्ति जिसने यह समझ लिया हो कि सेक्स का अतिक्रमण किया जाना है वह उसके अतिक्रमण करने के बारे में चिंतित होगा ही नहीं, क्योंकि कोई भी व्यक्ति सभी सीमाओं के पार अनुभव के द्वारा ही जाता है। तुम उसकी व्यवस्था नहीं कर सकते। वह कुछ ऐसा नहीं है कि तुम्हें उसे करना ही है। तुम साधारण रूप से बहुत से अनुभवों के द्वारा होकर गुजरते हो, और वे अनुभव तुम्हें अधिक से अधिक परिपक्व बनाते हैं।

क्या तुमने कभी निरीक्षण किया है कि एक विशिष्ट आयु में आकर सेक्स अधिक महत्त्वपूर्ण बन जाता है। ऐसा नहीं कि तुम उसे महत्त्वपूर्ण बनाते हो। यह कोई ऐसी चीज नहीं है कि तुम उसे बनाते हो, वह तो स्वयं घटती है। चौदह वर्ष की आयु अथवा उसके निकट की आयु में अचानक सेक्स के साथ ऊर्जा की बाढ़ सी आती है। ऐसा लगता है जैसे तुम्हारे अंदर मानो ऊर्जा की आई बाढ़ को रोकने वाले दरवाजे खोल दिए गए हों। ऊर्जा के सूक्ष्म स्रोत जो अभी तक खुले नहीं थे, एक साथ खुल जाते हैं, और तुम्हारी पूरी ऊर्जा सेक्स के साथ कामवासना बन जाती है। तुम सेक्स के बारे में ही सोचते हो, तुम सेक्स के बारे में ही गुनगुनाते हो, तुम चलते हुए भी सेक्स के बारे में ही सोचते हो, और प्रत्येक चीज कामुक हो उठती है। प्रत्येक कृत्य जैसे उसी के रंग में रंग जाता है। ऐसा स्वयं घटता है। तुम उस बारे में करते कुछ भी नहीं। यह सभी स्वाभाविक है।

उसका अतिक्रमण भी स्वाभाविक है। यदि बिना उसकी निंदा किए हुए सेक्स को समग्रता से जिया जाए बिना इस विचार के साथ कि उससे पीछा छुड़ाना है, तो बयालीस वर्ष की आयु में.....जैसे चौदह वर्ष की अवस्था में सेक्स का द्वार खुला था और पूरी ऊर्जा कामवासना बन गई थी, उसी तरह बयालीस वर्ष की अवस्था में अथवा उनके आसपास काम ऊर्जा की बाढ़ के द्वार फिर से बंद हो जाते

हैं और ऐसा होना भी स्वाभाविक है। जैसे सेक्स जीवंत होता है, वैसे ही वह विलुप्त होना शुरू हो जाता है।

सेक्स का अतिक्रमण बिना किसी प्रयास के होता है। तुम्हारा उसमें कोई पार्ट नहीं होता। यदि तुम कोई प्रयास करोगे तो वह दमन होगा क्योंकि उसका तुम्हारे साथ कोई लेना देना नहीं। वह तुम्हारे शरीर में जीवविज्ञान के अनुसार जन्मजात है। तुम कामुक अस्तित्व से ही उत्पन्न होते हो, उसने कुछ भी गलत नहीं है। जन्म लेने का केवल यही एक तरीका है। मनुष्य होना ही कामुक होना है।

जब तुम गर्भ में आये तुम्हारे माता और पिता प्रार्थना नहीं कर रहे थे, वे लोग किसी पादरी का उपदेश नहीं सुन रहे थे। वे किसी चर्च में नहीं बैठे थे, वे आपस में प्रेमालाप कर रहे थे। यह सोचना ही कि जब तुम गर्भ में आये, तो तुम्हारे माता और पिता प्रेम कर रहे थे, बहुत कठिन लगता है। वे आपस में प्रेम कर रहे थे, उनकी काम ऊर्जाएं एक दूसरे से मिलकर एक दूसरे में समाहित हो रही थीं। एक गहरे कामुक कृत्य के बाद ही तुम गर्भ में आए। पहला कोष ही सेक्स कोष था, लेकिन आधारभूत रूप से प्रत्येक कोष में कामवासना होती है। तुम्हारा पूरा शरीर सेक्स के कोषों से ही बना हुआ है, जिसमें लाखों कोष हैं, और जिसमें विरोधी सेक्स के प्रति मौन आकर्षण होता है।

स्मरण रहे यौन सम्बन्धों के कारण ही तुम अस्तित्व में हो। एक बार तुम इसे स्वीकार लो, तो सदियों से उत्पन्न हुआ संघर्ष समाप्त हो जाता है, एक बार तुम उसे गहराई से स्वीकार कर लो, और बीच में कोई दूसरे विचार न हों. जब सेक्स के बारे में तुम उसे स्वाभाविक मानकर जीते हो, तुम मुझसे यह नहीं पूछते कि खाने का कैसे अतिक्रमण किया जाये, तुम मुझसे यह नहीं पूछते कि सांस का कैसे अतिक्रमण किया जाए क्योंकि किसी भी धर्म ने तुम्हें सांस का अतिक्रमण करना नहीं सिखाया है, अन्यथा तुम पूछते सांस का अतिक्रमण कैसे किया

जाए?" तुम सांस लेते हो, तुम सांस लेने वाले प्राणी या एक जानवर हो, तुम साथ ही सेक्स अंगों वाले भी एक जानवर हो। लेकिन इसमें एक अंतर है। तुम्हारे जीवन के चौदह वर्ष जो शुरू के होते हैं, लगभग बिना सेक्स के होते हैं, अधिकतर केवल प्राथमिक पैमाने के यौन अंगों के खेल जैसे ही होते हैं, जिनमें वास्तव में कामवासना नहीं होती। केवल तैयारी होती है, पूर्वाभ्यास होता है, सब कुछ बस इतना ही होता है। अचानक चौदह वर्ष की अवस्था में ही सेक्स ऊर्जा परिपक्व होती है।

जरा निरीक्षण करें। एक बच्चा जन्म लेता है.. तुरंत तीन सेकिंड में ही बच्चे को सांस लेनी होती है। अन्यथा वह मर जाएगा। तब सांस लेना पूरे जीवन भर होता रहता है, क्योंकि वह जीवन के प्रथम कदम पर आया है। उसका अतिक्रमण नहीं किया जा सकता। यह हो सकता है कि मरने के केवल तीन सेकिंड पहले वह रुक जायेगा, लेकिन इससे पहले नहीं। हमेशा याद रहे, जीवन के दोनों छोर, प्रारंभ और अंत ठीक एक जैसे है संगतिपूर्ण है। बच्चा जन्म लेता है और सांस लेना तीन सेकिंड के अंदर शुरू कर देता है। जब बच्चा बूढ़ा होकर मर रहा है, उसी क्षण वह सांस लेना बंद करता है और तीन सेकिंड के अंदर मर जाता है।

बच्चा चौदह वर्ष की आयु तक बिना सेक्स के रहता है और सेक्स का प्रवेश काफी देर से होता है। और यदि समाज बहुत अधिक दमन करने वाला नहीं है, और कामवासना ने मन को पूरी तरह आवेशित ही नहीं कर दिया तो बच्चा इस तथ्य के प्रति पूरी तरह भूल जाता है कि सेक्स या उस तरह की कोई चीज अस्तित्व में भी है। बच्चा पूरी तरह निर्दोष बना रह सकता है। यह निर्दोषिता भी उनके लिए सम्भव नहीं है। जो लोग बहुत अधिक दमित हैं। जब दमन होता है तब उसके साथ ही साथ पहले से ही मन में जड़ जमाये अनेक भ्रम भी होते हैं।

इसलिए पुरोहित दमन कराये चले जाते हैं। और वहां पुरोहितों के विरोधी हेफनर्स और अन्य लोग भी हैं जो अधिक से अधिक अश्लील साहित्य सृजित किये चले जाते हैं। इसलिए एक ओर तो वहां पुरोहित हैं जो दमन किए चले जा रहे हैं और तभी पुरोहितों के विरोधी तथा दूसरे लोग भी हैं, जो कामुकता और अश्लीलता को अधिक से अधिक आकर्षक बना कर प्रस्तुत कर रहे हैं। ये दोनों लोग एक साथ ही, एक ही सिक्के के दो पहलुओं की तरह मौजूद हैं। जब चर्च मिट जाएंगे केवल तभी प्लेबॉय अश्लील मैगजीन भी गायब हो जाएगी, लेकिन उससे पहले नहीं। वे धंधे में साझीदार की भांति हैं। वे यों तो दुश्मन दिखाई देते हैं। लेकिन इससे धोखे में मत पड़ो। वे दोनों एक दूसरे के विरुद्ध बातें करते हैं, लेकिन इसी तरह से ही तो चीजें कार्य करती हैं।

मैंने दो मनुष्यों के बारे में सुना है, जिनका धंधा चौपट हो गया था, इसलिए उन दोनों ने एक बहुत सरल सा धंधा शुरू करने का निश्चय किया। उन दोनों ने एक शहर से दूसरे शहर में टुअर करने वाली यात्राएं करना शुरू किया। पहले उनमें से एक शहर में प्रवेश करता है और रात में लोगों की खिड़कियों और दरवाजों पर तारकोल फेंक देता। इसके दो या तीन दिनों बाद दूसरा उनको साफ करने के लिए आता। वह लोगों को सलाह देता हुआ बताता कि वह किसी भी चीज पर पड़े हुए तारकोल को हटा सकता है। और फिर खिड़कियों को साफ करता। उसी समय पहला व्यक्ति दूसरे शहर में अपना आधा व्यापार कर रहा होता। इस तरह उन दोनों ने काफी धन कमाना शुरू कर दिया।

सब कुछ ऐसा ही चर्च और झूजफनसे और उनके लोगों के बीच घट रहा है, जो निरंतर अश्लील साहित्य और चित्र बनाए चले जा रहे हैं।

मैंने सुना है:

सुन्दर मिस कैनीन ने चर्च के प्रायश्चित करने वाले केबिन में जाकर कहा— " फादर! मैं यह स्वीकार करना चाहती हूं कि मैंने अपने पुरुष मित्र को अपना चुम्बन लेने दिया।"

पादरी ने अत्यधिक दिलचस्पी दिखाते हुए पूछा—'' जो कुछ तुमने उसके साथ किया क्या वह बस इतना ही था?"

" नहीं मैंने उसे अपनी टांगों पर भी हाथ रखने दिया।''

" और तब फिर क्या हुआ?"

" और तब मैंने उसे अपनी पैंटीज भी टांगों से खींच लेने दी।''

" और तब.. और तब..?" पादरी ने उत्तेजित होकर पूछा।

" और तभी मेरी मां टहलती हुई कमरे में आ गई।''

" आह शिट।'' यह कहते हुए पादरी ने गहरी आह भरी।

वे साथ—साथ हैं। वे इस षडयंत्र में साझीदार हैं। जब कभी तुम अत्यधिक कामवासना का दमन करते हो, तुम विकारग्रस्त दिलचस्पी से खोजना शुरू कर देते हो। एक विकारग्रस्त दिलचस्पी ही वास्तविक समस्या है सेक्स नहीं। अब यह पादरी मानसिक रोगी है। सेक्स कोई समस्या नहीं, लेकिन विकृत चिंतन से यह मनुष्य परेशान है।

सिस्टर मारग्रेट और सिस्टर कैथरीन दोनों एक छोटी सी सड़क पर टहलने निकलीं। अचानक उन दोनों पर दो व्यक्ति झपटे और उन्हें घसीट कर एक अंधेरी ' तंग गली में ले जाकर उनके साथ बलात्कार किया।

सिस्टर मारग्रेट ने कहा—'' फादर! उन्हें क्षमा करना, वे नहीं जानते थे कि वे क्या कर रहे थे?"

"शटअप!" सिस्टर कैथरीन ने चीखते हुए कहा—'' कोई भी व्यक्ति यही। करता है।''

ऐसा होना ही था। इसलिए अपने मन में सेक्स के विरुद्ध एक भी विचार लेकर मत चलो, अन्यथा तुम कभी भी उसके पार न जा सकोगे। वे लोग जो सेक्स का अतिक्रमण कर गए ये वही लोग थे जिन्होंने उसे सहज स्वाभाविक रूप में स्वीकार किया। यह बहुत कठिन है। मैं जानता हूं क्योंकि तुमने जिस समाज में जन्म लिया है। वह सेक्स के बारे में इस तरह या उस तरह से मानसिक रूप से विकारग्रस्त है। लेकिन यह मानसिक विक्षिप्तता सभी जगह एक ही सी है। इस मानसिक दशा से बाहर निकलना बहुत कठिन है, लेकिन यदि तुम थोड़े से सजग हो, तो तुम उससे बाहर आ सकते हो। इसलिए असली चीज यह नहीं है कि कैसे सेक्स का अतिक्रमण किया जाए लेकिन असली समस्या है कि कैसे समाज की इस विकारग्रस्त विचारधारा के, इस सेक्स के भय से, इसके दमन और मन पर निरंतर उसके अधिकार से मुक्त हुआ जा सके।

सेक्स सुंदर है। सेक्स अपने आप में एक स्वाभाविक लयबद्ध घटना है। यह तब घटती है, जब शिशुगर्भ में आने के लिए तैयार होता है और यह अच्छा है कि ऐसा होता है, अन्यथा जीवन का अस्तित्व ही न होता। जीवन का अस्तित्व सेक्स के ही द्वारा है, सेक्स उसका माध्यम है। यदि तुम जीवन को समझते हो, यदि तुम जीवन को प्रेम करते हो, तो तुम उसमें प्रसन्नता का अनुभव करोगे, और जितने स्वाभाविक रूप से वह आता है, वैसे ही स्वयं अपने आप ही विदा हो जाता है। बयालीस वर्ष अथवा उसके आसपास की आयु में सेक्स उसी तरह स्वाभाविक रूप से विसर्जित होना शुरू हो जाता है, जैसे वह अस्तित्व में आया था। लेकिन वह उस तरह से नहीं जाता।

जब मैं कहता हूं लगभग बयालीस वर्ष के आसपास, तो यह सुनकर तुम आश्चर्य करोगे। तुम जानते हो कि जो लोग सत्तर या अस्सी वर्ष के भी हैं, वे भी सेक्स के पार अभी नहीं जा सके हैं। तुम ऐसे गंदे के लोगों को जानते हो। वे लोग समाज के ही शिकार हैं। क्योंकि वे सहज स्वाभाविक होकर न रह सके। जब उन्हें आनंद लेते हुए प्रसन्न रहना चाहिए था, तब उन्होंने दमन किया और उसी का वे आज भी परिणाम भुगत रहे हैं। आनंद के

उन क्षणों को उन्होंने समग्रता से नहीं भोगा। वे कभी भी संभोग के सर्वोच्च शिखर पर पहुंचे ही नहीं, उन्होंने आधा अधूरा संभोग ही किया।

इसलिए जब कभी भी तुम किसी भी कार्य को आधे— अधूरे हृदय से करते हो, तो वह लम्बे समय तक कहीं अटका रहता है। यदि तुम मेज पर बैठे हुए आधे— अधूरे हृदय से भोजन कर रहे हो, और तुम्हारी भूख बनी ही रहती है तो तुम पूरे ही दिन भोजन के ही बारे में सोचते रहोगे। तुम उपवास करने की कोशिश कर सकते हो और सोचते रहोगे। तुम उपवास रखने की कोशिश कर सकते हो और तुम देखोगे कि तुम निरंतर भोजन के बारे में ही सोचते रहोगे। लेकिन तुमने भरपेट तृप्ति से भोजन किया है, और जब मैं कहता हूं भरपेट तृप्ति से तो मेरा अर्थ नहीं है कि तुमने डूंस— ठूंस कर भोजन किया है, सम्यक भोजन करना एक कला है।

यह केवल फ्लू—ठूंस कर खाना ही नहीं है। यह एक महान कला है भोजन का स्वाद लेना, उसकी गंध का आनंद लेना, उसे स्पर्श करना, उसे चबाना, भोजन को हजम करना और उसे पचाना तो एक दिव्यता है। यह दिव्यता का अनुभव परमात्मा की भेंट है।

हिंदू कहते हैं—'' अन्नम् ब्रह्म '' भोजन ही परमात्मा है, दिव्य है। इसीलिए बहुत गहरे आदर भाव से तुम भोजन करते हो और भोजन करते हुए हो तुम प्रत्येक चीज भूल जाते हो, क्योंकि भोजन करना एक प्रार्थना है। यह एक अस्तित्वगत प्रार्थना है। तुम परमात्मा का ही भोजन कर रहे हो और परमात्मा ही भोजन बनकर तुम्हारा पालन पोषण कर रहा है। यह एक उपहार और आभार है जो तुम्हें गहन प्रेम के साथ स्वीकार करना चाहिए। और तुम्हें शरीर में भोजन ढूंसना नहीं चाहिए क्योंकि ठूंस—ठूंस कर भोजन करना शरीर—विरोधी है। वह दूसरा विपरीत ध्रुव है।

यहां ऐसे लोग हैं जो मन पर नियंत्रण करते हुए उपवास कर रहे हैं और ऐसे लोग भी हैं जो फ्लू—ठूंस कर भोजन कर स्वयं अपने को सता रहे हैं। दोनों ही गलत हैं क्योंकि दोनों ही तरीकों से शरीर अपना संतुलन खो देता है। एक शरीर का सच्चा प्रेमी केवल उस बिंदु तक भोजन करता है, जब वह पूरी तरह शांत व संतुलित होने का अनुभव करे, जहां शरीर न तो बाईं ओर न दाईं ओर झुकने का अनुभव करे, वह ठीक मध्य में बना रहे। अपने शरीर और अपने पेट की भाषा समझना और यह समझना कि तुम्हारे लिए क्या जरूरी है, तुम्हें केवल उतना ही देना है जितना तुम्हारे लिए जरूरी है। और वह तुम्हें उसे बहुत कलात्मक और सौंदर्य बोध के भाव से देता है।

जानवर भी खाते हैं और मनुष्य भी खाते हैं। तब दोनों के भोजन करने में अंतर क्या है? मनुष्य भोजन के द्वारा एक महान सुंदर अनुभव से होकर गुजरता है। आखिर एक खूबसूरत और कलात्मक मेज की जरूरत क्या है? वहां आखिर मोमबत्तियां जलाने की आवश्यकता क्या है? सुगंधित धुंवे की क्या जरूरत है? क्या जरूरत है भोजन में और अन्य लोगों के सम्मलित होने की? यह सब कुछ उसे कलात्मक बनाने के लिए ही है यह केवल पेट भरने के लिए न ही है। लेकिन यह सभी तो कला के बाह्य संकेत हैं। तुम्हारे शरीर की भाषा के आंतरिक संकेतों को समझने, उन्हें सुनने और उसकी आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील होने की जरूरत है। और तब तुम जो भी भोजन करते हो। तब फिर पूरे दिन भोजन के बारे में सोचते ही नहीं। केवल जब शरीर भूखा होता है। केवल तभी फिर भोजन की याद आती है। तब उसके प्रति तुम्हारा कोई विरोधी भाव नहीं है, यदि तुम उसे सहज स्वाभाविक है। ऐसा ही सेक्स के साथ भी होता है। यदि उसके प्रति तुम्हारा कोई विरोधी भाव नहीं है, यदि तुम उसे सहज स्वाभाविक और परम अहोभाव के साथ एक दिव्य उपहार की भांति लेते हो, तुम उसे प्रार्थना मानकर उसका आनंद लेते हो तो वह एक महान आनंद है।

तंत्र कहता है—कि किसी भी स्त्री या किसी भी पुरुष से प्रेम करने के पूर्व पहले प्रार्थना करो क्योंकि वहां दो ऊर्जाओं का दिव्य मिलन होने जा रहा है। परमात्मा तुम्हारे चारों ओर ही होगा। जहां भी दो प्रेमी होते हैं,

वहां परमात्मा होता ही है। जहां कहीं भी दो प्रेमियों की ऊर्जाएं मिल रही हैं। एक दूसरे में समाहित हो रही हैं, वहां जीवन और जीवंतता अपने सर्वश्रेष्ठ रूप में है और परमात्मा चारों ओर से घेरे हुए है। चर्च खाली पडे हैं और जिन कक्षों में प्रेम किया जा रहा है, वे सभी परमात्मा से भरे हुए हैं। यदि तुमने प्रेम का स्वाद उस तरह से लिया है जिस तरह से उसका स्वाद लेने को तंत्र कहता है यदि तुम प्रेम करने की वह विधि जानते हो जिसे जानने की बात ताओ कहता है तो बयालिस वर्ष की आयु तक पहुंचने पर प्रेम स्वयं ही अपने आप तिरोहित होना शुरू हो जाता है। और तुम उसे गुडबाई कह देते हो, क्योंकि तुम अहोभाव और उसके प्रति कृतज्ञता से भरे हुए हो। वह तुम्हारे लिए परम प्रसन्नता और परमानंद बन कर रहा है, इसीलिए तुम उसे गुडबाई कहते हो।

और बयालीस वर्ष की आयु ध्यान के लिए बिलकुल ठीक आयु है। सेक्स विसर्जित हो जाता है, वह अतिरेक से बहती हुई ऊर्जा अब वहां नहीं है। कोई भी ऐसा व्यक्ति कहीं अधिक शांत हो जाता है। वासना चली जाती है, करुणा का जन्म होता है। अब वहां वह ज्वर और ज्वार नहीं अब कोई भी किसी दूसरे में रुचि नहीं ले रहा है। सेक्स के विलुप्त होने के साथ ही दूसरा व्यक्ति अब केंद्र में रहा ही नहीं। अब वह अपने स्वयं के स्रोत की ओर वापस आना शुरू कर देता है। वापस लौटने की यात्रा का शुभारंभ हो जाता है।

सेक्स का अतिक्रमण तुम्हारे किन्हीं प्रयासों के द्वारा नहीं होता। वह तभी घटता है यदि तुम समग्रता से जिये हो। इसलिए मेरा सुझाव है कि सभी जीवन— विरोधी व्यवहार छोड़ कर वास्तविक सच्चाई को स्वीकार करो। सेक्स है, इसलिए तुम उसे छोड़ने वाले होते कौन हो? और है कौन, जो उसे छोड़ने का प्रयास कर रहा है? वह केवल अहंकार है। स्मरण रहे सेक्स ही अहंकार के लिए सबसे बड़ी समस्या उत्पन्न करता है।

इसलिए वहां दो तरह के व्यक्ति होते हैं ' जो बहुत अधिक अहंकारी व्यक्ति

होते हैं, वे सेक्स के हमेशा ही विरुद्ध होते हैं, विनम्र व्यक्ति कभी सेक्स के विरुद्ध नहीं होते। लेकिन विनम्र लोगों की बात सुनता ही कौन है? वास्तव में विनम्र व्यक्ति उपदेश नहीं दिए चले जाते, केवल ऐसा अहंकारी व्यक्ति ही करते है। वहां सेक्स और अहंकार के मध्य संघर्ष क्यों है? क्योंकि तुम्हारे जीवन में सेक्स कुछ ऐसी चीज है जहां तुम अहंकारी नहीं बने रह सकते, जहां दूसरा तुम्हारी अपेक्षा कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है। तुम्हारी स्त्री, तुम्हारा पुरुष, तुमसे कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

प्रत्येक अन्य मामले में तुम अधिक महत्त्वपूर्ण बने रहते हो। एक प्रेम सम्बंध में दूसरा बहुत महत्त्वपूर्ण बन जाता है, अत्यधिक महत्त्वपूर्ण। तुम उसके एक उपग्रह बन जाते हो, और दूसरा नाभकीय केंद्र बन जाता है और ऐसा ही दूसरे के लिए भी होता है। तुम उसके नाभकीय केंद्र बन जाते हो और वह तुम्हारा उपग्रह बन जाता है। यह एक दूसरे के प्रति पारस्परिक समर्पण है। दोनों ही प्रेम के देवता के प्रति समर्पित हैं, और दोनों ही विनम्र बन गए हैं।

केवल सेक्स ही वह ऊर्जा है, जो तुम्हें यह संकेत देती है कि वहां कुछ चीज ऐसी है जिसे तुम नियंत्रित नहीं कर सकते। धन पर तुम नियंत्रण कर सकते हो, राजनीति पर तुम नियंत्रण कर सकते हो, बाजार पर तुम नियंत्रण कर सकते हो, जानकारी और ज्ञान पर तुम नियंत्रण कर सकते हो, विज्ञान पर तुम नियंत्रण कर सकते हो और नैतिकता पर तुम नियंत्रण कर सकते हो। किसी जगह, सेक्स तुम्हें एक पूरी तरह भिन्न संसार में ले जाता है: और तुम उसे नियंत्रित नहीं कर सकते और सबसे बड़ा नियंत्रण करने वाला अहंकार ही है। यदि नियंत्रित कर सकता है, तो वह खुश होता है, और यदि वह नियंत्रित नहीं कर सकता तो नाखुश होता है। इसलिए वहां सेक्स और अहंकार के मध्य संघर्ष शुरू हो जाता है। स्मरण रहे, यह हारने वाली लड़ाई लड़ी जा रही है। अहंकार उसे कभी जीत नहीं सकता क्योंकि वह केवल उथला है। सेक्स की जड़ें बहुत गहरी हैं। सेक्स

तुम्हारा जीवन है, अहंकार केवल तुम्हारा मन और तुम्हारी सिर्फ खोपड़ी है। सेक्स की जड़ें तुम्हारे अंदर सभी जगह फैली हैं, और अहंकार की जड़ केवल तुम्हारे विचारों में है बहुत उथली, केवल है तुम्हारे सिर में ही।

इसलिए सेक्स का अतिक्रमण करने का प्रयास कौन कर रहा है? केवल तुम्हारा सिर ही सेक्स का अतिक्रमण करने का प्रयास कर रहा है। यदि तुम सिर या बुद्धि के जाल में ही बहुत अधिक उलझे हो, तो तुम सेक्स के पार जाना चाहते हो क्योंकि सेक्स तुम्हें तुम्हारे सार तत्व के नीचे ले जाता है। वह तुम्हें सिर में ही अटके रहने की अनुमति नहीं देता। तुम वहां से अन्य किसी भी चीज की व्यवस्था कर

सकते हो, लेकिन तुम वहां से सेक्स को व्यवस्थित नहीं कर सकते। तुम अपने सिर या बुद्धि के साथ प्रेम नहीं कर सकते। तुम्हें नीचे आना होगा, तुम्हें अपनी ऊंचाइयों से नीचे उतर कर आना होगा, तुम्हें पृथ्वी के निकट से निकट आना होगा। सेक्स अहंकार की अवमानना करेगा ही इसलिए अहंकारी व्यक्ति हमेशा सेक्स के विरुद्ध होते हैं। वे उसके पार जाने के साधन और तरीके खोजते रहते हैं। वे कभी भी उसके पार नहीं जा सकते। वे अधिक से अधिक विकारग्रस्त बन सकते हैं। शुरू से ही उनका पूरा प्रयास बर्बादी और असफलता ही है।

मैंने सुना है:

एक बॉस अपनी निजी सचिव का स्थान भरने के लिए जो शीघ्र ही मां बनने के कारण त्यागपत्र देने जा रही थी, प्रार्थियों का साक्षात्कार ले रहा था। बॉस का सीधा हाथ बने रहने वाला व्यक्ति उसके साथ बैठा हुआ सभी प्राणियों को सरसरी दृष्टि से देख रहा था। पहली लड़की सुंदर मांसल और गोरी थी। वह बुद्धिमान और सचिव की अच्छी योग्यता होने पर भी निकाल दी गई। दूसरी युवती काले बालों वाली पहली लड़की से भी कहीं अधिक चतुर और बुद्धिमती थी। तीसरी बुझी आंखों बड़े—बड़े दांतों वाली वह एक सौ नब्बे पौंड वजन की मोटी लड़की थी। तीनों का साक्षात्कार लेने के बाद बॉस ने अपने साथी से कहा कि वह तीसरी लडकी को स्थान देने जा रहा है।

उसके सहकारी ने आश्चर्यचकित होकर पूछा—'' आखिर क्यों?"

बॉस ने कहा— " वैल! पहली बात तो यह कि वह मुझे बहुत बुद्धिमती लगती है। दूसरी बात यह कि उसका इस नारकीय व्यापार धंधे से कुछ लेना देना नहीं और तीसरी बात यह कि वह मेरी पत्नी की बहिन है।''

इसलिए तुम बहाने बना सकते हो, कि तुमने सेक्स पर विजय प्राप्त कर ली लेकिन उसकी अंतर्धारा. .तुम तर्क—वितर्क द्वारा उसे सिद्ध कर सकते हो, तुम उसके लिए कारण खोज सकते हो, तुम बहाने बना सकते हो तुम अपने चारों ओर एक कठोर कवच निर्मित कर सकते हो, लेकिन तुम्हारे गहरे में असली कारण और वास्तविकता, अस्पर्श ज्यों की त्यों बनी ही रहेगी।

" वह मेरी पत्नी की बहिन है।'' यह केवल तर्क द्वारा कुछ स्वयं को समझाना भर है। और उसका मेरे नारकीय व्यापार— धंधे से कुछ लेना—देना नहीं है।'' इससे भी तुम नाराज और उत्तेजित हो जाते हो क्योंकि वह व्यक्ति डरता है कि दूसरा उसे सूंघ कर वास्तविक कारण जान सकता है। लेकिन असली कारण का तो विस्फोट होगा ही, तुम उसे छिपा नहीं सकते, ऐसा होना सम्भव ही नहीं है।

इसलिए तुम सेक्स को नियंत्रित करने का प्रयास कर सकते हो, लेकिन कामवासना का अंतर्प्रवाह जारी रहेगा और वह कई तरह से प्रकट होता रहेगा। तुम्हारे सभी तर्क—वितर्क और उसे ठीक समझने के प्रयासों के बावजूद भी वह बार— बार अपना सिर उठाता रहेगा।

मैं यह सुझाव नहीं दूंगा कि तुम उसका अतिक्रमण करने का कोई प्रयास करो। मैं जो भी सुझाव दूंगा, वह ठीक इसके विपरीत है : अतिक्रमण करने की बात भूल ही जाओ। जितनी गहराई से हो सके, उसमें गति करो।

जब तक वह ऊर्जा वहां है, तुम जितनी गहराई से उसमें जा सकते, जाओ, जितनी गहराई से प्रेम कर सकते हो, उसे एक कला बना लो। इसमें करने जैसा कुछ भी नहीं है।

तंत्र का यही पूरा तात्पर्य है—'' प्रेम करने को एक कला बना लो। उसके विभिन्न रंगों और अनुभवों का बहुत ही सूक्ष्म और नाजुक अर्थ है जिसे केवल वे लोग ही समझने में समर्थ हो सकते हैं जो एक महान सौंदर्य बोध के साथ उसमें प्रवेश करते हैं। अन्यथा तुम अपने पूरे जीवन भर प्रेम करते रह सकते हो और फिर भी असंतुष्ट बने रहोगे, क्योंकि तुम नहीं जानते कि संतुष्टि और तृप्ति में भी कुछ चीज सौंदर्य बोध जैसी ही है। यह तुम्हारी आत्मा में गूंजने वाले एक सूक्ष्म संगीत की भांति है। यदि सेक्स के द्वारा तुम लयबद्ध हो जाते हो, यदि प्रेम के द्वारा तुम तनावमुक्त और विश्रामपूर्ण हो जाते हो। यदि प्रेम केवल बाहर ऊर्जा को फेंक देना ही नहीं है, क्योंकि, तुम नहीं जानते कि उसके साथ क्या किया जाए यदि वह केवल एक छुटकारा पाना न होकर एक गहरा विश्राम है, यदि तुम अपनी स्त्री में और तुम्हारी स्त्री तुममें घुलकर विश्रामपूर्ण हो जाते हैं, यदि कुछ क्षणों अथवा कुछ घंटों के लिए तुम यह भूल जाते हो कि तुम भी हो और तुम पूरी तरह विस्मृति में खो जाते हो, तो तुम उससे कहीं अधिक निर्दोष शुद्ध और कुंवारे बनकर बाहर आओगे। और फिर तुम्हारा अस्तित्व एक भिन्न प्रकार का होगा—'' परम विश्रामपूर्ण, केंद्रित और अपनी जड़ों से जुड़ा हुआ।''

यदि ऐसा होता है तो अचानक एक दिन तुम देखोगे कि बाढ़ उतर गई है। और वह तुम्हें बहुत—बहुत समृद्ध बना कर छोड़ गई है। तुम्हें उसके उतर जाने का कोई अफसोस न होगा। तुम उसे धन्यवाद दोगे, क्योंकि अब और अधिक समृद्ध संसार के द्वारा तुम्हारे लिए खुल गए हैं। जब सेक्स तुम्हें छोड़ता है तो ध्यान के द्वार खुल जाते हैं। जब सेक्स तुम्हें मुक्त करता है, तब तुम अपने आपको दूसरे में खोने का प्रयास नहीं करते। तुम स्वयं अपने आप में ही खो जाने में समर्थ बन जाते हो। अब आत्मरति के सर्वोच्च शिखर अनुभव का एक दूसरा संसार तुम्हारे ही अंदर उत्पन्न होता है। लेकिन यह केवल दूसरे के साथ बने रहने से ही उत्पन्न होता है; वह स्वयं विकसित होता है, और दूसरे के द्वारा ही परिपक्व होता है। तब एक कृषण ऐसा आता है, तब तुम अकेले ही अत्यधिक प्रसन्न हो सकते हो। अब वहां किसी दूसरे की आवश्यकता नहीं रह जाती है। वह आवश्यकता समाप्त हो जाती है, लेकिन तुम उसके द्वारा बहुत कुछ सीखते हो—तुम स्वयं और तुमने उस दर्पण को तोड़ा नहीं है। अब दर्पण में भी देखने की भी कोई जरूरत नहीं रह जाती। तुम अपनी आंखें बंद कर सकते हो और वहां अपना चेहरा देख सकते हो। लेकिन तुम वह चेहरा देखने में समर्थ न होगे यदि वहां शुरू से ही कोई दर्पण नहीं होगा। तुम अपनी स्त्री को ही अपना दर्पण बना लो, तुम अपने पुरुष को ही अपना दर्पण बना लो। उसकी आंखों में झांको और अपना चेहरा देख लो। उसके अंदर गतिशील हो स्वयं अपने आप को जान लो। तब एक दिन दर्पण की भी आवश्यकता नहीं होगी। लेकिन तुम दर्पण के विरुद्ध न होंगे, तुम उसके प्रति इतने अधिक कृतज्ञ होगे—तुम उसके विरुद्ध कैसे हो सकते हो? तुम उसके प्रति इतने अधिक धन्यवाद से भरे होंगे, फिर तुम उसके विरुद्ध कैसे हो सकते हो? तभी तुम उसके पार जाते हो।

सेक्स के पार जाना, दमन नहीं है। यह अतिक्रमण स्वाभाविक रूप से एक विकास है तुम उससे ऊपर उठते हो, उसके पार जाते हो ठीक वैसे ही जैसे कि एक बीज टूटता है, और अंकुरित होकर भूमि से ऊपर आता है, जब सेक्स विसर्जित होता है, बीज भी मिट जाता है। सेक्स में तुम किसी अन्य को एक बच्चे को जन्म देने में समर्थ होते हो। जब सेक्स समाप्त होता है तो उसकी पूरी ऊर्जा तुम्हें एक नया जन्म देना शुरू कर देती है। इसी को हिंदू द्विज होना कहते हैं अर्थात् दूसरा जन्म। एक जन्म तो तुम्हें तुम्हारे माता—पिता देते हैं लेकिन दूसरा जन्म प्रतीक्षा करता रहता है। वह तुम्हें स्वयं देना होता है। तुम्हें स्वयं ही उसका पिता और मां बनना होता है। तब तुम्हारी पूरी ऊर्जा घूम कर तुम्हारा अंतर्वर्तुल (इनर सर्किल) बन जाती है।

ठीक अभी तुम्हारे लिए यह 'इनरसर्किल ' बनाना कठिन होगा। इसे किसी दूसरे ध्रुव या छोर से जोड़ना अधिक आसान होगा। एक स्त्री या एक पुरुष और तब वह वृत्त पूरा बन जाता है। तब तुम उस वृत्त के वरदान का आनंद ले सकते हो। लेकिन धीमे— धीमे तुम उस इनरसर्किल को बनाने में समर्थ हो सकोगे, क्योंकि तुम अपने अंदर भी एक पुरुष या स्त्री, अथवा स्त्री और पुरुष हो। न तो कोई केवल पुरुष है और न केवल स्त्री, क्योंकि तुम पुरुष और स्त्री दोनों के संयोग से जन्मे हो। दोनों में उसमें सहयोग दिया है, कुछ चीज तुम्हें तुम्हारी मां ने दी है कुछ चीज तुम्हें तुम्हारे पिता ने दी है। दोनों ने पचास—पचास प्रतिशत तुम्हें दिया है। तुम्हारे अंदर वहां दोनों ही है। तुम्हारे अंदर ही यह संभावना है कि दोनों वहां फिर मिल सकते हैं। एक बार फिर तुम्हारे माता—पिता तुम्हारे अंदर प्रवेश कर सकते हैं। तभी तुम्हारा वास्तविक सत्य जन्मेगा। एक बार वे तब मिले थे जब तुम्हारे शरीर का जन्म हुआ था। अब यदि वे तुम्हारे अंदर मिल सकते हैं तो तुम्हारी आत्मा का जन्म होगा। यही है वह जिसे सेक्स के पार जाना कहते हैं। यह सेक्स का उच्चतम तल है।

मैं तुमसे यही कहना चाहता हूं जब तुम सेक्स के पार जाते हो, तो तुम सेक्स के अच्चतम सोपान पर पहुंचते हो। सामान्यत सेक्स बहुत अधिक मात्रा में है, अच्चतम सेक्स बहुत अधिक है ही नहीं। सामान्य सेक्स तो बाहर की ओर गतिशील है और अच्चतम सेक्स अंदर की ओर गतिशील है। सामान्य सेक्स में दो शरीर मिलते हैं और मिलना बाहर होता है। अच्चतम सेक्स में तुम्हारी स्वयं की अंदर की दोनों ऊर्जाएं ही मिलती हैं। यह मिलन शारीरिक न होकर आत्मगत होता है—यही तंत्र है। तंत्र है सेक्स का अतिक्रमण। यदि तुम इसे नहीं समझ सकते और तुम सेक्स के साथ संघर्ष किए चले जाते हो।

यह प्रश्न प्रगीता द्वारा पूछा गया है। मैं जानता हूं कि वह अपने मन में कुछ कठिन क्षणों के बीच से गुजर रही है। वह स्वतंत्र होना चाहती है, लेकिन अभी यह बहुत जल्दी होगी उसके लिए अभी वह किसी अन्य व्यक्ति के बारे में परेशान नहीं होना चाहेगी, बल्कि अभी इस निर्णय के लिए यह बहुत जल्दबाजी होगी और यह अहंकार पूर्ण भी है। ठीक अभी सेक्स का अतिक्रमण करना उसके लिए सम्भव नहीं है और इसमें दमन की ही संभावना है। और यह तुम अभी दमन करती हो तो अपनी वृद्धावस्था में तुम्हें इसके लिए पछताना होगा क्योंकि तब सभी चीजें गड़बड की स्थिति उत्पन्न करेंगी। प्रत्येक वस्तु को करने का उसका अपना एक समय होता है। प्रत्येक वस्तु को उसी क्षण ही करना उचित है। जब तक युवा हो, प्रेम से डरो मत। युवावस्था में यदि तुम प्रेम से डरोगी तो वृद्धावस्था में तुम्हें मन को वही अपने कब्जे में कर लेगा और तब गहराई से प्रेम में गतिशील होना कठिन होगा और मन भ्रमित रहेगा।

मेरी समझ यही है कि जो लोग यदि ठीक से प्रेमपूर्वक और स्वाभाविक रूप से जीवन को जीते हैं, तब बयालिस वर्ष की आयु में सेक्स के पार जाना प्रारंभ हो जाता है। यदि वे स्वाभाविक रूप से इस आयु तक नहीं जीते, तो वे सेक्स से संघर्ष करते रहते हैं और तब बयालिस वर्ष की अवस्था सबसे अधिक खरतनाक समय बन जाता है। क्योंकि बयालीस वर्ष की आयु का जब समय आता है तब उनकी ऊर्जाएं ढलान पर होती हैं। जब तुम युवा होते हो तो तुम किसी चीज का दमन भी कर सकते हो, क्योंकि तब तुममें बहुत शक्ति और ऊर्जा होती है। इस तथ्य में निहित व्यंग्य को जरा देखो, एक युवा व्यक्ति कामवासना का दमन बहुत सरलता से कर सकता है, क्योंकि उसके पास उसका दमन करने की ऊर्जा है। वह उसे दबाकर उसके ऊपर बैठ सकता है। जब ऊर्जाएं शिथिल होने लगती हैं, वे विदा होने लगती हैं, तब कामवासना जोर मारेगी और तुम उस पर नियंत्रण रखने में समर्थ न हो सकोगे।

मैंने एक वृत्तान्त सुना है

पैंसठ वर्ष का स्टेन जब अपने डॉक्टर पुत्र के कार्यालय में उससे मिलने गया तो उससे कोई चीज ऐसी देने को कहा, जो उसकी कामवासना की शक्ति को बढ़ा सके। डॉक्टर ने अपने पिता को एक शक्तिवर्द्धक इंजेक्यान दिया और फीस लेने से मना कर दिया। लेकिन फिर भी स्टेन ने उसे दस डॉलर स्वीकार करने का आग्रह किया। एक सप्ताह बाद स्टेन ने पुन: वापस आकर डॉक्टर पुत्र से दूसरा इंजेक्यान देने को कहा और इस बार उसे बीस डॉलर दिए।

" लेकिन पापा! यह इंजेक्यान तो केवल दस डॉलर का है।"

" इसे स्वीकार करो।" स्टेन ने कहा—" दस अतिरिक्त डॉलर तुम्हारी मम्मी की ओर से हैं।"

ऐसा ही होता रहेगा.....इसलिए इससे पूर्व की तुम पापा अथवा मम्मी बनो, कृपया इस चक्र को समाप्त करो। अपनी वृद्धावस्था आने की प्रतीक्षा मत करो क्योंकि तब चीजें भद्दी बन जाएंगी। और हर चीज समय और मौसम के विरूद्ध होंगी।

दूसरा प्रश्न :

प्यारे ओशो! यह कहा जाता है कि जब तक कोई व्यक्ति किसी जागे हुए व्यक्ति के सम्पर्क में न आए? यह असम्भव है कि वह अपनsई मूर्च्छा और गहरी नींद से बाहर आ सके यह कैसे ज्ञात हो कि कौन व्यक्ति जान? हुआ है?

यह एक जटिल प्रश्न है। ऐसे व्यक्ति को जान पाना न केवल कठिन है—यह प्रश्न ही इसलिए कठिन है क्यों यदि अभी तक तुम्हारे अंदर ऐसे व्यक्ति को खोज पाने की प्यास ही नहीं उठी तक उसे खोज पाने में तुम्हारी सहायता करने का कोई तरीका है ही नहीं। यदि तुम्हारे अंदर प्यास है तो यह प्यास ही तुम्हारी सहायता करती है। इसके अलावा किसी अन्य सहायता की जरूरत ही नहीं है। तुम्हारी वह प्यास ही तुम्हारा मार्ग बन जाती है।

यदि एक मरुस्थल में तुम प्यासे हो, तो तुम पानी कैसे खोज सकोगे, तुम एक नखलिस्तान को कैसे पा सकोगे? तुम इधर—उधर भागोगे, तुम वह सभी कुछ करोगे जो कर सकते हो, क्योंकि वह प्यास तुम्हें मार डालेगी। और वह प्यास ही यह तै करेगी कि तुम असली जल तक पहुंचे हो अथवा नहीं? क्योंकि जब तुम असली जल तक पहुंचोगे, तभी तुम्हारी प्यास बुझेगी। यदि वह एक मृगतृष्णा है और दूर से पानी जैसी दिखाई देती है, और जब तुम उसके आमने—सामने पहुंचते हो, तो तुम जानोगे कि वह पानी नहीं है।

तुम कैसे जानते हो कि कोई चीज भोजन है? यदि तुम भूखे हो, और वह तुम्हारी क्षुधा को तृप्त करता है, तुम उसे जानते हो। उस मनुष्य के लिए यह बहुत कठिन है कि कौन सी चीज भोजन है, यदि उसे भूख लगी ही नहीं है।

मनोवैज्ञानिकों ने एक बहुत महत्त्वपूर्ण तथ्य का पता लगाया है कि यदि छोटे बच्चों को स्वयं उनके ऊपर छोड़ दिया जाये तो वे हमेशा खाने के लिए ठीक चीज का ही चुनाव करेंगे। तुम भोजन की मेज पर उनके खाने के लिए हर चीज रख दो और उनसे किसी चीज को लेने के लिए विवश न करो और न उनसे यह कहो कि उन्हें कौन सी चीज खानी है और कौन सी चीज नहीं खानी है। यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण खोज है कि बच्चे केवल ठीक समय पर ठीक वस्तु ही खाते हैं। यदि कोई बच्चा किसी चीज से कष्ट पा रहा है और उसे विशिष्ट वस्तु की आवश्यकता है जो उसके कष्ट को दूर करने में सहायक हो सकती है तो वह खाने के लिए उसी चीज का चुनाव करेगा। और जिस समय उसकी वह तकलीफ समाप्त हो जाएगी, वह उसे खाना बंद कर देगा। हम लोग ही उन्हें भ्रमित कर देते हैं। हम उन्हें बताते हैं कि यह चीज खाओ और वह चीज मत खाओ। तब धीमे— धीमे उनकी प्राकृतिक प्रवृत्ति कार्य करना बंद कर देती है।

क्या तुमने पशुओं को खाते हुए देखा है? उन्होंने अपने भोजन में क्या लेना चाहिए या क्या नहीं, इस बाबत किसी विशेषज्ञ से कोई सलाह नहीं ली है, लेकिन एक बैल अथवा एक गाय अपने खाने के लिए मैदान में ठीक घास का ही चुनाव करती है, अपने किसी अंतर्बोध अथवा मूल प्रवृत्ति के कारण ही। वे दूसरी तरह की घास की पत्तियों को छोड़ देंगे और वह केवल वही घास खायेंगे जो उनके लिए ठीक होगी। तुम उन्हें धोखा नहीं दे सकते। किसी भी भांति उनका आंतरिक स्वभाव, उनकी मूल प्रवृत्ति और उनकी भूख ही यह तै करती है।

समस्या यह है कि यह कैसे जाना जाये कि कोई व्यक्ति बुद्धत्व को उपलब्ध या जागा हुआ है अथवा नहीं? यदि तुम्हारे अंदर भूख है तो वहा कोई समस्या खड़ी ही न होगी। यदि तुम्हें भूख है ही नहीं तब मैं कहता हूं कि समस्या बहुत कठिन है और उसे हल करना लगभग असम्भव है। यदि तुम्हें भूख है और उसकी तड़प है तब एक बुद्ध के आसपास रहते हुए कोई चीज तुम्हारी चाह को संतुष्ट करना शुरू कर देगी। कोई चीज तुम्हें संतुष्ट करने लगेगी और तुम तृप्ति का अनुभव करना शुरू कर दोगे। कोई चीज लयबद्ध होकर उस दिशा की ओर बरसना शुरू हो जाएगी। तुम्हारे अंदर का कोलाहल शांत होना शुरू हो जायेगा। तुम अपने अंदर एक मौन और एक शांति को जन्मने का अनुभव करने लगोगे और एक नये अस्तित्व का जन्म होगा। बस केवल यही तरीका है। लेकिन यदि तुम्हारे अंदर सच्ची प्यास और तड़प है ही नहीं, अथवा यदि तुम समाज द्वारा भ्रमित होकर उलझनों में उलझे हो और अन्य बाह्य लक्षणों से ही बंधे हो..।

उदाहरण के लिए एक जैन का खयाल है कि एक बोध को उपलब्ध व्यक्ति को नग्न होना चाहिए। अब यदि तुम किसी ऐसे व्यक्ति के सम्पर्क में आते हो, जो नग्न नहीं है। तो बुद्ध या जीसस से वह जैन संतुष्ट न हो सकेगा। वह कहेगा—'' यह व्यक्ति बुद्धत्व को उपलब्ध है ही नहीं, क्योंकि एक बुद्ध को तो नग्न होना चाहिए। यह मूर्खता है। उसके अंदर भूख और तड़प है ही नहीं। उसने केवल जो भी जाना या सीखा है, वह केवल शास्त्रों और परम्परा के द्वारा ही जाना या सीखा है, वह केवल शास्त्रों और परम्परा के द्वारा जाना है। अब यदि तुम एक ईसाई हो और एक ईसाई के रूप में ही तुम्हारा पालन पोषण हुआ है और तुम जानते हो कि क्राइस्ट केवल वही व्यक्ति है जो क्रास पर लटका है, तो यदि कृष्ण तुम्हारे सामने बांसुरी बजाते आ जायें तो तुम करोगे क्या? तुम कहोगे—'' यह व्यक्ति तो एक जोकर दिखाई देता है। यह एक बुद्ध कैसे हो सकता है? एक बुद्ध तो सदा दूसरों के लिए क्रॉस पर चढ़कर दुख झेलता है, वह दूसरों के पापों का बोझ अपने सिर पर ढोता है। और यह व्यक्ति तो नृत्य करते हुए गीत गा रहा है। नहीं अपने मन के साथ वह क्रास के विचार से एक विशिष्ट अनुशासन और ढांचे में आबद्ध हो गया है, एक बांसुरी उसे ठीक नहीं लगेगी। यह उसके लिए विश्वास करना ही अस्म्भव हो जायेगा कि एक बांसुरी भी बुद्धत्व का संकेत दे सकती है। हां, यदि वहां क्रूस हो तो वास्तव में कोई बात है भी।''

और कृष्ण के अनुयाइयों के साथ भी ऐसा ही होता है। वह नृत्य, गीत और बांसुरी को जानता है। वह विश्वास ही कर पाता कि जीसस किस वजह से क्रॉस पर लटके हैं। यदि तुम उससे पूछो तो वह कहेगा— अपने पिछले जन्म में उन्होंने निश्चित ही बहुत गलत कृत्य किये होंगे, अन्यथा उन्हें सलीब पर क्यों लटकाया जाता?

फांसी पर, क्रॉस पर तो केवल पापी ही लटकाये जाते हैं। यही कारण है कि दुख भुगत रहे हैं क्योंकि हिंदुओं के किसी भी अवतार पुरुष को कभी ऐसा कष्ट नहीं सहना पड़ा। असम्भव है।

हिंदुओं के पास कर्म का सिद्धांत हैं। जो कुछ भी होता है वह तुम्हारे कर्म से ही होता है, कृष्ण बांसुरी बजा रहे हैं क्योंकि उनके कर्म बहुत सुंदर और शुभ हैं और वे ही गीत बनकर जन्म ले रहे हैं और जीसस जरूर ही एक पापी रहे होंगे। प्रश्न यह नहीं है कि दूसरों ने उन्हें क्रॉस पर लटकने के लिए विवश किया। कर्मों के अतिरिक्त कोई भी व्यक्ति किसी को विवश कर ही नहीं सकता। ऐसा भी नहीं है कि जुदास ने उन्हें धोखा दिया या उनके साथ

गद्दारी की यह उनका अपना पिछला कर्म है। कोई भी किसी को धोखा दे ही नहीं सकता। यदि तुम्हारे पिछले कर्म शुभ हो तो कोई भी तुम्हें कष्ट दे ही नहीं सकता।

अब यह चीज समस्याग्रस्त है। ये लोग केवल शास्त्रों की और परम्परा की बात सुनते हैं, उस समाज की बात सुनते हैं जिसमें उन्होंने जन्म लिया। जिसमें चीजें दुर्घटनावश घटती हैं। ऐसे लोगों की प्यास असली नहीं है।

यदि तुम्हारी प्यास सच्ची है तो तुम जहां कृष्ण बांसुरी बजा रहे हैं, अपने को संतुष्ट पाओगे। और तुम्हारी प्यास सच्ची है तो तुम जीसस के निकट भी ऐसा ही संतोष पाओगे। भले ही वे क्रॉस पर हों या कृष्णा बांसुरी बजा रहे हों, लेकिन तुम पाओगे कि दोनों ही तुम्हारी भूख के लिए भोजन हैं। जीसस कई बार अपने शिष्यों से कहते थे—'' मुझे खा लो, मुझे अपना भोजन बना लो। मेरा रक्त पियो और मेरे शरीर को खा जाओ।'' जो कुछ वे कह रहे हैं, वह यही है कि वे भोजन हैं।

प्रश्नकर्त्ता ने पूछा है—'' यह कहा जाता है कि जब तक कोई व्यक्ति किसी जागे हुए व्यक्ति के सम्पर्क में न आए यह असम्भव है कि वह अपनी मूर्च्छा और गहरी नींद से बाहर आ सके। यह कैसे ज्ञात हो कि कौन व्यक्ति जागा हुआ है?"

मैंने सुना है:

एक मनुष्य एक रिपोर्ट लिखाने टहलता हुआ पुलिस स्टेशन गया कि उसकी पत्नी खो गई है। सार्जेन्ट ने उससे पूछा गया—'' वह कितनी लंबी थी?"

" लगभग इतनी ऊंची, बस थोडी सी इधर—उधर।'' उसने इशारे से लंबाई का अंदाज बतलाया।

" वजन कितना होगा?"

" मेरा खयाल है लगभग औसत, जितना एक सामान्य स्त्री का होता है।''' आंखों का रंग?"

" मैं यह कहूंगा कि उनका रंग बस जैसे तटस्थ था।''

" बालों का रंग?"

" मुझे मालूम नहीं। उसका रंग बदलता रहता था।''

" वह क्या पहने हुए थी?"

" मेरा खयाल है कोट और एक हैट।''

" क्या वह अपने साथ कुछ ले जा रही थी?"

" हां! उसके पास एक कुत्ता था, एक जंजीर में बंधा हुआ।''

" किस तरह का कुत्ता ?"

" एक पुरानी खानदानी नस्ल का कत्थई रंग पर सफेद धब्बों वाला जर्मन शेफर्ड कुत्ता। वजन चालीस पाउंड, छह हाथ ऊंचा, लाइसेंस नं 4०1278976 जी.डी. 7 एक कत्थई रंग का पट्टा पहने। जो दाहिने कान से थोड़ा बहरा था और रीवर नाम पुकारने पर जवाब देता था।''

जब प्रश्न कुत्ते के बारे में किए गए तो वह व्यक्ति जीवंत हो उठा। जब प्रश्न उसकी पत्नी के बारे में किया गया था, कि वह कितनी लंबी थी? लगभग इतनी ऊंची, थोड़ी कम या ज्यादा...। और उसका वजन कितना था—'' लगभग औसत स्त्री जितना।'' और उसकी आंखों का रंग—'' मैं यही कह सकता हूं कि वह स्कूल था। मैं निश्चित रूप से नहीं बता सकता।''

जब भी वह तुम्हारी अपनी कामना या चाह हो, तुम उसे जानते हो। यदि वह तुम्हारी चाह नहीं है, तब कहना कठिन है। इसलिए वह व्यक्ति जिसने मुझसे यह प्रश्न पूछा है, लालची हो सकता है लेकिन उसकी अभी

तक कोई चाह नहीं है। और मैं उस व्यक्ति को जानता हूं। वह कभी शिवानंद आश्रम, कभी अरविंदो आश्रम कभी रमण महर्षि के आश्रम कभी सत्य साईं बाबा के पास और कभी इधर उधर, वह हर जगह जाता रहता है। अब मैं उसका आखिरी शिकार हूं और वह कहीं भी कोई भी चीज खोज ही नहीं सकता। जो उसे संतोष दे सके।

उससे मूल प्रश्न अभी तक पूछा ही नहीं गया—'' क्या तुम भूखे हो?" इस रेस्टोरेंट से उस रेस्तरां जाने भर से कोई सहायता मिलने की नहीं, क्षुधा होनी जरूरी है। यह मनुष्य लालची है, लेकिन उसके पास भूख नहीं है। यह मनुष्य बहुत विद्वान है, लेकिन वह सजग नहीं है। वह शास्त्रों का ज्ञाता है, वह उन्हें तोते की तरह दोहरा सकता है, लेकिन उसके पास समझ नहीं है। वह इसी तरह के प्रश्न बार—बार पूछे चले जाता है। यह पहला ही अवसर है कि मैं उसके प्रश्न का उत्तर दे रहा हूं क्योंकि जब क्षुधा ही नहीं है वहां उस बारे में बात करना ही व्यर्थ है। अच्छा यही है कि उन्हें धर्म के बारे में सब कुछ भूलकर संसार में जाकर ही रहना चाहिए।

इस जीवन में या अगले जीवन में पहले वह चाह वह क्षुधा जागृत हो। इसमें किसी जल्दी करने की कोई जरूरत ही नहीं। परमात्मा प्रतीक्षा कर सकता है।

लेकिन वह उत्पन्न तो हो। वह प्रामाणिक होना चाहिए। उसकी चाह या क्षुधा अभी सिर्फ नकली है। उसने भोजन के बारे में बहुत चर्चा सुनी है अथवा टीबी. पर भोजन के बारे में विज्ञापन देख सुनकर उसके मन में इसके प्रति लालच उत्पन्न हो गया है। लेकिन वह कभी भी अपने अंदर यह देखता ही नहीं है कि वहां कोई क्षुधा या तीव्र चाह है या नहीं, और इसीलिए कुछ भी नहीं घटता है।

एक बार वह मेरे पास आये और उन्होंने कहा, " मैं अरविंदो आश्रम भी गया हूं मैं रमण महर्षि के आश्रम में भी रहा हूं मैं ऋषिकेश शिवानंद के पास भी गया हूं और मैं अरुणाचल या इधर—उधर भी गया हूं और कहीं कुछ भी नहीं घटा। अब मैं आपके पास आया हूं।''

मैंने कहा, " इससे पहले कि आप मेरे बारे में भी यही कहें कि कुछ भी नहीं घटा। मैं आपसे कहना चाहता हूं कि कुछ घटेगा भी नहीं—क्योंकि मैं आपके अंदर कोई चाह देखता ही नहीं। मैं आपके अंदर कोई टिमटिमाहट अथवा भावावेग भरी प्यास देखता ही नहीं।''

उनके पास पैसा है इसलिए वह कहीं भी जा सकते हैं। वह अपने जीवन से निराश हो चुके हैं, अपने जीवन से बुरी तरह ऊब गए हैं, इसलिए इधर—उधर भटकते हुए कम से कम कोई उत्तेजना, कोई उमंग या रोमांच ढूंढने की कोशिश कर रहे हैं और वह अत्यंत अहंकारी व्यक्ति हैं, इसलिए वह अध्यात्म—विरोधी होकर खोजने की कोशिश नहीं कर सकते हैं। वह आध्यात्मिक उमंगों को खोजने की कोशिश कर रहे हैं और कुछ भी नहीं घटता है।

निरीक्षण करें. .जो मूल चीज स्मरण रखने की है वह यह है कि क्या तुम्हारे अंदर तीव्र चाह या क्षुधा है? यदि वह है ही नहीं, फिर परेशानी क्यों? वह तुम्हारे लिए है ही नहीं। इन लोगों को परमात्मा के बारे में चर्चा—परिचर्चा करने दो, वह तुम्हारे लिए है ही नहीं। तुम संगीत—समारोह में नहीं जाते हो, यदि तुम्हारे पास संगीत सुनने वाले कान नहीं है और न ही तुम उस बारे में परेशान होते हो। तुम किसी संगीतज्ञ का संगीत सुनने नहीं जाते हो, तुम किसी नर्त्तक का नृत्य देखने नहीं जाते हो, तुम किसी चित्र दीर्घा में चित्र देखने नहीं जाते हो, यदि तुम्हारे पास सौंदर्य बोध नहीं है, तो तुम वहां जाते ही नहीं हो।

लेकिन धर्म के बारे में अन्य समस्याओं में से एक समस्या यही है, जिन लोगों को इसकी समझ है ही नहीं, वे भी धर्म को पाने के बारे में लालची बन जाते हैं। और अब वे वृद्ध होते जा रहे हैं और मृत्यु आ पहुंची है। अब वह कोई ऐसी चीज प्राप्त करना चाहते हैं, जिसे वे मृत्यु के पार भी अपने साथ ले जा सके। वह सिर्फ भयभीत हैं।

उन्होंने अपना जीवन जिया ही नहीं है और जब तुम अपने जीवन को पूरी तरह जिया ही नहीं, तब तुम धर्म की ओर गतिशील नहीं हो सकते।

केवल वही व्यक्ति जो अपना जीवन सच्चाई से जीता है, तो वह एक ऐसे बिंदु पर पहुंचता है, जहां जीवन के पार जाने की एक नई चाह उठती है। तुम मृत्यु से भयभीत हो सकते हो, तो तुम्हारी चाह भी नकली होगी। यदि तुमने जीवन को प्रेम करते हुए उसे जिया है, और उसे इतना अधिक प्रेम किया है कि अब तुम अज्ञात जीवन के बारे में भी जानना चाहते हो, तो यह मृत्यु के भय से नहीं, जीवन के प्रति प्रेम के कारण ही है, तब तुम यदि किसी बुद्ध के निकट जाते हो, तो तुम उसे तुरंत पहचान लोगे। उसे चूक जाना फिर असम्भव होगा। तुम उसे तुरंत पहचान ही लोगे। इस पहचान के लिए किसी जानकारी की जरूरत नहीं है। यह बस सरलता से होगा ही।

तुम्हारे पास से जब कोई सुंदर स्त्री गुजरती है, तो तुम उसे कैसे पहचान लेते हो? तुम्हारे पास उसकी कौन सी कसौटी है? लेकिन यदि तुम्हारे अंदर चाह है, अचानक तुम पहचान लेते हो कि वह स्त्री सुंदर है। यदि कोई व्यकित तुमसे पूछता है और तुम्हें यह स्वीकार करने पर विवश करने की कोशिश करता है कि तुम ठीक ठीक बताओ कि सुंदरता होती क्या है, तो तुम मुसीबत में पड़ जाओगे। तुम उसे परिभाषित करने में समर्थ न हो सकोगे। आज तक कोई भी इसे परिभाषित करने में समर्थ नहीं हो सका है दार्शनिक उस पर सदियों से काम करते रहे हैं और सुंदरता क्या है, इसे परिभाषित करने की कोशिश करते रहे हैं और अंत में वे इसी निष्कर्ष पर पहुंचे कि इसकी व्याख्या को ही नहीं जा सकती। लेकिन इसके बावजूद भी तुम सुंदरता का अनुभव करते हो। यदि तुम एक छोटे से बच्चे से बात करो, जिसकी चाह अभी परिपक्व नहीं हुई है और तुम उससे कहो—'' यह स्त्री सुंदर है, तो वह तुम्हें आश्चर्य से देखकर अपने कंधे उचकायेगा और यह कहते हुए अपने रास्ते चला जाएगा—'' यह व्यक्ति तो पागल हो गया है। सभी स्त्रियां एक जैसी होती है।'' एक छोटे बच्चे के लिए इससे कोई भी फर्क नहीं पड़ता। वह यह नहीं देख पाता कि एक स्त्री के बारे में ऐसा क्यों सोचा जाना चाहिए कि वह सुंदर है और दूसरी नहीं है।

वास्तव में वह एक ही स्त्री को जानता है, जो सुंदर है और वह उसकी मां है और वह भी किन्हीं अन्य कारणों से, सुंदरता के कारण नहीं। वह उसका पालन पोषणकरती है, वह उसका जीवन है और इसलिए वह सुंदर है। लेकिन एक दिन जब उसमें कामना जागती है और उसका प्रेम परिपक्व होता है तो वह भिन्न दृष्टि से देखना शुरू कर देगा। तब सभी स्त्रियां एक जैसी नहीं लगेंगी। तब निश्चित रूप से कुछ स्त्रियां ऐसी होंगी, जो सुंदर हैं, तब निश्चित रूप से ऐसे पुरुष भी होंगे जो

अत्यधिक सुंदर और चुम्बकीय आर्कषण रखते हैं। लेकिन एक दिन फिर जब कोई भी व्यक्ति बहुत सजग और समझदार बनता है तो फिर सभी स्त्री पुरुष एक जैसे ही हो जाते हैं। तब फिर सुंदरता और कुरूपता से कोई अंतर नहीं पड़ता। तब फिर द्वैतता के पार चला जाता है वह।

जब तुम किसी बोध को उपलब्ध व्यक्ति के निकट जाते हो, यदि तुम्हारे अंदर तीव्र चाह या प्यास ही न हो, तो कुछ भी नहीं घटता। तुम केवल अपने कंधे उचकाओगे। और कहोगे—'' लोग जाने क्यों इस व्यक्ति की ओर आकर्षित होते हैं?" तुम उसमें कोई भी चीज नहीं देख पाते। वहां कुछ भी नहीं है। वह उतना ही साधारण और सामान्य है, जितने तुम अथवा वह तुम्हारी अपेक्षा कहीं अधिक साधारण हो सकता है। तुम नहीं देख सकते कि उसके पीछे लोग क्यों पागल होते हैं? लेकिन यदि तीव्र प्यास है वहां, यदि खोज शुरू हो चुकी है। यदि तुमने अपने दूसरे अज्ञात जीवन के लिए वह तड़प अर्जित की है, तब तुरंत जब तुम किसी ऐसे व्यक्ति के सम्पर्क में आते हो तो तुम्हें अनुभव हो जाना शुरू हो जाता है।

महावीर के बारे में एक सुंदर कथा कही जाती है। जो लोग महावीर को चाहते थे वे चौबीस मील दूर से ही उनके बारे में होशपूर्ण हो जाते थे। महावीर के चारों ओर चौबीस मील का घेरा उनकी उपस्थिति और होने से इतनी अधिक ऊर्जा से भर जाता था कि वे लोग जिनके अंदर प्यास और तीव्र चाह होती थी, उस ऊर्जा क्षेत्र में आते ही महावीर द्वारा उनके स्वयं के विरुद्ध भी खींच लिए जाते थे। वे लोग भले ही कहीं और जा रहे हों, पर फिर वे वहां जाने में समर्थ न हो पाते थे। वे उनके चुम्बकीय आकर्षण द्वारा खींच लिए जाते थे। उन्हें वहां आना ही पड़ता था। वे लोग इस व्यक्ति को कुछ अज्ञात तरीके से खोज लेते थे। और वे किसी पेड़ के नीच बैठे होते या किसी गुफा में सभी से छिपे हुए होते थे। और वहां ऐसे भी लोग थे जो उनके सामने होकर गुजर जाते और उन्हें देखकर सोचते थे कि वह पागल हैं न केवल पागल, बल्कि ठीक एक अपराधी की तरह जो वहां नग्न खड़े हैं। या तो वह अपराधी हैं अथवा एक मूर्ख है, वे लोग सोचते हैं कि उन्हें मारपीट कर शहर के बाहर कहीं दूर फेंक दिया जाए और वे लोग उन्हें वह स्थान छोडने के लिए विवश करते और दोनों तरह के लोग थे। एक तरह के लोग उन्हें बाहर फेंकने और उन्हें पीटने वाले थे। तो दूसरे तरह के लोग उनसे आकर्षित होकर खिंचे चले आते थे। यह सब कुछ तुम्हीं पर निर्भर है।

मैंने एक घटना के बाबत सुना है:

एक विवाहित स्त्री ने विवाह कराने वाले दलाल से पूछा—'' क्यों भाई! आखिर तुम्हारे दिमाग में क्या कुछ चल रहा है?"

" मैंने आपके पुत्र के लिए लड़की चुन ली है।'' उसने गर्व के साथ घोषणा करते हुए कहा—'' वह राजकुमारी सेफ्टी विलेनेनी है, जो संसार की सबसे अधिक धनी युवा स्त्रियों में से एक है।''

उस स्त्री ने उसकी बात बीच में ही काटते हुए कहा—'' यदि वह पूरे संसार की सबसे अधिक युवा धनी स्त्री है। तो मैंने अब तक कभी भी उसका नाम क्यों नहीं सुना?"

लेकिन श्रीमती जी। वह एक आश्चर्यजनक लड़की है। विवाह कराने वाले दलाल ने आग्रह करते हुए कहा—'' लेकिन वह अत्यंत सुंदर, सत्रह वर्ष से भी कम आयु की अत्यधिक कुशल गोताखोर तथा स्कीइंग में कुशल और अच्छी गोल्फर भी है। फिर सबसे बड़ी बात यह कि वह राजपरिवार की है।''

उस स्त्री ने उससे सहमति प्रकट करते हुए कहा—'' इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता, लेकिन ठीक है। फिर मैं तुम्हें इसके लिए अपनी सहमति दे दूंगी और अपने पुत्र का इस राजकुमारी से विवाह करने पर मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी।'' विवाह के दलाल ने एक गहरी सांस लेते हुए मन ही मन कहा—'' चलो, आधी लडाई तो जीत ली मैंने।''

धर्म के सम्बंध में आधी लड़ाई तुमसे शुरू होती है। यदि तुम्हारे अंदर तीव्र चाह और प्यास है, तो तुमने आधी लडाई जीत ली और शेष आधी तो बहुत आसान है। तब तुम्हारे पास आंखें होंगी। लेकिन यदि तुम्हारे पास क्षुधा या तड़प ही नहीं, तब यह असम्भव है कि तुम एक बुद्ध को पहचान सको। तुम अंधे हो, तुम देख ही नहीं सकते। यदि एक अंधा व्यक्ति आकर पूछे—'' जब मैं रोशनी के सामने जाऊंगा, तो उसे पहचानूंगा कैसे? तो तुम उससे कहोगे क्या? वह उसे कैसे पहचान सकता है? पहचानने के लिए तो दृष्टि की, आंखों की जरूरत होगी।''

जिसके लिए तुम्हारी सच्ची और तीव्र चाह होती है, तुम हमेशा उसे प्राप्त कर लेते हो, इसके अन्यथा कभी भी हुआ ही नहीं। यदि तुम मुझे कहने की इजाजत दो, तो मैं यही कहूंगा कि वास्तव में तुमने अब तक जो कुछ भी प्राप्त किया है, वह वही है जिसके लिए तुम्हारी चाह और आवेगमय तड़प थी।

मुल्ला नसरुद्दीन घर प्रत्येक बार शराब पीकर ही लौटता था। और उसकी पत्नी उसे खुलेआम जोर—जोर से बुरा भला कहती थी। एक दिन एक दयालु पड़ोसी ने उसे सलाह देते हुए कहा—'' आपको ऐसा नहीं करना

चाहिए। आपको उनके शराब पीने पर ध्यान न देते हुए इस बाबत कुछ कहना ही नहीं चाहिए। उनके साथ प्रेमपूर्ण और दयालु बनिए और आप देखेंगी कि वह एक नये इंसान बन गए हैं। आज रात जब वह घर वापस लौटें तो आप इन्हें एक गहरा चुम्बन दें।''

उस रात मुल्ला लड़खड़ाता हुआ घर लौटा, लेकिन उसकी पत्नी को दी गई सलाह याद थी, इसलिए उसने उसका चुम्बन लेने के लिए अपने होंठों को फैलाते हुए आगे बढ़कर कहा—'' प्रियतुम! मुझे चूमो। मेरा चुम्बन लो।''

मुल्ला लड़खड़ाते हुए अपने होंठों को खोलकर आगे बढ़ा और उसके माथे पर चुंबन दिया। उसने फिर होठ चूमने की कोशिश की, लेकिन फिर चूक गया और उसके कान ही चूम सका। वह तीसरी कोशिश में भी चूक गया और उसके गालों पर ही अपने होंठ रख सका।

उसकी पत्नी अपने मुंह की ओर संकेत करती हुई बोली—'' लफंगे बदमाश! यदि वह शराबघर का दरवाजा होता तो तू उसे फौरन ढूंढ लेता। तुम्हें मेरे होंठ नही मिलते?''

तुम वह हमेशा ढूंढ लेते हो, जिसे तुम वास्तव में खोजना चाहते हो। तुम्हारी जो तीव्र चाह होती है वह पूरी होती है। यदि वह पूरी नहीं होती तो अपने अंदर झांकना, कहीं न कही तुम अपनी चाह से ही चूक रहे हो।

हिंदुओं के इतिहास के एक महान संत वाल्मीकि के बारे में एक बहुत सुंदर कहानी है। पहले वह एक हत्यारे और डाकू थे। उन्हीं ने रामकथा लिखी है जो संसार में एक बहुत सुंदर महाकाव्य है। उनका डाकू से संत में रूपांतरण हो गया। उनका रूपांतरण कुछ इस तरह से हुआ कि वह लगभग अविश्वसनीय लगता है। वह एक महान पापी थे लेकिन वह एक बार महान शिक्षक के निकट गए और उनसे पूछा कि वह किस तरह अपने पापों से मुक्त हो सकते हैं? उस महान शिक्षक ने उन्हें परामर्श दिया—'' राम का नाम तुम एक दिन में एक हजार बार जपा करो।'' वह अकेले एक पर्वत पर चले गए और मंत्र का भजना शुरू किया, लेकिन अपनी शुभ—चाह के बावजूद उनसे एक गली हो गई और ' राम ' का उल्टा ' मरा ' शब्द का जाप करने लगे।

ऐसा होता ही है कि यदि तुम तेजी से " राम, राम राम " का उच्चारण करो तो तुम गड़बड़ कर सकते हो और राम का उल्टा ' मरा, मरा मरा ' का उच्चारण हो सकता है। यह सब कुछ इसी तरह से हुआ। वह बहुत तेजी से मंत्र जाप कर रहे थे और उन्होंने यह नाम पहले कभी सुना भी नहीं था। यह उनके लिए लगभग अनजानी भाषा थी। उन्होंने उसे याद करने की बहुत कोशिश की, लेकिन किसी तरह वह सही शब्द भूल ही गए और—'' मरा, मरा मरा " का जाप वर्षों तक करते रहे।

कई वर्षों तक यह जाए करने के बाद वह वापस फिर उन्हीं महान शिक्षक के पास गए जिन्होंने तुरंत अनुभव कर लिया कि अब यह व्यक्ति सभी पापों से मुक्त होकर पूरी तरह पवित्र हो गया है। और पवित्र ही नहीं वह बोध को उपलब्ध भी हो गया है।

उस शिक्षक ने पूछा—" क्या तुमने उस पवित्र नाम का उच्चारण गाते हुए किया था?"

" जी हां! मेरे गुरुवर!" पूर्व—पापी ने उत्तर दिया—'' मैं दस वर्षों तक प्रति दिन एक हजार बार, ' मरा, मरा मरा ' मंत्र का जाए करता रहा।''

वह शिक्षक इतने जोर से ठहाका मार कर हंसे कि सभी पर्वत हिल उठे और उनका हास्य तरंगित होकर दूर दूर तक पूरे ब्रह्मांड में चारों ओर फैल गया जैसे झील में पानी की तरंगें एक छोटे पत्थर को सीप के अंदर मोती में बदल देती है। उस महान शिक्षक ने कभी पी रहे उस शिष्य को अपनी भुजाओं में भर लिया और कहा—'' तुम्हारी चाह शुभ के लिए थी। वह अत्यंत शुभ थी और उसी ने तुम्हारी रक्षा की, यद्यपि तुमने जिस ' मरा, मरा, मरा ' मंत्र का जाप किया वह यमराज का नाम है।''

' राम ' है नाम परमात्मा का और ' मरा ' नाम है मृत्यु के दानव का—लेकिन यदि वहां चाह हो, तड़प हो, सच्ची प्यास हो तब प्रत्येक चीज ठीक हो जाती है। यहां तक कि मृत्यु के दानव का। दानव के नाम से भी सब कुछ हो जाता है। बस केवल उनका उद्देश्य शुभ था, उनमें परमात्मा के प्रति भावावेग बहुत तीव्र था। अपने को पापों से शुद्ध करने के लिए वे दस वर्षों तक प्रति दिन दस हजार बार निरंतर ' मरा, मरा मरा ' का जाप करते रहे। गलत विधि भी सहायता करेगी, यदि चाह अत्यंत तीव्र हो, वह तड़प और प्यास बन जाए और यहां तक कि ठीक विधि भी अधिक सहायता नहीं करेगी यदि चाह ही नपुंसक हो।

इसे स्मरण रखें : यदि तुम बोध को उपलब्ध व्यक्तियों के निकट जाकर भी उन्हें न पहचान सको, तो जिम्मेदारी उन बुद्धों पर मत डालों। अपने ही अंदर झांक कर निरीक्षण करो क्या तुम अभी भी तैयार हो? ऐसा भी हुआ है कि जो लोग बोध को उपलब्ध नहीं हुए थे, उन्होंने भी जब कभी बुद्धत्व को उपलब्ध होने में लोगों की सहायता की है। यदि खोजी की प्यास बहुत तीव्र हो तो भी वह व्यक्ति जो बोध उपलब्ध नहीं भी है, सहायता कर सकता है।

एक महान रहस्यदर्शी मिलेरेप्पा के बारे में ऐसा ही कहा जाता है। जब तिब्बत में वह अपने गुरु के पास गया तो वह इतना अधिक विनम्र, इतना पवित्र और इतना अधिक प्रामाणिक था कि वहां अन्य शिष्यों को उससे ईर्ष्या होने लगी। यह निश्चित था कि वह गुरु का उत्तराधिकारी बनता। और वास्तव में उस आश्रम में राजनीति चल रही थी, इसलिए उन लोगों ने उसे मार डालने का प्रयास किया। एक दिन उन लोगों ने उससे कहा—'' यदि तुम वास्तव में सद्गुरु के प्रति पूर्ण श्रद्धा रखते हो तो क्या तुम इस पहाड़ी से नीचे कूद सकते हो? यदि तुम वास्तव में गुरु पर विश्वास करते हो, यदि तुम्हारी श्रद्धा सच्ची है तो तुम्हें कुछ भी हानि नहीं हो सकती।''

और मिलेरेप्पा बिना किसी हिचक के, बिना एक क्षण सोचे पहाड़ी से नीचे कूद पड़ा। वे दौडते हुए नीचे पहुंचे क्योंकि वह लगभग तीन हजार फुट गहरी घाटी थी। उसकी इधर—उधर बिखरी हड्डियां खोजने के लिए वे लोग नीचे पहुंचे, लेकिन वह वहां पद्मासन लगाये बहुत प्रसन्न और अत्यधिक आनंदपूर्ण स्थिति में बैठा मिला।

उसने अपने नेत्र खोले और कहा— '' तुम लोग ठीक कहते थे, विश्वास और श्रद्धा ही रक्षा करते हैं।''

उन लोगों ने सोचा कि यह जरूर ही कोई संयोग हो सकता है। इसलिए जब एक दिन एक घर में आग लगी थी तो उन लोगों ने उससे कहा—'' यदि तुम अपने सद्गुरु से प्रेम करते हो, उन पर श्रद्धा रखते हो, तो इस घर के अंदर जाकर लोगों को बचाओ।''

वह तुरंत उस घर में लगी आग के अंदर चला गया, जहां एक स्त्री और एक बच्चा रह गया था। आग बहुत भयानक थी और सभी यह आशा कर रहे थे कि वह जल जायेगा, लेकिन वह बिना जले बाहर आ गया।

एक दिन वे सभी कहीं जा रहे थे और सभी को एक नदी पार करनी थी। उन लोगों ने उनसे कहा—'' तुम्हें तो नाव से नदी पार करने की कोई जरूरत है ही नहीं। तुम्हारे पास तो इतनी महान श्रद्धा और विश्वास है, तुम तो नदी पर चल सकते हो। और वह नदी के जल पर चलता हुआ उस पार जा पहुंचा।''

यह पहला अवसर था कि सद्गुरु ने यह चमत्कार देखा। वह उसके प्रति अनजान था। जब उसे पहाड़ी से घाटी में कूदने को और जलते घर में प्रवेश करने को कहा गया था। वह इन घटनाओं के प्रति होशपूर्ण था ही नहीं। लेकिन इस बार उसने नदी किनारे स्वयं खड़े—खड़े उस नदी के जलपर चलते हुए देखा था।

उसने मिलेरेप्पा से कहा—'' तुम यह क्या कर रहे हो? यह तो असम्भव है।''

और मिलेरेप्पा ने कहा—'' बिलकुल भी असम्भव नहीं है। मैं यह सब कुछ आपकी ही शक्ति द्वारा ही कर रहा हूं।''

अब वह सद्गुरु विचार में पड़ गया—'' यदि मेरे नाम और मेरी शक्ति से यह अज्ञानी और मूर्ख व्यक्ति यह सब कुछ कर सकता है... और मैंने स्वयं कभी ऐसी कोशिश ही नहीं की।''

इसलिए उसने कोशिश की और वह नदी में डब गया। इसके बाद उसके बारे में कभी कुछ भी नही सुना गया।

एक ऐसा सद्गुरु जो बोध को उपलब्ध नहीं भी हुआ हो, उसके प्रति भी यदि श्रद्धा गहरी हो, तो वह भी तुम्हारे जीवन में क्रांति ला सकता है। और इसका विपरीत भी सत्य है, एक बुद्ध भी तुम्हारी कोई भी सहायता नहीं कर सकता, यदि तुम्हारी प्यास गहरी और सच्ची नहीं है। यह सभी कुछ तुम्हीं पर निर्भर करता है पूरी तरह तुम्हीं पर। आज बस इतना ही।

आज इतना ही।

पांचवां प्रवचन

मेरी त्वचा और अरिथयां स्वर्णमय हो गईं

दिनांक 25 जून 1976; श्री ओशो आश्रम, पूना।

बउलगीत:

आओ! मेरे पास आओ
यदि तुम किसी अलग तरह के नूतन और स्वाभाविक मनुष्य से भेंट
करना चाहते हो
तो मेरे पास आओ।
उसने उस झोली के लिए
जो भिखारी अपने कंधे पर लटकाये रहते हैं
अपनी सारी सांसारिक सम्पत्ति को व्यर्थ जान कर छोड़ दिया है।
जब भी वह गंगा में नहाने उतरता है
वह काल की देवी शाश्वत मां काली का नाम लेता है।
साधारण शब्द भी अज्ञान और अविश्वास को मिटा सकते हैं,
काली और कृष्ण, प्रकृति और पुरुष एक ही हैं।
शब्दों में फर्क हो सकता है, लेकिन अर्थ ठीक ठीक वही हैं।
वह—जिसने शब्दों के सारे अवरोध तोड दिए,
उसने सारी सीमाओं पर विजय प्राप्त कर ली।
अल्लाह या जीसस मोजेज अथवा काली
गरीब या अमीर
साधू या मूरख
ये सभी एक हैं, और उसके लिए इनमें कोई फर्क नहीं।
अपने ही खयालों में खोया हुआ वह व्यक्ति,
दूसरे लोगो को पागल लगता है।
वह पूरे संसार का स्वागत करने के लिए अपनी बांहें फैलाकर
उन सभी को अपनी नाव पर
जो अभी जीवन के किनारे से बंधी हुई है उस पार ले जाने के लिए
आमंत्रित करता है।
यदि तुम उस नूतन मनुष्य से मिलना चाहते हो, तो मेरे पास आओ।

बाउलों की पूरी खोज ही उस नए मनुष्य अथवा ' आधार मानुष ' की खोज है। कौन है यह नया मनुष्य?

तुम अपने जीवन को दो तरह से जी सकते हो या तो तुम एक ऐसा मनुष्य बनकर रहो, जो स्वयं अपने होने में मस्त है। अथवा तुम एक ऐसा मनुष्य बनकर जियो, जिसके पास वस्तुएं हों। या तो तुम अपने आप में डबे हो सकते हो, अथवा तुम्हारे पास बहुत सी सांसारिक चीजें हो सकती हैं। या तो तुम चीजों को इकट्ठा कर

सकते हो और उनके द्वारा अधिकार में लिए जा सकते हो अथवा तुम स्वयं को प्राप्त कर स्वयं के ही मालिक हो सकते हो और किसी की भी गुलामी में नहीं रहते। वस्तुओं का संग्रह करने वाले व्यक्ति की पूरी तरह से दिशा ही भिन्न होती है। ऐसे ही मनुष्य को बाउल सांसारिक मनुष्य कहते हैं। ऐसा मनुष्य केवल धन सम्पत्ति के सम्बन्ध में, वस्तुओं और पदार्थों के सच्चपध में और बैंक बैलेंस के सम्बंध में ही सोचता है। वह यह भी सोचता है कि उसके पास यह सब कुछ जितना अधिक होगा, वह उतना ही अधिक महत्त्वपूर्ण होगा। यही उसको भटकाने वाले तर्कों का सबसे आधारभूत तर्क है।

तुम्हारे पास पूरे संसार का भी वैभव हो सकता है और तुम फिर भी भिखारी हो सकते हो। तुम्हारे पास वह सब कुछ हो सकता है जो भी पूरा संसार तुम्हें दे सकता है और फिर भी तुम खाली के खाली ही रहोगे।

महान— सिकंदर की मृत्यु हुई। वह सांसारिक मनुष्य का एक सशक्त प्रतीक है। वह पूरे विश्व पर विजय प्राप्त करना चाहता था और उसने ऐसा लगभग किया भी। लेकिन अपने मरने से पहले उसने अपने सेनापतियों से कहा—'' मरने पर मेरे दोनों हाथ ताबूत के बाहर लटके रहने देना।'' उन्होंने कहा—'' ऐसा हमने कभी सुना ही नहीं. .फिर ऐसी परम्परा भी नहीं है। और आप ऐसी व्यर्थ की चीज आखिर क्यों करना चाहते हैं?'' सिकंदर ने कहा—'' यह व्यर्थ की बात नहीं है। इसका मेरे जीवन के साथ एक विशिष्ट सम्बन्ध है। मैं चाहता हूं कि लोग देखें कि मैं खाली हाथों ही जा रहा हूं। मैं खाली हाथों ही इस दुनिया में आया था और मैं खाली हाथों से इस दुनिया से विदा हो रहा हूं। और मेरा पूरा जीवन ही व्यर्थ गया।''

एक व्यक्ति को निश्चित ही कुछ समझदार होना ही चाहिए क्योंकि अधिकतर लोग मरते समय भी चीजों से ही बंधे रहते हैं, वे फिर भी सजग नहीं होते कि उनके हाथ खाली के खाली ही हैं, वे फिर भी नहीं समझते कि उनके हृदय रीते हैं, वे फिर भी इसके प्रति सचेत नहीं होते कि उन्होंने अपना पूरा जीवन व्यर्थ ही नष्ट कर दिया और वह केवल एक भयानक स्वप्न बनकर रह गया।

वस्तुओं पर पकड़ रखने वाला परिग्रही मनुष्य अधिक से अधिक इकट्ठा ही किए चला जाता है। आवश्यक बात यह नहीं है कि वह क्या इकट्ठा करता है, उसका जोर संग्रह करने पर होता है। उसकी आत्मा उसकी चीजों के संग्रह में ही बसती है।

वह क्या संग्रह कर रहा है, वह महत्वपूर्ण नहीं है। वह धन सम्पति इकट्ठी कर सकता है, वह जानकारी बटोर कर ज्ञानी बन सकता है, वह अहंकार इकट्ठा कर सकता है, वह विनम्रता और दीनता जोड़ कर विनम्रता का अवतार बन सकता है। वह इस ससार की वस्तओं का संग्रह करे अथवा वह दूसरे संसार की अच्छाईयों और नैतिक गुणों का संचय करे, लेकिन वह संग्रह अवश्य करता है। उसका अस्तित्व चीजों के कारण ही होता है।

उसे तभी अच्छा लगता है, जब उसके पास बहुत कुछ होता है, जब वह अनुभव करता है कि उसके हाथ भरे हुए हैं, कम से कम बाहर से तो भरे— भरे लगते हैं। उसे यह अनुभव करने में अच्छा लगता है कि वह कुछ प्राप्त कर रहा है। वह सफल होता जा रहा है। बाउलों के पारभाषिक शब्दों में यही पुराना मनुष्य है। यह पुराना मनुष्य सदा अस्तित्व में रहा है। यह मनुष्य सड़ा हुआ दुखी और रुग्ण है। यह एक तरह की बीमारी है, यह विचार ही कि तुम्हारे पास बहुत सारी चीजें होनी चाहिए तुम्हारा समय और ऊर्जा बरबाद करती है। और तुम्हें यह जानने नहीं देती कि तुम हो कौन? बाउल उस दिशा को उत्तम कहते हैं, जिसमें तुम अस्तित्वगत दशा के सम्बंध में, एक विशिष्ट आंतरिक अकेलेपन के सम्बंध में, एक विशिष्ट आंतरिक चेतना और उसके केंद्रित होने और गहरी जड़ों के सम्बन्ध में विचार करना शुरू कर देते हो और तुम्हें इसकी एक विशिष्ट अनुभूति होनी शुरू हो जाती है कि तुम कौन हो।

क्या तुमने कभी इस बात पर गौर किया है कि कभी तुम ऐसे व्यक्ति के सम्पर्क में आते हो, जिसमें कोई भी बात दिखाई तो नहीं देती, लेकिन फिर भी तुम उसके चारों ओर एक तीव्र ऊर्जा का अनुभव करते हो। उसका प्रभाव लगभग चुम्बकीय और सम्मोहक होता है। वह तुम्हारी आंखों की ओर देखता है और तुम उसकी आंखों की ओर नहीं देख सकते। उसमें एक महान शक्ति होती है और वह शक्ति किन्हीं वस्तुओं की नहीं होती क्योंकि उसके पास कोई भी वस्तु नहीं हो सकती। वह राह पर चलने वाला एक भिखारी भी हो सकता है। वह राजनीति से आने वाली शक्ति भी नहीं है। वह हो सकता है एक प्रधानमंत्री या एक राष्ट्रपति भी हो, क्योंकि उसकी वह शक्ति भी बोगस होती है। वह शक्ति कुर्सी की होती है, व्यक्ति की नहीं। वह कुर्सी में निहित होती है, कुर्सी पर बैठने वाले में नहीं। एक बार वह कुर्सी से उतरा नहीं, फिर वह उतना ही शक्तिहीन होता है जितने तुम।

रिचर्ड निक्सन को देखो, जब वह राष्ट्रपति थे तो उसके पास अत्यधिक शक्ति थी। अब वे केवल मात्र एक सामान्य नागरिक हैं। उनकी वह सभी शक्ति गायब हो गई। वह शक्ति उनकी नहीं थी, वह एक प्रतिबिंबित गौरव था।

और तुम इसे देख सकते हो, वह बहुत कठिन नहीं है। तुम ऐसे व्यक्तियों को जानते हो जिनके पास बहुत अधिक शक्ति है—वस्तुओं की शक्ति, बड़े महलों की शक्ति, राजनीति की शक्ति, धन प्रतिष्ठा और पैतृक विरासत की शक्ति लेकिन तुम देख सकते हो कि वे सभी दीन व्यक्ति हैं। उनके पास अपनी कोई भी शक्ति नहीं है। उनकी आत्माओं में कोई चुम्बकीय शक्ति नहीं होती। यदि तुम उनकी सभी वस्तुएं उनसे अलग हटा दो, तो वे सामान्य मनुष्य से भी कहीं अधिक साधारण हैं। उनकी सारी असाधारणता विलुप्त हो जाती है। राजा और रानियां, जब वे राजा और रानियां नहीं रह जातीं, केवल साधारण मनुष्य मात्र रह जाते हैं.....लगभग पूरी तरह खाली होती हैं, जिनमें कुछ भी नहीं रह जाता।

लेकिन जब कभी तुम किसी ऐसे व्यक्ति के सम्पर्क में आते हो, जिसमें बाहर की कोई शक्ति नहीं होती, जिसकी शक्ति किसी आंतरिक स्रोत और किसी अंदर के झरने से आ रही होती है तो वह शक्ति का सरोवर जैसा होता है। वह जहां कहीं भी बैठता है, वह स्थान पावन बन जाता है। वह जिस स्थल पर भी बैठता है। वह स्थान एक सिंहासन बन जाता है, वह जहां कहीं भी जाता है, वह मनुष्यों के मध्य एक सम्राट की भांति विचरण करता है। लेकिन उसका साम्राज्य उसके अपने अंदर का होता है।

यह वही शक्ति है जिसके बारे में जीसस कहा करते हैं परमात्मा का साम्राज्य तुम्हारे ही अंदर है। जो उसके अंदर है, वह उसे जानता है। उसके अपने स्वयं के अंदर जो है, उसी का वह साक्षात्कार करने ही यहां आया है। उसकी दृष्टि अंदर मुड़ कर अंतर्मुखी हो जाती है। वह फिर बाहर के संसार पर निर्भर नहीं रह जाता। उसका गौरव और ख्याति प्रतिबिंबित न होकर उसकी अपनी और प्रामाणिक होती है। वह कारागार में बंदी बनाया जा सकता है, लेकिन वह वहां भी रहेगा एक सम्राट की ही भांति।

सिकंदर महान के समकालीन डायोजनीज के बारे में यह कहा जाता है कि सिकंदर भी डायोजनीज से ईर्ष्या करने लगा। वह पूरी तरह नग्न रहने वाला एक फकीर था, जिसके पास कुछ भी नहीं था। उसने हर चीज छोड़ दी थी। वह अपने आंतरिक संसार की खोज कर रहा था। उसके बारे में यह कहा जाता है कि उसने जब यह संसार छोड़ा, तो वह अपने साथ एक छोटा सा भिक्षा—पात्र रखा करता था। लेकिन तब एक दिन उसने नदी से एक कुत्ते को पानी पीते हुए देखा। उसने तुरंत अपना भिक्षा—पात्र फेंक दिया और कहा, यदि कुत्ता बिना उसके पानी पी सकता है, तो क्या मैं कुत्ते से भी गया बीता हूं? तब उसने अपने पास की हर चीज फेंक दीं, वस्त्र भी फेंक दिए और नंगा ही रहने लगा।

सिंकदर को उसके बारे में बहुत सी अफवाहें और कहानियां सुनने में आ रही थीं कि उस शख्स के अंदर कुछ खास बात है। उससे सम्मोहित होकर अंत में सिकंदर स्वयं उससे मिलने गया और यह देख सका कि उस व्यक्ति के अंदर कुछ ऐसा है जो उसके पास नहीं है। जाड़ों की वह एक सर्द सुबह थी सूर्योदय हो रहा था और वह रेत पर लेटा हुआ था। वह नदी किनारे लेटा हुआ कुनकुनी धूप का आनंद ले रहा था। सिकंदर ने उससे कहा—'' क्या मैं आपके लिए कुछ भी कर सकता हूं श्रीमान? मेरे पास काफी कुछ है और आप जो कुछ भी चाहें, उसे आपके लिए करने में मुझे प्रसन्नता होगी।''

डायोजनीज हंसा और उसने कहा—''आप केवल एक ही काम कर सकते हैं कि कृपया हटकर खड़े हो जाए और मुझ तक आती हुई धूप न रोकें। इसके आलवा मुझे और कुछ भी नहीं चाहिए। और इसे याद रखिएगा कि कभी भी धूप और किसी भी व्यक्ति के बीच में खड़े मत होना क्योंकि आप एक खतरनाक व्यक्ति दिखाई देते हैं। कभी भी किसी दूसरे व्यक्ति के जीवन में व्यवधान मत डालिए। बस इतना ही काफी है और इसके अलावा मैं आपसे कुछ भी नहीं चाहता क्योंकि जो कुछ मैं चाहता हूं वह सब कुछ मेरे अंदर ही है।''

और सिकंदर यह अनुभव कर सका कि यह व्यक्ति सच्चा और प्रामाणिक है अपने अकेलेपन में आनंदित एक ऐसा व्यक्ति जिसकी चेतना एकीकृत और केंद्रित होकर थिर हो गई है, जिसके चारों ओर की तरंगें, उसके बोध को उपलब्ध होने की जैसे घोषणा कर रही है। उसे लगा जैसे उसके आस पास की आबोहवा उसके आंतरिक प्रकाश, आंतरिक अनुभव और अंदर की समृद्धि से महक रही हो। वह देख सका और महसूस कर सका। उसने झुककर प्रणाम करते हुए कहा—'' यदि अगली बार मुझे इस संसार में आने का अवसर मिला तो मैं परमात्मा से कहूंगा कि तू मुझे सिकंदर न बनाकर डायोजनीज बनाना।''

डायोजनीज हंसा और उसने कहा—'' इतना लंबा इंतजार करने की कोई जरूरत नहीं है। और ठीक अभी भी डायोजनीज हो सकते हैं आप। निरंतर इधर— उधर घूम—घूम कर व्यर्थ लड़ाइयां लड़ते लोगों को जीतने का संघर्ष आखिर क्यों कर रहे हैं आप?''

सिंकदर ने कहा—'' पहले मैं मध्य एशिया और फिर हिंदुस्तान जीतना चाहता ''

हूं फिर सुदूर पूरब में.....।

डायोजनीज ने पूछा—'' फिर उसके बाद और फिर उसके भी बाद।''

अंत में जब सिकंदर ने कहा कि वह पूरा विश्व जीतने के बाद विश्राम करेगा तो डायोजनीज ने कहा—'' मुझे तो आप लगभग एक मूर्ख दिखाई देते हैं, क्योंकि मैं दुनिया को बिना जीते हुए ही यहां विश्राम कर रहा हूं। आप भी अभी मेरी बगल में लेट कर विश्राम कर सकते हैं, क्योंकि नदी तट बहुत विस्तृत है और हम दोनों यहां मजे से रह सकते हैं। कोई दूसरा यहां आता भी नहीं है। आप अपने हृदय की कामना को पूरी करते हुए अभी विश्राम कर सकते हैं।''

आपको आखिर रोक कौन रहा है? और मुझे ऐसा नहीं लगता कि अंत में विश्राम करने के लिए किसी को पहले पूरी दुनिया जीतना ही पड़े। आप किसी भी क्षण विश्राम में जा सकते हैं।

उसी क्षण सिकंदर ने अपनी निर्धनता को जरूर महसूस किया होगा। उसने कहा—'' आप कहते तो ठीक हैं लेकिन मैं ही पागल हूं। क्योंकि अभी तो यह मेरे लिए बहुत कठिन है कि मैं अपनी मुहिम से वापस लौट सकूं। मुझे तो पूरा संसार जीतना ही है, केवल तभी मैं वापस आ सकता हूं यहां।''

और जब वह वहां से जाने लगा तब डायोजनीज ने कहा—'' स्मरण रखियेगा, कोई भी कभी भी वापस नहीं आ सकता, जब तक कि वह होशपूर्ण न हो। और यदि आप अभी भी इसी क्षण सजग है तो यात्रा स्वयं रुक जाती है। यदि आप सजग नहीं रहे तो कभी भी वापस न लौट सकेंगे।''

और सिकंदर वहां कभी वापस न लौट सका।

वह घर लौटने से पहले ही मर गया।

जो मनुष्य अपने स्वयं के होने में आनंदित है, वही नूतन मानुष या नया मनुष्य है। उसे नया क्यों पुकारते हैं? क्योंकि एक अर्थ में वह उतना ही पुराना है जितनी कि मनुष्यता। लेकिन वह इतना दुर्लभ है, कि वह जब कभी भी आता है, वह हमेशा नया ही होता है—यहां बुद्ध होना दुर्लभ है, जीसस और कृष्ण का होना बहुत कम होता है। इस सड़ी बुसी मनुष्यता की भीड़ में ऐसा बहुत कम और कभी—कभी ही होता है कि कोई भी ऐसा व्यक्ति अपने प्रामाणिक अस्तित्व के साथ जन्मे और यह घोषणा करे कि उसका साम्राज्य स्वयं उसके अंदर ही है। यह घटना इतनी अधिक दुर्लभ है कि बाउल लोग इसे ठीक ही आधार—मानुष अर्थात् नया मनुष्य कहते हैं। इसलिए भेद समझने जैसा है, वह मनुष्य जो अधिक से अधिक पाने के बाद भी अपनी आत्मा को अधिक से अधिक खोता जायेगा। क्योंकि अधिक से अधिक पाने के लिए उसकी कीमत आत्मा को ही चुकानी होगी। तब तुम्हें अपने अस्तित्व से कट कर अलग हो जाना पड़ेगा और तुम अपनी आत्मा को फेंककर कर दोगे। यहां कुछ भी मुक्त नहीं मिलता और हर चीज की कीमत अदा करनी पड़ती है। यहां तक कि व्यर्थ चीजों की भी कीमत चुकानी होती है।

एक दिन यह मनुष्य जो चीजों का संग्रह करता है, उसे लगभग चुक ही जाना है। उसके पास वस्तुएं बहुत हैं) लेकिन आंतरिक सम्पदा कुछ भी नहीं है। उसने अपनी आत्मा बेचकर उसके एवज में डालर, रुपये और पाउंड इकट्ठे किए हैं, लेकिन उसके अंदर आत्मा नहीं रही। बस उसके अन्दर एक नकारात्मक खालीपन है। वह है भिखारी, लेकिन वह तुम्हें एक राजा जैसा दिखाई पड़ सकता है। उसकी बाह्य आकृति और रूप से धोखा मत खाओ। जो लोग राजा जैसे दिखाई देते हैं, वे राजा हैं नहीं। उन्हें जरा और गौर से देखो। गहराई से उनका निरीक्षण करो। उन्होंने भले ही ऐसा कुछ प्राप्त कर लिया हो, जो गिना जा सकता हो, जिसे दिखा कर उसका प्रदर्शन किया जा सकता हो, लेकिन उन लोगों ने कुछ अदृश्य वस्तु कोई चीज अपने आत्मा की खो दी है।

क्या तुमने कभी यह देखा नहीं? जहां कहीं भी तुम किसी चीज को खरीदते हो, तुम्हें उसका भुगतान करना होता है। यदि तुम्हें लोगों के साथ स्पर्धा करनी होती है, तो तुम्हें उसकी कीमत चुकानी होती है। तुम कम से कम प्रेमपूर्ण होते जाओगे। एक व्यक्ति जो प्रतिस्पर्धा में लगा हो, वह साथ—साथ प्रेमपूर्ण नहीं बना रह सकता। यह असंभव है। एक व्यक्ति जो स्पर्धा करने का प्रयास कर रहा हो और जो महत्वाकांक्षी हो, वह प्रेमपूर्ण नहीं हो सकता। वह उसका मूल्य प्रेम के द्वारा चुका रहा है।

राजनीतिज्ञ प्रेमपूर्ण नहीं हो सकते, वे केवल युद्ध और संघर्ष जानते हैं। यह स्वाभाविक भी है। संघर्षों के द्वारा ही उनका अस्तित्व है। इसलिए वे शांतिवार्ता करते दिखाई देते हैं, लेकिन उनकी पूरी बातचीत बस व्यर्थ की बकवास, या ठीक जिबरिश है। वे शांति के बारे में बातचीत करते हैं और तैयारी करते हैं युद्ध की। वे शांति के लिए कभी तैयार होते ही नहीं, वे तैयार होते हैं युद्ध के लिए। लेकिन युद्ध के बाबत कभी बातचीत नहीं करके, बात शांति की ही करते हैं। और जब समय आता है तो वे युद्ध करने भी जाते हैं, और शांति स्थापना करने के नाम पर ही युद्ध करते हैं। वे कहते हैं कि शांति स्थापना करने के लिए ही यह सब कुछ करना ही पड़ा। लेकिन आधारभूत रूप से, प्रतियोगी का मन हिंसक ही होता है। वह व्यक्ति जो महत्त्वाकांक्षी है, हिंसक है वह प्रेमपूर्ण हो ही नहीं सकता।

हिप्पियों का नारा—''युद्ध नहीं प्रेम करो अत्यंत अर्थपूर्ण है। यदि संसार अधिक प्रेमपूर्ण हुआ होता, तो युद्ध स्वत: समाप्त हो जाते, क्योंकि लड़ने के लिए तैयार होता ही कौन? और किसके लिए?"

कोई भी देश नहीं चाहता कि उसमें रहने वाले लोग प्रेमपूर्ण हों। कोई भी देश नहीं चाहता कि उसके लोग प्रेम में गहरे डूबें क्योंकि यदि वे प्रेम की गहराई में उतर जाते हैं, तो युद्ध करने में अक्षम हो जाते हैं। उनको सेक्स और प्रेम का दमन करना ही होता है।

जब प्रेम और सेक्स दमित होते हैं, तो लोग अपने बाहरी खोल से बाहर आकर उछाल भरने को तैयार रहते हैं। वे लोग सदा ही इतने अधिक उबल रहे हैं कि वे हमेशा लड़ने को तैयार रहते हैं। यही कारण है कि निर्धन देश एक धनी देश की अपेक्षा अधिक अच्छी तरह से युद्ध कर सकता है। वियतनाम की यही कहानी है।

अमेरिकन सैनिक प्रेम के बारे में थोड़ा बहुत जानता है उसके पास सुविधाएं हैं और साधन हैं वह इतना दमित नहीं है। अब अमेरिका के साथ यही समस्या है कि वहां लोग इतने अधिक दमित नहीं है। लोगों ने प्रेम का स्वाद चखा है। लेकिन जब तुम वियतनाम जैसे छोटे से देश से लड़ते हो, तो तुम जीत नहीं सकते, क्योंकि उनके सैनिक बहुत अधिक दमित हैं। अतीत में ऐसा हमेशा होता रहा है, एक धनी और सम्पन्न देश हमेशा ही गरीब देशों द्वारा हमला किये जाने के खतरे से ग्रस्त रहता है।

ऐसा ही भारत में भी कई बार हुआ। दो तीन हजार वर्षों से निरंतर भारत पर बर्बर लोगों के द्वारा जो न तो अधिक धनी थे, न अधिक सुसंस्कृत, आक्रमण कर उसे जीता गया। भारत निरंतर पराजित होता रहा। वहां लोग प्रेमपूर्ण थे वे भूल ही गए थे कि कैसे युद्ध किया जाये, युद्ध करने में उनकी कोई रुचि ही नहीं रह गई थी। उनके लिए निरंतर युद्ध करने की उनके अंदर कोई चाह या जरूरत ही नहीं रह गई थी। जब कभी कोई सभ्यता उस बिंदु पर पहुंच जाती है, जहां वह बहुत अधिक सम्पन्न और धनी हो जाती है, उस पर बर्बर लोगों द्वारा आक्रमण किये जाने का खतरा बढ़ जाता है। यह है दुर्भाग्यपूर्ण लेकिन ऐसा होता ही है।

इसीलिए प्रत्येक देश और प्रत्येक राजनीतिज्ञ लोगों को अधिक प्रेम करने की इजाजत नहीं देते। यह अनुमति केवल अल्प मात्रा में दी जाती है। यदि प्रेम मुका है तो लोग बहुत अधिक प्रेम में डब जाते हैं और प्रेम के सागर में मग्न रहते हैं। उनके लिए युद्ध करना असम्भव हो जाता है। और बिना युद्ध के राजनीति करना सम्भव नहीं है। और बिना राजनीति के राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री बनना भी सम्भव नहीं है। वे सभी मिट जाएंगे।

राजनीतिज्ञों के लिए हिप्पी लोग खतरे के सबसे बड़े निशान हैं। पूरे इतिहास में पहली बार ही एक नये तरह की पीढ़ी का उदय हो रहा है। यदि यह पीढ़ी निरंतर विकसित होती रही, फलती और फूलती रही, तो राजनीति समय के बाहर की चीज बन जाएगी। अब राष्ट्रपतियों और मंत्रियों के दिन बीत रहे हैं। पूरी चीज ही प्रेम पर निर्भर है, क्योंकि प्रेम ही अपने स्वयं में होने का गुण है। प्रतियोगिता वस्तुओं के लिए होती है, महत्त्वाकांक्षा भी वस्तुओं के लिए होती है, बिना साम्राज्य महत्त्वाकांक्षा किसके लिए? अपने ही अंदर परमात्मा का साम्राज्य, किसी प्रतियोगिता को नहीं जानता। तुम उसमें इसी क्षण प्रसन्न और आनंदित हो सकते हो। उसके लिए किसी भविष्य की कोई आवश्यकता नहीं, उसके लिए तुम्हें किन्हीं उपलब्धियों की कोई आवश्यकता नहीं है। तुम पहले ही से जैसे भी हो तुम उसमें प्रसन्न और आनंदपूर्ण होकर उत्सव मना सकते हो। तुम किसी भी चीज से नहीं चूक रहे हो। प्रत्येक वस्तु जैसी वह होनी चाहिए वह है और तुम्हें हर चीज उपलब्ध है। तुम्हें केवल अपने महत्वाकांक्षी मन को ही गिरा देना है और उत्सव प्रारंभ हो जाता है। क्या तुम उसे देख सकते हो? यदि तुम इसे देख सकते हो, केवल तभी तुम नूतन मानुष को समझने में समर्थ हो सकोगे।

बाउल कहते हैं—'' वह मनुष्य जो वस्तुओं की व्यर्थता को समझ जाता है, वही धार्मिक बनता है।'' यदि तुम वस्तुओं के संग्रह करने के पीछे भाग रहे हो, तो तुम निरंतर दूसरों के साथ संघर्ष करते हुए निरंतर दूसरों को इस तरह अथवा उस तरह से कुचलने का प्रयास कर रहे हो, यदि तुम सभी के नियंत्रक बनकर शिखर पर पहुंचने का प्रयास कर रहे हो, तो तुम अपनी सभी स्वाभाविकता, सहजता और गौरव खो दोगे।

अपने होने में मग्न मनुष्य, नूतन मनुष्य सहज, स्वाभाविक और स्वयं प्रवर्तित होता है। वह अभी और यहीं क्षण— क्षण जीता है। वह रहने का कोई दूसरा अन्य तरीका जानता ही नहीं, उसके बारे में निश्चित रूप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता। तुम प्रतियोगिता करने वाले मनुष्य के सम्बंध में पहले से बतला सकते हो। तुम उसके बारे में भविष्यवाणी इसलिए कर सकते हो क्योंकि प्रतियोगी का मन गणित के नियम के अनुसार गतिशील होता है। उसके निष्कर्ष तर्कपूर्ण होते हैं। लेकिन उस व्यक्ति का मन, जो अंदर की ओर गतिशील है, आत्मवान है, उसका मन लगभग विसर्जित हो रहा है। जिस अंतर्यात्री का मन विसर्जित हो रहा है, तुम उसके बारे मे कुछ भी भविष्यवाणी नहीं कर सकते। उसके बारे में गणित का कोई भी सिद्धांत लागू नहीं होता। वह बस क्षण— क्षण जीता है, हर क्षण से ही उसका उत्तर स्वयं आता है।

वस्तुओं का संग्रह करने वाले मनुष्य के बारे में अब मैं एक बात बतलाना चाहता हूं जो बहुत स्पष्ट है ऐसे व्यक्ति की पूरी तरह स्पष्ट एक लक्ष्य या मंजिल होती है। यदि वह अमेरिका का राष्ट्रपति या भारत का प्रधानमंत्री बनना चाहता है, तो उसका लक्ष्य बहुत स्पष्ट होता है। और क्या आत्मवान व्यक्ति की भी कोई मंजिल होती है? नहीं, उसकी कोई मंजिल या लक्ष्य होता ही नहीं। उसकी दिशा तो बहुत सूक्ष्म होती है, लेकिन कोई मंजिल नहीं होती। उसके कुछ विशिष्ट गुण होते हैं, उसका अंतर्तम प्रकाशवान होता है, और वह जहां भी होता है वह पथ आलोकित हो उठता है। उसके पास दिशा देखने को आंखें तो होती है, लेकिन कोई लक्ष्य नहीं होता। वह आनंद मनाते हुए इधर—उधर आता—जाता तो है, लेकिन वह पूर्व— निर्धारित नहीं होता। उसके पास कोई योजना नहीं होती। वह एक रेलगाड़ी की तरह न होकर एक नदी की भांति होता है। उसकी एक दिशा तो होती है, लेकिन एक रेलगाड़ी की तरह नहीं, जो एक ढांचे में दौडती है। उसका जीवन टेढ़ा—मेढ़ा होता है। कभी वह उत्तर की तरफ चलेगा और कभी दक्षिण की ओर चल पड़ेगा, वह कभी भी बहुत नियमित नहीं हो सकता, क्योंकि नियमितता तर्कशील मन का ही एक भाग है, वह अस्तिवगत नहीं है। वह कई बार अनयिमित होगा और साथ में विरोधाभासी भी, लेकिन वे विरोधाभास केवल परिधि पर होंगे। यदि तुम गहराई से देखो तो तुम एक सूक्ष्म दिशा मार्ग पाओगे। विरोधाभास में भी वहां दिशामार्ग होता ही है।

पर इस आत्मवान् मनुष्य को पहचानने के लिए तुम्हें बहुत गहरी और अंतर्वेधी दृष्टि की जरूरत है। वस्तुओं का संग्रह करने वाले सांसारिक व्यक्ति को पहचानने के लिए कुछ भी नहीं चाहिए। बस थोड़े से सामान्य मन का उपयोग ही यथेष्ट होगा। क्योंकि यह सांसारिक परिग्रही व्यक्ति भी साधारण मन वालों की ही श्रेणी का है। लेकिन तुम जब आंतरिक संसार की ओर गतिशील होते हो तो सारी परिधिया मिट जाती हैं। और अंनत गहराई ही रह जाती है।

बाउल इस स्वयं प्रवर्तित मनुष्य को ' सहज मानुष ' या ' नूतन मनुष्य ' कहते हैं। यही नया मनुष्य है। वह ऐसा व्यक्ति है, जैसा प्रत्येक को होना चाहिए। और जब तक तुम नूतन मानुष नहीं बने, तुम चूक जाओगे। तुम चूक जाओगे महान सम्पदा से, परमांनद से और उन आशीर्वादों से जो तुम पर चारों ओर से बरस रहे थे, लेकिन तुम अंधे थे और उन्हें देख न सके।

मैंने सुना है:

मुल्ला नसरुद्दीन एक स्त्री के प्रेम में पागल हो रहा था। उसने अपनी प्रेयसी से कहा— " देखो प्रियतमे! तुम्हारे लिए विवाह समारोह पर पहनाई जाने वाली हीरे की अंगूठी यह रही।"

उस स्त्री ने कहा—" ओह! यह तो बहुत सुंदर है। लेकिन शहद से मीठे मेरे प्रिय तुम! इस हीरे में तो खरोंच का निशान है।"

मुल्ला ने कहा—'' तुम्हें उस ओर ध्यान नहीं देना चाहिए तुम प्रेम में आखिर पडी और तुम जानती हो कि सभी लोग कहते हैं कि प्रेम अंधा होता है।''

'' हां अंधा तो होता है, लेकिन हीरा तो अंधा नहीं होता।''

यहां तक कि प्रेम में भी तुम बाहर के ही मनुष्य बने रहना जारी रखते हो। तुम प्रेम में भी, धन, प्रतिष्ठा, और शक्ति की भाषा में सोचना जारी रखते हो। तुम प्रेम में भी उस अज्ञात को स्पष्ट और मुखर होने की अनुमति नहीं देते। तुम अपने आंतरिक अस्तित्व को भी अपनी बात कहने की अनुमति नहीं देते। तुम फिर भी एक नियत्रंक बने रहते हो।

हमारे मन हमेशा लगभग बहुत सामान्य चीजों में रुचि रखते हैं। ऐसा होना भी चाहिए क्योंकि वे बाहर की ओर ही उन्यूख होते हैं। किसी विशिष्ट दिशा की ओर मुड़ना ही बाहर की ओर उन्यूख होना है। ऐसे ही जीसस को भी न समझा जा सका, वह भी एक बाउल जैसे थे—नूतन मनुष्य। यदि वह बाउलों की भूमि बंगाल में जन्मे होते, तो वहां कहीं अधिक अच्छी तरह से समझे जाते। वहां लोगों ने उन्हें क्रास पर नहीं चढ़ाया होता। सदियों से लोगों ने उन्हें परमात्मा पागल प्रेमियों के रूप में ही जाना है। इन लोगों ने उनकी भाषा को अच्छी तरह समझ लिया होता।

यहूदी उनकी भाषा न समझ सके। उनकी भाषा मस्तिष्क या मन की भाषा नहीं थी। उनकी भाषा धन और बाहर के संसार की भाषा नहीं थी। वे साम्राज्य धन और बाहर के संसार की भाषा नहीं थी। वे साम्राज्य के बारे में बता रहे थे, और उन यहूदियों ने उनसे पूछा—'' कहां है तुम्हारा वह साम्राज्य? तुम किस साम्राज्य की बात कर रहे हो?'' क्योंकि वे लोग सोच रहे थे कि वह उस साम्राज्य की बात कर रहे हैं, जो बाहर है। उन्होंने कहा— '' मैं ही सम्राट हूं। और वे लोग चिंतित हो गए और उन्हें संदेह हुआ कि वह समाज को बरबाद करने की कोशिश कर रहे हैं। अथवा वह समाज को जीतकर उसका सम्राट बनने की कोशिश कर रहे हैं। उन लोगों ने समझा कि वे एक क्रांतिकारी हैं। वह क्रांतिकारी न होकर एक विद्रोही थे। वह किसी क्रांति की योजना नहीं बना रहे थे, वह कोई राजनीतिज्ञ नहीं थे।''

लेकिन यहूदी भयभीत थे। वे सोचते थे वह संसार पर विजय प्राप्त करने की कोशिश कर रहे हैं और रोमन भी भयभीत थे। वे इसलिए भयभीत थे, क्योंकि लोगों का ऐसा खयाल था कि वह मनुष्यों पर राज्य करने के लिए राजा के रूप में जन्मे हैं। जब रोम के सम्राट ने यह सुना कि ऐसा एक बच्चा जन्म लेने जा रहा है, जो सभी मनुष्यों का सम्राट बनेगा, तो वे इतने अधिक भयभीत हो गए और उन्होंने दो वर्ष से कम आयु के सभी बच्चों के कल्लेआम करने का आदेश दे दिया। जब पूरब से आएं

तीन बुद्धिमान व्यक्ति जीसस नाम के बच्चे की तलाश में राजधानी में आए तो सम्राट ने उनके बारे में सुनकर उन्हें अपने महल में आमंत्रित कर उससे पूछा कि वह यहां किसलिए आए हैं? उन्होंने बताया कि वह उस सम्राट के दर्शन के लिए आए हैं, जिसका जन्म इस देश में हुआ है। उन्होंने कहा— '' आपको तो प्रसन्न होना चाहिए कि इस सम्राट का जन्म आपके देश में हुआ और वह महान सम्राट आपके देश की पृथ्वी पर चलेगा।''

लेकिन सम्राट यह सुनकर बहुत डर गया, क्योंकि उसने सोचा—'' एक ही देश में दो सम्राट कैसे रह सकते हैं, और तब मुझे सिंहासन से हटना होगा।'' लेकिन उसने राजनीति का खेल खेलते हुए उन बुद्धिमान लोगों से कहा—'' मैं भी बहुत खुश हूं। और यदि आपको उसे खोजने में सफलता मिल जाए तो कृपया यहां पधार कर मुझे भी सूचित कीजियेगा।''

लेकिन वह उस बच्चे की हत्या करने की योजना बना रहा था। उन तीन बुद्धिमान लोगों ने उसकी योजना को भली— भांति समझ लिया क्योंकि वह उन्हें उसकी आंखों में देख रहे थे। वह एक चालाक व्यक्ति था। राजनीतिज्ञ चालाक होते ही हैं।

इसके बाद उन लोगों ने जीसस के दर्शन किए और उनकी वंदना की। उन्होंने इस बार लौटने का दूसरा मार्ग चुना, क्योंकि उन्हें भय था कि सम्राट उनकी प्रतीक्षा कर रहा होगा और वे लोग उस गहरे संकट से बचना चाहते थे। वे जीसस की हत्या किए जाने में सहभागी होने के पाप से अपने को अलग रखना चाहते थे। इसलिए उन्हें काफी लंबी यात्रा करनी पड़ी। उन्हें लंबे रास्ते से जाना पड़ा, क्योंकि छोटा रास्ता वही था जिससे वे लोग आए थे। और वे काफी वृद्ध व्यक्ति थे, लेकिन फिर भी उन्होंने पहाड़ों और रेगिस्तानों से गुजरते हुए अपने देश वापस जाने के लिए उस लम्बे कठिन रास्ते से लौटना ठीक समझा। वे लोग उसी रास्ते से वापस इसलिए नहीं जाना चाहते थे क्योंकि वह रास्ता राजधानी होकर गुजरता था वहां सम्राट बैठा उनकी प्रतीक्षा कर रहा था।

जीसस क्रास पर अपने विशिष्ट पारिभाषिक शब्दों के प्रयोग के कारण ही चढ़ाए गए क्योंकि आंतरिक साम्राज्य को पाने की बात कर रहे थे। यद्यपि वह बाहर के साम्राज्य को पाने की बात नहीं कर रहे थे और न वह उन खजानों को पाने का जिक्र कर रहे थे जिन्हें तुम जानते हो, बल्कि वह तो अज्ञात सम्पदा को पाने की बात कर रहे थे। जहां तक बाहर के संसार का सम्बंध है, सभी खजाने थोथे और नकली है।

मैंने एक सुंदर आख्यान के बारे में सुना है

एक व्यक्ति एक शहर की सड़क पर चलता हुआ एक खुले सीवर के गट्टे में जा गिरा और उसकी टांग टूट गई। उसने नगर—निगम के विरुद्ध केस दायर करने के लिए एक प्रसिद्ध एडवोकेट की सेवाएं लीं, और दस हजार डॉलर का मुआवजा मांगा। आखिरकार वह मुकर्दमा जीत गया। नगर निगम उस निर्णय के विरुद्ध सर्वोच्च न्यायालय तक गया लेकिन उसी एडवोकेट ने वहां भी मुकद्दमा जीता। . मुआवजे की रकम निश्चित हो जाने और मिलने के बाद एडवोकेट ने अपने

मुवक्किल को बिल के साथ एक डॉलर दिया।

उस व्यक्ति ने डॉलर को देखते हुए पूछा—'' आखिर यह है क्या?" एडवोकेट ने उत्तर दिया—'' मुआवजे की मिली रकम में मेरी फीस और सभी अपीलों में हुए खर्चों को घटाते हुए शेष रकम।''

दस हजार डॉलर के हर्जाने में से सिर्फ एक डालर?

उस व्यक्ति ने उस डॉलर को फिर से देखा, उसे उलट पलट कर सावधानी से उसका अध्ययन किया और कहा—'' आखिर कुछ भी हो, यह डॉलर तो है। जो कुछ भी हुआ, उसके बदले धोखा देने के लिए यह जाली डॉलर तो है।''

लेकिन बाहर की सारी धन सम्पदा जाली और नकली ही है, सभी डालर नकली हैं। सभी रुपये नकली हैं। असली सम्पदा इस तरह बाहर नहीं मिलती, असली धन सम्पदा बाहर होती ही नहीं। नकली से असली व्यक्ति के रूपातंरण को ही बाउल नूतन मनुष्य का जन्म कहते हैं।

आओ,मेरे निकट आओ,
यदि तुम इस नूतन मनुष्य से भेंट
करना चाहते हो
तो मेरे पास आओ।
उसने उस झोली के लिए
जो भिखारी अपने कंधे पर लटकाये रहते हैं।

अपनी सारी सांसारिक सम्पत्ति को व्यर्थ जान कर छोड़ दिया है।

उसने भिखारी बनने के लिए सारी सांसारिक उपलब्धियां और सुख सम्पत्ति छोड़ दी हैं। सांसारिक उपलब्धियां क्यों छोड़ दीं? सांसारिक सुख दो कारणों से छोड़े जाते हैं। तुम्हें यह फिर समझना होगा वह व्यक्ति जो अपने पूरे जीवन में वस्तुओं का संग्रह करके जीता रहा है, उन्हें लालच के कारण छोड़ सकता है। तब नूतन मनुष्य का जन्म ही न हुआ। वह उन्हें स्वर्ग या बहिश्त में अपना स्थान सुरक्षित करने के लिए त्याग सकता है। वह सांसारिक उपलब्धियां यह देख कर भी त्याग सकता है कि मृत्यु सब कुछ ले जाएगी। यदि यही स्थिति है तो पुराना मनुष्य पुराना ही बना रहता है। भले ही वह सबकुछ त्याग दे।

भारत में ऐसा बहुत बार होता है। अधिकतर इतना ही नहीं कि वे अपनी सारी सम्पत्ति का त्याग कर देते हैं, लेकिन यदि तुम उनका निरीक्षण करो तो तुम देखोगे कि उन्होंने अभी तक अपना लोभ नहीं छोड़ा है। वास्तव में उन्होंने अपने लालच के कारण ही त्याग किया है।

मैं एक ऐसे व्यक्ति को जानता हूं जिसने कई वर्ष पूर्व दस लाख रुपयों का त्याग किया था, लेकिन वह अब भी उसका जिक्र किए चले जाते हैं। तीस वर्ष व्यतीत होगए और जब भी मैं उनसे मिलता हूं वह बार—बार यह विषय ले ही आते हैं कि उन्होंने दस लाख रुपयों का त्याग किया था। और तुम देख सकते हो कि उनकी आंखों में दस लाख रुपये चमकना शुरू हो जाते हैं।

पिछली बार जब मैंने उन्हें देखा, तो मैंने उनसे पूछा— " यदि आपने वास्तव में त्याग ही किया है, तो आप उस बारे में बात ही क्यों करते हैं २: उसका जिक्र करने की तुक क्या है? जहां तक मैं देख सकता हूं आपने उनका बिलकुल त्याग किया ही नहीं। नूतन मनुष्य का अभी जन्म नहीं हुआ है। तुम उस दस लाख रुपयों से आज भी उतने ही अधिक जुड़े हो, और सम्भवत: उससे अधिक जुड़े हों, जितने तुम पहले उन्हें पास रखते हुए जुड़े थे। अब यह विचार मात्र ही कि मैंने दस लाख रुपयों का त्याग कर दिया। तुम्हारा बैंक—बैलेंस बन गया है। अब तुम उसी याद में जी रहे हो।" मैंने उनसे कहा कि यदि आप परमात्मा के पास गए तो पहली बात जिसके द्वारा आप परमात्मा से सम्बन्ध जोड़ेंगे वह दस लाख रुपये ही होंगे। वह कहेंगे—" क्या आप जानते हैं कि मैंने दस लाख रुपयों का त्याग कर दिया।" और वह इसके बदले में अपने लिए स्वर्ग में भी कुछ विशिष्ट चीज पाने की अपेक्षा कर रहे हैं। यह मनुष्य पहले जैसा ही है, अभी नूतन मनुष्य का जन्म नहीं हुआ है। यह कृत्य उनके लिए एक ऐसा पत्र बन गया है जो अपनी मंजिल पर नहीं पहुंचा।

तुम त्याग कर सकते हो लेकिन यदि तुम अपने अहंकार के द्वारा प्रसन्न हो रहे हो, यदि तुम यह अनुभव करते हो कि तुम एक महान त्यागी हो, एक महान आत्मा अथवा संत हो क्योंकि तुमने त्याग किया है और तुम एक साधारण व्यक्ति नहीं हो, और तुम एक सांसारिक प्राणी नहीं हो तब तुम्हारा त्याग सच्चा नहीं है।

कब होता है सच्चा त्याग? जब तुम उसकी व्यर्थता समझते हो। किसी लालच के कारण नहीं। इसलिए भी नहीं क्योंकि तुमने दूसरे संसार के लिए कुछ चीज अर्जित की है, बल्कि केवल उसकी व्यर्थता जानकर ही तुमने उसे छोड़ दिया है।

त्याग करने में कोई प्रयास नहीं करना पड़ता, बस एक गहरी अंतर्दृष्टि की आवश्यकता होती है। हर सुबह तुम अपने घर की सफाई करते हो और कूड़े कर्कट का ढेर बाहर फेंक देते हो, लेकिन तुम उसकी घोषणा नहीं करते, पूरे शहर में इस बात का विज्ञापन नहीं करते कि तुमने फिर इतने अधिक कूड़े को फेंक दिया, आज सुबह फिर तुमने त्याग का एक महान कार्य किया। नहीं, तुम जानते हो कि यह व्यर्थ कूड़ा कचरा है, बात खत्म हो गई। आखिर इसमें बताने जैसी क्या बात है?

नूतन मनुष्य का जन्म तब होता है, जब तुम्हारे अंदर एक गहरी अंतर्दृष्टि होती है कि सांसारिक वस्तुओं का कोई भी मूल्य नहीं, वे केवल जाली मुद्रा की भांति है। नकली हीरे अथवा नकली भी असली हीरे ही क्यों न हो, सभी एक जैसे हैं। असली डालर उतने ही नकली हैं जितने जाली डालर। जब बाहर का पूरा संसार ही तुम्हारे लिए निर्मूल्य है तो वही सच्चा त्याग है। तब तुम उससे बंधे हुए नहीं हो। मुक्त हो।

और बाउल गाते हैं।

मेरे जतन से संवारे गए केश अभी भी संवरे हुए और सूखे हैं।
यद्यपि मैं धारा में खड़ा हुआ
और नदी में लगभग तैरता हुआ पानी उछाल रहा हूं।
लेकिन फिर भी जल मेरा स्पर्श नहीं कर सकता।
तुम जैसे ही सागर तट पर आओ
अपने पैरों के तलुवे सूखे रखो
उसी घर में रहते हुए बंधनों में सहभागी बनो
लेकिन रहो बिना किसी से बंधे हुए।
ओ मेरे मूर्च्छित हृदय!
तू अंतर्धारा की खोज में टटोलते हुए
व्यर्थ ही एक जगह से दूसरी जगह भटक रहा है।
तेरे ही हृदय—सागर में एक अनमोल रतन छिपा है।
उस जीवन को कैसे अच्छा मानें।
यदि तू उस सहज स्वाभाविक मनुष्य से
जो तेरी ही देह में निवास करता है।
सम्पर्क करने में असफल रहा है?
कांच के एक टुकड़े के लिए सोना मत दे
और नरक देखने के लिए स्वर्ग को मत छोड़
संसार की भीड़ में वहां चारों ओर भटकने में शुभ क्या है?
वह शाश्वत नायक तो तेरे अपने ही छोटे से कक्ष में रहता है
ओ मेरे हृदय!
तेरा अपना कहने को वहा है ही कौन?
तू किसके लिए अपने आंसुओ को व्यर्थ बहा रहा है?
भाई और मित्र उन सभी को वहीं बना रहने दे
यहां इस संसार में तेरा अपना प्रिय जीवन भी
मुश्किल से ही तेरा अपना है।
तू अकेला आया है
और अकेला ही जायेगा।

त्याग का पूरा विचार ही दृष्टि और समझ का है, चीजों को उनके वास्तविक रूप में देखने का है। तुम्हें संसार से भाग जाने की कोई जरूरत नहीं है। तुम संसार में बने रह सकते हो और फिर भी पूरी तरह उससे बंधन मुक्त हो सकते हो। लेकिन यदि तुम अनुभव करते हो—'' अनावश्यक रूप से बोझ को क्यों ढोया जाये तो

तुम संसार को छोड़ भी सकते हो। लेकिन स्मरण रहे, संसार का इस तरह से या उस तरह से कोई भी मूल्य नहीं है। यदि उसका कोई मूल्य ही नहीं है, तो उसके त्याग का भी कोई मूल्य नहीं हो सकता। यदि वह मूल्यवान है, केवल तभी उसका त्याग करना भी मूल्यवान हो सकता है। लेकिन तब उसको त्यागना जरूरी नहीं है, वह केवल मूल्यहीन है। वह एक सपने की तरह है। जब तुम जागते हो, तो प्रत्येक चीज विलुप्त हो जाती है।''

तुम अकेले आये हो, तुम अकेले ही जाओगे, और उन दोनों के मध्य में ही स्वप्न का अस्तित्व है। सपने को समझने के लिए और उसके प्रति सजग बनने के लिए ही नूतन मनुष्य का जन्म होता है।

बाउल कहते हैं—'' यदि तुम नूतन मनुष्य से मिलना चाहते हो तो तेरे पास आओ।''

वह पूरे संसार को आमंत्रित करता है, मुझे देखने के लिए आओ, नूतन मनुष्य का जन्म हो गया है।

'' उसने उस झोली के लिए जो भिखारी अपने कंधे पर लटकाए रहते हैं, अपनी सभी सांसारिक उपलब्धियों को व्यर्थ जान कर छोड़ दिया है।''

वह शाश्वत काल की देवी, मां काली का नाम लेता है, जब भी वह गंगा में खान करने के लिए उनमें उतरता है।

नूतन मनुष्य अनंत—समय या नित्यता में रहता है, जब कि साधारण मनुष्य समय में रहता है।

यह शब्द काली समझ लेने जैसा है। काली समय या काल की देवी अर्थात् मां है। संस्कृत में समय को काल कहते हैं और काल की मां—काली, अर्थात् समय की मां। लेकिन समय की मां, समय के पार है। समय का जन्म उससे ही हुआ है, लेकिन वह गर्भ जिससे समय का जन्म हुआ, वह नित्यता या अनंत समय है। यह नित्यता ही समय की मां है, शाश्वतता का मात्र प्रतिबिंब है समय। बाउल काली मां—समय—की ही पूजा करते हैं। वे इसी नित्यता की खोज करते हैं उसकी नहीं, जो बदलती रहती है, लेकिन उसकी जो हमेशा हमेशा बनी ही रहती हैं, जो सभी शब्दों की भीड़ से परे है, पूरी तरह थिर और स्थाई है। वे अस्तित्व की उसी धुरी की खोज करते हैं, प्रतीक रूप में उसी को काली कहा जाता है।

यह शब्द काल बहुत अर्थपूर्ण है। एक अर्थ है—तो समय और दूसरा अर्थ है मृत्यु।

उसी शब्द का अर्थ है ' समय ' और उसी शब्द का अर्थ है ' मृत्यु '। यह बहुत सुंदर है, क्योंकि समय ही मृत्यु है। जिस क्षण तुम समय में प्रवेश करते हो, तुम मरने के लिए तैयार रहते हो। जन्म के साथ ही मृत्यु तुम्हारे अंदर प्रविष्ट हो जाती है। जब बच्चा जन्म लेता है, वह मृत्यु के क्षेत्र में प्रविष्ट हो जाता है जो जन्मदिवस है। वही मृत्यु दिवस भी है। अब केवल एक ही चीज निश्चित है, वही मृत्यु दिवस भी है। अब केवल एक ही चीज निश्चित है कि उसे मरना होगा। इसके अलावा हर चीज अनिश्चित है, वह हो भी सकती है और नहीं भी हो सकती है। लेकिन जिस क्षण बच्चा जन्म लेता है उसी क्षण अपनी पहली सांस लेता है, अब एक चीज ही पूरी तरह सुनिशिइचत है कि उसकी मृत्यु होगी।

जीवन में प्रवेश करना ही मृत्यु में प्रवेश करना है, समय में प्रवेश करना है, मृत्यु में प्रवेश करना है। समय ही मृत्यु है, इसलिए संस्कृत का शब्द काल बहुत सुंदर है। इसका अर्थ समय और मृत्यु दोनों ही है। और काली का अर्थ है समय और मृत्यु दोनों के पार। नित्यता मृत्युहीनता है। इस नित्यता को कैसे खोजा जाए? इसकी विधि क्या है? इसके लिए तुम्हें समय की विधि अथवा प्रगति को समझना होगा।

समय की प्रगति समानान्तर है? एक क्षण गुजरा है, तब दूसरा क्षण आता है। वह भी गुजर जाता है, तब दूसरा क्षण आता है— क्षणों का एक जुलूस, क्षणों की एक पंक्ति.....एक गुजरता है, तब दूसरा आता है, दूसरा गुजरता है तब एक और दूसरा आता है। यह समानांतर है।

नित्यता लम्बवत है: तुम क्षण में गहरे उतरते हो हो, एक पंक्ति में गति न करते हुए उसकी गहराई में उतरते हो। तुम अपने आपको उस क्षण में डुबो देते हो। यदि तुम किनारे पर खड़े रहो, तब नदी बहती हुई गुजर जाती है। सामान्यतया हम समय के किनारे पर खड़े रहते हैं। नदी आगे बढ़ती जाती है, एक क्षण दूसरा क्षण और फिर अगला क्षण और क्षणों का क्रम जारी रहता है। सामान्य रूप से हम लोग इसी तरह जीते हैं, इसी तरह समय में जीते हैं।

तब वहां एक दूसरी विधि है, नदी में छलांग लगा जाओ क्षण में डब जाओ यहीं और अभी। तब समय अचानक रुक जाता है। तब तुम एक पूरी तरह से भिन्न आयाम में गतिशील होते हो, यह नित्यता का लम्बवत आयाम है। जीसस का क्रॉस का यही अर्थ है।

क्रॉस चिह्न का प्रतीक है। समय का। यह दो लकीरों से बनता है, एक लम्बवत और एक समानांतर। समानांतर लकीर जीसस के हाथ फैले हैं, और लम्बवत लकीर पर उनका पूरा शरीर खड़ा है। हाथ प्रतीक है— कार्य के : करने के, वश में रखने के। ' वश में रखना ', समय के अंदर होता है— " होना " नित्यता में होता है। इसलिए तुम जो कुछ भी करते हो, वह समय में होता है, तुम जो कुछ भी हो, वह नित्यता में है, तुम जो कुछ भी प्राप्त करते हो, वह समय के अंदर है, जैसा कुछ भी तुम्हारा स्वभाव है वह नित्यता में है।

कुछ प्राप्त करने और कुछ करने से ' ही ' होने की ओर परिवर्तन होना शुरू हो जाता है। इसी क्षण भी यह मोड़ आ सकता है। इसी क्षण यदि तुम अपना अतीत और भविष्य भूल जाओ, तब समय रुक जाता है। तब कुछ भी गतिशील नहीं होता, तब प्रत्येक चीज पूरी तरह शांत होती है। और तुम अभी और ' यहीं ' में डूबना शुरू हो जाते हो। यह ' अभी ' ही नित्यता है।

काली प्रतीक है—'' अभी का " नित्यता का पूर्ण सत्य का। क्षण—— क्षण जीना और भूत तथा भविष्य के बारे में फिक्र न करना ही नूतन मनुष्य बनने का रास्ता है।

साधारण शब्द भी अज्ञान और अविश्वास को मिटा सकते हैं
काली और कृष्ण एक ही है।
शब्दों में अंतर हो सकता है
लेकिन अर्थ ठीक—ठीक वही है।
वह जिसने शब्दों के अवरोध तोड़ दिए
उसने सारी सीमाओं पर विजय प्राप्त कर ली।
अल्ला या जीसस,
मोजेज या काली
अमीर या गरीब
साधूया मूर्ख
उसके लिए तो यह सभी एक ही हैं।

बहुत ही महत्त्वपूर्ण वाक्य है—'' साधारण शब्द भी अज्ञान और अविश्वास को मिटा सकते हैं।'' यदि तुम सुन सको, तो बहुत साधारण शब्द ही काफी है। यदि तुम ग्राहक बनने में समर्थ हो सको, तो ऐसे व्यक्ति के वचन, जो जानता है यथेष्ट हैं। लेकिन यदि तुम नहीं समझते, तब चीजें बहुत जटिल बन जाती है। तुम्हारा न समझना और तुम्हें ग्राहकता न होने से चीजें जटिल हो जाती हैं। वह भ्रम उत्पन्न करती हैं। तुम्हें उलझाती हैं वह तुम्हारे अस्तित्व में कोलाहल उत्पन्न करती हैं। यदि तुम अपने मन के दखल दिए बिना मौन रहकर सुन सको, तब साधारण शब्द ही अज्ञान और अविश्वास मिटा सकते हैं।

बाउल कहते हैं:

प्रिय मित्र!

यदि तुम मुझे ऐसा करने से रोकते हो, तो मैं असहाय हूं।

मेरे गीतों में ही मेरी प्रार्थनाएं गुंथी हैं।

कछ पुष्प अपने सुंदर रंगों के जादू के द्वारा

और दूसरे पुष्प जो गहरे रंग के हैं,

अपनी सुवास के द्वारा प्रार्थना करते हैं।

जैसे वीणा अपने झंकृत तारों के द्वारा प्रार्थना करती है।

उसी तरह मैं भी

अपने गीतों के द्वारा प्रार्थना ही करता हूं।

बाउल अधिक दर्शनशास्त्र नहीं जानते, वे दार्शनिक नहीं है। वे इसी पृथ्वी के साधारण मनुष्य हैं। वे बहुत सहज और सरल व्यक्ति हैं, जो नृत्य कर सकते हैं और गीत गा सकते हैं। उनके शब्द बहुत सरल हैं। यदि तुम प्रेम करते हो, यदि तुम श्रद्धा करते हो, तो उनकी छोटी—छोटी मुद्राएं ही बहुत कुछ स्पष्ट कर देती हैं।

और यह प्रश्न सदा से ही प्रेम और श्रद्धा का है। क्योंकि जितना अधिक आत्मज्ञान तुम जानते हो तुम उतने ही अधिक उलझ जाते हो। और तुम जितने अधिक दर्शनशास्त्र से परिचित होते हो, तुम्हारी समझ विकसित होने की संभावना उतनी ही कम हो जाती है, तुम जितनी अधिक जानकारी बटोरोगे, तुम्हारी समझ उतनी ही कम होगी। तुम बहुत अधिक बादलों से घिर जाओगे और विचारों का धुंवा तुम्हें स्पष्टता से देखने की अनुमति नही देगा। तुम्हारा दर्पण धूल से भर जाएगा।

साधारण शब्द भी अज्ञान और अविश्वास को मिटा सकते हैं।

काली और कृष्ण एक ही हैं।

बाउल कहते हैं—'' हम लोग हिंदू मुसलमान और ईसाई के बीच कोई भेद नहीं करते.. काली और कृष्ण एक ही हैं। वे कहते हैं, हम लोग स्त्री और पुरुष के बीच भी कोई भेद नहीं करते। काली और कृष्ण एक ही हैं, पुरुष और स्त्री एक ही हैं।'' यह उनकी अंतर्दृष्टियों में से एक है, यदि तुम वास्तव में गहरे प्रेम और श्रद्धा के साथ गीत गाते हुए नृत्य कर सकते हो, तो तुम्हें यह अनुभव होगा कि पुरुष और स्त्री दो अलग— अलग अस्तित्व नहीं हैं। तुम्हारे अंदर एक नई रासायनिक प्रक्रिया शुरू हो जाती है, और तुम्हारे अंदर का पुरुष पिघलकर अंदर की स्त्री से एक हो जाता है.....काली और कृष्ण एक हो जाते हैं।

वे गाते हैं:

जैसे ही मेरे अंदर स्त्री और पुरुष प्रेम में पिघलकर एक हो जाते हैं

उसके सौंदर्य की द्युति—

दो पंखडियों के कमल में संतुलित होकर

मेरे अंदर ही खिलती है।

उस सौंदर्य की द्युति से मेरी आंखें चौंधा जाती हैं।

चंद्रमा के प्रकाश से दीप्तिवान किरणें

और सर्पों के फणियों पर दमकती मणियों का सुनहरा प्रकाश

मेरी त्वचा और अस्थियों को स्वर्ण में बदल देता है।

ऐसा तभी तो होता है जब मेरे अंदर के ही स्त्री और पुरुष मिलते हैं,

जब अंदर कृष्ण और काली एक हो जाते हैं।

मेरी त्वचा और अस्थियां स्वर्णमयी हो जाती हैं।

मैं हूं प्रेम का अनंत जल— भंडार जो लहरों से जीवंत है,

जबकि इस जल की अकेली एक बूंद ही विकसित होकर

इतना गहरा सागर बन जाती है।

जिसमें नौकायन नहीं हो सकता।

पुरुष की पूरी समस्या ही यही है कि स्त्री से मिलन कैसे हो और स्त्री की भी पूरी समस्या है कि पुरुष से कैसे मिलन हो।

सुदूर पूरब के बहुत देशों में एक बहुत पुरानी कल्पित कथा कही जाती है। वे कहते हैं कि परमात्मा ने पुरुष और स्त्री को एक साथ दो अलग— अलग अस्तित्व के रूपों में बनाकर, एक ही शरीर में जुडा हुआ बनाया। लेकिन तब कठिनाई शुरू हो गई। वहां समस्याएं खड़ी होने लगीं और संघर्ष शुरू हो गया। स्त्री यदि पूरब की ओर जाना चाहती थी तो उस ओर पुरुष नहीं जाना चाहता था। अथवा यदि पुरुष कुछ काम करना चाहता था तो स्त्री विश्राम करना चाहती थी। लेकिन वे एक साथ थे, उन दोनों के शरीर जुडे हुए थे। इसलिए उन्होंने परमात्मा से शिकायत की और परमात्मा ने काट कर उन दोनों के शरीर अलग— अलग कर दिए।

तब से हर पुरुष अपनी उसी स्त्री की खोज कर रहा है और प्रत्येक स्त्री अपने पुरुष की खोज कर रही है। अब तो इतनी बड़ी भीड़ हो गई है कि यह खोज पाना कठिन है कि कौन सी तुम्हारी स्त्री और कौन सा तुम्हारा पुरुष है। इतनी अधिक मुसीबत है और प्रत्येक व्यक्ति गलत गदम उठाता अंधेरे में टटोल रहा है। तुम्हें अपनी स्त्री को खोज पाना लगभग असम्भव हो गया है। तुम उसे खोजोगे कैसे?

कथा कहती है कि यदि तुम उसे खोज सको तो हर चीज ठीक हो जायेगी— तुम दोनों फिर से एक शरीर हो जाओगे। लेकिन यह खोज पाना बहुत कठिन है। लेकिन तुम्हें अपनी स्त्री को खोज लेने का एक रास्ता है, क्योंकि वह स्त्री तुम्हारे बाहर नहीं है। बाहर तो अधिक से अधिक समानांतर समानताएं हैं।

जब तुम किसी स्त्री से प्रेम करने लगते हो, तो वास्तव में होता क्या है? होता यह है कि बाहर की स्त्री थोड़ा बहुत तुम्हारे अंदर की स्त्री की छवि की प्रतिपूर्ति करती है। उस छवि के अनुरूप अपना समायोजन करती है भले ही सौ प्रतिशत न सही लेकिन इतना तो करती है जिससे प्रेम हो सके। जब तुम किसी पुरुष से प्रेम करने लगती हो तो क्या घटता है। तुम्हारे अंदर कोई चीज खटपट करने लगती है और कहती है—'' हां! यही है वह पुरुष एक सच्चा पुरुष है।'' यह कोई तर्क पूर्ण निष्कर्ष नहीं है और न यह तथ्यों के पार कोई तार्किक विवेचना है, यह ऐसा भी नहीं है कि तुम उस पुरुष की सभी अच्छाइयां और बुराइयां, खोज लेती हो, और तब तुम तै करती हो, अथवा तुम उस पुरुष की संसार के अन्य पुरुषों से तुलना करती हो और तब उसे चुनती हो। नहीं, अचानक धुंध और धुवें से कुछ नजर आता है, और कोई चीज घट जाती है। अचानक तुम देखती हो और तुम्हें लगता है यही वह पुरुष जिसके लिए तुम इंतजार कर रही थी, जिसकी तुम्हें जन्म जन्मों से प्रतीक्षा थी।

होता क्या है? तुम अपने साथ एक पुरुष की छवि अपने अंदर लिए चलते हो, तुम अपने अंदर एक स्त्री की छवि बसाये होते हों। तुम स्त्री और पुरुष दोनों ही हो अंदर से, और तुम बाहर ही देखें चले जाते हो। कोई भी सौ प्रतिशत उस छवि के अनुरूप नहीं मिलने का, क्योंकि बाहर तुम जिस स्त्री को पाते हो, उसकी भी तुम्हारे बारे में अपनी एक अलग छवि है, और तुम्हारे अंदर भी अपनी स्त्री की अलग छवि है। दोनों छवियां एक दूसरे से मिल जाएं यह बहुत अधिक कठिन है। इसलिए सभी विवाह हमेशा टूटने की कगार पर होते हैं, और लोग

धीमे— धीमे यह सीखते हैं कि कैसे शांति से जीवन गुजारा जाए। वे सीखते हैं कि जीवन की नौका किसी चट्टान से न टकरा जाये। लेकिन बाहर इससे अधिक और कुछ नहीं हो सकता।

बाउल कहते हैं—'' तुम्हारे अंदर गहरे में दोनों ही अस्तित्व में हैं—कृष्ण और काली। उनका वहां मिलन होने दो। तंत्र की पूरी विधि यही है, तुम कैसे अपने अंदर के पुरुष को अपने अंदर की स्त्री के साथ मिलने की अनुमति देते हो। और जब इस मिलन के बाद ऊर्जा का एक वर्तुल बन जाता है, तब एक अंतर्संभोग घटता है, एक महान शिखर अनुभव होता है, परमानंद का एक महान विस्फोट होना शुरू हो जाता है, जिसका आरंभ तो ज्ञात है, पर उसका अंत कोई नहीं होता।''

तब तुम जीवन, एक शिखर अनुभव करते हुए परमानंद में जीते हो।

अकेली पानी की एक बूंद ही
विकसित होकर एक सागर बन जाती है
ऐसा गहरा सागर जिसमें नौकाएं नहीं चलती।
तब तुम फिर सीमित नहीं रह जाते, तुम असीम और अनंत हो जाते हो।
साधारण शब्द भी अज्ञान और अविश्वास को मिटा सकते हैं।
काली और कृष्ण एक ही है।
शब्दों में अंतर हो सकता है।
लेकिन अर्थ ठीक—ठीक वही है।
वह जिसने शब्दों के अवरोध तोड़ दिए
उसने सारी सीमाओं पर विजय प्राप्त कर ली।

शब्दों की सीमाएं तोड़ दो। अब जब मैं तुमसे बातचीत कर रहा हूं मैं शब्दों का प्रयोग कर रहा हूं। तुम मेरे शब्दों को सुन सकते हो, तब तुमने मुझे सुना ही नहीं। तुम इस तरह भी सुन सकते हो, कि शब्द अधिक समय तक अवरोध न बन सकें, बल्कि वाहन बन जायें। वे और अधिक समय तक समस्याएं उत्पन्न न करें, लेकिन तुम शब्दों के ठीक मध्य में सुनो, दो शब्दों के मध्य अंतराल में। तुम मेरे मौन को सुनो। तब शब्द और उनके अवरोध टूट जाते हैं, तब सीमाओं पर विजय प्राप्त कर ली जाती है।

अल्लाह या जीसस
मोजेज या काली
धनी अथवा निर्धन
साधु या मूर्ख
उसके लिए तो ये सभी एक ही हैं।
यही है वह नूतन मनुष्य।

अब वह कोई द्वैतता नहीं जानता। वह साधू और बेवकूफ व्यक्ति के मध्य कोई अंतर या भेद नही करता। वह स्त्री और पुरुष के मध्य भी कोई अंतर नहीं समझता। सभी द्वैतताएं एक हो जाती हैं, सारी द्वैतता विसर्जित हो जाती है। एक बार तुम शब्दों को गिरा दो, द्वैतता भी गिर जाती है।

भाषा ही द्वैतता उत्पन्न करती है। भाषा का अस्तित्व ही द्वैतता के द्वारा है। वह अद्वैत को अभिव्यक्त नहीं कर सकती। यदि मैं कहता हूं कि ' दिन ' तुरंत ही मैं ' रात ' का सृजन कर देता हूं। यदि मैं कहता हूं ' अच्छा ' तुरंत ही ' बुरा ' उत्पन्न हो जाता है। यदि मैं कहता हूं ' नहीं ', बस उसकी बगल में ' हां ' का भी अस्तित्व है। भाषा का अस्तित्व केवल विरोध के द्वारा ही है।

इसी कारण हम देखते हैं कि जीवन हमेशा विभाजित है परमात्मा और शैतान। भाषा छोड़ दो, भाषा का यह ढांचा गिरा दो। एक बार तुम्हारे मन में भाषा न रहे और तुम वास्तविकता या सत्य में सीधे देख सको। दिन में रात भी है। अचानक तुम हंसने लगोगे कि इतनी लंबी अवधि से उसे चूकते क्यों रहे? दिन प्रत्येक दिन रात में बदलता है, रात, दिन में बदलती है और फिर सुबह आती है और तुम उसे चूकते रहे हो। जीवन सदा ही मृत्यु की ओर गतिशील है। मृत्यु फिर से हमेशा जीवन की ओर बढ़ रही है। और तुम उससे चूकते जा रहे हो। वे दो नहीं है, वे पूरी तरह एक ही हैं। यह दो नहीं है। अद्वैत है। यही सबसे अधिक सारभूत धर्म है।

क्योंकि उसकी चेतना अब और भाषा के द्वारा विभाजित नहीं होती, अब वह संसार को शब्दों के माध्यम से नहीं देख रहा है। वह पागल जैसा दिखाई देता है, वह अब अपने अस्तित्व में ही डूबा हुआ है, वह अपने ही प्रकाश में खो गया है। और यह प्रकाश इतना अधिक व्यापक और प्रखर है, जैसे मानो एक हजार एक सूरज एक साथ उदित हो गए हों। यह प्रकाश बहुत चौंधाने वाला है।

अपने ही खयालों में खोया हुआ
वह दूसरों को पागल जैसा दिखाई देता है।
वह संसार का स्वागत करने के लिए
अपनी भुजाएं फैला कर
उन सभी को अपनी नाव पर
जो अभी जीवन के किनारे से ही बंधी है।
उस पार ले जाने के लिए
आमंत्रित करता है।

और वह पुकारे चले जाता है। आओ मेरे पास आओ। यदि तुम उस नूतन मनुष्य से भेंट करना चाहे हो, और वह नाव तैयार है। और उसकी नाव जीवन के विरोध में नहीं है, वह जीवन तट से ही बंधी हुई है। वह नकारात्मक नहीं है। और वह कह रहा है—'' आओ! मैं तुम्हें दूसरे किनारे पर ले जा सकता हूं। आओ! और मैं तुम्हें नूतन बना सकता हूं आओ! और मैं तुम्हें शाश्वतता में ले जा सकता हूं।''

आज बस इतना ही!

छठवां प्रवचन

नृत्य करने योग्य बनो

दिनांक 26 जून 1976; श्री ओशो आश्रम पूना।

प्रश्न सार:

पहला प्रश्न : प्यारे ओशो! कल आपने कहा था कि अंतर्यात्री के पास केवल दिशा होती है? और लक्ष्य नहीं। इन दोनों के मध्य क्या अंतर है? क्या आप इसे स्पष्ट करने की कृपा करेने?

यह उत्तर बहुत सूक्ष्म है, लेकिन यह वैसा ही अंतर है। जैसे वहां मन और हृदय के मध्य होता है, जैसा तर्क और प्रेम के मध्य होता है या यह कहना अधिक उचित होगा, जैसे वहां गद्य और कविता के मध्य होता है।

एक मंजिल या लक्ष्य एक बहुत स्पष्ट चीज है, दिशा गहरे अंतर्ज्ञान द्वारा हुआ अनुभव है। मंजिल कुछ ऐसी चीज है जो तुम्हारे बाहर होती है, वह एक वस्तु की तरह अधिक होती है। दिशा या मार्ग एक आंतरिक अनुभव है, वह वस्तु की तरह नहीं है, लेकिन तुम्हारी अपनी वैयक्तिकता है। तुम दिशा का अनुभव कर सकते हो, लेकिन उसे जान नहीं सकते। तुम मंजिल को जान सकते हो? तुम उसका अनुभव नहीं कर सकते। मंजिल या लक्ष्य भविष्य में होता है। एक बार यदि तुमने तै कर लिया तो तुम अपना जीवन उस ओर व्यवस्थित करना शुरू कर देते हो।

तुम भविष्य को कैसे निश्चित कर सकते हो? तुम अज्ञात को तय करने वाले होते कौन हो? भविष्य को तैयार करना कैसे सम्भव है। भविष्य वह है, जो अभी तक ज्ञात नहीं है, भविष्य एक खुली हुई संभावना है। लक्ष्य को तय करने से तुम्हारा भविष्य एक खुली हुई संभावना हो जाता है। लक्ष्य को तय करने से तुम्हारा भविष्य फिर आगे भविष्य रही नहीं जाता। क्योंकि अब वह आगे के लिए खुला नहीं रहता। अब तुमने बहुत से विकल्पों में से एक विकल्प चुन लिया है। क्योंकि जब सभी विकल्प खुले थे, वह भविष्य था। जब सभी विकल्प छोड़ दिए गए हैं, और केवल एक विकल्प चुन लिया गया है। अब वह आगे भविष्य रह ही नहीं गया, वह तुम्हारा अतीत है।

अतीत ही तै करता है, जब तुम एक लक्ष्य निर्धारित करते हो। तुम्हारे अतीत का अनुभव और तुम्हारे अतीत की जानकारी ही उसे तय करनी है। तुम भविष्य को मार देते हो। तुम भविष्य को मार देते हो। तब तुम अपना ही अतीत दोहराते जाते हो, भले ही वह थोड़ा सा सुधारा हुआ हो, यहां और वहां उसमें थोडा सा परिवर्तन हो, या तुमने अपनी सुविधा के अनुसार उसमें रंग—रोगन लगा दिया हो, या उसका नवीनीकरण किया हो। लेकिन फिर भी वह अतीत से ही है। यही वह तरीका है जिससे कोई भी व्यक्ति भविष्य की लीक खो देता है वह मृत हो जाता है वह एक मशीन की तरह कार्य करना शुरू कर देता है।

दिशा जीवंत होती है, वह इसी क्षण होती है। वह भविष्य के बारे में कुछ भी नहीं जानती, वह अतीत के बारे में भी कुछ नहीं जानती, लेकिन उसमें स्पन्दन होता है, धड़कन होती है, लेकिन वह अभी और यहीं होती है। और इस स्पन्दित क्षण में से अगले क्षण का जन्म होता है। तुम्हारे द्वारा किसी लिए गए निर्णय के अनुसार नहीं, लेकिन केवल इसलिए क्योंकि तुम इस क्षण को जीते हो, और तुम इसे पूरी समग्रता से जीते हो और तुम इस क्षण को इतनी पूर्णता से प्रेम करते हो, कि इसी पूर्णता और समग्रता से अगले क्षण का जन्म होता है। यह

एक दिशा होने जा रहा है। वह दिशा तुम्हारे द्वारा दी नहीं गई, वह तुम्हारे ऊपर थोपी नहीं गई, वह स्वयं प्रवर्तित है। इसी को बाउल 'सहज मानुष' अथवा सहज स्वाभाविक और स्वयं प्रवर्तित मनुष्य कहते हैं।

यह सहज मनुष्य ही अथवा सच्चे मनुष्य, सारभूत मनुष्य और परमात्मा तक अथवा अपने ही अंदर जाने का मार्ग है। तुम इसकी दिशा तय नहीं कर सकते, तुम केवल इस क्षण को जी सकते हो, जो तुम्हें उपलब्ध है। जीने से ही दिशा का जन्म होता है। यदि तुम नृत्य करते हो, तो अगला क्षण एक गहन नृत्य बनने जा रहा है। वह नहीं, तुम जिसे तय करते हो, बल्कि इस क्षण तुम केवल नृत्य करते हो तुमने एक दिशा सृजित की है, तुम उसे नियंत्रित नहीं कर रहे हो। अगला क्षण और भी अधिक नृत्यपूर्ण होगा फिर और अधिक नृत्य उसका अनुसरण करेगा।

लक्ष्य मन के द्वारा तय किया जाता है। और दिशा जीते हुए अर्जित की जाती है। लक्ष्य तर्कपूर्ण है: कोई व्यक्ति डॉक्टर बनना चाहता है, कोई व्यक्ति इंजीनियर बनना चाहता है, कोई व्यक्ति वैज्ञानिक अथवा राजनीतिज्ञ बनना चाहता है, कोई व्यक्ति धनी अथवा प्रसिद्ध व्यक्ति बनना चाहता है यह सभी लक्ष्य है। और दिशा? कोई भी व्यक्ति इस क्षण को गहरे विश्वास के साथ केवल जीता है। जिसे जीवन ही तय करेगा। कोई भी व्यक्ति इस क्षण को इतनी समग्रता से जीता है कि उसी समग्रता से एक नवीनता का जन्म होता है। इसी समग्रता और पूर्णता में अतीत विसर्जित हो जाता है और भविष्य अपना रूप लेना शुरू कर देता है। लेकिन यह रूप तुम्हारे द्वारा नहीं दिया गया है, यह तुम्हारे द्वारा अर्जित किया गया है।

झेन सद्गुरु रिन्झाई मर रहा था, वह अपनी मृत्यु शैथ्या पर पड़ा था। किसी शिष्य ने उससे पूछा—'' आदरणीय सद्गुरु! आपके जाने के बाद लोग पूछेंगे आपकी सारभूत सिखावन क्या थी? आपने बहुत सी चीजें कही हैं आपने बहुत सी चीजों के बाबत बात की है, उन सभी को सघन और संक्षिप्त करना हम लोगों के लिए कठिन होगा। आप अपना शरीर छोड़ने से पूर्व कृपया स्वयं अपनी सिखावन को संक्षेप में एक वाक्य में बताने की कृपा करें जिसे हम लोग खजाना बनाकर अपने पास रख सकें। और जहां कहीं भी लोग, जो आपको नहीं जानते हैं आपकी सिखावन जानना चाहें तो उन्हें हम आपकी सारभूत सिखावन दे सकें।''

रिन्झाई ने मरते हुए भी अपनी आंखें खोलीं और सिंह गर्जना जैसी एक झेन चीख निकली। वे सभी स्तब्ध रह गए। कैप गए। वे लोग विश्वास ही न कर सके,कि एक मरते हुए व्यक्ति में भी इतनी अधिक शक्ति और ऊर्जा हो सकती है और वे ऐसी आशा भी नहीं कर रहे थे। यह अनूठा व्यक्ति सदा से ऐसा ही था, उसके बारे में निश्चय ही कुछ भी नहीं कहा जा सकता था। लेकिन इस शख्स के अनिश्चित व्यवहार के बावजूद, वे लोग किसी भी तरह से यह अपेक्षा नहीं कर रहे थे कि मरते हुए भी अपने आखिरी क्षण भी वह सिंह जैसी गर्जना भरी चीख निकाल सकते हैं। और उसे सुनकर जब उन्हें आघात लगा तो वे विस्मय विमूढ़ हो गए उनके मन रुक गए तब उन्हें वापस लाते हुए रिन्झाई ने कहा—'' यही है वह।'' यह अंतिम शब्द कहते हुए उसकी आंखें मुंद गई और वह मर गया।

यही है वह.....

यह क्षण, यह शांत और मौन से आपूरित क्षण यह क्षण जो किसी भी विचार से प्रदूषित नहीं है। पर गहन मौन जो चारों ओर व्यास हो गया था, वह विस्मय, मृत्यु पर आखिरी यह सिंह गर्जना, यही है वह।

हां, दिशा मिलती है, इस क्षण को जीने से। राह कोई ऐसी चीज नहीं है, जिसकी तुम व्यवस्था करते हो। उसकी योजना बनाते हो। यह घटती है, यह बहुत सूक्ष्म है। और तुम इसके बारे में कभी भी निश्चित न हो सकोगे, तुम उसे केवल महसूस कर सकते हो। यही वजह है कि मैं कहता हूं कि वह एक कविता की भांति है, गद्य जैसी नहीं, प्रेम के समान अधिक है कोई तर्क नहीं, कला जैसी अधिक है, विज्ञान की भांति नहीं। वह अस्पष्ट है,

धुंधली है और यही उसका सौंदर्य है इसमें एक झिझक है। जैसे घास की पत्ती पर गिरते हुए ओस झिझकती है, सुबह उगते हुए सूरज की किरणों का स्पर्श पाकर वह बस फिसल जाती है।

दिशा बहुत ही सूक्ष्म, नाजुक और आसानी से टूट जाने वाली चीज जैसी है। इसी कारण प्रत्येक व्यक्ति लक्ष्य का चुनाव करता है। माता—पिता, शिक्षक, संस्कृति, धर्म और सरकारें। यह सभी तुम्हें जीवन का एक बंधा बंधाया ढांचा देने का प्रयास करते हैं। वे नहीं चाहते कि तुम्हें स्वतंत्र और अकेला, अज्ञात में भटकने के लिए छोड़ दिया जाए। लेकिन इस तरह उन्होंने बोरियत या ऊब पैदा कर दी है यदि तुम अपना भविष्य पहले से ही जानते हो तो वह पहले ही से उबाने वाला बन गया। यदि तुम जानते हो कि ' तुम यह बनने जा रहे हो, ' तो वह पहले ही से उबा देता है।

कुरान में मुहम्मद जिस बहिश्त या स्वर्ग की बात कहते हैं, लेकिन पहले ही से उसकी भविष्यवाणी कर वे उसे एक लक्ष्य या मंजिल की भांति बना देते हैं, वह पहले ही से व्यर्थ लगने लगता है। बहिश्त शब्द अथवा इसी का समानार्थी मुस्लिम शब्द है—'' फिरदौस '' यह दोनों का एक ही मूल है जिसका अर्थ है—' चहारदीवारी से घिरा एक उद्यान ' और परमात्मा की चहारदीवारी से घिरे उद्यान में हर चीज पहले से व्यवस्थित हैं, लगभग प्रत्येक वस्तु के विवरण के साथ। वहां बहते चश्मे हैं, शराब के चश्मे हैं और लोग छायादार वृक्षों के नीचे बैठे हैं। वास्तव में मुहम्मद ने जरूर ही रेगिस्तान की गर्मी को शिद्दत से भुगता होगा। वहां लोग वृक्षों की छाया तले अपनी पत्नियों के मजे उड़ा रहे हैं। पत्नी के साथ नहीं, पत्नियों के साथ क्योंकि मुहम्मद की नौ पत्नियां थीं। इसके सिवा वे और क्या कर सकते हैं? वहां बहते चश्मों से शराब पियो, वृक्षों की छाया तले पडे गद्दों पर अपनी पत्नियों के साथ मजे करो, और इसके सिवा करने को कुछ है ही नहीं।

लेकिन तब यह सोचकर वे परेशान हो गए कि जब तुम मरोगे तब तक तुम्हारी पत्नियां भी बूढ़ी हो चुकी होगी। इसलिए अब क्या किया जाए? इसके लिए भी फिर उन्होंने प्रबंध किया। जो भले लोग हैं जिन्होंने अपना जीवन धर्म के अनुसार व्यतीत किया है, परमात्मा उनकी पत्नियों को फिर से युवा बना देगा। इसलिए यह याद रखें यदि तुम भले आदमी नहीं हो, तो तुम्हें अपनी की बीबी के साथ ही रहना होगा और तुम उसके साथ हमेशा के लिए बंध जाओगे। और नौकर भी होगे वहां, जो तुम्हारी प्रत्येक इच्छा को पूरा करेंगे। बस सोचा नहीं कि वह इच्छा पूरी हुई।

लेकिन यह सभी कुछ पहले से ही बना बनाया और निश्चित है कि यह अर्थहीन हो जाता है। इस बारे में हिंदू जैन और बौद्धों ने अधिक सूक्ष्मता से सोचा है। बौद्ध सबसे अधिक गढ़ हैं। वे निर्वाण के बारे में अधिक बात नहीं करते। वे कहते हैं प्रत्येक व्यक्ति को उसे जानना है, और उसे जानने के लिए उसमें होना होगा, अन्य कोई उपाय है ही नहीं। वे इसका वर्णन नहीं करते। वे उसका कोई विवरण नहीं देते, क्योंकि विवरण खतरनाक होंगे, सभी शब्द एक निश्चित अर्थ देते हैं और रहस्य समाप्त हो जाता है।

भविष्य एक दिशा होना चाहिए लक्ष्य नहीं। इसे निर्वाण की भांति ही अधिक होना चाहिए। जो शब्द बुद्ध प्रयुक्त करते हैं, उनका अर्थ है कि वह सब कुछ जो तुम जानते हो, वहां वैसा कुछ भी नहीं होगा। यही उनकी निर्वाण की

परिभाषा है: वह सभी कुछ जिसे तुम जानते हो, वहां नहीं होगा। वह सभी कुछ जिसका तुमने अनुभव किया है, वह वहां नहीं होगा। वह सब कुछ मिलाकर जो तुम हो, वह भी वहां नहीं होगा। कुछ चीज पूरी तरह नई होगी, कुछ चीज ऐसी होगी। जिसे तुम समझ नहीं सकते, क्योंकि तुम्हारे पास समझने वाली वह भाषा ही नहीं है, तुम्हें समझने का कोई अनुभव ही नहीं है। कुछ चीज पूरी तरह से एकदम नई—जिसके बारे में बात भी

नहीं की जा सकती। निर्वाण एक दिशा है। फिरदौस और स्वर्ग जिसकी कल्पना मुसलमानों और ईसाइयों ने की है—लक्ष्य या मंजिलें हैं, यह बात बहुत स्पष्ट और साफ है।

औसत दर्जे का मन साफ सुथरे लक्ष्यों को मांगता है, क्योंकि वह इतना अधिक असुरक्षित है कि अपनी जानकारी पर विश्वास नहीं कर सकता और न जीवन पर विश्वास कर सकता है। औसत मन को खोज से बहुत डर लगता है। और खोज ही जीवन का सबसे बड़ा रहस्य है। विस्मयविमूढ़ होने के लिए पहले ही से तैयार होने का अर्थ है कि वह व्यक्ति निर्दोष है, खोजने का प्रयास कर रहा है। और जीवन कुछ ऐसा है कि तुम खोजे ही चले जाओ। जितना अधिक तुम खोजते हो, उतना ही अधिक जानते हो कि अभी भी खोजने को बहुत कुछ और है। यह कभी भी समाप्त न होने वाली प्रक्रिया है। दिशा है यही, कभी भी समाप्त न होने वाली प्रक्रिया। स्मरण रहे यह एक प्रक्रिया या कार्यविधि है, एक गतिशीलता है। जब कि लक्ष्य एक मृत चीज है।

लक्ष्य, अहंकार के अधिकार में होता है, और दिशा होती है जीवन और अस्तित्व के अधिकार में। व्यक्ति को संसार की दिशा में गति करने के लिए गहरे विश्वास की जरूरत होती है। क्योंकि वह व्यक्ति असुरक्षा में गतिशील हो रहा है, वह अंधकार में चल रहा है। लेकिन अंधकार में एक रोमांच होता है, तुम बिना किसी नक्शो के बिना किसी पथप्रदर्शक के अज्ञात में जा रहे हो, हर कदम ही एक नई खोज है। और यह खोज केवल बाहर के संसार की ही नहीं है। इसके ही साथ— साथ तुम कुछ चीज अपने अंदर भी खोज लेते हो। एक खोजी केवल वस्तुएं ही नहीं खोजता। जैसे वह अधिक से अधिक अनजाने संसार खोजता है साथ ही साथ वह स्वयं अपने ही अंदर खोजता चल जाता है। उसकी बाहर की प्रत्येक खोज, अंदर की भी खोज होती है। तुम जितना अधिक जानते हो, तुम उतना ही अधिक जानने वाले के बारे में जानते हो। तुम जितना अधिक प्रेम करते हो, उतना ही अधिक तुम प्रेमी के बारे में जानते हो।

मैं तुम्हें कोई लक्ष्य नहीं देने जा रहा हूं। मैं तुम्हें केवल दिशा दे सकता हूं। जागृत, अनजानी, सदा विस्मित करने वाली जिसके बारे में निश्चयपूर्ण कुछ न कहा जा सके ऐसी अनिशिचित और जीव से स्पन्दित। मैं तुम्हें कोई नक्शा देने नहीं जा रहा हूं मैं तुम्हें केवल खोजने के लिए उत्कंठा और उत्साह दे सकता हूं। तब मैं तुम्हें अकेला छोड़ दूंगा। तब तुम स्वयं अपनी दिशा में आगे बड़े। विराट और अनंत में गतिशील होकर धीमे— धीमे उस पर विश्वास करना सीखो। अपने आपको जीवन के हाथों में छोड़ दो क्योंकि जीवन ही परमात्मा है। जब जीसस कहते हैं—'' तेरा ही साम्राज्य आयेगा, तू जो करेगा वही होगा।'' वह यही कह रहे हैं यदि परमात्मा मृत्यु भी लाता है तो उससे भी डरने की कोई जरूरत नहीं है। यह वही है जो मृत्यु ला रहा है, इसलिए इसका कुछ कारण होना जरूरी है, उसमें कुछ रहस्य छिपा होना जरूरी है और कुछ सिखावन भी वहां जरूर है। वह ही अपने द्वार खोल रहा है। वह मनुष्य जो विश्वास करता है, वह मनुष्य जो धार्मिक है। वह मृत्यु के द्वार पर जाकर भी पुलकित और रोमांचित हो उठता है। वह वहां भी सिंह की भांति दहाड़ सकता है। भले ही वह मर रहा हो— क्योंकि वह जानता है यहां कुछ भी नहीं मरता है—मृत्यु के अंतिम क्षण भी वह कह सकता है, ' वह यही है।' क्योंकि प्रत्येक क्षण, यह वही है। वह जीवन को सकता है। वह मृत्यु हो सकती है, वह सफलता हो सकती है, वह असफलता हो सकती है, वह प्रसन्नता हो सकती है, वह अप्रसन्नता हो सकती है। प्रत्येक क्षण..... .यह वही है।

यही है वह जिसे मैं सच्ची प्रार्थना कहता हूं। और तब तुम्हें दिशा मिलेगी। तुम्हें उस बारे में फिक्र करने की जरूरत ही नहीं, तुम्हें तैयारी करने की भी कोई जरूरत नहीं तुम श्रद्धापूर्वक अपना कदम आगे बढ़ा सकते हो।

दूसरा प्रश्न :

प्यारे ओशो! ऐसा क्यों है कि ग्रीक मंदिर डेल्फी में

लगे शिलालेख में लिखा है— 'स्वयं को जानो' और ' स्वयं को

प्रेम करो' यह नहीं लिखा?

यूनानी मन जानकारी या ज्ञान से आवेशित है। यूनानी मन ज्ञान के सम्बन्ध में ही विचार करता है, कैसे जाना जाये। यही कारण है कि ग्रीस ने दार्शनिकों, महान विचारकों तर्कशास्त्रियों और महान विचारशील मस्तिष्क वाले विद्वानों को जन्म दिया। लेकिन तीव्र उत्कंठा है।

इस संसार में जैसा मैं देखता हूं वहां दो ही तरह के मन हैं। यूनानी और हिंदू मन। यूनानी मन की व्यग्रता है जानने की और हिंदू मन की उत्कंठा है—होने की। हिंदुओं का उत्साह जानने के बारे में न होकर ' होने के ' सम्बन्ध में है।' सत '' अस्तित्वगत '' होने की ' ही पूरी खोज है—मैं कौन हूं इसे पूर्ण ढंग से जानना नहीं है। लेकिन अपने ही अस्तित्व में डूबकर इसका स्वाद लेना है, जिससे कोई भी ' होने को ' उपलब्ध हो सके—क्योंकि वहां वास्तव में जानने का और कोई रास्ता ही नहीं है। यदि तुम हिंदुओं से पूछो तो वे कहेंगे होने की अपेक्षा जानने का और कोई दूसरा रास्ता है ही नही। तुम प्रेम को कैसे जान सकते हो? इसका एक ही रास्ता है। स्वयं प्रेमी बनकर अनुभव करो। प्रेमी बनो और तुम प्रेम को जान जाओगे। और यदि तुम अनुभव से बाहर खड़े केवल एक देखने वाले की तरह से जानने की कोशिश कर रहे हो तो तुम प्रेम के बारे में तो जान सकते हो लेकिन प्रेम को कभी न जान सकोगे।

यूनानी मन के द्वारा ही पूरा वैज्ञानिक विकास हुआ है। आधुनिक विज्ञान ग्रीक मन का बाई प्रोडक्ट है। आधुनिक विज्ञान का आग्रह आवेगरहित होने पर है, बाहर दूर खड़े, बिना किसी पूर्वाग्रह के निरीक्षण करते रहे। वस्तुगत और अवैयक्तिक बनो। यदि तुम वैज्ञानिक बनना चाहते हो तो ये ही उसकी मूल जरूरतें हैं। अपनी भावनाओं द्वारा कोई भी रंग मत दो, बिना किसी उद्देश्य के तटस्थ बने रहो और किसी भी तरह किसी कल्पना में कोई रुचि मत लो, और केवल तथ्यों की ओर ही देखो। उनसे कोई सम्बंध मत जोड़ो और उनके बाहर बने रहो। उनके सहभागी मत बनो। यही है ग्रीक उत्कंठा—जानने के लिए एक उद्वेगरहित खोज।

इसने सहायता की लेकिन केवल एक ही दिशा में सहायता की; और वह दिशा है पदार्थ की। किसी पदार्थ को जानने का यही एक तरीका है। इस तरह से तुम मन को कभी भी न जान सकते, केवल पदार्थ को ही जान सकते हो। इस तरह से तुम कभी भी चेतना को नहीं जान सकते। तुम केवल बाहर ही बाहर जान सकते हो।

तुम कभी भी अंदर नहीं जान सकते, क्योंकि अपने अंदर जाते ही तुम उससे सम्बन्धित हो जाते हो। उससे अलग बाहर खड़े होने का कोई रास्ता ही नहीं है। तुम पहले से ही वहां हो। अंदर तुम स्वयं हो ही—तुम वहां से बहार जा कैसे सकते हो? मैं एक पत्थर, चट्टान या एक नदी को बिना किसी भावावेग के देख सकता हूं क्योंकि मैं उनसे अलग हूं। मैं स्वयं अपने आपको ही भावरहित होकर कैसे देख सकता हूं? मैं उससे सम्बंधित हूं। मैं उससे बाहर नहीं हो सकता। मैं स्वयं को अस्तित्व से घटाकर वस्तु में नहीं बदल सकता। मैं विषय बना ही रहूंगा। और मैं विषय ही बना रहूंगा मैं चाहे कुछ भी करूं, मैं ही जानने वाला ज्ञाता हूं मैं वह नहीं हूं जिसे जान गया, अर्थात् ज्ञेय।

इसलिए यूनानी मन धीमे— धीमे पदार्थ की ओर सरकता गया। उसका मूलमंत्र, जो डेल्की मंदिर के शिलालेख पर खुदा है—'' स्वयं को जानो, पूरी वैज्ञानिक प्रगति का स्रोत बन गया। लेकिन धीमे— धीमे आवेगरहित होकर जानने का विचार ही पश्चिमी मस्तिष्क को उसके स्वयं के अस्तित्व से दूर ले गया।''

हिंदू मन, जो संसार में दूसरे तरह का मन है—की दिशा ही दूसरी है, वह दिशा है—' होने की ' उपनिषद में सद्गुरु उद्दालक ऋषि अपने पुत्र और शिष्य श्वेतकेतु से कहते हैं—'' तत्त्वमसि श्वेतकेतु '' वह तू ही है। वहां, ' वह और तू ' में कोई भी भेद नहीं है। वही तेरी वास्तविकता और सत्य है उनमें कोई भी भेद या अतर नहीं है।

यहां जैसे तुम एक चट्टान को जानते हो, वहां उसे जानने की कोई संभावना नहीं है। जैसे तुम दूसरी चीजों को जानते हो, उस तरह वहां उसे जानने की कोई संभावना ही नहीं है, तुम केवल उसमें हो सकते हो।

वास्तव में डेल्की के मंदिर पर यह जरूर लिखा है—'' स्वयं को जानो।'' यह यूनानी मन की ही अभिव्यक्ति है क्योंकि वह मंदिर यूनान में है और शिलालेख भी यूनान का ही है। यदि वह मंदिर भारत में हुआ होता तो शिलालेख पर लिखा होता—'' स्वयं वैसा ही बनो।'' क्योंकि तू वही है। हिंदू धीमे— धीमे गति करता हुआ स्वयं अपने ही अस्तित्व के निकट से निकट पहुंचता है यही कारण है कि वह अवैज्ञानिक है। वह धार्मिक बन गया है लेकिन अवैज्ञानिक होकर, वह अंर्तमुखी बन गया है, लेकिन तब उसने बाहर के संसार रूपी सागर में अपने जीवन रूपी जहाज के सारे लंगर तोड़' दिए हैं। हिंदू मन अंदर से बहुत समृद्ध बन गया लेकिन बाहर वह बहुत निर्धन हो गया।

एक बहुत बड़े संश्लेषण की या जुड़ने की जरूरत है। हिंदू और यूनानी मन के बीच एक संश्लेषण होना बहुत जरूरी है।

यह पृथ्वी के लिए बहुत बड़ा वरदान हो सकता है। अब तक तो यह संभव नहीं हुआ, लेकिन अब वहां बुनियादी आवश्यकताएं और एक संश्लेषण होना संभव है। पूरब और पश्चिम बहुत सूक्ष्म रूप से एक दूसरे से मिल रहे हैं। पूरब के लोग विज्ञान सीखने पश्चिम जा रहे हैं, जिससे वैज्ञानिक बन सकें और पश्चिम से खोजी लोग पूरब धर्म सीखने के लिए आ रहे हैं। एक दूसरे में लीन होकर एक महान मिश्रण तैयार हो रहा है।

भविष्य में पूरब, पूरब ही नहीं बना रह जायेगा और पश्चिम, पश्चिम ही होने तक ही सीमित रह जाने वाला नहीं है। पूरी पृथ्वी एक विश्वव्यापी गांव बनने जा रहा है। एक ऐसा छोटा स्थान जहां सारे भेद मिट जाएंगे। और तब पहली बार एक महान संश्लेषण का उदय होगा। जैसा आज तक कभी हुआ ही नहीं, जो अतियों के बारे में नहीं सोचेगा, जो यह भी नहीं सोचेगा कि यदि तुम बाहर ज्ञान की खोज में गये तो तुम अस्तित्व में अपनी जड़ें खो दोगे अथवा यदि तुम स्वयं की खोज में अंदर गए तो तुम संसार और विज्ञान के क्षेत्र में अपनी जड़ें खो दोगे। दोनों ही साथ—साथ हो सकते हैं, और जब भी ऐसा होगा। तो मनुष्य के पास दोनों पंख होंगे, वह आकाश में जितनी ऊंचाई तक उड़ना सम्भव होगा उड़ेगा। अन्यथा तुम्हारे पास एक ही पंख है।

जैसा मैं देखता हूं कि हिंदू मन जितना अधिक असुंलित है, ग्रीक मन भी उतना ही अधिक असंतुलित है। दोनों ही वास्तविकता और सत्य के आधा— आधा भाग हैं। आधा धर्म है और आधा विज्ञान। कुछ ऐसा होना चाहिए जिससे धर्म और विज्ञान को साथ—साथ लाकर एक महान पूर्णता को जन्म दिया जा सके जहां विज्ञान धर्म से इंकार न करे और जहां धर्म विज्ञान की निंदा न करें।

" ऐसा क्यों है कि यूनान के डेल्की मंदिर में लगा शिलालेख कहता है।' स्वयं को जानो ' और यह नहीं कहता कि ' स्वयं ' को प्रेम करो?"

स्वयं को प्रेम करना केवल तभी संभव है, यदि तुम स्वयं को ही उपलब्ध हो जाओ यदि—'' तू ' केवल ' वह ' हो जाए ' अन्यथा यह संभव ही नहीं है। अन्यथा केवल यही संभावना है कि तुम यह जानने का प्रयास करते रहो कि तुम कौन हो और वह भी बाहर से, और बाहर से यह निरीक्षण करते रहो कि तुम कौन हो। एक वस्तुगत मार्ग है वह अंतर्यात्रा में अंदर जाना नहीं है।''

यूनानी मन ने एक अद्‌भुत तीव्र तार्किक क्षमता विकसित की। अरस्तु इस तर्क प्रणाली और दर्शन का जनक है। पूरब का मन तर्कसंगत नहीं लगता, वह है भी नहीं। ध्यान पर जोर देना अतर्कपूर्ण लगता है क्योंकि ध्यान कहता है तुम केवल तभी जान सकते हो, जब मन को इशरा दो, जब विचारों को भी गिरा दो, और तुम अपने ही अस्तित्व में इतनी समग्रता से लीन हो जाओ कि तुम्हारा ध्यान हटाने को वहां एक भी विचार तक न

हो केवल तुम तभी जान सकते हो। और यूनानी मन कहता है तुम केवल तभी जान सकते हो जब विचार, प्रक्रिया, स्पष्ट, तर्कपूर्ण विवेकपूर्ण और व्यवस्थित हो। हिंदू मन कहता है जब विचार प्रक्रिया पूरी तरह विसर्जित हो जाती है, केवल तभी वहां जानने की कोई संभावना होती है। यह दोनों पूरी तरह से एक दूसरे से विपरीत दो विरोधी दिशाएं है। लेकिन दोनों के विश्लेषण या जोड़ होने की भी वहां संभावना है।

एक व्यक्ति पदार्थ पर काम करते हुए अपने मन का प्रयोग कर सकता है, तब तर्क एक महान उपकरण या माध्यम की भांति होता है। और वही व्यक्ति मन को एक ओर अलग रखकर ध्यान की ओर गतिशील होता हुआ अमन में गति करता है। क्योंकि तुम मन नहीं हो और मन केवल ठीक हाथों और पैरों की तरह एक यंत्र या उपकरण है। यदि मैं चलना चाहूं तो पैरों का मैं प्रयोग करता हूं और यदि मैं न चलना चाहूं तो उनका प्रयोग नहीं करता हूं। ठीक इसी तरह से तुम तर्क—वितर्क करने में मन का प्रयोग कर सकते हो, यदि तुम पदार्थ के बारे में जानने का प्रयास कर रहे हो। यह पूर्णत: ठीक भी है और वहां यह जमता भी है। और जब तुम अंदर की ओर गतिवान हो तो मन को उठाकर अलग रख दो। जब चलना नहीं है तो पैरों की भी जरूरत नहीं होती, इसी तरह अब सोचने की जरूरत नहीं है तो मन की भी जरूरत नहीं होती। अब तुम्हें निर्विचार की, एक गहरी मौन दशा की जरूरत है।

और ऐसा किसी व्यक्ति में घट सकता है और जब मैं इसकी बात कर रहा हूं तो अपने अनुभव के आधार पर ही कह रहा हूं। मैं इन दोनों को ही करता रहा हूं। जब जरूरत होती है तब मैं किसी यूनानी की भांति ही तर्कपूर्ण बन सकता हूं। जब इसकी जरूरत नहीं होती तो मैं किसी भी हिंदू जैसा ही तर्करहित और असंगत भी बन सकता है। इसलिए जब मैं जो कुछ कहता हूं वही उसका अर्थ भी होता है, और यह मात्र कोई कल्पना की बात नहीं है। मैंने उस तरह से उसका अनुभव भी किया है। मन का प्रयोग भी किया जा सकता है। और उसे उठाकर अलग भी रखा जा सकता है। वह एक यंत्र है, एक बहुत खूबसूरत उपकरण। उसके साथ इतना अधिक परेशान होने की जरूरत नहीं है, न उसके साथ स्थाई रूप से जुड़ जाने की जरूरत है। तब वह एक बीमारी बन जाती है। जरा उस व्यक्ति के बारे में विचार करें जो बैठना चाहता है लेकिन बैठ नहीं सकता, क्योंकि वह कहता है—'' मेरे पास तो पैर हैं, मैं कैसे बैठ सकता हूं?" अथवा एक ऐसे व्यक्ति के बारे में सोचें और जो शांत और मौन होना चाहता है, और वह चुप और मौन नहीं बैठ सकता क्योंकि वह कहता है : ' मेरे पास तो मन है।' यह भी उसी तरह ही है। मैं तुमसे बातचीत कर रहा हूं। मैं तुम्हारे साथ समस्याओं पर चर्चा कर रहा हूं यह तर्कपूर्ण है, इसमें मन का प्रयोग किया जा रहा है। और तभी मैं तुमसे कहता हूं मन को गिरा दो, और गहरे ध्यान में चले जाओ। यदि तुम नृत्य कर रहे हो तो इतनी समग्रता से नृत्य करो कि वहां तुम्हारे अंदर एक भी विचार न रहे और तुम्हारी पूरी ऊर्जा नृत्य ही बन जाये। अथवा गीत गाओ, तब केवल गाना ही बन जाओ। अथवा बैठ जाओ तब बैठना ही बन जाओ। झाझेन में बने रहो, अन्य कोई दूसरा काम करो ही मत। एक भी विचार को गुजरने की अनुमति मत दो। बस शांत, पूरी तरह मौन हो जाओ। ये परस्पर विरोधी चीजें हैं।

हर सुबह तुम ध्यान करते हो, और प्रत्येक सुबह तुम मुझे सुनने के लिए आते हो। प्रत्येक सुबह मुझे सुनते आते हो, इसके बाद तुम ध्यान करने के लिए जाते हो। यह विरोधाभासी है। यदि मैं ठीक यूनानी मन होता, तो मैं तुमसे बातचीत ही करता, तुम्हारे साथ एक तर्कपूर्ण संवाद स्थापित करता, लेकिन तब मैं तुमसे ध्यान करने के लिए नहीं कहता। वह मूर्खता होती। यदि बस मैं एक हिंदू मन ही होता तब वहां तुमसे बातचीत करने की कोई जरूरत ही नहीं होती। मैं कह सकता था—' बस जाओ और जाकर ध्यान करो, क्योंकि बात करने की आवश्यकता क्या है? प्रत्येक व्यक्ति को शांत और मौन हो जाना चाहिए। मैं दोनों एक साथ हूं। और यही मैं तुमसे भी आशा करता हूं। कि तुम दोनों ही बनो क्योंकि तब जीवन बहुत अधिक समृद्ध, अत्यधिक समृद्ध होगा।

तब तुम कुछ भी खोओगे नहीं। तब प्रत्येक चीज तुम अपने में अवशोषित कर लोगे तब तुम एक महान आरकेस्ट्रा बन जाओगे। तब दोनों विपरीत ध्रुव तुममें आकर मिल जाएंगे।

यूनानियों के लिए यह विचार ही—" स्वंय से प्रेम करो।" असंगत होगा, क्योंकि वे कहेंगे और वे तर्क देकर कहेंगे कि प्रेम तो दो व्यक्तियों के बीच होना ही संभव है। तुम किसी अन्य व्यक्ति से प्रेम कर सकते हो, तुम अपने शत्रु से भी प्रेम कर सकते हो, लेकिन तुम स्वयं अपने से ही प्रेम कैसे कर सकते हो? केवल तुम ही वहां हो अकेले। प्रेम का अस्तित्व तो द्वैतता के बीच दो विपरीत ध्रुवों के बीच हो सकता है। तुम स्वयं अपने ही से प्रेम कैसे कर सकते हो? केवल तुम ही हो वहां अकेला प्रेम का अस्तित्व तो द्वैतता के बीच दो विपरीत ध्रुवों के बीच हो सकता है। तुम स्वयं से प्रेम कैसे कर सकते हो? यूनानी मन के लिए स्वयं से प्रेम करने का विचार ही व्यर्थ और असंगत है। प्रेम करने के लिए दूसरा होना आवश्यक है।

और हिंदू मन के लिए..... उपनिषदों में वे कहते हैं तुम अपनी पत्नी से प्रेम करते हो, पर पत्नी होने के कारण नहीं, तुम अपनी पत्नी को केवल अपने कारण ही प्रेम करते हो। तुम उसके द्वारा स्वयं को ही प्रेम करते हो, क्योंकि वह तुम्हें आनंद देती है इसी कारण तुम उसे प्रेम करते हो, लेकिन बहुत गहरे में तुम अपने आनंद को ही प्रेम करते हो। तुम अपने पुत्र से प्रेम करते हो, तुम अपने मित्र से प्रेम करते हो, लेकिन उनके कारण नहीं बल्कि तुम अपने ही कारण बहुत गहरे में तुम्हारा बेटा तुम्हें प्रसन्नता देता है, तुम्हारा मित्र तुम्हें सकून देता है। यही है वह जिसकी तुम्हें लालसा थी। इसलिए उपनिषद कहते हैं वास्तव में तुम स्वयं से ही प्रेम करते हो। तुम भले ही यह कहो कि तुम दूसरों से प्रेम करते हो, वह केवल मात्र तुम्हारा स्वयं से प्रेम करने का एक माध्यम मात्र है, स्वयं से ही प्रेम करने का वह एक घुमाव भरा लंबा रास्ता है।

हिंदू कहते हैं कि वहा कोई दूसरी अन्य संभावना है ही नहीं, तुम केवल स्वयं को ही प्रेम कर सकते हो। और यूनानी कहते हैं कि स्वयं को ही प्रेम करने की कोई संभावना है ही नहीं, क्योंकि कम से कम प्रेम करने के लिए दो की जरूरत है। यदि तुम मुझसे पूछो तो मैं हिंदू और यूनानी दोनों एक साथ हूं। यदि तुम मुझसे पूछो तो मैं कहूंगा प्रेम असंगत है। प्रेम बहुत ही विरोधाभासी घटना है। उसे कम करके एक ही ध्रुव तक लाने की कोशिश मत करो, उसके लिए दोनों ध्रुवों की आवश्यकता है। दूसरा तो जरूरी है ही, लेकिन गहरे प्रेम में दूसरा बचता ही नहीं। यदि तुम दो प्रेमियों को देखो, तो वे दो हैं और एक साथ मिलकर एक हैं। यही प्रेम का विरोधाभास और यही इसका सौंदर्य भी है। वे दो हैं। हां! वे दो हैं : और फिर भी वे दो नहीं है, वे एक ही हैं। यदि यह ईकाई होना या अद्वैत नहीं घटा, तब प्रेम करना व्यर्थ है। वे लोग प्रेम के नाम पर कुछ और ही कर रहे हैं। यदि वे अभी भी दो हैं और इसके ही साथ एक नहीं हुए तब उनके बीच प्रेम घटा ही नहीं। और यदि तुम केवल अकेले हो और वहां कोई अन्य दूसरा नहीं है, तब भी प्रेम होना संभव नहीं है। प्रेम एक विरोधाभासी घटना है। पहले स्थान पर दो की जरूरत होती है और अंतिम स्थान पर उसे दो की जरूरत तो होती है, एक बनकर रहने के लिए। यह सबसे बड़ी पहेली है, यही सबसे बड़ी उलझन है।

यदि तुमने किसी से भी प्रेम किया है, तो जो मेरे कहने का अर्थ है, उसे तुम भली भांति समझ जाओगे। तुम जानते हो कि दूसरा दूसरा ही होता है, लेकिन फिर भी अपनी बहुत गहराई में तुम यह अनुभव करते हो कहीं उसके साथ एक सेतु बन गया है। यह ऐसा ही जैसे मानो सागर में यात्रा करते हुए तुम किसी द्वीप के निकट से गुजरो। वह है महाद्वीप से अलग, लेकिन बहुत गहरे में वह है समुद्र तल के नीचे ही, भूमि एक ही है। वह महाद्वीप से जुड़ा हुआ है वह वास्तव में पृथक नहीं है। वह अलग होते हुए भी अलग नहीं है, यह जो प्रेम है, वह भी ऐसा ही होता है। इसलिए यदि तुम मुझसे पूछते हो तो मैं यही कहूंगा कि तुम्हारे लिए स्वयं से प्रेम करना संभव है, लेकिन तब तुम्हें अपने को दो भागों में विभाजित करना होगा। तब तुम्हें प्रेमी और प्रेमिका दोनों एक

साथ बनना होगा। और यह भी संभव है कि तुम किसी दूसरे अन्य से प्रेम करते हो। लेकिन तब तुम्हें दो से एक बनना होगा। प्रेम कुछ ऐसी चीज है, जो दो व्यक्तियों के बीच ही घटता है, लेकिन जब वह घटता है, तो वे अधिक समय तक दो नहीं रह पाते, एक ही हो जाते हैं।

तीसरा प्रश्न :

प्यारे ओशो! फिर वही सुबह फिर वही शाम, सब कुछ फिर वही बार— बार पीछा कर रहा है जैसे! वही होशपूर्ण होने के विचार होशपूर्ण होने की फिर वही बातें फिर वही बार— बार वही वही....?

यह निर्भर करता है।

एक तरह से यह वैसा ही है सब कुछ। वह अन्यथा हो भी कैसे सकता है?

वही सूरज, वही सूर्योदय हर सुबह होता है। और वही सूर्यास्त, हां—लेकिन यदि तुम बहुत निकट से निरीक्षण करो, तो क्या तुमने दो सूर्योदय ठीक एक जैसे देखे हैं? क्या तुमने आकाश के रंगों को देखा है? क्या तुमने सूरज के चारों ओर बादलों का बनना देखा है?

दो सूर्योदय एक जैसे नहीं होते, दो सूर्यास्त भी एक जैसे नहीं होते यह संसार रुक—रुक कर चलती हुई निरंतरता है—रुक—रुक कर चलती हुई, क्योंकि प्रत्येक क्षण कुछ न कुछ नया घट रहा है और फिर भी निरंतरता बनी हुई है। क्योंकि वह पूरी तरह से नया नहीं है। वह जुड़ा हुआ है। इसलिए दोनों कथन ठीक है। यहां एक कहावत कही जाती है। कि इस सूरज के नीचे कुछ भी नया नहीं है, और एक दूसरी कहावत भी कही जाती है, जो ठीक इसके विपरीत है—यहां सूरज के तले कुछ भी पुराना नहीं है। यह दोनों ही सत्य है।

कुछ भी न तो नया है और न कुछ भी पुराना है। प्रत्येक चीज बदल रही है और फिर भी किसी न किसी तरह वह वही रहती है, किसी तरह वही रहती है, और फिर भी बदले जा रही है। यही इसका सौंदर्य है, यही इसकी गढ़ता और यही इसका रहस्य है। तुम इसे कम करके कोई श्रेणी नहीं बना सकते। तुम यह नहीं कह सकते; कि यह वैसी ही है, तुम यह भी नहीं कह सकते कि यह वैसी नहीं है। तुम जीवन को घटाकर उसके संवर्ग नहीं बना सकते। तुम्हारे ये कबूतरों जैसे दड़बे बस निर्मूल्य हैं। जब ये जीवन के निकट आते हैं तो तुम्हें इन कबूतर के दड़बों, सभी संवर्गों और श्रेणियों को छोड़ देना पड़ता है। यह तुम्हारे संवर्गों की अपेक्षा कहीं अधिक विशाल है, यह सभी श्रेणियों के पार है। यह इतना अधिक विराट है कि तुम इसका प्रारंभ और अंत नहीं खोज सकते।

प्रश्नकर्त्ता कहते हैं—'' फिर वही सुबह फिर वही शाम। सब कुछ फिर वही बार—बार जैसे पीछा कर रहा है। वही होशपूर्ण होने के विचार, होशपूर्ण होने की फिर वही बातें। फिर वही, बार—बार नहीं..... .नहीं.....।''

हां, एक तरह से यह वही है, और दूसरी तरह से कुछ भी वैसा नहीं है। मैं कल भी यहां था, लेकिन मैं आज ठीक वैसा ही नहीं हूं। मैं हो भी कैसे सकता हूं? इस बीच गंगा जी में बहुत पानी बह गया। आज मैं चौबीस घंटे पुराना हूं चौबीस घंटों का अनुभव मुझमें और जुड़ गया है। चौबीस घंटों की सघन सजगता और जुड़ गई है। मैं अब अधिक समृद्ध हूं। मैं अब कल जैसा ही नहीं हू। मृत्यु कुछ और निकट आ गई है। तुम भी ठीक वह नहीं हो, और यद्यपि मैं भी वैसा ही दिखाई देता हूं और तुम भी वैसा ही दिखाई देते हो।

तुम्हें वह आवश्यक बात देखनी है। मेरे कहने का यही अर्थ है जब मैं कहता हूं कि जीवन एक रहस्य है, तुम इसका विभाजन कर इसे श्रेणीबद्ध नहीं कर सकते, तुम निश्चित रूप से यह नहीं कह सकते कि यह वैसा ही है। जिस क्षण तुम यह कहते हो, तुरंत ही तुम सजग हो जाओगे कि जीवन ने तुम्हें झूठा बना दिया।

क्या ये वृक्ष वैसे ही हैं जैसे कल थे? बहुत से पुराने पत्ते झड़ गए। बहुत से नए पत्ते निकल आए बहुत से फूल झड़ गए। वे और ऊंचे हो गए। वे ठीक वैसे ही हो कैसे सकते हैं? जरा देखो आज उस पर बैठी कोयल गीत

नहीं गा रही है। आज कितनी खामोशी है। कल कोयल गीत गा रही थी। वह दूसरी तरह का मौन था, वह गीतों से भरा हुआ था। आज की खामोशी अलग तरह की है, वह गीतों से आपूरित नहीं है। आज हवा भी नहीं चल रही है। जैसे हर चीज रुक सी गई है। कल बहुत तेज हवा चल रही थी। आज वृक्ष ध्यान कर रहे हैं कल वे नृत्य कर रहे थे। यह सब कुछ वैसा ही नहीं हो सकता और फिर भी वह वैसा ही है।

यह तुम पर निर्भर करता है। तुम जीवन को किस तरह से देखते हो। यदि तुम यों देखते हो जैसे मानो वह वैसा ही है तो तुम ऊब जाओगे। तब अपनी जिम्मेदारी दूसरों पर मत फेंको। यह तुम्हारा ही दृष्टिकोण है। यदि तुम कहते हो कि वह वैसा ही है तब तुम ऊब जाओगे। तुम उसमें निरंतर होते परिवर्तन को एक बाढ़ की तरह, अपने चारों ओर तेजी से घूमती हवा के चक्रवात की तरह और जीवन की सक्रियता के साथ देख सको, जिसमें प्रत्येक क्षण पुराना होकर विलुप्त हो रहा है और नूतन क्षण आ रहा है।

यदि तुम निरंतर कुछ नया जन्म लेते देख सको, यदि तुम निरंतर सृजित करते हुए परमात्मा के हाथों को देख सको, तब तुम आनंदित और रोमांचित हो जाओगे। तुम्हारे जीवन में ऊब नहीं होगी। तुम निरंतर विस्मय विभोर रहोगे— अब आगे क्या.....? तुम बुझे—बुझे नहीं रहोगे। तुम्हारी बुद्धि तीक्ष्ण, जीवंत और युवा बनी रहेगी।

अब यह तुम पर निर्भर करता है कि तुम क्या चाहते हो। यदि तुम एक मृत व्यक्ति की भांति, मूर्ख, जड़ बुद्धि दुखी और बोर बनना चाहते हो, तब तुम विश्वास करो कि यह जीवन और अस्तित्व वैसा ही है। यदि तुम युवा, जीवंत, नूतन और दीप्तिवान बनना चाहते हो तब विश्वास करो जीवन प्रतिक्षण नया और ताजा है। हेराक्लाईटस की एक पुरानी उक्ति है—'' तुम उसी नदी के जल में दोबारा कदम नहीं रख सकते।'' तुम दोबारा उसी व्यक्ति से नहीं मिल सकते, तुम वही वैसा ही सूर्योदय दुबारा नहीं देख सकते। यह तुम्हारे ऊपर निर्भर है। और यदि तुम मुझे समझ सकते हो तो मैं कहूंगा। चुनाव मत करो। यदि तुम यह विचार चुनते हो कि हर वस्तु पुरानी है तो तुम बूढ़े बन जाते हो। यदि तुम यह चुनते हो कि प्रत्येक वस्तु युवा और नवीन है तो तुम युवा बन जाते हो। यदि तुम मुझे समझ सकते हो तो मैं कहता हूं चुनाव करो ही मत; देखो, वे दोनों ही सत्य है। तब तुम भी श्रेणियों का अतिक्रमण कर जाते हो। तुम न वृद्ध हो और न युवा। तब तुम शाश्वत बन जाते हो, तब तुम परमात्मा जैसे ही हो जाते हो।

मैंने एक वृत्तांत सुना है:

न्यूयार्क या वस्तुत: ब्रुकलिन में न्यायाधीश दूने कचहरी में अपनी कुर्सी पर बैठा हुआ था, तभी एक बहुत बहुत मूर्ख गवाह से प्रश्न पूछे जा रहे थे।

सरकारी वकील ने उससे प्रश्न किया—'' क्या तुम दुर्घटना के दिन फोर्थ और एल्म के कोने में खड़े हुए थे?"

गवाह ने कहा—'' कौन? क्या मैं?"

सरकारी वकील ने कहा—'' हां तुम क्या तुमने उस वक्त यह बात नोट नहीं की कि घायल महिला की देखभाल के लिए वहां एम्बुलेंस आई या नहीं?"

"कौन? क्या मैं?"

" हां तुम। क्या तुमने यह नोट नहीं किया था कि वह महिला बुरी तरह घायल थी। थी या नहीं?"

" कौन? क्या मैं?"

इस बीच सरकारी वकील बहुत अधिक क्रोध से भर उठा। उसने झुंझला कर कहा—'' निश्चित रूप से तुम! तुम यह क्यों सोच रहे हो कि तुम यहां हो।''

गवाह ने कहा—'' मैं यहां इसलिए आया जिससे न्याय होता देख सकूं।'' जज दूने ने कहा—'' कौन? क्या मैं मुझसे?"

यदि तुम यह विश्वास करते हो कि हर चीज वैसी ही है। तब हर चीज थिर और अडिग होगी—कौन? क्या मुझसे? और तुम ऊबने जा रहे हो। बार—बार दोहराना तुम्हें मार ही देगा। तीक्ष्ण और जीवंत बनने के लिए एक व्यक्ति को कुछ ऐसी चीज की जरूरत है जिसकी पुनरावृत्ति न हो। कुछ नया हो, निरंतर घट रहा हो, तुम्हें जीवंत बना रहा हो, और तुम्हें जीवंत तथा सजग रख रहा हो।

क्या तुमने किसी कुत्ते को खामोशी से बैठे हुए देखा है? एक चट्टान भी यदि उसके सामने पड़ी हो तो वह फिक्र नहीं करता। लेकिन चट्टान को हिलाना शुरू करो। बस एक रस्सी से उसे बांध दो और उसे खींचो और कुत्ता उछल पड़ेगा। वह भौंकना शुरू कर देगा। गति उसे तीक्ष्ण बनाती है। तब सारी सुस्ती चली जाती है। तब वह और अधिक समय तक सोया—सोया नहीं रहता। तब वह और अधिक समय तक मक्खियों और दूसरी चीजों का स्वप्न नहीं देखता रहता। तब वह बस अपनी नींद से उछलकर बाहर आ जाता है। किसी चीज ने उसे बदल दिया।

परिवर्तन तुम्हें गति प्रदान करता है, लेकिन निरंतर परिवर्तन भी तुम्हें समाप्त कर सकता है। जैसे बिना बदली हुई थिर स्थिति जड़ता उत्पन्न करती है, वैसे ही निरंतर परिवर्तन भी जड़ों से उखाडने वाला हो सकता है।

पश्चिम में ऐसा ही हो रहा है, लोग बदल रहे हैं। सांख्यिकी के जानकार बताते हैं कि अमेरिका में एक व्यक्ति की किसी भी कार्य को करने की औसत अवधि तीन वर्ष है। लोग अपनी नौकरी और धंधे बदल देते हैं, शहर बदल लेते हैं, अपना पति या अपनी पत्नी बदल लेते हैं, प्रत्येक वर्ष अपना घर और अपनी कार बदल लेते हैं, वे प्रत्येक चीज बदलने की कोशिश करते हैं। उनके सभी मूल्य ही बदल गए हैं। इंग्लैंड में वे रोल्सरॉयस कार बनाते हैं। उनका विचार है कि उसे ऐसा बनाओ जिससे वह हमेशा चलती ही रहे, कम से कम जीवन पर्यन्त तो चले। अमेरिका में वे सुंदर कारें तो बनाते हैं, उनके टिकाऊपन के गुण के बारे में कोई भी फिक्र नहीं करते, क्योंकि एक ही कार को जीवन पर्यन्त कौन अपने पास रखने जा रहा है? यदि वह एक साल भी चल जाये तो काफी है। जब अमेरिकन कार खरीदने जाता है तो वह उसके टिकाऊपन के बारे में परेशान नहीं होता। वह उसमें परिवर्तन करने के बारे में सोचता हैं। अंग्रेज अभी भी उसकी मजबूती और टिकाऊपन के बारे में पूछते हैं कि कार काफी टिकाऊ है या नहीं, क्योंकि वह उसे एक बार ही खरीदता है और बात खत्म हो गई। वह बहुत पुरानी फैशन का है। वह किसी भी तलाक के बारे में भी नहीं जानता, और ऐसा ही कार के भी साथ है। एक बार शादी कर ली सो कर ली। कार के भी साथ वह यही करता है। वह बहुत ईमानदार है। पर एक अमेरिकन परिवर्तन के संसार में जीता है वह हर चीज बदल रहा है। लेकिन तब अमेरिकन ने अपनी जड़ें खो दी हैं।

अपने पुराने कस्वे में जहां मैं कभी—कभी जाया करता था और मैं देखकर आश्चर्यचकित हो जाता था। हर चीज वहीं की वहीं ठहरी मिलती थी। स्टेशन पर मुझे लेने वही पुराना कुली होता था, क्योंकि केवल एक ही कुली था स्टेशन पर, और वही पुराना तांगा वही सड़क, और मुझे चारों ओर घूमते—फिरते वही लोग दिखाई देते थे। लगभग हर चीज वहां ज्यों की त्यों दिखाई देती थी। कभी—कभार कोई मर जाता था। और कभी—कभार कोई नया जन्म ले लेता था अन्यथा हर चीज लगभग जैसी बनी रहती थी। और जब लोग मर भी जाते थे तो उनका स्थान उनके पुत्र तो लेते थे और वे भी लगभग वैसे ही दिखाई देते थे। कुछ भी तो नहीं बदलता, वही घर थे, वही गप्पें थीं। ऐसा लगता था कि जैसे समय थम गया है।

कस्वे में वापस जाकर मैं हमेशा आश्चर्य में पड़ जाता था। पहली चीज मुझे यही दिखाई देती थी, कि उस कस्वे में जैसे समय का कोई अस्तित्व है ही नहीं। प्रत्येक वस्तु शाश्वत रूप से वैसी की वैसी ही दिखाई देती थी। लेकिन तब वहां के लोगों की अपनी जड़ें थी। वे बुझे—बुझे से ही लगते थे लेकिन अपनी जड़ों से गहरे जुड़े थे। वे बहुत प्रसन्न और बहुत आराम से थे। वे विदेशी जैसे तो नहीं लगते थे। उन्हें देख अजनबीपन का अहसास नहीं होता था। उनके अजनबी होने का अनुभव हो कैसे सकता था? प्रत्येक चीज इतनी समान जो थी। जब वे पैदा हुए थे, तब वे वैसे ही थे। जब वे मर जाएंगे तब भी वैसे ही रहेंगे। प्रत्येक चीज में जैसे एक स्थायित्व था। तुम अजनबी होने का अनुभव कैसे कर सकते हो? पूरा कस्बा एक छोटे परिवार की भांति था।

अमेरिका में प्रत्येक चीज जड़ों से उखड़ी हुई है। कोई भी नहीं जानता कि कहां का रहने वाला है। कहीं के होने का बोध ही जाता रहा है। यदि तुम किसी भी व्यक्ति से पूछो—'' तुम कहां के रहने वाले हो?" तो वह अपने कंधे उचका देगा क्योंकि वह अधिक शहरों में रह चुका है, बहुत से कॉलेज और बहुत से विश्व विद्यालयों में पढ़ चुका है। वह निश्चित रूप से कुछ भी नहीं कह सकता क्योंकि उसकी पहचान बहुत तरल और ढीली है। एक तरह से यह अच्छा भी है क्योंकि मनुष्य तेज तीक्ष्मा और जीवंत बना रहता है। लेकिन अपनी जड़ें खो देता है।

स्वयं, दृढ़ता से थिर रहने और जड़ों से उखड़ने दोनों ही चीजों को ही आजमा चुका हूं। सूरज तले कुछ भी नया नहीं है। हमने कई सदियों तक अतीत में इसे आजमाया है। इसने मनुष्य के मनों में जंग लगा दी है। लोग चिंता मुक्त तो हो गए लेकिन अधिक जीवंत नहीं रहे।

तब अमेरिका में कुछ नई चीज हुई और पूरे विश्व भर में फैल गई। क्योंकि अमेरिका ही संसार का भविष्य है। वहां जो कुछ भी होता है, वह देर—सवेर हर जगह होने लगता है। अमेरिका ही रुख तय करता है। अब लोग बहुत ही जीवंत है, लेकिन अपनी जड़ों से उखड़े हुए हैं, वे यह भी नहीं जानते कि वे कहां के रहने वाले हैं?

कहीं के होने की एक बहुत बड़ी आकांक्षा जाग उठी है। इस बड़ी कामना को कहीं अपनी जड़ें जमाना है, किसी व्यक्ति को अपने अधिकार में लेना है और किसी अन्य व्यक्ति के अधिकार में रहना भी है, कोई ऐसी चीज जो टिकाऊ हो, कोई ऐसी चीज जिसमें स्थायित्व हो, कुछ चीज केंद्र जैसी थिर हो—क्योंकि लोग पहियों की तरह घूम रहे हैं, और वहां विश्राम जैसी कोई चीज दिखाई नहीं देती। निरंतर बदलते और बदलते रहने से, वहा निरंतर एक बहुत बड़ा तनाव है। और इस परिवर्तन की गति दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, और तेज और तेज होती जा रही है।

अब वे कहते हैं कि बहुत बड़ी और मोटी पुस्तकें नहीं लिखी जानी चाहिए क्योंकि जब तक वह बड़ी पुस्तक लिखी जाती है वह समय के बाहर हो जाती है। जानकारियां बड़ी तेजी से बदल रही हैं। इसलिए केवल छोटी छोटी पुस्तिकाएं ही लिखा जाना उचित है। जिससे वे जानकारियां बदलने से पहले ही लोगों तक पहुंच जायें। अन्यथा इससे पहले कि वे बाजार तक पहुंचें, वे पुस्तकें समय के बाहर, व्यर्थ और कूड़ा बन जाती हैं।

प्रत्येक वस्तु इतने अधिक बड़े परिवर्तन, कोलाहल और अव्यवस्था की स्थिति में है, कि मनुष्य बहुत गहराई से तनाव का अनुभव कर रहा है, वह बहुत थकावट और तनाव में है।

दोनों के ही अपने लाभ हैं और दोनों के अपने अभिशाप भी हैं। मेरी दृष्टि में इन दो अलग— अलग दिशाओं में जाने वाली इन दोनों चीजों का एक संश्लेषण बनना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को सजग होना चाहिए कि जीवन दोनों ही पुराना और नया साथ—साथ है, वह एक ही समय होने वाला है—वह पुराना है, क्योंकि पूरा अतीत वर्तमान क्षण में उपस्थित है; वह नया है क्योंकि पूरा भविष्य इस वर्तमान क्षण में पूरी संभावनाओं के साथ उपस्थित है। यह वर्तमान क्षण पूरे अतीत को चरम सीमा और पूरे भविष्य का प्रारंभ है। इस क्षण में वह सभी कुछ छिपा है जो पहले घट चुका है और वह भी छिपा है जो भविष्य में घटने जा रहा है। प्रत्येक क्षण,

अतीत और भविष्य दोनों एक साथ है। यह अतीत और भविष्य का एक बिंदु पर मिलन है। इसलिए कुछ चीज नई है और कुछ चीज पुरानी और यदि तुम दोनों के प्रति साथ—— साथ सजग रह सको तो तुम जीवंतता और प्रखरता के साथ, जड़ों से भी जुड़े रह सकते हो। तुम बिना किसी तनाव के विश्राममय रहोगे। तुम बुझे—बुझे से न बने रहकर बहुत सजग और सचेत रहोगे।

मैने सुना है:

दोपहर बाद जब श्रीमती मैकमोहन अपनी रसोईघर में गईं, तो उन्होंने वहां रखी प्रत्येक प्लेट और प्याले तोड दिए और प्राय _ उनका साफ सुथरा बिना धब्बों के रहने वाला रसोईघर बेढंगा कबाड बन गया। पुलिस वहां पहुंची और उन्हें शहर के मानसिक चिकित्सालय में ले गई। मुख्य मनोचिकित्सक ने उनके पति को बुलाकर उनसे संकोच के साथ पूछा—'' क्या आप जानते हैं कि वजह क्या थी? आपकी पत्नी का अचानक दिमाग खराब क्यों हो गया?"

मि. मैकमेहन ने उत्तर दिया—'' जितना आश्चर्य आपको है, उतना मुझे भी है। मैं कल्पना भी नहीं कर सकता कि उन्हें हो क्या गया है? वह हमेशा से बहुत शांत और परिश्रम से काम करने वाली महिला रही है, और जाने क्यों बीस वर्षों से वे कभी रसोई घर से बाहर ही नहीं निकलीं।''

तब कोई भी व्यक्ति पागल हो सकता है। यह बहुत साधारण सा दो और दो जोड़ कर चार होने का मामला है। यदि कोई स्त्री बीस वर्षों में रसोई घर से बाहर ही नहीं आई, तो यह पागलपन के लिए काफी है। लेकिन विपरीत स्थिति हमेशा पागल बनाती है। यदि तुम बीस वर्षों में कभी भी अपने घर नहीं गए और बस एक आवारा बन गए हमेशा आते रहे लेकिन कभी भी किसी मंजिल पर नहीं पहुंचे, हमेशा इधर—उधर भटकते रहे और पहुंचे कही भी नहीं, यदि तुम एक घुमक्कड़ जिप्सी बन जाओ और तुम्हारा कोई भी घर न हो, तब तुम भी पागल हो जाओगे। दोनों को अलग— अलग लेना खतरनाक है। दोनों को यदि साथ लिया जाए तो वे जीवन को बहुत समृद्ध बनाते हैं। दो विपरीत ध्रुव जीवन को समृद्ध बनाते हैं। यिन और यांग, पुरुष और स्त्री, अंधेरा और प्रकाश, जीवन और मृत्यु परमात्मा और शैतान, संत और पापी यह दोनों जीवन के दो छोर हैं। सभी छोरों को एक साथ लेकर चलने से ही जीवन धनी होता है। अन्यथा जीवन नीरस बन जाता है।

नीरस और थकाने वाली जीवन शैली मत चुनो। समृद्ध बनो।

चौथा प्रश्न :

प्यारे ओशो! प्रत्येक शिविर के बाद मेरे अंदर
गहराई में एक निराशा और बेचैनी जैसी रह जाती है? जैसे मानो
मैं कुछ घटने की प्रतीक्षा कर रहा था, जो कभी घटती नही?
और मैं स्वयं अपने आप से कहता हूं " हीरा! तुम उसी नाव में
फिर से वापस आ गए इस पर टिप्पणी करने की अनुकम्पा
करें।"

पहले मैं तुम्हें एक घटना के बाबत बताना चाहता हूं। एक नया आया अपराधी वार्डेन से शिकायत कर रहा था मुझे न तो यहां का खाना पसंद है, न यह क्वार्टर और न मैं तुम्हारा चेहरा देखना चाहता हूं।

वार्डेन ने कहा—'' यह तो ठीक है पर क्या अन्य कोई चीज और भी है जो तुम्हें पसंद न हो?"

अपराधी ने उत्तर दिया—'' इस समय तो बस इतना ही काफी है। मैं यह नहीं चाहता कि तुम यह सोचो कि मैं बिलकुल ठीक नहीं हूं।''

हीरा! तुम बिलकुल भी ठीक नहीं हो।

पहली बात तो यह है कि तुमने सैकड़ों जन्मों से ध्यान नहीं किया। ध्यान न करने की बात तुम्हारे हृदय और तुम्हारी अस्थियों में गहरी प्रविष्ट हो गई है..... .वह एक कठोर ढांचा बन चुका है। अब अचानक तुम ध्यान करने लगे हो और तुमने बहुत आकांक्षाएं करना शुरू कर दिया है। यह न्यायसंगत नहीं है।

वास्तव में सभी अपेक्षाएं जरा भी ठीक नहीं है बल्कि जब कोई व्यक्ति ध्यान से कुछ भी मिलने की अपेक्षा करता है वह पूरी तरह गलत होता है। क्योंकि ध्यान का आधार और ध्यान की बुनियाद ही यह समझना है कि सारी अपेक्षाएं छोड दी जाएं। अन्यथा ध्यान की शुरुआत होती ही नहीं। यह आशा और अपेक्षा ही है जो तुम्हारे मन में निरंतर विचारों के ताने—बाने बुनती रहती है। यह अपेक्षा ही है जो तुम्हें तनाव से भर देती है। यह अपेक्षा ही है जब यह पूरी नहीं होती तो तुम्हें निराश और दुखी बनाती है। अपेक्षा करना छोड़ो और ध्यान पुष्पित होगा ही, लेकिन वह केवल तभी खिल सकता है, जब तुम अपेक्षाएं करना छोड़ दो, तुम अनेक जन्मों तक आशा और अपेक्षा ही करते रहोगे और ध्यान को पुष्पित होने की अनुमति ही नहीं दोगे

मैंने सुना है:

जब लानाहन के बाल झड़ते ही गए तो उसने अपने नाई से शिकायत करते हुए चीखते हुए कहा—'' तुमने जो भी चीज मुझे प्रयोग करने को दी वह खराब है। तुमने कहा था कि उसकी दो बोतलों के प्रयोग से मेरे बाल उगने लगेंगे, लेकिन कुछ भी तो नहीं हुआ।''

नाई ने उत्तर दिया—'' मैं कुछ समझ नहीं पा रहा हूं। वह तो बालों को पहले जैसी स्थिति में लाने वाली सर्वश्रेष्ठ चीज थी।''

यह सुनकर लानाहन ने कहा—'' ठीक है! फिर मुझे दूसरी बोतल पीने में कोई आपत्ति नहीं, लेकिन उसे अच्छा काम करना चाहिए।''

अब अपेक्षाओं के साथ ध्यान करना भी बाल उगने वाले लोशन की बोतल पीने जैसा है। यह कोई भी असर करने नहीं जा रही। यह तो नुकसान ही अधिक कर सकती है। यह खतरनाक ही हो सकती है।

अपेक्षा के साथ ध्यान करने से अच्छा है कि ध्यान किया ही न जाए क्योंकि कम से कम तुम्हें निराशा तो नहीं भोगनी होगी। मत करो ध्यान। लेकिन यदि तुमने ध्यान करने का निश्चय ही कर लिया है, तब तुम्हें यह स्पष्ट हो जाय कि ध्यान करने से तुम्हें कोई भी चीज मिलने की कोई गारंटी नहीं है। ऐसा नहीं कि उसे करने से कुछ घटता नहीं, वह घटता है, लेकिन उसकी कोई गारंटी नहीं है। अत्यधिक संभावनाओं का द्वार खुलता है, लेकिन उनकी अपेक्षा नहीं कर सकते। यदि तुम अपेक्षा करते हो तो द्वार बंद ही रहते हैं। यह तुम्हारी अपेक्षा ही है जो तुम्हारा मार्ग रोक देती है।

सड़क पर दो मित्र मिले।

उनमें से पहला बोला—'' मैं इतना अधिक दुखी हूं कि मैं सिर्फ चीख ही सकता हूं।''

" आखिर क्यों?"

"दो सप्ताह पूर्व मेरे चाचा की मृत्यु हो गई और वह मेरे लिए दस लाख डालर छोड़ गए।''

दूसरे ने कहा—'' तो इसमें चीखने जैसी क्या बात है?"

पहले ने उत्तर दिया—'' यह तो ठीक है कि इस बात से मुझे खुश होना चाहिए। लेकिन इस हफ्ते मेरे दूसरे चाचा भी मर गए है और वह मेरे लिए बीस लाख डालर छोड़ गए।''

"लेकिन फिर तुम इतने दुखी क्यों हो?"

पहले व्यक्ति ने कहा—'' मेरे सिर्फ दो चाचा ही हैं।''

अपेक्षा करना, बहुत बहुत अधिक खतरनाक है। अपेक्षा करने के साथ यदि कुछ भी होता है तो तुम्हें उससे पूर्ण संतुष्टि का अनुभव नहीं होगा, क्योंकि अपेक्षा करना लगभग पागलपन है। तुम अधिक से अधिक की अपेक्षा करते ही चले जाओगे। अब वह व्यक्ति इसलिए दुखी है क्योंकि उसके केवल दो चाचा ही हैं। जो कुछ भी होता है, वह तुम्हें खुश नहीं करने जा रहा, यदि तुम शुरू से ही अपेक्षाएं कर रहे हो। अपेक्षा करना छोड़ो— ध्यान करने में वह ठीक चीज नहीं है और फिर तुरंत ही चीजें घटना शुरू हो जाएंगी।

अगले शिविर में या कल से ही तुम बस ध्यान करो। सहज स्वाभाविक रूप से उसका आनंद लो। परिणाम पाने के लिए वहां देखने की कोई जरूरत ही नहीं है। जो होता है, उसे होने दो। भविष्य को स्वयं अपने आप आने दो। ध्यान करने को कोई लक्ष्य मत बनाओ—बस केवल दिशा सभी कुछ करेगी। आनंद मनाओ, उस बारे में उत्सवपूर्ण रहो।

ध्यान करना ही एक महान आनंद है। बस केवल नृत्य करने के योग्य बनो, गीत गाने योग्य बनो, बस शांत होकर बैठ जाने और अपनी श्वांस देखने में समर्थ बनो और तुम्हारा होना ही, आवश्यकता से अधिक है। किसी और चीज के लिए पूछो ही मत। क्योंकि तुम्हारा पूछना ही तुम्हारे अस्तित्व को दूषित कर देता है। तुमने दूसरी तरह से कोशिश की है, अब मेरी बात सुनो और मेरे बताए रास्ते पर चलने की कोशिश करो। तुम बस केवल ध्यान करो।

" प्रत्येक शिविर के बाद, मेरे अंदर गहराई में एक निराशा और बैचेनी ही रह जाती है..... "

शिविर के बाद यह समस्या खड़ी नहीं होती, यह शिविर से पहले होने वाली समस्या है। पहले तुम अपेक्षाओं के बीज बोते हो..... .तब उसे भोगेगा कौन? कष्ट तुम्हें ही होगा। तुम्हें यह फसल काटनी ही होगी।

"..... .जैसे मानो मैं कुछ चीज घटने की प्रतीक्षा कर रहा था, जो कभी भी घटती नहीं है।''

यह कभी घटेगी भी नहीं। तुम जिस चीज की भी प्रतीक्षा कर रहे हो, तुम्हारी प्रतीक्षा व्यर्थ है। ऐसा कुछ भी होने नहीं जा रहा है। और जो भी होने जा रहा है, उसका तुम्हारी इच्छाओं और अपेक्षाओं से कुछ भी लेना देना है। तुम बस उसे आने दो, उसका रास्ता मत रोको। तुम अपने रास्ते से स्वयं अपने आप को हटा दो। इस बार बिना किसी अपेक्षा, बिना किसी चाह और बिना आशा के साथ—'' बस ध्यान करो।"

"..... और मैं स्वयं अपने आपसे कहता हूं हीरा! तुम उसी नाव में फिर से "

वापस आ गए।

यदि तुम मुझे सुन रहे हो, तो तुम फिर उसी नाव में होना ही नहीं। यह अपेक्षा की ही नाव है। निराशा उसका प्रतिफलन या बाई प्रोडक्ट है। तुम इस निराशा से छुटकारा पाना चाहते हो, लेकिन तुम अपेक्षा से छुटकारा नहीं पाना चाहते। तब यह असम्भव होगा।

ऐसा कहा जाता है कि बुद्ध ने एक बार कहा—'' यदि तुम जन्म और मृत्यु से छुटकारा पाना चाहते हो, यदि तुम दुखों से छुटकारा पाना चाहते हो, यदि तम प्रसन्नता के लिए वासना से मुक्त होना चाहते हैं तो इसका कोई दूसरा मार्ग है ही नहीं, सिवाय कामना मुक्त होने के। कामना पूरी न होने पर दुख होता है।''

और जब वहां कोई दुख नहीं रह जाता, वहां प्रसन्नता ही होती है। लेकिन यह इसलिए नहीं है, क्योंकि तुमने उसकी कामना की, ऐसा इसलिए है क्योंकि तुम्हारी कोई कामना थी ही नहीं। कामनारहित होने की गहरी स्थिति में तुम आनंद से भर जाते हो।

पांचवां प्रश्न :

प्यारे ओशो! आपके विरोधाभासी वक्तव्य मुझे बहुत अधिक पीड़ा भरी भाव दशा मे फेंक दिया करते थे! अब मैं आपको सुनता हूं! लेकिन निर्विचार में शांत रहते हुए मेरे बर्तन का पानी खौलकर भाप बने? क्या मैं उससे पूर्व ही पलायन कर गया?

पहले एक प्रसंग सुनो एक मां कोने वाली दुकान पर एक नये यांत्रिक खिलौने का परीक्षण कर रही थी और उसने आश्चर्यचकित होकर कहा—'' क्या यह एक छोटे बच्चे के लिए बहुत अधिक जटिल और उलझन भरा नहीं है?"

विक्रेता ने मुस्कराते हुए कहा—'' नहीं जी! यह शिक्षाप्रद खिलौना है। इसे विशेष रूप से इस तरह डिजायन किया गया है जिससे यह बच्चे को हमारी आज की सभ्यता के बारे में कुछ सिखा सके। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि बच्चा इसे कैसे साथ लेकर चलता है। वह गलत ही होगा।

तुम मेरे साथ अपना सामंजस्य बिठाकर रखने की कोशिश मत करो, अन्यथा तुम गलती करोगे। इसे इसी तरह से डिजायन किया है। मैं स्वयं अपने कहे का स्वयं विरोध करता रहूं मेरा तरीका ही यही है। तुम्हें कोंचते हुए प्रेरित करता रहा, यही मेरा तरीका है। लेकिन अब तुमने तरकीब सीख ली है, वह अब मुझे गहरी शांत दशा में सुनता है। इस बात की फिक्र करो ही मत कि जो कुछ मैंने पहले कहा था, मैं कुछ और उसके विरोधाभास में कहता हूं। बस मुझे इसी क्षण सुनो—उसके साथ अतीत को मत लाओ। यदि तुम उसे सुनते हुए अतीत को साथ न लाओ, तो वहां कोई भी विरोधाभास नहीं है। यदि तुम उसमें अतीत को साथ ले आते हो, तभी विरोधाभास है। केवल अतीत को साथ मत लाओ और यही होती है शांति। तुम केवल इस क्षण मुझे सुनो। तब कहीं भी विरोधाभास न होगा। और यही मेरा पूरा प्रयास है कि अपने कहे का ही विरोध किये जाऊं। एक न एक दिन तुम्हें यह निर्णय लेना ही पड़ेगा कि यदि तुम्हें इस व्यक्ति का सुनना है तो तुम्हें वह सब कुछ भूलना होगा। जो उसने पहले कहा था। तुम्हें सच्चा बनाने का यह एक मार्ग है कि अतीत उसके साथ न आये। यदि मैं बहुत ही पक्के रूप से नियमित बातें ही कहे जाऊं तो तुम मुझे सुनना बंद कर दोगे—क्योंकि फिर सुनने की कोई जरूरत ही नहीं होगी— " यह व्यक्ति तो बार—बार एक जैसी बातों को ही कहे जा रहा है।''

यदि तुम्हें सुनते हुए नींद भी आ जाए तो भी तुम किसी चीज से चूकोगे नहीं। लेकिन मैं तुम्हें सोने नहीं दूंगा, क्योंकि तुम फिर चूक जाओगे, तुम मुझ पर कभी भरोसा नहीं कर सकते।

एक समाचार पत्र में वहां एक विज्ञापन था, एक धनी व्यक्ति को रात में एक सुरक्षा गार्ड की जरूरत है। उसकी तीन शर्तें थीं — पहली उसे बहुत लंबा होना चाहिए शक्तिशाली होने के साथ—साथ उसे दिखने में सख्त होना चाहिए। उसे सजग होने के साथ शराब आदि किसी नशे का आदी नहीं होना चाहिए और तीसरी शर्त थी कि उसे विश्वसनीय होना चाहिए।

मुल्ला नसरुद्दीन ने प्रार्थना पत्र भेजा। उसे साक्षात्कार के लिए बुलाया गया, लेकिन वह धनी व्यक्ति उसे देख कर आश्चर्य में पड़ गया क्योंकि वह छोटे कद का था, लंबा तो था ही नहीं, वह देखने में भी सख्त न था और एक विनीत व्यक्ति सा दिखाई देता था।

उस व्यक्ति ने कहा—'' मुझे ताजुब इसलिए हुआ कि तुमने यहां आने की व्यर्थ तकलीफ की और तुमने मेरा विज्ञापन पढ़कर प्रार्थनापत्र ही व्यर्थ भेजा। क्या तुमने देखा नहीं, कि उसमें तीन शर्तें लिखी थीं पहली तो यह कि उस व्यक्ति को लंबा होना चाहिए कम से कम छ फीट का और तुम पांच फीट से अधिक लंबे लगते नहीं। दूसरे देखने में उस व्यक्ति को सख्त और हिंसक लगना चाहिए जब कि मैंने तुम्हारे जैसा सरल और लगभग साधारण व्यक्ति अब तक नहीं देखा। तुम तो बहुत विनीत और दब्यू जैसे दिखाई देते हो। तुम यहां क्यों आये हो और तुम शराब पीते हो या नहीं?"

नसरुद्दीन ने उत्तर दिया—'' मैं बहुत अधिक शराब पीता हूं।''

तब तुम मेरा समय बरबाद क्यों कर रहे हो? तुम यहां आये ही क्यों?

नसरुद्दीन ने कहा—'' मैं सिर्फ यही कहने के लिए यहां आया हूं कि मैं विश्वसनीय व्यक्ति तो हरगिज भी नहीं हूं।''

मैं भी एक विश्वसनीय व्यक्ति नहीं हूं। मैं यह पूरी तरह भूल ही जाता हूं। कि कल मैंने तुमसे क्या कहा था। मैं एक पियक्कड़ भी हूं। यही वजह है कि मैं इतनी आसानी से अपनी कहीं हुई बात का विरोध करता हूं अन्यथा वह बहुत अधिक कठिन हो जाता। मेरे मन में यह बात कभी आती ही नहीं कि मैं विरोधाभासी हूं। जो कुछ भी मैं कह रहा हूं वह यही है। मैं इस बात की कभी फिक्र ही नहीं करता कि इससे पहले मैंने क्या कहा था। मेरा उससे अब कोई सम्बंध नहीं है। वह उस क्षण का सत्य था, यह इस क्षण का सत्य है और मैं भरोसा करने लायक व्यक्ति नहीं हूं।

मैं ऐसी कोई बात नहीं कह रहा हूं जिसे मैं कल फिर कहने जा रहा हूं। कौन जानता है? मैं स्वयं अपने आप को नहीं जानता। यदि तुम वास्तव में मुझे सुनते हो तो धीमे— धीमे तुम हर क्षण को भी सुनोगे। यही मेरा पूरा प्रयास है।

मैं तुम्हें कोई दर्शनशास्त्र, कोई सिद्धांत या मत देने की कोशिश नहीं कर रहा हूं। कोई भी मत या सम्प्रदाय ही पक्के और नियमित होते हैं। मैं तुम्हें किसी विशिष्ट विश्वास में तुम्हारा रूपांतरण करने की कोशिश नहीं कर रहा हूं क्योंकि विश्वास तो जड़ बना देता है। मैं तुम्हें उस खिड़की तक लाने की कोशिश कर रहा हूं जिससे उसके पार तुम खुला आकाश और सत्य देख सको। उस सत्य का वर्णन नहीं किया जा सकता। और इस सत्य को मत या विश्वास नहीं बनाया जा सकता और इस सत्य में सभी विरोधाभास समाहित हैं। क्योंकि यह अत्यन्त विराट है। इसलिए मैं तुम्हें इसकी झलकें और सभी पहलुओं का दर्शन कराता रहूंगा। इसका एक पहलू या दृष्टिकोण दूसरे दृष्टिकोण का विरोधाभासी है। लेकिन पूर्ण सत्य में उसके सभी दृष्टिकोण और पहलुओं का मिलन और समन्वय है और सभी मिलाकर एक हैं।

मेरे सुनने का तरीका ठीक यही है। यदि तुम मुझे सुनना चाहते हो तो प्रत्येक को यहीं पहुंचना होगा। यदि तुम मेरे साथ होना चाहते हो तो तुम्हें उस शांति तक पहुंचना होगा जहा तुम अतीत की ओर कोई ध्यान दोगे ही नहीं। जो कुछ मैंने कहा था—'' उसे मैं जितनी गहराई से भूल चुका हूं तुम भी उसे भूल जाओ। तुम तो बस मुझे इसी क्षण सुनो। तब वहां कोई भी विरोधाभास न होगा क्योंकि वहां कोई तुलना नहीं होगी। और तब मैं जो भी कहता हूं तुम उससे बंधोगे नहीं। वह केवल एक दिशा है, कोई लक्ष्य नहीं है। वह तुम्हें सजग और सचेत बनाने में केवल सहायता करता है। वह तुम्हें कोई दार्शनिक विचारधारा नहीं देता। वस्तुत: वह तुम्हें एक सूक्ष्म वातावरण देता है, पूरी तरह से भिन्न जीवन की एक दृष्टि देता है। वह मेरी दृष्टि में तुम्हें सहभागी बनाता है।''

एक व्यस्त सरकारी उच्च कार्यालय के आसपास टहलते हुए एक सैल्समैन ने एक अधिकारी से पूछा—'' सबसे नई तरह की अत्याधुनिक टाई खरीदने के बारे में आपका क्या खयाल है?''

उस अधिकारी ने कहा—'' मुझे कोई जरूरत नहीं उसकी। आप बस रफूचक्कर हो जायें।''

सेल्समैन ने कहना जारी रखते हुए कहा—'' वे शुद्ध सिल्क हैं।''

उस अधिकारी का धैर्य जवाब दे गया। उसने कहा—'' देखो! मैंने कहा था कि तुम भागो नहीं तो मैं तुम्हें पीट दूंगा। और यही मेरा अर्थ भी है।'' यह कहते हुए उस अधिकारी ने उस सेल्समैन को उठाकर आगे उछाल दिया। नमूने की टाइयों के डिब्बे खुल कर चारों ओर बिखर गए। सेल्समैन निडर होकर उठा, उसने अपने कपड़ों

पर से धूल झाड़ी, अपना बिखरा सामान समेटा और आफिस की ओर जाते हुए कहा—'' अब तो जो कुछ भी क्रोध आपके अंदर था, बाहर निकल चुका है, अब मैं आपका ऑर्डर लेने के लिए तैयार हूं।''

मैं यही तुम से कहता हूं— अब जो कुछ भी तुम्हारे हृदय में था, वे विरोधाभास जिनके कारण तुम मुसीबत में पड़े थे और जो तुम्हें भावनात्मक रूप से परेशान कर रहे थे, क्योंकि तुम एक दार्शनिक विचारधारा खोज और मानसिक विश्वास खोज रहे थे और कुछ ऐसा खोजने का प्रयास कर रहे थे जिससे तुम आबद्ध हो जाओ, लेकिन मैं तुम्हें इसकी अनुमति नहीं दूगा, अब तुम्हारा हृदय खुल चुका है और मैं तुम्हारा आर्डर लेने के लिए प्रस्तुत हूं।

अंतिम प्रश्न :

प्यारे ओशो! मैं उन सभी चमत्कारों वरदानों

और आनंद के लिए आपको धन्यवाद देना चाहता हूं लेकिन

मैं इसके लिए कोई भी पर्याप्त उचित तरीका खोज ही नहीं सकता।

मैं इस सभी से अत्यंत अभिभूत हूं।

एक छोटा सा प्रसंग:

एक हिप्पी टाइप का आवारा एक गिरजाघर में गया और वहां से बाहर निकलते हुए उसने पादरी से कहा—'' डैडी! आप तो बिना किसी बाधा के मजे से झूम रहे थे।''

पादरी ने कहा—'' फिर से कहें, मैं आपकी बात समझा नहीं श्रीमान! उस आवारा हिप्पी ने कहा—'' मेरे कहने का मतलब है. मैं वास्तव में तुम्हारे संगीत और झूमने से हिल उठा। और दादू! मैंने वहां रखी तुम्हारी पुरानी प्लेट में थोड़ी सी रेजगारी रख दी है।''

पादरी ने झुकते हुए बाहर निकले हाथ को नीचे लाते हुए कहा—'' शांत हो जाओ, पूरी तरह शांत।''

यही वजह है कि मैं तुमसे कह रहा हूं—शांत हो जाओ। पूरी तरह शांत। तुम्हें कृतज्ञता व्यक्त करने की कोई जरूरत ही नहीं है। यह कठिन होगा। यदि तुम उसे अभिव्यक्त कर सके तो भी वह निर्मूल्य होगा। यदि वह किसी कीमत का है भी, तो तुम उसे व्यक्त नहीं कर सकते।

लेकिन यदि तुम मुझे केवल औपचारिक रूप से धन्यवाद देना ही चाहते हो तो तुम उसे व्यक्त कर सकते हो। लेकिन मैं उस व्यक्ति को जानता हूं जिसने तुमसे यह कहा है। कुछ चीज जो वास्तव में घट रही हैं, जो अभिभूत करने वाली है, लेकिन उसे अभिव्यक्त करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

वास्तव में तुम उसे जान पाओ, मैं उससे पहले ही उसे जान लेता हूं। जब कभी भी वह किसी को भी घटती है तो यहां मैं ही उसे सबसे पहले जानता हूं। वह भले ही तुम्हें घट रही हो लेकिन तुम उसे जानने वाले दूसरे व्यक्ति होगे क्योंकि उसे तुम्हारे मन तक पहुंचने में समय लगता है। उसे थोड़ी लंबी यात्रा करनी होती है। वह मेरी ओर अधिक तेजी से यात्रा करती है। मैं जानता हूं कि वह विह्वल कर देती है, लेकिन उसे व्यक्त करने की कोई जरूरत नही, बस शांत हो जाओ। और अधिक शांत बनो और मैं उसे जान जाऊंगा और दूसरे अन्य व्यक्ति भी इसे जान जाएंगे और पूरा संसार यहां तक कि वृक्ष, चट्टानें और नदियां भी इसे जान जाएंगी।

जब यह वास्तव में घटता है, तो उसे कहने की कोई जरूरत ही नहीं। तुरंत ही पूरा अस्तित्व उसे अनुभव करता है कि कुछ घटना घटी है। किसी के लिए अज्ञात का द्वार खुला है। कोई फूल कहीं खिला है, कहीं सहस्त्र दल कमल खिला

आज बस इतना ही।

सातवां प्रवचन

उसके चरणों में भावों के पुष्प अर्पित हैं

दिनांक 27 जून 1976; श्री ओशो आश्रम पूना।

बाऊलगीत:

जब तक तुम पृथ्वी पर हो
तुम पृथ्वी अर्थात् अपनी माटी की देह के प्रति स्वयं ही वचनबद्ध हो।
ओ मेरे हृदय!
यदि तू उस अप्राप्य पुरुष को प्राप्त करना चाहता है—
तो उसके चरणों में
अपने भावों के पुष्पों को अर्पित कर दे;
और अपनी प्रार्थना के आंसुओ से
जो तेरी आंखों से बाढ़ की तरह उमड़ रहे हैं
उन चरणों को भिगो दे।
जिस मानुष की तू खोज कर रहा है।
वह तेरी इस माटी के तन में ही है।
मृत्यु से नवजीवन का प्रारंभ होता है।
और मरने के बाद मृत्यु उसके अस्तित्व को माटी में ही मिला देती है।
और मृत्यु के साथ मर ही जाना है परतुझे जीवित रहते हुए ही
उसे जरूर खोज लेना चाहिए।

बाउलों का धर्म, पृथ्वी का ही धर्म है। वस्तुत: वह मौलिक धर्म है, क्योंकि वह अस्तित्व की जड़ों से जुड़ा है। जब मैं कह रहा हूं कि पृथ्वी का धर्म है तो इसके कई अर्थ हैं, यह देह का धर्म है, यह प्रकृति का धर्म है, यह वास्तविक यथार्थ का धर्म है।

बाउलों का विश्वास किन्हीं काल्पनिक कथाओं में नहीं, और न उनका विश्वास किसी स्वर्ग या बहिश्त में है। वे दूर के लक्ष्यों में विश्वास नहीं रखते, वे काल्पनिक आदर्श संसार का सपना नहीं संजोते, वे बहुत अधिक जमीन से जुड़े वास्तविक मनुष्य हैं। यह चीज धर्मों के संसार में बहुत विशिष्ट है। क्योंकि साधारण धर्म और कुछ भी नहीं है, बल्कि वह दुखी मनुष्यता के सपनों और कामनाओं को पूरा करते हैं।

क्योंकि मनुष्यता दुख भोग रही है, इसलिए वह वास्तविक जीवन की अधूरी कामनाओं को सपनों में पूरा करते हैं। एक निर्धन व्यक्ति अपने आपको आश्वस्त कर सकता है कि वह कम से कम परमात्मा के राज्य में तो प्रथम होगा। वह इस तरह कहकर अपने आपको संतोष दे सकता है। धन्यभागी हैं वे विनम्र और दबे हुए लोग क्योंकि वे ही एक दिन उत्तराधिकार में पृथ्वी का राज्य प्राप्त करेंगे। निर्धन आत्मा वाले ही परमात्मा के लोग हैं, जो यहां सबसे अधिक अंत में हैं, लेकिन परमात्मा के राज्य में वे सर्वप्रथम हो जाएंगे। गरीब व्यक्ति को इन सभी आश्वासनों की जरूरत होती है।

मनुष्य मृत्यु से डरता है। उसे बार—बार यह आश्वस्त होने की जरूरत होती है— " तुम आत्मा हो, मृत्यु के पार शाश्वत—केवल शरीर मरता है। तुम नहीं।" मनुष्य एक हजार एक उलझनों से पीड़ित है। उसका लगभग पूरा जीवन ही लगभग दुख उदासी और पीड़ाओं का एक पारावार है। उसे सहन करना बहुत कठिन है। इसीलिए सपनों की जरूरत है, एक बेहतर भविष्य के लिए आशाओं की जरूरत है। वह भले ही मृत्यु के पार हो, लेकिन केवल यह विचार ही—कि वहां तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है— और ये सभी दुख केवल आज ही है—इन्हें किसी तरह गुजार दो और कल पर विश्वास करो। देर सवेर तुम उनसे मुक्त हो जाओगे। सामान्य धर्म आने वाले कल के धर्म हैं। वे केवल यही इंगित करते हैं कि क्योंकि मनुष्य दुखों में जी रहा है, उसे सपनों की जरूरत है।

बाउलों का धर्म नीचे इसी पृथ्वी ही में है वह अभी और यहां में विश्वास करता है। वह यह नहीं कहता कि स्वर्ग कहीं और है वह यहीं है और तुम उसे आगे के लिए स्थगित नहीं कर सकते। सभी चीजों को आगे के लिए टाल देना या स्थगित कर देना बहुत खतरनाक है, वह आत्मघाती है। यदि तुम उसे अभी और यहीं नहीं खोज सकते, तो तुम उसे कहीं भी कभी न खोज सकोगे, क्योंकि तुम तो ज्यों के त्यों बने रहोगे। और तुम जहां कहीं भी होगे जीवन हमेशा अभी और यहीं के रूप में तुम्हारे सामने होगा। इसलिए सत्य का द्वार केवल यही है और इसी क्षण में है।

बाउल कहते हैं—" यही है सत्य और वास्तविकता और वहां कोई भी वह नहीं है। वे सत्य को दो में विभाजित नहीं करते, वे यह नहीं कहते कि यह माया या भ्रम है और यह रहा सत्य। वे माया और ब्रह्म, की बात नहीं कहते, वे यह और वह की बात नहीं कहते। वे कहते हैं—" सब कुछ यही है।" यह क्षण अपने आप में पूरा है और सभी विभाजन खतरनाक है क्योंकि सत्य को कहीं भी विभाजित नहीं किया जा सकता। वह अविभाज्य है।

परमात्मा के बारे में वे कुछ बात करते ही नहीं कि वह कहीं सातवें आसमान में बैठा हुआ है। वे लोग पूरी तरह भिन्न एक अलग परमात्मा की बात करते हैं। जो गहरे में तुम्हारे ही अंदर जड़ें जमाये हुए हैं, जिसकी जड़ें जमीन में है, माटी की इस देह में है, जिसकी जड़ें यहां के सभी तनावों और खींचतान में है। बाउलों का परमात्मा ही बहुत वास्तविक ईश्वर है। तुम उसे छू सकते हो, तुम उसे प्रेम कर सकते हो, तुम उसे आलिंगन में बांध सकते हो, तुम उसके साथ रह सकते हो, और तुम उसे जी सकते हो। वह कहीं दूर नहीं है, वह बहुत निकट है, निकट से भी निकटतम है, क्योंकि वह तुम ही हो। वे लोग परमात्मा शब्द का प्रयोग करते ही नहीं। परमात्मा के लिए उनका शब्द है—" आधार मानुष।" सारभूत मनुष्य। मनुष्य स्वयं अपने आप में दिव्य है। यदि तुम स्वयं अपने ही अंदर प्रवेश करो, तो तुम परमात्मा में ही प्रवेश करोगे।

इसका यह अर्थ नहीं है कि वहां कोई परमात्मा नहीं है। यह एक मौलिक दृष्टिकोण है लेकिन यह नकारना नहीं है। यह बहुत क्रांतिकारी दृष्टि है लेकिन यह नकार नहीं है। इसका यह अर्थ नहीं है कि परमात्मा का कोई अस्तित्व है ही नहीं। वास्तव में इसका अर्थ है कि परमात्मा यहीं और अभी मौजूद है। और उसे खोजने की तुम्हारी ही जिम्मेदारी है। और वहा कोई गवाही नहीं है, वहां उसे टालने का कोई बहाना नहीं है।

चीन में ताओवादी भी इसी परिणाम पर पहुंचे, उन्होंने परमात्मा शब्द को ही छोड़ दिया। उन्होंने ' ची लॉन ' शब्द का प्रयोग करना शुरू कर दिया।' ची लान ' का अर्थ है जो स्वयं से अपने आप घटता है जो पहले ही से घट रहा है, जो हमेशा से ही घटता रहा है और जो हमेशा घटता ही रहेगा। यही ताओ शब्द का भी अर्थ है। वेदों में हिंदुओं के पास एक सुंदर शब्द है, वे उसे ' ऋतम् ' कहते हैं। यह ठीक वही शब्द है जो ' ताओ ' और ' चीलान ' है।' ऋतम् ' का भी अर्थ होता है। प्रकृति। परमात्मा नहीं। क्योंकि जब भी तुम परमात्मा कहते हो, किसी न किसी तरह वह हमेशा कहीं और होता है, यहां नहीं होता, कम से कम तुममें नहीं होता, तुम्हारे आस—पास नहीं होता। यह पृथ्वी यहां परमात्मा के रहने योग्य पर्याप्त नहीं है।

जैन और बुद्ध—' धम्म ' शब्द का प्रयोग करते हैं। उसका भी ठीक—ठीक अर्थ प्रकृति या स्वभाव है। संस्कृत शब्द ' धर्म ' का भी अर्थ स्वभाव ही है। यह अंग्रेजी शब्द रिलीजन का समानार्थी नहीं है। नहीं, यह बिलकुल भी वह सब नहीं है। वास्तव में दोनों ध्रुव विरोधी हैं। रिलीजन का अर्थ होता है—जो तुम्हें बांधता है। तुम्हें एक निश्चित संगठन देता है, पूजाघर या चर्च देता है, तुम्हें किसी के अधिकार में देता है और धर्म का अर्थ है वह जो तुम्हें सभी चर्चों (पूजाघरों) से और संगठनों से मुक्त करता है। धर्म वैयक्तिक है, रिलीजन सामाजिक है। रिलीजन सामूहिक भीड़ के अधिकार में होता है रिलीजन वैयक्तिक नहीं होता। ईसाइयत हिन्दुत्व जैनिल्म, और बुद्धिज्म यह सभी रिलीजन हैं धर्म नहीं है— धर्म का कोई विशेषण नहीं होता। प्रत्येक व्यक्ति को अपना धर्म स्वयं खोजना होता है। प्रत्येक को अपना स्वभाव या अपनी प्रकृति स्वयं खोजनी होती है।

बाउलों का यह दृष्टिकोण कि परमात्मा यहीं तुम्हारे ही अंदर हैं, इसे जितनी भी गहराई से संभव हो सके, तुम्हें समझना है, क्योंकि इसके अतिरिक्त अन्य कोई दूसरा परमात्मा नहीं है। वास्तव में चूंकि अन्य तथार्काथेत धर्म (रिलीजन) कहीं दूसरी जगह परमात्मा के बारे में बात करते रहें हैं, यही कारण है कि संसार अधिक से अधिक परमात्मा रहित हो गया है। क्योंकि जो परमात्मा यहां नहीं है, जिसे स्पर्श नहीं किया जा सकता है, जिसे देखा नहीं जा सकता है, जिसे साथ रहकर जिया नहीं जा सकता। अधिक से अधिक आकर्षक सिद्ध नहीं हो सकता। मनुष्य ज्यों—ज्यों विकसित होता जाता है, परमात्मा उतना ही विलुप्त और महत्त्वहीन होना शुरू होता जाता है।

जब भी मनुष्य परिपक्व और विकसित हो जाता है, सपनों और कल्पना के वे सभी देवता लुप्त हो जाते हैं, और मनुष्य बिना परमात्मा के रह जाता है। इस युग में जो कुछ हुआ है, वह यही है। ऐसा नास्तिकों के कारण नहीं हुआ है कि मनुष्य बिना परमात्मा के रह रहा है, ऐसा परमात्मा की गलत धारणा के कारण हुआ है। मार्क्स ईसाइयों के परमात्मा की निंदा कर सका, लेकिन मार्क्स बाउलों के परमात्मा की निंदा नहीं कर सकता है। वैज्ञानिक भी तथाकथित धर्मों के परमात्मा से इंकार नहीं कर सकते—क्योंकि वे सपनों जैसी किसी भी चीज को प्रक्षेपित नहीं करते। वे वास्तविक यथार्थ की धरती पर खड़े हैं।

मैंने एक सुंदर वृत्तांत के बारे में सुना है:

रूस के एक उच्च अधिकारी ने एक किसान से पूछा— " हमारे गौरवपूर्ण महान नेता के निर्देशन में नई किस्म के आलू उत्पादन की योजना कैसा परिणाम ला रही है?"

किसान ने उत्तर दिया—'' हमारी आलू की फसल ने तो चमत्कार कर दिया। यदि हम लोग फसल की सभी आलुओं का एक ढेर लगा दें, तो वह एक पहाड़ बनकर परमात्मा के चरणों तक पहुंच जाएगा।''

उस उच्च अधिकारी ने कहा— " लेकिन तुम तो जानते हो कि वहां कोई परमात्मा है ही नहीं।''

"मैं जानता हूं " किसान ने कहा—''लेकिन वहां आलू भी तो नहीं है।''

आसमान में बैठा परमात्मा झूठा परमात्मा है। ऐसा नहीं है कि आसमान बिना परमात्मा के है—पूरा आसमान, पृथ्वी की ही भांति परमात्मामय है। लेकिन परमात्मा की पहली समझ की जड़ें तो पृथ्वी के ही अंदर जानी हैं। पहली समझ तो जड़ों के बाबत होना चाहिए और उन जड़ों से भी तुम्हारी समझ विकसित होगी और वह अस्तित्व के दूरस्थ कोनों तक पहुंच जाएगी। लेकिन यात्रा तो घर से ही शुरू होती है। वह तुम्हारे अंदर की गहराई में ही उसकी शुरुआत होती है। परमात्मा की पहली झलक तो तुम्हें अपने हृदय की ही अनंत गहराई में मिलती है। यदि तुमने उसे वहां नहीं देखा।

तो तुम उसके बारे में बातें किए जाओगे, लेकिन तुम उसे कहीं भी देखने में समर्थ न हो सकोगे। तुम्हारे अंदर ही उससे आमने—सामने मिलने की घटना घटती है। एक बार जब यह घट जाती है। तो तुम आश्चर्यचकित

हो जाओगे कि फिर तुम्हें प्रत्येक स्थान पर परमात्मा दिखाई देना शुरू हो जाता है। बस एक बार तुमने उसे अपने हृदय में देख लिया, फिर तुम उसे कैसे चूक सकते हो? क्योंकि हर जगह हृदय उसी के साथ ही धड़क रहा है। वही वृक्ष और वही चट्टान के रोम—रोम में व्यास है।' वही नदियों और सागरों में, वही जानवरों और पक्षियों में और वही सर्वत्र व्यास है।

एक बार तुमने उनकी धड़कन का अनुभव कर लिया, एक बार तुमने उसका अपने रक्त में परिभ्रमण करने का अनुभव कर लिया, एक बार तुमने अपनी अस्थियों में बहते जीवन रस में उसका अनुभव कर लिया, तब वह हर कहीं है। तुम जहां भी देखोगे, उसी को पाओगे। लेकिन यह किसी और तरह से नहीं घट सकता। यदि तुम उसके अनुभव से वंचित और रिक्त हो, तो तुम संसार के किसी दूरस्थ कोने में भी चले जाओ, फिर भी तुम्हारी यात्रा व्यर्थ होगी। तुम उसके मंदिर तक कभी न पहुंच सकोगे। क्योंकि तुम उसके मूल से ही चूक गए। तुम उससे अपने ही घर में चूक गए। यदि तुम्हारा अपना ही घर उसका मंदिर नहीं बना, तो कोई भी मंदिर उसका घर नहीं हो सकता। यदि तुम्हारा अपना घर ही उसका मंदिर बन गया, तब फिर सभी घर उसके ही घर हैं।

जब बाउल कहते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति को जमीन की ओर उन्मुख अपने जड़ों से जुड़ा रहना चाहिए तो इसका अर्थ यह नहीं कि आकाश परमात्मा से रिक्त है बल्कि वे कहते हैं, यदि पृथ्वी ही उससे भरी नहीं है, तो आकाश तो रिक्त होगा ही। जब वह पृथ्वी के ही कण—कण में व्यास उससे भरा हुआ नहीं है, तो आकाश उससे भरा हुआ कैसे हो सकता है? यदि वहां यह नहीं है, तो वह वहां कैसे हो सकता है? यदि वह ' यह ' नहीं है, तो वह ' वह ' कैसे हो सकता है? यदि वह 184 ३ प्रेम योग आज नहीं है, तो कल कैसे हो सकता है? यदि वह इस जीवन में नहीं है, तो वह अगले जन्म में कैसे है? उनका तर्क सरल और न काटे जाने वाला है।''

लेकिन मनुष्य ने परमात्मा का सृजन आसमानों में किया है क्या? यह परमात्मा सच्चा परमात्मा नहीं है, यह उसका प्रतिस्थापन है, क्योंकि तुम उससे यहां चूक रहे हो और तुम उसे बहुत तीव्रता से चूक रहे हो? जिससे तुमने उसे कहीं और बहुत तीव्रता से चूक रहे हो, जिससे तुमने उसे कहीं और रख दिया है, अन्यथा तुम बहुत अकेलेपन का अनुभव करोगे, तुम इतने अधिक अकेलेपन का अनुभव करोगे, कि तुम जीवन का अर्थ ही भूल जाओगे। और यह अच्छा है कि तुमने उसे बहुत दूर रख दिया है, क्योंकि तब वहां पहुंचने की कोई जल्दी नहीं है। वह मात्रा इतनी अधिक दूर की है, कि तुम उसे आज ही पूरा नहीं कर सकते। इसके लिए यह जीवन भी पर्याप्त नहीं है। इसलिए उसे टालने को पर्याप्त स्थान है, और कहने की भी बहुत अधिक गुंजाइश है—'' हां! एक न एक दिन मैं उसे पूरा करूंगा। यह बहाने बनाने की भी काफी गुंजाइश है कि तुम्हारी उसमें पूरी दिलचस्पी है और संसार में रहना जारी रखते हुए भी तुम उसी समय में ही परमात्मा के बारे में बातें किए जाते हो। यह दो तरह की बातें हैं और सामान्य मनुष्यता इसी दोहरे बंधन में बंधी है। लोग बातें तो परमात्मा की करते हैं, और रहते हैं शैतानों की तरह। वे जाते तो मंदिर हैं, पर कभी वहां पहुंचते ही नहीं। वे बाइबिल पढ़ते हैं, वे कुरान पढ़ते हैं, लेकिन वे कभी भी सुनते नहीं केवल परिधि पर ये सभी बहाने हैं। इसी तरह से अच्छाई का मुखौटा लगाए हुए इस अपराधग्रस्त मनुष्यता का जन्म हुआ है। एक नकली, छद्म मनुष्यता।''

मैंने सुना है:

एक बार मुल्ला नसरुद्दीन अपने मनोचिकित्सक के पास जाकर बोला— " डॉक्टर साहब! क्या आप मेरे लिए ही मुझ पर यूक सकते हैं?"

"क्यों? आखिर तुम ऐसा क्यों चाहते हो?" डॉक्टर ने आश्चर्यचकित होकर पूछा।

मुल्ला ने कहा—'' क्योंकि मैं इतना अधिक अकेलापन महसूस कर रहा हूं।''

परमात्मा के बिना मनुष्य बहुत अकेलेपन का अनुभव करता है और असली परमात्मा को खोजना, खड़े पर्वत पर चढ़ने जैसा श्रमपूर्ण है। एक ऐसे नकली परमात्मा का सृजन करना बहुत आसान है, जो परमात्मा जैसा दिखाई देता हो, जो परमात्मा की तरह लगता हो। वह कम से कम यह सान्त्वना तो देता ही है कि तुम अकेले नहीं हो। क्या तुमने कभी परमात्मा की धारणा पर ध्यान दिया है? क्या वह तुम्हारे अपने अस्तित्व के अनुभव से उत्पन्न हुआ है, अथवा वह तुम्हारे अकेलेपन के अनुभव से जन्मा है? यही इसकी कसौटी है।

यदि तुम्हें परमात्मा पर विश्वास है, क्योंकि तुम अकेलेपन का अनुभव करते हो, तो तुम्हारा परमात्मा झूठा और नकली है और यदि तुम परमात्मा में विश्वास करते हो क्योंकि तुमने उसका अनुभव अपने एकांत में किया है, यदि वह तुम्हारे अपने अस्तित्व से जन्मा है, तब परमात्मा में विश्वास करते हो, क्योंकि तुमने उसका अनुभव अपने एकांत में किया है, यदि वह तुम्हारे अपने अस्तित्व से जन्मा है, तब वह परमात्मा असली है। तब नीवो को करने दो घोषणा—कि तुम्हारा परमात्मा मर गया है—तुम्हारा परमात्मा कभी भी मर ही नहीं सकता, तुम्हारा परमात्मा तुम्हीं में जीवित है। नीवो यह घोषणा कैसे कर सकता है कि परमात्मा मर गया है? यह घोषणा कर सका और न केवल उसने घोषणा ही की, उसकी घोषणा एक भविष्यवाणी बन गई। सौ वर्षों में ही उसकी घोषणा वास्तविकता में बदल गई। चर्चों का परमात्मा मर गया, मंदिरों का परमात्मा मृत हो गया, शास्त्रों का परमात्मा मुर्दा बन गया। नीवो जैसा भविष्यवक्ता कोई दूसरा आज तक हुआ ही नहीं। परमात्मा विलुप्त होता जा रहा है, 'परमात्मा' शब्द ही कुरूप बन गया है।

ठीक दूसरे ही दिन मैं एक ईसाई पादरी द्वारा लिखी हुई एक पुस्तक पढ़ रहा है। मैं हैरान था, क्योंकि मैंने ऐसी कुछ परिस्थितियों के बारे में सुना था, विशेष रूप से भारत में जहां लोग यदि कोई अश्लील नग्न चित्रों वाली पुस्तक पढ़ना चाहें तो वे उसे गीता और बाइबिल में छिपाकर पढ़ते हैं। इसके बाबत मैंने केवल सुना ही था। लेकिन वह ईसाई बता रहा था कि उसे बाइबिल पढ़ते हुए इतना डर लगता था कि वह नग्न चित्रों की पत्रिका के कवर के पीछे बाइबिल को छिपाकर पढ़ा करते थे। ऐसी घटनाएं पश्चिम में घटी हैं। इसलिए जब वह प्रत्येक रविवार सौंदर्य प्रसाधन के सैलून में जाता था, तो बाइबिल अपने साथ ले जाता था।

लेकिन दूसरे लोग उसे बाइबिल पड़ता देखकर समय के बाहर मान सकते हैं, इस भय से वह नग्न चित्रों की पत्रिका के कवर में बाइबिल छिपाकर पढ़ा करता था।

एक दिन बाइबिल पढ़ते हुए वह जीसस के इस वचन से गुजरा—'' यदि तुम मुझसे इंकार करते हो, तो याद रखो, निर्णय के अंतिम दिन मैं भी तुमसे इंकार कर दूंगा। इसलिए यह पढ़कर वह बहुत अधिक डर गया, क्योंकि प्लेबुक के कवर में छिपाकर बाईबिल पढूगा भी एक तरह से इंकार करना ही था। वह इतना अधिक डर गया कि उसके पसीना छूटना शुरू हो गया क्योंकि जीसस कहते हैं—'' यदि तुम मुझे इंकार करते हो, तो परमात्मा के सामने मैं तुम्हें पहचानूंगा नहीं।'' इसलिए उसने अश्लील चित्रों वाली वह प्लेबुक मैगजीन तुरंत फेंक दी और ऐसा कर उसे बहुत अच्छा लगा। वह पादरी के पास गया और उससे कहा—'' आज मैंने एक महान कार्य किया है। मैं इतना साहस बटोर सका कि लोग जानें कि मैं बाइबिल पड़ता हूं।''

परमात्मा मर गया है, उसे मरना ही चाहिए। क्या तुमने स्वयं का निरीक्षण किया है? यदि तुम अपने साथ एक बाइबिल लिए जा रहे हो तो तुम्हें थोड़ा भद्दा सा लगता है अथवा यदि तुम मंदिर की ओर जा रहे हो तो तुम बहाने ढूंढना शुरू कर देते हो। तुम वहां इसलिए जा रहे हो, क्योंकि तुम्हारी पत्नी वहां गई हुई है और वहां तुम्हें भी कुछ काम करना है अथवा तुम्हारे पिता वहा है और तुम्हें बस औपचारिकता निभाने ठीक एक सामाजिकतावश वहां जाना है। क्या तुमने कभी गौर किया है कि चीजें कैसे बदल जाती हैं?

मुझे इसका स्मरण तब आया, जब मैं एक सुंदर कहानी पड़ रहा था—

एक डाकू एक महान लुटेरे की डकैती डालने की अमरीकन शैली में दिलचस्पी उत्पन्न हो गई। अब प्रत्येक उस व्यक्ति को दिलचस्पी लेनी ही पड़ती है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अपने धंधे के सिलसिले में अमेरिका जाने की कोशिश कर रहा है। डॉक्टर जा रहे हैं, इंजीनियर जा रहे हैं, इसलिए उस डाकू ने सोचा— " हमीं क्यों नहीं जा सकते वहां? हम वहां जाकर डकैती डालने की आधुनिक विधियां सीख सकते हैं।''

इसलिए वह अमेरिका गया, और डाकुओं के एक गिरोह में सम्मिलित हो गया। और वह निरीक्षण करता रहा कि वे अपने काम में किन आधुनिक विधियों का प्रयोग कर रहे हैं। वह वह देखकर आश्चर्यचकित रह गया क्योंकि पहले उन्होंने एक सुंदर स्त्री का अपहरण किया और तब उन्होंने पत्र लिखा..... .लेकिन उसने कहा—'' यह सब तो ठीक है क्योंकि भारत में भी हम लोग किसी स्त्री का अपहरण करते हैं और तब हम उसके पति को पत्र लिखते हैं कि यदि तीन दिनों में उसने पचास हजार रुपये नहीं दिए तब हम लोग उसकी पत्नी की हत्या कर देंगे। इसलिए उसने आश्चर्यचकित होकर कहा—'' आखिर इसमें नई बात क्या है?" तब उसने देखा कि वे लोग पत्र में क्या लिख रहे थे। उसने आश्चर्यचकित होकर पूछा— " आप लोग यह क्या रह रहे हैं?" क्योंकि पत्र में उन लोगों ने लिखा था—'' यदि तीन दिनों के अंदर आपने हमें पचास हजार डालर नहीं भेजे तो हम लोग आपकी पत्नी को वापस भेज देंगे।''

यह संसार बहुत तेजी से बदल रहा है। लोग प्लेबॉय पत्रिकाएं पहले बाइबिल की जिल्द में छिपाकर पढ़ते थे, लेकिन अब वे बाइबिल को नग्न चित्रों की पत्रिकाओं में छिपा रहे हैं। नीवो बिल्कुल ठीक था, जिसने कहा—'' परमात्मा मर चुका है। लेकिन असली परमात्मा नहीं मर सकता, यह असम्भव है। यह कहना है कि परमात्मा मर गया है, यही कहने जैसा है कि जीवन ही मर गया है। यदि परमात्मा का अर्थ जीवन है, तब यह वक्तव्य " परमात्मा मर चुका है " महज एक बेवकूफी है, यह अर्थहीन और विरोधाभासी है।

इसे सुनकर बाउल हंसेंगे और कहेंगे—'' तब तुम असली परमात्मा को समझे ही नहीं। हां तुम्हारा परमात्मा मर चुका है क्योंकि वह नकली था, क्योंकि हमने कभी परमात्मा के बारे में बात की ही नहीं— हम तो जीवन और प्रेम के बारे में बात करते हैं। यदि सभी मंदिर गिरा दिए जाएं सभी मस्जिदें और गुरुद्वारे जला दिए जाए तो भी परमात्मा का कुछ बिगडेगा नहीं, क्योंकि उन पूजाघरों में सुरक्षित और संरक्षित परमात्मा असली नहीं है। तुम्हारे अंदर विराजमान परमात्मा ही असली परमात्मा है और उसे नष्ट नहीं किया जा सकता। जीवन को नष्ट नहीं किया जा सकता, जीवन तो गतिशील है। वह तो शाश्वत सरिता की भांति बहा जा रहा है।'' लेकिन कोई भी व्यक्ति अकेलेपन का अनुभव करता है। अपने अकेलेपन में वह कल्पनाएं और स्वप्न निर्मित करता है। मनुष्य इतना अधिक अकेला हो गया है कि वह कहीं भी किसी भी तरह चैन पाना चाहता है। यह दुर्भाग्य है उसका, लेकिन सत्य को खोजने का यह कोई मार्ग नहीं है।

मैं एक प्रसंग के बारे में कहीं पड़ रहा था:

इरा ने कॉलेज छोड़ते हुए पीठ पर समान लादा और पैदल, वाहनों पर लिफ्ट लेता हुआ अमेरिका घूमने चल पड़ा। एक वर्ष से अधिक समय बीत जाने पर उसने घर फोन किया—'' हल्लो मम्मी! आप ठीक तो हैं।''

" ओह मेरे प्यारे बेटे! बहुत अच्छी तरह से हूं। तुम घर कब आ रहे हो? मैं तुम्हारे लिए जिगर का कीमा, चिकन सूप और स्वादिष्ट भुने केकड़े बनाकर रखूंगी।''

" मां! मैं यहां से काफी दूरी पर हूं।''

" ओह! मेरे प्यार बेटे!" निराश होकर मां ने चीखते हुए कहा—'' तू बस घर जा आ बेटे। मैं तेरे लिए तेरी पसंद की ओट मील की पतली पतली केक बना दूंगी।'' लड़के ने उत्तर दिया—'' मां! मुझे ओटमील कुकीज जरा भी अच्छी नहीं लगती।''

उसकी मां ने आश्चर्य से पूछा—'' क्या कह रहा है तू क्या वह अच्छी नहीं लगती तुझे?''

'' कृपया बताएं?'' इरा ने पूछा—'' क्या यह फोन नं सेंचुरी 5 — 7682 है?''

'' नहीं।''

'' तब यह जरूर ही गलत नम्बर है।''

उस स्त्री ने पूछा—'' क्या इसका मतलब है कि तू घर नहीं लौट रहा है बेटे।''

लोग वास्तव में बहुत अकेले हैं। यदि वह उसका बेटा भले ही न हो, कम से कम कोई तो आ रहा है। तुम बहाने बना सकते हो, तुम विश्वास कर सकते हो, तुम स्वयं को सान्त्वना दे सकते हो।

वह परमात्मा जो मंदिरों में रहता है, असली परमात्मा नहीं है। वह परमात्मा जो ऊपर आसमान में रहता है, वह तुम्हारा ही प्रक्षेपण है? असली परमात्मा तो तुम्हारे ही अंदर है। वह जिसे तुम खोज रहे हो, वह कहीं और नहीं है, वह तुम्हारे उस खोजने में ही है। वह तो स्वयं खोजने के ही अंदर है। जिसे खोजा गया, वह तो खोजी के ही अंदर है। तुम्हीं एकमात्र सत्य हो, हाड़मांस के तुम्हीं जीवन्त परमात्मा हो। तुम्हारे अंदर ही परमात्मा ने जन्म लिया है। तुममें ही परमात्मा ने अवतार लिया है, परमात्मा ने जन्म लिया है। तुममें ही परमात्मा ने अवतार लिया है, परमात्मा ही तुम्हारा शरीर लेकर तुममें प्रकट हुआ है। तुम कहां खोज रहे हो उसे? तुम जा कहां रहे हो? बाउल कहते हैं—'' जरा प्रतीक्षा करो, सुनो, और अपने ही अंदर जाओ।''

वे गाते हैं:

मनुष्य के अंदर घुलमिल एक होकर
परमात्मा ही उसमें निवास कर रहा है।
ओ मेरे अदृश्य हृदय
तेरी आंखें निर्बुद्धि और नासमझ हैं।
तू कैसे उस अकृत—अपार—गुणों के भंडार उस मनुष्य की खोज कर सकता है?
वह अदृश्य अरूप मानुष,
समझ और होश की दीप्ति में निवास करता है
मूर्च्छित और आंखों वाले अंधों से, वह अपन पहचान छिपा कर रखता है।
उसके ठहरने का ठिकाना ही मनुष्य का तन है,
उसी के द्वारा वह प्रकट होता है और उसी के साथ नष्ट हो जाता है।
ठीक पलकों को झपकाने की तरह।
वे बार—बार गाए ही चले जाते हैं :
हम सभी भिन्न—भिन्न मार्गों और विधियों से
उस परमात्मा के बारे में सोचते, उसका ध्यान या पूजा प्रार्थना करते हैं।
वह परमात्मा जो सभी इद्रियजनित ज्ञान और भावों के पार हैं।
यद्यपि वह प्रेम के सार में ही पाया जाता है।
अपने स्वयं के अस्तित्व सागर के उस पार दूसरे छोर पर।
द्रव की जो एक अमृत बूंद कांपते हुए झरती है।
जो जैसे सभी का मूल स्रोत है।
सभी की जड़ों का आधार तुझमें ही है।
उस सारभूत आधार मानुष तक पहुंचने के लिए उस आधार को खोजो

उस प्रीतम प्यारे को पाने के लिए

अपने भावों के द्वार खोलो

अपनी जिह्वा, स्वाद और इंद्रिय जनित संवेदनाओं के प्रति समर्पित।

जहां वासना और प्रेम एक ही स्थान पर मिलकर एक हो गए हैं।

वहां—

उस ब्रह्म कमल से अमृत सहजता से झर रहा है

वहां फिर न दुख रहते हैं और न रहता है सुख

सभी द्वैत के पार रह जाता है केवल आनंद

वे मनुष्य में विश्वास रखते हैं। वे मनुष्य की शक्ति और उसकी संभावनाओं पर विश्वास करते हैं। वे विश्वास करते हैं कि मनुष्य ही तीर्थ है परमात्मा का। वे देह पर विश्वास करते हैं। तंत्र के अतिरिक्त किसी भी अन्य धर्म ने शरीर के ही अंदर चेतना की चमत्कारिक घटना को समझने की कभी कोशिश नहीं की। अन्य सभी धर्म शरीर—विरोधी, जीवन—विरोधी होने के साथ जीवन और शरीर को नकारते रहे हैं, उसकी निंदा करते रहे हैं, जैसे मानो तुम जितना अधिक शरीर को सताओगे और उसे क्षति पहुंचाओगे, तुम उतने ही अधिक दिव्य और उतने ही अधिक परमात्मा के निकट हो जाओगे।

बाउल कहते हैं यदि तुम शरीर को हानि पहुंचाते या उसे सताते हो, तो तुम मूल आधार को ही नष्ट कर रहे हो। यदि तुम अनुभूति और संवेदना को नष्ट करते हो, तो तुम अपनी इंद्रियों को ही नष्ट करते हो, तब फिर तुम कैसे स्वाद ले सकोगे, तुम कैसे सुन सकोगे, और तुम कैसे देख सकोगे? यदि तुम प्रेम को नष्ट करते हो तो तुम उसे प्रेम कैसे कर सकोगे? यदि तुम अपनी वासना को नष्ट करते हो तो तुम नपुंसक हो जाओगे।

वास्तव में इन लोगों के पास संसार को सिखाने के लिए एक क्रांतिकारी धर्म है। ये बहुत अशिक्षित लोग हैं, लेकिन इनके पास एक गहरी अंतर्दृष्टि है। यह हो सकता है कि उनके पास भरपूर अंतर्दृष्टि इसीलिए है, क्योंकि वे अशिक्षित है..... .क्योंकि वे शास्त्रों के बारे में अधिक नहीं जानते और न वे दर्शनशास्त्र और आत्मज्ञान के बारे में ही अधिक जानते हैं। क्योंकि ये लोग पुस्तकें नही पढ़ सकते, इसलिए वे अपनी ही देह को पढ़ते हैं, क्योंकि वे मन के सूक्ष्म विचारों और सिद्धांतों को नहीं समझ सकते, वे यह खोजने की कोशिश करते हैं कि वे कौन है, क्योंकि वे लोग विद्वान नहीं बन सकते, वे लोग तो एक गांव से दूसरे गांव में नाचते गाते और आनंद मनाते हुए घूमने वाले गरीब भिखारी हैं, इसीलिए ये लोग सत्य के इतने अधिक निकट हैं। ये लोग समाज, संस्कृति और शिक्षा के प्रदूषण से मुक्त, बहुत ही प्रामाणिक लोग हैं। ये लोग बहुत भोले और निर्दोष हैं और यही उनकी समझ है कि यह शरीर दिव्य है। यह शरीर पवित्र है क्योंकि प्रत्येक वस्तु पवित्र है। लेकिन यह ' पवित्र ' शब्द बहुत अच्छा नहीं है। बाइबिल के पुराने टेस्टामेंट में ' सेक्रिड ' (पवित्र) इसलिए पुकारा जाता है क्योंकि वह इस संसार के सत्य से पृथक सत्य है। इसे सुनकर बाउल हसेंगे। वे कहेंगे—'' तुम पागल हो गए हो। कोई पृथक सत्य है ही नहीं। यह संसार की वास्तविकता ही परमात्मा है। बाउल पूरे संसार की वास्तविकता को ही पावन पवित्र और दिव्य बना देते हैं। उनकी दृष्टि इतनी विराट है कि पदार्थ भी उनके विचार में पदार्थ जैसा नहीं रह जाता। उनकी दृष्टि से पदार्थ भी दीसिवान हो जाता है, शरीर भी केवल शरीर नहीं रह जाता वह माटी से पृथ्वी से बना है और अपने में वह एक दिव्यता लिए हुए हैं।''

मैंने एक हसीदीरबी के बारे में सुना है—'' उसका नाम रबी बोनुम था। जब वह मर रहा था, तो उसने अपने शिष्यों के लिए अपना संदेश छोड़ते हुए कहा— " प्रत्येक व्यक्ति को दो जेबें जरूर रखना चाहिए जिससे आवश्यकता के अनुसार उसके हाथ पहली या दूसरी तक पहुंच सकें। पहली जेब में यह वाक्य होना चाहिए " यह

संसार मेरी ही खातिर बनाया गया " और बायीं जेब में यह वाक्य होना चाहिए—'' मैं और कुछ भी नहीं सिर्फ मिट्टी या पृथ्वी हूं।''

अति सुंदर। वह कह रहा है—'' मनुष्य और कुछ भी नहीं, माटी का पुतला है। एक जेब में यह संदेश रखना, और दूसरी जेब में—यह पूरा संसार मेरे लिए ही बनाया गया है। मैं ही पूरे संसार का परमात्मा हूं " यह संदेश रखना। दोनों ही संदेश सत्य हैं क्योंकि एक वास्तविक सत्य को प्रदर्शित करता है और दूसरा तुम्हारी संभावना या क्षमता को दिखाता है। एक ' तथ्य ' को दिखलाता है और दूसरा ' सत्य ' को।''

वास्तविकता यही है कि हम सभी मिट्टी या पृथ्वी से ही बने हुए हैं, सत्य यही है कि हम सभी उसी की छवि के रूप में ही बने हैं। हम दोनों ही हैं परमात्मा, पृथ्वी में सबसे अधिक मूल्यवान हैं, एक तीर्थ की भांति है। हम सभी पृथ्वी ही से बने हैं और इसीलिए उसके अंदर उच्चतम आकाश तक उठने की तीव्र उत्कंठा है। जरा वृक्षों को देखो—'' वे सभी क्या कर रहे हैं? वे पृथ्वी के गर्भ से आते हैं, वे पृथ्वी के ही पुत्र हैं, उनकी जड़ें पृथ्वी में ही हैं और वे सभी सूर्य तक पहुंचने का प्रयास कर रहे हैं, वे सितारों तक पहुंचने की कोशिश में हैं। पृथ्वी में जड़ें जमाकर वे स्वर्ग की ओर गतिशील है। यही तो बाउलों का चरित्र और चिह्न है—पृथ्वी में जड़ें जमाये हुए वृक्ष, स्वर्ग की ओर जा रहे हैं। देह ही में बने रहकर तुम्हें आत्मा की ओर जाना है।''

तब यह दोनों एक दूसरे के विरोधी नहीं है, यह दोनों ही एक ही प्रक्रिया और एक ही सक्रिय ऊर्जा है।

झेन सद्गुरु बाशो जब साठ वर्ष की आयु में मरने जा रहा था तो ठीक मृत्यु होने से पूर्व पद्मासन लगाकर बैठ गया और उसके चारों ओर जो भी शिष्य वहां थे, उनसे उसने कहा—'' कभी भटकना या बहकना मत। प्रत्यक्ष रूप से सीधे देखना— " यह क्या है?" इस वाक्य को उसने दोबारा जोर से दोहराया और शांति से मर गया।

जो कुछ उसने कहा, मैं उसे फिर से दोहरा रहा हूं—'' भटक मत जाना। सीधे देखना। यह क्या है?" उसने इसे जोर से दोहराया और मर गया। यह ही पूरा अर्थ सम्प्रेषित कर रहा है। इसे प्रत्यक्ष रूप से सीधे अनुभव करना है। वहां वह है ही नहीं।' यह ' ही ' वह ' है। यह इतना विराट है कि वहां ' वह ' के बने रहने की कोई आवश्यकता हीं नही है।' यह ' में ' वह ' भी शामिल है।

" कहीं भटक मत जाना, बहकना मत " उसने कहा था। क्योंकि सबसे अधिक भटकाने वाले लोग वे हैं जो वास्तविक सत्य से परमात्मा को पृथक देखते हैं, जो तथ्य से सत्य को अलग करते हैं, जो आत्मा को शरीर से अलग देखते हैं, जो वासना को प्रेम से अलग करते हैं और जो कमल से कीचड़ को पृथक देखते हैं। ये लोग ही संसार भर में सबसे अधिक बहकाने वाले लोग हैं।

ये लोग विषतुल्य हैं, क्योंकि एक बार यदि इन लोगों ने तुम्हारे दिमाग में यह स्पष्ट रूप से उतार दिया तो तुम्हारा मन एक अनुशासन और आदत के ढांचे में ढल जाता है, कंडीशंड हो जाता है कि कमल कभी कीचड़ से नहीं हो सकता, तब ये लोग कमल के होने की संभावना को ही नष्ट कर देते हैं। तब तुम्हारे पास एक प्लास्टिक का बना कमल हो सकता है, लेकिन असली कमल नहीं, क्योंकि असली कमल की जड़ें तो हमेशा कीचड के अंदर जमी होती है वे तो कीचड़ का ही एक भाग होती हैं और वह कीचड़ की ही खिलावट है। यह पृथ्वी का ही गौरव है, यह पृथ्वी का ही सार तत्व है। एक बार तुम देख सकते हो कि वासना और प्रेम एक जैसे हैं, क्रोध और करुणा भी एक जैसे हैं, शरीर और आत्मा भी एक ही हैं वे उसी ऊर्जा की दो लय हो सकती हैं, एक ही शक्ति के दो रूप हो सकते हैं। एक जैसी सामग्री के दो ठोस अलग— अलग रूप हो सकते हैं। यदि तुम संसार और परमात्मा को ठीक कीचड़ और कमल की भांति वासना और प्रेम की भांति ही देख सको, तब तुम बाउलों का दृष्टिकोण समझ सकते हो। यदि तुम्हारे पास यह दृष्टि नहीं है, तब वहां भटक जाने की पूरी संभावना है। और

भटकाने वाले लोग बड़े चालाक और महान तर्क शास्त्री है। वे तुम्हें कायल कर सकते हैं, वे अपने दृष्टिकोण के लिए तर्क— वितर्क कर सकते हैं।

मैंने सुना है:

गृहस्वामिनी गोल्ड फार्ब टहलती हुई एक कसाई की दुकान में गई और दुकान के मालिक से ताजा मुर्गी का क्या मांगा और मिलते ही उसका निरीक्षण करना शुरू कर दिया। उन्होंने उसका एक पंख उठाया और उसे अपनी नाक के नीचे रख कर सूंघा और अरुचि से घोषणा की—'' यह तो बुरी तरह गंधा रहा है।'' तब उन्होंने उसकी एक टांग खींचकर उसे सूंघा और कहा—'' फूं।'' फिर उस चूजे के सबसे अंत वाले भाग को सूंघते हुए मिसेज गोल्ड फार्ब ने जोर से कहा—'' इससे तो बदबू आ रही है और इसी को तुम ताजा चिकेन कहते हो?''

उस कसाई ने कहा—'' देवी जी! आप मुझे यह बताइये क्या ऐसे निरीक्षण और जांच से आप स्वयं गुजर सकती हैं?''

ये लोग, जो संसार की निंदा किये चले जा रहे हैं, शरीर की और प्रत्येक चीज की निंदा कर रहे हैं जरा उनसे पूछो—'' इसी तरह के निरीक्षण के सामने तुम्हारा परमात्मा भी क्या खरा उतर सकता है? तब कुछ भी नहीं बचेगा, क्योंकि तुम पूरी वास्तविकता और सत्य को बुरा कहते हो। तब केवल एक सामान्य विचार और काल्पनिक परमात्मा बच रहता है। हां! उस काल्पनिक परमात्मा को तुम बुरा नहीं कह सकते, क्योंकि इस परमात्मा से दुर्गंध नहीं आयेगी, तब उसके पसीना भी नहीं निकलेगा, क्योंकि उसका इस पार्थिव जगत से क्या नाता है? तब उसके हाथों में कीचड़ में नहीं लगेगी। तब वह केवल काल्पनिक होगा।''

क्या तुमने कभी इस बात पर गौर किया है कि सभी धर्मों ने पूरे संसार को यह समझाने की कोशिश की है कि उनके सभी संस्थापक लगभग सामान्य मनुष्य जैसे वास्तविक नहीं थे। जैन कहते है कि महावीर के कभी पसीना नहीं आता था क्योंकि परमात्मा के मनुष्य में पसीना कैसे आ सकता है? सामान्य मनुष्यों के पसीना आता है, महावीर के नहीं। वे कहते हैं कि महावीर पर चोट या प्रहार किया गया, लेकिन कभी भी उनके शरीर से रक्त नहीं निकला। आखिर निकला क्या उनके शरीर से— '' दूध! सामान्य मनुष्यों की तरह उनके शरीर से रक्त कैसे निकल सकता था। अब वे महावीर को एक ऐसे आधार—स्तम्भ पर रखने का प्रयास कर रहे हैं कि उन्हें अवास्तविक बनने को बाध्य होना पड़े। तब यदि लोग आकर कहते हैं—'' हम तुम्हारे महावीर पर विश्वास नहीं करते, वे तो कल्पित कथा प्रतीत होते हैं, तो वे ठीक कहते हैं। वे कैसे वास्तविक हो सकते हैं? तुम वास्तविकता और सत्य से इंकार करते हो, तुम इसे गलत कहते हों।

ऐसा ही संसार के अन्य महान सद्गुरुओं के भी साथ हुआ है। उनके अनुयायी उन्हें अवास्तविक और नकली बनाने का प्रयास कर रहे हैं। अनुसरण करने वाले लोग हमेशा डरते रहते हैं क्योंकि यदि उनके सद्गुरुओं के हाथ गंदे दिखाई दिए.....।

' डर्टी ' अर्थात् गंदा शब्द, ' डर्ट ' या गर्द से निकला है। और यह गंदा शब्द नहीं है। इसका अर्थ है—मिट्टी से बना, पृथ्वी का। एक माली अपने उद्यान में काम करता है तो उसके हाथ गर्द या धूल से सनकर, गंदे नहीं होते, सिर्फ धूल या गर्द उन पर जम जाती हैं और गर्द और धूल अच्छी चीज है। हम धूल और मिट्टी से ही बने हुए हैं।' ह्यमेन ' शब्द ' ह्यमस ' से निकला है और ' झूमस ' का अर्थ पृथ्वी होता है।' आदम ' शब्द ' एडेमुस ' से निकला है और इसका भी अर्थ पृथ्वी है। हम सभी पृथ्वी या मिट्टी से ही बने हैं।

बाउल यही कहते हैं। हम सभी मिट्टी से बने हैं—लेकिन उस पुतले या देह के अंदर गहरे में चेतना या आत्मा की दिव्यता सुरक्षित हैं।

तुमने भारत में मिट्टी के बने दीए जरूर देखे होंगे। वे मिट्टी से बने होते हैं। लेकिन उनकी ज्योति मटमैली या मिट्टी जैसी नहीं होती। दीया जरूर मिट्टी का होता है, लेकिन उसकी ज्योति निरंतर ऊर्ध्वगामी होती है, वह ऊपर की ओर उच्चता और दिव्यता की ओर गतिशील होती है। मनुष्य भी एक मिट्टी का ही दीया है मिट्टी से ही बना हुआ, फिर भी उसके मंदिर में एक दिव्य ज्योति विराजमान है।

बाउल पृथ्वी से गहरे जुड़े हुए वास्तविक और सच्चे लोग हैं। उनके विराट दृष्टिकोण में एक अनूठा सौंदर्य है। वे संसार के प्रति नकारात्मक नहीं है, वे सांसारिक वस्तुओं या व्यक्तियों को सहज रूप में स्वीकारते हैं, ' न ' नहीं करते। यदि तुम संसार में रहते हुए उसे बहुत अधिक ' न ' कहोगे, तो फिर तुम्हारा परमात्मा भी काल्पनिक हो जाएगा क्योंकि संसार को नकारते जाने, उसे न कहने से संसार भी सिकुड़ता हुआ परमात्मा जैसी वास्तविकता बन जायेगा।

तुम जो कुछ कहते हो, तुम्हारा ' न ' अर्थात इंकार सिकुड़ कर तुम्हारा परमात्मा बन जाएगा। धीमे— धीमे जब तुम पूरे संसार को नकार दोगे, ' न ' ही करते जाओगे, तो संसार भी ' कुछ ' नहीं बनकर परमात्मा जैसी ही एक कल्पना बन जाएगा। परमात्मा भी और कुछ भी नहीं है बल्कि वह एक धारणा है, एक खाली और नपुंसक शब्द है, एक ऐसा डिब्बा या खोल है जिसके अंदर कुछ भी सारतत्व नहीं है। वास्तविक सत्य तो यही जमीन या पृथ्वी है।

संसार से इंकार कर उसे छोड़ दिया गया और उसके स्थान पर एक विरोधी शक्ति के रूप में परमात्मा को स्थापित किया गया, जैसे मानो वह संसार के विरोध में है। अब जरा इसकी व्यर्थता को देखो — इन जैसे लोग ही यह कहे चले जाते हैं " परमात्मा ने इस संसार को बनाया।" वह उसके विरोध में हो ही नहीं सकता अन्यथा वह उसे बनाता ही क्यों? सृष्टिकर्ता या सृष्टा, अपनी ही सृष्टि के विरुद्ध नहीं हो सकता। यह मापदंड ही इस बात का प्रमाण है, कि वह उससे प्रेम करता है, यह सृष्टि उसी की प्रशंसा है, यह सृष्टि उसी का एक खेल है यह सृष्टि उसी का प्रेम और उसी की दिव्य पुकार है।

परमात्मा इस संसार का सृजन करता है, क्योंकि वह उसे प्रेम करता है।

गुरजिएफ कहा करता था—" सभी धर्म परमात्मा के विरोध में हैं, क्योंकि वे उसकी सृष्टि, इस संसार के विरुद्ध हैं। तुम उस कवि के कैसे हो सकते हैं, यदि तुम उसकी कविता का विरोध करते हो? तुम उस मनुष्य के कैसे हो सकते हो, यदि तुम उसके चरित्र के विरुद्ध हो? तुम उस चित्रकार के प्रिय कैसे बन सकते हो, यदि तुम उसके ही बनाए चित्र का विरोध कर रहे हो। गुरजिएफ बिल्कुल तर्कपूर्ण और पूरी तरह ठीक प्रतीत होता है कि सभी धर्म परमात्मा के विरुद्ध होना दिखाई देते हैं। वे बातें तो परमात्मा की करते हैं, लेकिन वे हैं उसके विरुद्ध क्योंकि वे उसके बनाए संसार के विरोध में है। वे तुम्हें संसार से इंकार करना सिखाते हैं लेकिन तुम उससे इंकार नहीं कर सकते, क्योंकि तुम्हारी जड़ें उसी के अंदर हैं। तब आखिर होता क्या है? तुम झूठे बन जाते हो, नकली बन जाते हो, तुम बहानेबाज और दोहरे चेहरे वाले बन जाते हो। तुम्हारे पास एक चेहरा संसार को दिखाने के लिए होता है और दूसरा चेहरा उसके साथ रहने के लिए होता है। यह संकटकालीन स्थिति में उठाया एक कदम होता है, मनुष्य इसके अतिरिक्त और कुछ कर ही नहीं सकता।

आखिर किया क्या जाए? तुम वास्तविक सच्चाई से इंकार नहीं कर सकते तुम उसे स्वीकार भी नहीं कर सकते, उसे बने रहने की अनुमति भी नहीं दे सकते-क्योंकि तुम्हारे धर्म तुम्हें उसका विरोध करना सिखाते हैं। इसलिए मनुष्य ने एक स्वर्णिम मध्य खोज लिया है, वास्तविक रूप से इंकार मत करो, केवल शब्दों के द्वारा ही इंकार किया जाओ, और सारी समस्या हल हो गई। परमात्मा के प्रति भी सम्मान प्रकट करो और संसार को भी वास्तविक जानकर जीते रहो।

मनुष्य को समझदार बनाने में, धर्मों ने कोई भी सहायता नहीं की। उन्होंने पागल, मानसिक रोगी और विभाजित बनाने में सहायता की है।

एक बार एक चर्च में ऐसा हुआ, एक व्यक्ति अपने अपराधों को स्वीकार कर रहा था तभी पादरी ने उस व्यक्ति से पूछा-'' कवानाघ! उस बड़े ढेर से तुमने कितना भूसा चुराया?''

कवानाघ ने कहा-'' आदरणीय फादर! मैं पूरे ढेर को ही चुराने का अपराध स्वीकार करना चाहता हूं क्योंकि वहां जो भूसा बचा रह गया है उसे मैं आज रात में उठाने जा रहा हूं।''

वह अपराध स्वीकार भी कर रहा है, लेकिन फिर भी उसे रात में करने की योजना भी बना रहा है। तब तुम अपराध स्वीकार ही क्यों रहे हो? नहीं, वह अपने आपको एक आसान स्थिति में रखना चाहता है क्योंकि लोग कहते हैं-'' यह बुरा काम है और '' चोरी करना पाप है।'' और लोगों ने ' अपराध स्वीकृति ' को एक सद्‌गुण बना लिया है, जैसे मानो अपराध स्वीकार करना ही अपने आप में एक सद्‌गुण है। जब तक यह प्रामाणिक न हो, यह अर्थहीन है।

एक सड़क एक बार ऐसा हुआ, कि प्रोटेस्टेंट चर्च का मंत्री अपनी नई नवेली कार को, जो उसे चर्च द्वारा पिछले जलसे के अवसर पर उपहार स्वरूप प्राप्त हुई थी, ड्राइव करता हुआ डबलिन की ओर जा रहा था। अचानक सामने से आती हुई एक कार तेज आवाज करती हुई उससे घिसटती हुई आगे आकर रुकी।

चर्च का वह मंत्री भयंकर रूप से क्रोधित होकर खूनी आंखों से सामने वाली कार पर आधी के वेग से झपटा। तब उसने देखा कि उस दूसरी कार को एक कैथोलिक पादरी चला रहा था। उसे देखकर वह दांत पीसते हुए बोला-'' आदरणीय महोदय! यदि आप चर्च के पादरी न होते, तो आपको आज मैं बिना पीटे हुए नहीं छोड़ता और आपकी जान पर बन आती।''

उस पादरी ने कार की खिड़की के बाहर अपना सिर बाहर निकालते हुए कहा-'' महोदय! और यदि आप पादरी न होते और यदि आज पवित्र शुक्रवार का दिन न होता तो मैं आपके मर्मस्थल पर ऐसा प्रहार करता कि आप उसे कभी भूलते नहीं।''

सभी धर्मों का पूरा प्रयास यही है कि कैसे मनुष्य को अपराधी होते हुए भी अच्छाई का मुखौटा लगा कर अपने का महत्त्वपूर्ण होने का दावा करना चाहिए। उनकी वास्तविकता और असलियत पूरी तरह भिन्न है-उनके लगाए मुखौटे असलियत से पूरी तरह भिन्न हैं। बाउल इसके विरुद्ध हैं। वे कहते हैं-'' संसार भर को प्रेम करो, और इस प्रेम के द्वारा ही तुम अपना परमात्मा खोजो, जिससे तुम अपने ही अंदर वहां कोई विभाजन न करो।''

मनुष्य को नकली मुखौटा लगाकर केवल अपनी सुरक्षा करने के लिए कपटी बनना पड़ा है। धर्मों ने उसके लिए कोई मार्ग या कोई संभावना ही नहीं छोड़ी जिससे वह सच्चा और ईमानदार हो सके। अब जरा इस व्यर्थता को तो देखो वे सिखाए चले जाते हैं।

'सच्चे बनो' और उनकी पूरी शिक्षा झूठा बनना सिखा रही है। एक ओर तो वे तुम्हें सच्चा और प्रामाणिक होना सिखा रहे हैं और दूसरी ओर उनकी पूरी शिक्षा इस तरह की स्थिति उत्पन्न कर रही है, कि यदि तुम सच्चा बनना चाहते हो, तो आत्महत्या करनी पड़ेगी तुम जीवित रह ही नहीं सकते। यदि तुम सच्चे बनकर रहना चाहते हो तो आत्महत्या करना ही होगी, लेकिन यदि तुमने आत्महत्या ही कर ली, फिर सच्चे बने रहने का अर्थ ही क्या रह जायेगा? तुम सच्चे बने रहने के लिए यहां रहोगे ही नहीं। यदि तुम जीवित रहना चाहते हो तो तुम झूठा बनना ही होगा। लेकिन वह तुम्हारा कुसूर तुम्हारा नहीं है यह कसूर तो उस पूरे कार्यक्रम का है, जो धर्म और समाज द्वारा तुम्हारे दिमाग में ठूंसा गया है। यह पूरा कार्यक्रम ही दोषपूर्ण है।

मनुष्य को सच्चा होना चाहिए अस्तित्व के प्रति सच्चा और प्रामाणिक। वास्तविकता या सत्य जो कुछ हो, मनुष्य को उसे स्वीकार करना ही है और गहन कृतज्ञता से उसे जीना है, उसे इतने अधिक आदर और श्रद्धा के साथ जीना है, क्योंकि वह परमात्मा का ही अस्तित्व है। यह उसी का एक मंदिर है।

जब मोजेज उस पर्वत पर पहुंचे, जहां उनका परमात्मा से साक्षात्कार हुआ था, तो उन्होंने एक झाड़ी के नीचे जलती हुई आग देखी और झाड़ी नहीं जली थी। वह हमेशा की तरह ही हरी- भरी थी, लेकिन आग की लपटें उसी से निकल रही थीं। वह अपन आंखों पर विश्वास ही नहीं कर सके। उन्होंने उस झाड़ी की ओर बढ़ना शुरू किया। जो कुछ उन्होंने देखा था, वे एक चुम्बकीय आकर्षण से उसकी ओर बड़े जा रहे थे। तभी अचानक परमात्मा की तेज आवाज गंजी—'' मोजेज! अपने जूते उतार कर आगे बढ़ो। तुम पवित्र और पावन भूमि पर चल रहे हो।''

मैं हमेशा इस कथा से प्रेम करता रहा हूं लेकिन मैं तुमसे कहना चाहता हूं कि केवल सिनाई पर्वत पर ही नहीं, लेकिन तुम जहां कहीं भी चल रहे हो, तुम पवित्र भूमि पर ही चल रहे हो क्योंकि सभी भूमि उसकी ही है, क्योंकि सब कुछ वही ही तो है।

वह प्रीतम प्यारा कितने अधिक रूपों में मौजूद हैं। वासना भी उसी की है, प्रेम भी उसी का है। बाउल कहते हैं—'' किसी भी चीज से इंकार करो ही मत, क्योंकि इंकार करना ही आदर पाने की चाह है। यह परमात्मा को अस्वीकार करना है।''

एक दिन मैंने देखा कि मुल्ला नसरुद्दीन अपने लड़के को सिखा रहा था कि कैसे स्वयं अपनी रक्षा करने में समर्थ बना जाए इसलिए वह उसे बॉक्सिंग की श्रेष्ठतम आवश्यक बातें सिखा रहा था।

मैंने उससे पूछा—'' लेकिन मुल्ला जरा सोचो—यदि वह किसी बड़े दिग्गज के सामने पड़ जाये जो बॉक्सिंग जानता हो, फिर क्या होगा?''

मुल्ला ने उत्तर दिया—'' मैंने इस बारे में पहले ही से विचार कर लिया है।'' नसरुद्दीन ने उत्तर दिया—'' इसलिए मैं यह भी सिखा रहा हूं कि जरूरत पड़ने पर कैसे दौड़ा जाये।''

एक ओर तो हम लोगों को सच्चा बने की शिक्षा दे रहे हैं तो दूसरी ओर सूक्ष्म रूप से हम उन्हें झूठा बनना भी सिखा रहे हैं। माता—पिता और समाज द्वारा प्रत्येक बच्चे को मानसिक रोगी बनाया जा रहा है और हम जानते हैं कि हम ऐसा कर रहे हैं और हम भी जानते हैं कि दूसरों ने भी हमारे साथ ऐसा ही किया है। तुम स्वयं तो इसे करना बंद करो ही और दूसरों के लिए भी यह करना बंद करो। सजग बनो। केवल प्रामाणिक बनो। मैं सत्य से अधिक जोर वास्तविकता या असली बनने पर देना चाहता हूं क्योंकि सत्य का प्रयोग जीवन विरोधी लोगों द्वारा बहुत अधिक किया गया है, और उनके गलत सम्बन्ध भी हैं। असली और प्रामाणिक बनो। यदि तुम सच्चे और प्रामाणिक हो, तो तुम्हारे हृदय से एक चीज विलुप्त होना शुरू हो जाएगी और वह है अपराध—बोध।

एक मनोविश्लेषक और मनोचिकित्सक शेपर्ड ने 'अपराध मुक्त' होने के शब्द पर खोज की। मैं इस शब्द को बहुत अधिक पसंद करता। असली धर्म हमेशा अपराधमुक्त होने की एक प्रक्रिया है। नकली धर्म हमेशा अपराधी बनाने की प्रक्रिया है। वे तुम्हें अधिक से अधिक अपराधी बनाते हैं, वहां क्रोध होता है, वहां वासना होती है, वहां सेक्स होता है, वहां लालच होता है, वहां आसक्ति और घृणा होती है वहां प्रेम होता है और वे हर चीज की निंदा करते हैं। तुम अपराध बोध का अनुभव करते हो, तुम्हें अपने गलत होने का अनुभव होना शुरू हो जाता है कि तुम गलत हो, तुम स्वयं ही से घृणा करते हुए स्वयं को निंदित करना शुरू कर देते हो। यदि तुम स्वयं को घृणा करना शुरू कर देते हो तो तुम कभी परमात्मा को न खोज सकोगे, क्योंकि वह तुम्हारे ही अंदर छिपा हुआ है।

अपराध बोध से मुक्त हो जाओ। तुम जो कुछ भी हो, तुम जैसे भी कुछ हो, तुम हो, तुम्हें परमात्मा ने स्वीकार किया है। जब परमात्मा ने ही तुम्हें स्वीकार किया है तो फिर क्यों स्वयं को ही स्वीकार करो? अपने जीवन को विचारों और धारणाओं के अनुसार नहीं, अपने शरीर, अपने भावों और अनुभवों के द्वारा जीना शुरू करो। जीवन को इस तरह से जीना शुरू करो, जैसे मानो तुम्हें समाज द्वारा कभी प्रदूषित किया ही नहीं गया, जैसे मानो तुम सीधे परमात्मा के हाथों से अभी— अभी इस संसार में बस नये आये हो, और किसी ने अभी तक तुम्हें कुछ भी नहीं सिखाया है। बस जीना शुरू कर दो—'' यही जीवन ही सच्चा और असली जीवन है। तब तुम अपने हृदय की बात सुनते हो, तुम अपने शरीर की बात सुनते हो। तुम दमन नहीं करते हो, तुम उसे समझने की कोशिश करते हो, और समझ के द्वारा ही रूपांतरण होता है।''

बाउल गीत केवल आज और अभी के लिए ही गाते हैं,

ओ मेरे हृदय!

यदि तू उस 'दुर्लभ मानुष' को प्राप्त करना चाहता है,

तो इस पृथ्वी पर रहते हुए

तू अपनी माटी की देह के प्रति वचनबद्ध होकर जी।

तुम स्वयं अपने आप में इस पृथ्वी के प्रति वचनबद्ध हो कहीं और होने वाले कल्पित स्वर्ग के लिए प्रतिबद्ध मत बनो, प्रतिबद्ध होना है अपने चारों ओर की वास्तविकता के प्रति, उस सत्य के प्रति, जो अभी और यही है। प्रतिबद्ध बनो पूरी मनुष्यता के प्रति, उस पृथ्वी के प्रति जो ठीक तुम्हारे पैरों के नीचे हैं, जिस पर तुम खड़े हो। पृथ्वी पर रहते हुए तुम्हें इस पृथ्वी के प्रति वचनबद्ध होकर रहना है। बाउल कहते हैं—'' जब हम दूसरी दुनिया में जायेंगे अथवा स्वर्ग की ओर बढ़ेंगे हम तभी उसके बारे में सोचेंगे, जब उसे हम स्वयं देखेंगे। एक बार तुमने यदि सीख लिया कि यहीं और अभी के प्रति कैसे समर्पित हुआ जाता है, तब तुम वहां भी प्रतिबद्ध रहोगे, क्योंकि जब भी भविष्य आता है, वह हमेशा वर्तमान की ही भांति आता है। दूसरा संसार भी इसी संसार की तरह ही आयेगा। क्या तुमने कभी देखा है कि जब तुम नदी के एक किनारे से दूसरे किनारे की ओर बढते हो, और जब तुम दूसरे किनारे के निकट पहुंचते हो तो दूसरा किनारा ही यह किनारा बन जाता है। पहला किनारा जिसे हम यह किनारा कहा करते थे वह किनारा बन जाता है। इसलिए तुम जहां कहीं हो, तुम चारों ओर से यह के होने से घिरे हुए हो।''

मैंने सुना है:

एक बार मुल्ला नसरुद्दीन ने बहुत अधिक शराब पी ली और वह सड़क पर इधर से उधर की ओर लड़खड़ाते हुए चल रहा था। वह लोगों से पूछ रहा था— " सड़क का दूसरा किनारा किधर है?"

किसी ने उसे बताया—'' दूसरा किनारा वहां है। वह वहां गया और वहां जाकर उसने लोगों से पूछा—'' सड़क का दूसरा किनारा किधर है?"

उन लोगों ने सामने इशारा करते हुए कहा—'' दूसरी साइड वहां है।''

उसने कहा—'' ये लोग मूर्ख दिखाई देते हैं। जब मैं उस ओर जाता हूं तो लोग कहते हैं कि दूसरी साइड वहां उस ओर है और जब मैं इधर इस ओर जाता हूं तो लोग कहते हैं कि दूसरी साइड वहां उधर सामने है। क्या ये लोग पागल हो गए हें?"

दूसरी साइड हमेशा वहां उस ओर ही होती है। और तुम जब भी जहां भी होते हो, वह हमेशा ' यहां ' होता है। तुम यह के होने से चारों ओर से घिरे रहते हो। ठीक दूसरे ही दिन मैं उद्दालक ऋषि की अपने बेटे श्वेतकेतु को दी गई महान सीख का उद्धरण दे रहा था—'' तू ' वह ' ही है श्वेतकेतु।'' (तत्त्वससि श्वेतकेतु) बाउल

लोग इस कथन में थोड़ा परिवर्तन करना चाहेंगे। वे कहेंगे—'' तू ' यह ' ही है, ' वह ' नहीं, क्योंकि ' वह ' शब्द बहुत दूर बैठे परमात्मा का विचार देता है। यह अधिक मिट्टी से जुड़ा शब्द है।''

ओ मेरे हृदय!

यदि तू उस दुर्लभ मानुष को प्राप्त करना चाहता है

तो पृथ्वी पर रहते हुए

तू अपनी माटी की देह के प्रति वचनबद्ध होकर ही जी।

यदि तुम उस ' दुर्लभ मनुष्य ' को ' आधार—मानुष ' या अस्तित्वगत—सारभूत मनुष्य को प्राप्त करना चाहते हो, तो यहां और अभी के प्रति वचनबद्ध हो जाओ।''

वर्तमान के प्रति प्रतिबद्ध रहो, वास्तविकता और सत्य के प्रति जो इस क्षण तुम्हें उपलब्ध है, वचनबद्ध होकर रहो। वहां इसके अतिरिक्त और कोई वचनबद्धता और विश्वास है ही नहीं।

उसके चरणों में तू अपने भावों के पुष्पों को अर्पित कर दे

और अपनी प्रार्थना के अश्रुओं से

जो तेरी आंखों से बाढ़ की तरह उमड़ रहे हैं

उन चरणों को भिगो दे।

ये लोग बहुत सच्चे और प्रमाणिक व्यक्ति है। ये कहते हैं—'' भावों के पुष्पों को।'' सामान्य फूलों से काम नहीं चलने का। तुम वृक्षों से फूल तोड़कर अपने मंदिरों में बैठे परमात्मा के चरणों में चढ़ा सकते हो, लेकिन यह परमात्मा तो वास्तविकता से पृथक काल्पनिक परमात्मा है और फूल भी उधार के हैं। वास्तव में वृक्षों पर लगे हुए पुष्प ही कहीं अधिक परमात्मा के साथ लयबद्ध थे। वृक्षों पर लगे हुए वे जीवंत थे। उन्हें तोड़कर उस पर चढ़ाते हुए परमात्मा के निकट लाकर तुमने तो उन फूलों की हत्या कर दी।

जब मैं जबलपुर में रहा करता था तो मेरा उद्यान बहुत सुंदर था और मैं धार्मिक लोगों का निरंतर शिकार बनता रहता था। क्योंकि वहां निकट ही दो मंदिर भी थे, इसलिए कोई भी व्यक्ति जो वहां पूजा करने आता था, मेरी फुलवारी से बिना पूछे फूल तोड़ना शुरू कर देता था। देश के उस भाग में ऐसा खयाल किया जाता है कि यदि कोई अपने परमात्मा पर चढ़ाने के लिए फूलों को तोड़ता है तो उसे रोकना अच्छी बात नहीं है। इसलिए मुझे वहां एक नोटिस बोर्ड टांगना पड़ा, क्योंकि यदि मैं उन्हें रोकता तो वे कहते—'' फूल तो मैं धार्मिक कृत्य के लिए तोड़ रहा हूं।'' उस नोटिस बोर्ड पर लिखा—'' तुम फूलों को किन्हीं दूसरे कारणों से तो तोड़ सकते हो, लेकिन धार्मिक कृत्यों के लिए नहीं। क्योंकि जैसा मैं देखता हूं कि पौधे में लगे हुए पुष्प परमात्मा को कहीं अधिक समर्पित और जीवंत हैं। उन्हें तोड़कर तुम उनकी हत्या कर दोगे। तुम्हारे परमात्मा तो जड़ और बोगस हैं और उसके लिए तुम फूलों को मार दोगे। यह पूरी पूजा ही नकली है।''

बाउल कहते हैं—'' तुम अपने भावों के पुष्पों को उसके चरणों पर चढ़ा दो।'' तुम्हारा प्रेम, तुम्हारी करुणा, तुम्हारी समझ, जीवन को जीते हुए तुम्हारे किए अनुभव, तुम्हारी दृष्टि, तुम्हारा स्वाद और तुम्हारी समृद्धता यही भावों के पुष्प हैं।'' भावनाओं के इन पुष्पों और आंसुओ से लिखी प्रार्थनाओं को उसके चरणों पर चढ़ा दें।'' क्योंकि शब्दों से कुछ भी नहीं होगा।

शब्द कैसे प्रार्थना बन सकते हैं? शब्द तो मुर्दा होते हैं। उनका कोई अधिक कार्य नहीं होता। हां उनमें वहां शोर तो बहुत होता है, लेकिन उनका अधिक अर्थ नहीं होता। मौन में बहाये अश्रु उनसे कहीं बेहतर हैं। इसलिए तुम बाउलों को सड़क के किनारे खड़े रोते आंसू बहाते और नाचते गाते पाओगे और यदि तुम उनसे पूछो—'' तुम लोग क्या कर रहे हो?" वे कहेंगे—'' हम प्रार्थना कर रहे हैं।'' और तुम वहां न कोई समाधि देखोगे

और न कोई मंदिर और यहां तक कि वहां कोई वृक्ष का देवता भी नहीं होगा। वे सिर्फ सड़क के किनारे खड़े हैं या तो आंसू बहा रहे हैं अथवा वे नाच या गा रहे हैं। तुम यदि उनसे पूछोगे—'' तुम्हारा परमात्मा है कहां?" और वे कहेंगे—'' वह प्रत्येक वस्तु में है, वह हर कहीं है। जब कभी हमें प्रार्थना के लिए ठीक क्षण उपलब्ध होता है, जब भी हमें यह अनुभव होता है कि उस क्षण वह ग्राह्य है, वही प्रार्थना करने का ठीक क्षण होता है, और हम लोग प्रार्थना करना शुरू कर देते हैं।'' वे आंसू बहाते प्रार्थना करते हैं, वे नाचते हुए प्रार्थना करते हैं और वे गीत गाते हुए प्रार्थना करते हैं, लेकिन उनकी प्रार्थना जीवंत होती है।

बाउल गाते हैं:

भिक्षुक की दीनता के साथ,
मैंने तेरे द्वार पर दस्तक दी है।
कोई भी व्यक्ति तेरे घर से
जिसमें अनंत भण्डारहैं।
आज तक निराश नहीं लौटा है।
तेरे पास सभी समृद्धिया और सब कुछ है।
और बिना मेरी मांग के
तूने मुझे इतना अधिक दिया है।
अब मुझे किसी और धन सम्पत्ति की कोई आवश्यकता नहीं है।
ओं मेरे मालिक!
तू मुझे बस अपने चरण दे दे।

अब मुझे और किसी धन सम्पत्ति की कोई आवश्यकता नहीं है, ओ मेरे मालिक! तू मुझे अपने चरण दे दे, बस तेरे चरण ही पर्याप्त है, जिससे मैं उन्हें अश्रुओं से धो सकूं, जिससे मैं नाचते गाते तेरी प्रार्थना कर सकूं।

तू उसके चरणों में
अपने भावों के पुष्पों को अर्पित कर दे,
और अपने अश्रुओं से
जो प्रार्थना बन कर तेरी आंखों से बाढ़ की तरह उमड़ रहे हैं
उन चरणों को भिगो दे।
जिस ' मानुष ' की तू खोज कर रहा है।
वह तेरे इसी माटी के तन में ही है।
मृत्यु तो नवजीवन का प्रारम्भ होता है।

और मरने के बाद मृत्यु उसके अस्तित्व को माटी ही में मिला देती है मरने से पूर्व तुझे जीवित रहते हुए ही उसे जरूर खोज लेना चाहिए।

जिस मनुष्य की तू खोज कर रहा है, वह माटी में ही छिपा है, तेरी ही देह में अवतार हुआ है। तेरा शरीर ही तेरी मिट्टी या माटी है और जिस मानुष की तू खोज कर रहा है वह भी यही है, वह तेरे माटी के ही देह—मंदिर में सुरक्षित है, और वह मृत्यु में भी सुरक्षित है। जीवन की ज्योति मृत्यु के मंदिर में ही सुरक्षित है। वह वहीं से पुन— प्रदीप्त होती है..... .इसलिए न तो मिट्टी से डरना है और न मृत्यु से। तेरे रहने के लिए यह दोनों ही उसे सम्भव बनाते हैं।

केवल मृत्यु के कारण ही जीवन का संभावना है, देह के कारण ही आत्मा की संभावना। जड़ों के कारण ही वृक्ष होने की संभावना है, इसलिए जड़ों से डरो मत और न मृत्यु से डरो। अपनी देह से भी नहीं डरना है। इस वास्तविकता और सत्य को स्वीकार करो।

मृत्यु के साथ मर ही जाना है।

पर तुझे जीवित रहते, उसे जरूर खोज लेना है।

जब तक जीवन है उसे जियो। इस माटी की देह के प्रति जब तक यह देह रहे, उसके प्रति प्रतिबद्ध रहो, उस पर विश्वास करो और जब मृत्यु आती है तब मर जाओ। जीवन के साथ गतिशील रहो और मृत्यु के भी साथ भी। मरना है तो जीवन से बंधे मत रहो, मरना है तो मृत्यु में अवरोध मत बनो—मृत्यु आए तो मर जाओ। जब तक जीवन है, उसे जियो, मृत्यु आये तब मर जाओ। उस क्षण को समग्रता से लो। उसे स्वीकार करते हुए उसके साथ बहो। जब मुत्यु आती है तब उदास मत हो। तब मृत्यु को स्वीकार करो। तब उसे इतनी समग्रता से स्वीकार करो कि मृत्यु भी तुम्हें मार न सके।

एक पूर्ण मनुष्य को मारा नहीं जा सकता और एक खण्डित तथा विभाजित व्यक्ति कभी जीवित होता ही नहीं। एक पूर्ण मनुष्य पहले ही से मृत्यु के पार है। अखण्डता, मृत्यु के पार है। विभाजित खण्ड—खण्ड होकर अलग— अलग टुकड़ों में बंटे हुए तुम समग्र नहीं हो, तुम जीवित दिखाई देते हो, लेकिन तुम जीवंत नहीं हो। तुम मर ही रहे हो, मर ही जाओ मृत्यु के प्रति समर्पित कर दो अपने आप को। अब वह परमात्मा ही है जो मृत्यु के रूप में आया है।

बाउलों के लिए प्रत्येक वस्तु दिव्य है। चाहे वह जीवन हो या मृत्यु। कुछ भी ऐसा नहीं है जो दिव्य न हो। उनके लिए कहीं किसी शैतान का कोई अस्तित्व है ही नहीं।

तुमने जीसस के जीवन की वह कहानी जरूर सुनी होगी, जब मेरी मैग्दलीन जीसस से भेंट करने आई, वह सात प्रेतों के अधिकार में थी। उसे जीसस ने जैसे ही छुआ कि सातों प्रेत उसके अंदर से निकल कर समुद्र की ओर भागे और उसी में डूब गए। अब यह कहानी बहुत महत्त्वपूर्ण है।' डेमन ' (प्रेत) शब्द जिस मूल शब्द से निकला है उसका अर्थ है विभाजित या खण्डित (डिवीजन) यदि तुम कहानी को मनोवैज्ञानिक भाषा में अनुवाद करो तो इसका केवल इतना ही अर्थ है कि मेरी मैग्दलीन सात भागों में विभाजित थी, खण्डित थी। जीसस ने उसका स्पर्श किया और वह अखण्ड बन गई, अब वह किसी की गुलामी में न रही, वे प्रेत वे खण्ड विसर्जित हो गए।' डेमन ' (प्रेत) का अर्थ ही है खण्डित होना, विभाजित होना। बाउल कभी विभाजन नहीं करता, वह अखण्ड जीवन जीता है। वह किसी भी वस्तु या व्यक्ति के विरुद्ध नहीं है, वह किसी भी वस्तु या व्यक्ति के लिए नहीं जी रहा है, वह बस जी रहा है। उस क्षण जो भी सामने आता है, वह उसे जीता है। वह वास्तविक यथार्थ और सत्य के प्रति समर्पित है और यही उसकी प्रार्थना है। मृत्यु आती है, वह सुदंरता और गरिमा के साथ समर्पण कर देता है, और मर जाता है। वह मृत्यु के साथ सहयोग करता है। वहां वह जरा सा भी प्रतिरोध नहीं करता, तनिक सा भी नहीं। वह मृत्यु से संघर्ष नहीं करता, उससे लड़ता नहीं, वह मृत्यु का आलिंगन करता है।

आती हुई मृत्यु के साथ मर जाओ,

पर तुझे जीवित रहते ' उसे ' जरूर खोज लेना है।

और तब आगे और आगे ही बढ़ता जाता है। उसकी खोज अनंत है। परमात्मा को पूरी तरह कभी भी नहीं जाना जा सकता, क्योंकि वह अनंत है। हम उसे अधिक से अधिक जानते चले जाएंगे, हम उसके अधिक से अधिक निकट आते जाएंगे लेकिन परमात्मा कोई लक्ष्य या मंजिल नहीं है। कोई भी यह नहीं कह सकता कि मैं पहुंच गया उस तक। यदि कोई ऐसा कहता है, तब कुछ चीज गलत है उसके साथ। उपनिषद कहते हैं, कि जो भी

व्यक्ति यह कहता है—" मैं परमात्मा को जानता हूं।" वह ' उसे ' नहीं जानता क्योंकि तुम शाश्वत और अनंत को कैसे जान सकते हैं? हां तुम उसे जी सकते हो, तुम उसे प्रेम कर सकते हो, तुम उसमें हो सकते हो, लेकिन तुम उसे जान नहीं सकते—क्योंकि जानकारी एक परिभाषा बन जाएगी जानकारी उसे सीमित बना देगी। जो समग्र रूप से जान लिया जाता है वह सीमित और ज्ञात बन जाता है। लेकिन परमात्मा तो अज्ञात बना रहता है। तुम जितना अधिक उसे जानते हो, उतने ही अधिक द्वार खुलते हैं, उतने ही अधिक रहस्य खुलते हैं। प्रत्येक मृत्यु अतीत का द्वार बंद कर देना और भविष्य की एक नई दृष्टि है।

तुम मर रहे हो, मर ही जाओ।

जीवित रहते तुम्हें उसे जरूर खोज लेना है।

और कोई भी व्यक्ति उसे खोजे ही चला जाता है। यात्रा शाश्वत और अनंत है। तभी बाउल गाते हैं

प्रबल कामवासना के चेहरे पर द्वार बंद कर दो।

उस अप्राप्य मनुष्य को जो महानतम है उसे प्राप्त करो।

और जो कुछ भी करो, ठीक प्रेमियों की भांति करो,

और मृत्यु होने से पूर्व ही मृत्यु से साक्षात्कार करो।

मृत्यु आने पर सहजता से मरना केवल तभी संभव है, यदि मृत्यु से पूर्व तुमने उसका साक्षात्कार किया हो। अन्यथा यह कठिन होगा। तुम्हारी उससे कुछ पहचान होनी जरूरी है। यदि मृत्यु आती है और तुम उससे परिचित नहीं हो, तो तुम्हारे लिए उसके प्रति समर्पण करना कठिन हो जाएगा। ध्यान वही है, और इसी के बारे में ही है कि मरने से पूर्व तुम्हारी मृत्यु से मुलाकात हो जाए थोड़ी सी जान पहचान हो जाए थोड़ा सा आमना—सामना हो जाए मृत्यु का—जिससे तुम उसके सौंदर्य से प्रेम करना शुरू कर दो तुम उसके प्रेम में मरना शुरू कर दो, जिससे तुम मृत्यु में भी उस परमात्मा की दिव्यता देख सको।

केवल एक ध्यानी ही बिना किसी संघर्ष के मर सकता है अन्यथा अचेतन संघर्ष करता है। ऐसा नहीं है कि तुम उससे लड़ोगे, तुम अपने को उससे संघर्ष करते हुए पाओगे, और यह लगभग असंभव होगा कि तुम उससे संघर्ष न करो। यह संघर्ष और प्रतिरोध अचेतन में होगा, यह तुम्हें जन्म से ही मिला है।

ध्यान करो अथवा प्रेम करो, क्योंकि मृत्यु से पहचान करने के यह दो ही मार्ग हैं। यदि तुम प्रेम करते हो तो यह एक छोटी सी मृत्यु है। यदि तुम बहुत अधिक गहराई से प्रेम करते हो यह एक बड़ी मृत्यु है। यदि तुम वास्तव में सच्चे प्रेम में हो तो तुम वैसे ही नहीं रह जाओगे, जैसे उससे पूर्व थे। तुममें से कुछ चीज विसर्जित हो जाती है तुम्हारा नया जन्म होता है। प्रेम एक पुनर्जन्म है।

जीवन में बहुत बार, ध्यान और प्रेम के द्वारा तुम्हें मृत्यु के साथ पहचान करनी चाहिए जिससे जब मृत्यु वास्तव में आती है तुम उसे अतिथि के रूप में भली भांति पहचान सको और उससे भयभीत न हो जाओ। तुम अतिथि का स्वागत कर सको, तुम अपार प्रेम, और महान आनंद उत्सव के साथ उसका स्वागत कर सको।

बाउल उस सारभूत अस्तित्वगत मनुष्य अथवा ' आधार—मानुष ' के बारे में कहते हैं:

उसके लिए विष और अमृत

एक जैसे ही हैं

वह समग्रता से जीते हुए भी

मृत ही हैं।

यदि ध्यान और प्रेम के द्वारा तुम्हारी मृत्यु से जान पहचान हो गई, तो धीरे— धीरे तुम देखने लगोगे कि जीवन और मृत्यु एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, अमृत और विष भी उसी सिक्के के दो चेहरे हैं, पदार्थ और मन भी

उसी सिक्के के दो पहलू हैं। अच्छा और बुरा और सारी द्वैतता उसी सिक्के के दो रूप हैं। तब तुम परेशान नहीं होते, तब तुम कुछ भी चुनते नहीं, तब तुम एक चुनावरहित होशपूर्वक जीवन जीते हो, तब सब कुछ एक जैसा ही होता है। यदि तुम जीवन चुनते हो, तो तुमने मृत्यु को चुन लिया। यदि तुम मृत्यु को नकारते हो तो तुमने जीवन को भी नकार दिया—इसलिए वहां न तो चुनने की कुछ जरूरत है और न किसी से इंकार करने की। वह व्यक्ति केवल प्रतीक्षा करता है और जो कुछ भी भेंट या उपहार परमात्मा की कृपा से मिलता है, उसे स्वीकार करता है।

यही है वह : जिसके बारे में बाउल कहते हैं " वह समग्रता से जीते हुए भी मुर्दे जैसा ही है।" वह पूरी तौर से जीवंत है लेकिन एक अर्थ में मृत भी है, क्योंकि सभी द्वैतता उसके अंदर समाहित है और उनका एक संश्लेषण बन गया है। न तो तुम जीवित हो और न मृत, तुम दोनों की कैद में हो।

एक पूर्ण मनुष्य दोनों ही एक साथ हो। वह सभी द्वैतताओं का अतिक्रमण कर गया है। वह अत्यन्त समृद्ध है क्योंकि जीवन उसमें अपने को उड़ेलता जा रहा है और मृत्यु भी उसमें उड़ेलती जा रही है। जो कुछ भी जीवन उसे दे सकता है वह उसे स्वीकार करता है और जो कुछ भी दुख और पीड़ाएं वह उसे देता है, वह उसे भी स्वीकार करता है।

और स्मरण रहे, जैसे वहां खुशियों में खजाने छिपे हैं। उसी तरह वहां दुखों में भी खजाने छिपे हुए हैं। यदि तुमने केवल खुशियों के खजानों को ही जाना है, तब तुमने अधिक नहीं जाना। यदि तुमने केवल प्रसन्नता के खजानों को जाना है, तो तुमने अधिक नहीं जाना। वहां दुःखों और उदासियों के भी खजाने हैं। वहां कुछ ऐसे भी खजाने हैं जिन्हें केवल उदासी ही तुम्हें दे सकती है। वहां हंसी के भी खजाने हैं और आंसुओ के भी।

बाउल कहते हैं कि एक व्यक्ति को इतना सक्षम होना चाहिए कि वह सभी द्वैतताओं को मिलने और अपने तक आने की उन्हें अनुमति दे। केवल तभी वह ' सारभूत मनुष्य ' प्रगट होता है और यह ' आधार मानुष ' अथवा सारभूत मनुष्य ही बाउलों का परमात्मा है।

ओ मेरे हृदय।
जब तक तू इस माटी की देह में है।
इस माटी की देह के प्रति तू समर्पित होकर जी।
यदि तू उस अप्राप्य दुर्लभ मनुष्य को उपलब्ध होना चाहता है।
तो उसके चरणों मे अपने भावों के पुष्प अर्पित कर दे
और अश्रुओं की आंखों से उमडती बाढ से
उसके चरण भिगो दे।
जिस मनुष्य को तू खोज रहा है।
वह इसी माटी की देह में ही है।
तू जीवित रहते हुए मरने का स्वाद जान ले।
तू मर रहा है, तो मर ही जा।
लेकिन मरने से पूर्व, जीवित रहते तुझे 'उसे' खोज लेना है।
आज इतना ही।

आठवां प्रवचन

तुम स्वयं धुलकर तरल हो जाओ

दिनांक 28 जून सन् 1976; श्री ओशो आश्रम पूना।

प्रश्नसार:

पहला प्रश्न : प्यारे ओशो! बाउल अपनी देह में जीते हुए ही उत्सव आनंद मनाते हैं। इस सम्बंध में क्या आप कुछ और अधिक बता सकते हैं?

अमेरिकन भी अपने शरीर को सुस्वाद्व और सुंदर भोजन से, राल्फिंग और मालिश आदि से स्वस्थ रखकर जीवन का आनंद लेते हैं लेकिन मैं ऐसा नहीं सोचती कि यह बाउलों जैसा ही है। क्या आप इस पर हमें कुछ बोध देने की कृपा करेगे?

इन दोनों में जमीन और आसमान का अंतर है और यह अंतर मात्रात्मक नहीं, गुणात्मक है। आधुनिक संसार और आधुनिक मन केवल खाली मंदिरों को ही जानता है। वह उस सम्बन्ध में पूरी तरह भूल चुका है कि इन मंदिरों में कौन सूक्ष्म रूप से सुरक्षित है। इसलिए हम लोग मंदिरों में पूजा किए चले जाते हैं लेकिन वहां परमात्मा जैसी दिव्यता को भूल गये हैं। जीवन के केंद्र के बारे में कुछ भी न जानते हुए हम लोग परिधि पर ही घूमते हुए ही संतुष्ट हो जाते हैं।

अमरीकन अपने शरीर का शरीर की ही भांति मूल्यांकन करते हुए उसी से बंधे रहते हैं, जब कि बाउल अपने शरीर को परमात्मा का मंदिर मानते हुए उसकी पूजा करते हैं। शरीर अपने आपमें कुछ भी नहीं है। शरीर के पार किसी और चीज के कारण ही वह प्रकाशवान है। शरीर की गरिमा और गौरव शरीर में नहीं है। वह तो मेजबान है। उसका सौंदर्य तो उसमें रहने वाले अतिथि के कारण है। यदि तुम मेहमान को भूल जाओ तो शरीर केवल कामनाओं को तुष्ट करने वाला ही बनकर रह जाता है। यदि तुम सदा मेहमान का स्मरण करते हो तब शरीर को प्रेम करना, शरीर के द्वारा उत्सव आनंद मनाना, पूजा करने का एक भाग बन जाता है।

बाउलों की दृष्टि बहुत व्यापक और विराट है। उनकी दृष्टि में शरीर सबसे निम्न तल, सबसे अधिक दृश्य भाग है, सबसे अधिक वास्तविक और स्पर्श कर महसूस करने वाला भाग लेकिन यही सब कुछ नहीं है, यह तो केवल प्रारम्भ है। तुम्हें शरीर के द्वारा ही अंदर प्रवेश करना होता है, यह तो ठीक एक द्वार है। यह तुम्हें गहरे रहस्यों में ले जाता है। बाउल शरीर को मूल्य समझता है क्योंकि वह

भाषाओं और आशाओं को धारण कर उसे वाहन बनाता है और शरीर के द्वारा ही कोई व्यक्ति यह जान सकता है कि जो भावों और विचारों को साकार रूप देता है वह केवल मात्र शरीर ही नहीं है। शरीर तो मिट्टी के दीये की भांति है, परमात्मा जिसकी ज्योति है। एक बार ज्योति बुझ जाये फिर कौन शरीर की पूजा करता है, कौन उसके द्वारा उत्सव आनंद मना सकता है? तब वह कुछ भी नहीं है, तब मिट्टी की देह मिट्टी में मिल जाती है, वह वापस पृथ्वी में ही मिल जाती है।

परमात्मा के साथ ही शरीर में धड़कन होती है, परमात्मा के साथ ही नाड़ी चलती है। यदि तुम नाड़ी में स्पन्दित जीवन को समझ सकते हो, तब धूल या मिट्टी भी दिव्य हो जाती है। यदि तुम नाड़ी में स्पन्दित जीवन को नहीं समझ सकते, तो केवल धूल ही है। तब वहां उसका कोई अर्थ रह ही नहीं जाता।

अमेरिकन लोग जिस तरह शरीर की अत्यधिक देखभाल करते हैं, वह अर्थहीन है। वे लोग स्वस्थ रहने के लिए अच्छे भोजन और मालिश पर जोर देते हैं। रॉल्फिग और हजार तरह से अपने जीवन में कुछ अर्थ सृजित करने का प्रयास करते हैं। लेकिन जरा उनकी आंखों में झांको, वहां एक गहरी रिक्तता है। तुम उन्हें देख कर ही समझ सकते हो कि वे ही कहीं चूक रहे हैं। वहां कोई सुवास है ही नहीं, उनके जीवन पुष्प की खिलावट हुई ही नहीं। उसके अंदर गहरे में सब कुछ केवल मरुस्थल जैसा है, जैसे उन्होंने सब कुछ खो दिया है और वे नहीं जानते कि अब किया क्या जाये। वे फिर भी अपने शरीर सुख के लिए बहुत सी चीजें किए चले जाते हैं, लेकिन यह लक्ष्य से चूकने जैसा है।

मैंने एक घटना के बाबत सुना है

रोजेनफेल्ड अपने दांत दिखाते और मुस्कराते हुए घर में प्रवेश करते ही अपनी पत्नी से बोला—'' तुम उनका अनुमान भी नहीं लगा सकतीं जो कुछ मोलभाव कर मैं आज लाया हूं। मैंने आज चार पोलिस्टर और स्टील के तारों वाले, किसी भी दिशा में आसानी से मुड़ने वाले रबड़ की कोटिंग चढ़े, अंदर से सफेद रंग से पेंट किए हैवी डयूटी वाले क्या शानदार टायर खरीदे हैं?"

श्रीमती रोजेनफेल्ड ने कहा—'' कहीं तुम्हारा दिमाग तो खराब नहीं हो गया? आखिर तुमने टायर खरीदे किसके लिए? तुम्हारे पास कार तो है ही नहीं।''

रोजेनफील्ड ने उत्तर दिया—'' ठीक उसी तरह जैसे तुम चोलिया खरीदती हो, क्या तुम्हारी छातियों में उभार हैं?"

यदि केंद्र से ही तुम चुके जा रहे हो तब तुम भले ही परिधि को कितना भी सजाओ। इससे दूसरे तो धोखा खा सकते हैं लेकिन वे तुम्हें संतुष्ट नहीं कर सकते। वे कभी—कभी तुम्हें भी धोखे में डाल सकते हैं, क्योंकि कोई भी व्यक्ति अपने ही झूठ को बार—बार दोहराता रहे तो सच जैसा लगने लगता है। लेकिन वह तुम्हें अंदर से पूरी तरह संतुष्टि नहीं दे सकता। अमेरिकन जीवन का मजा लेने के लिए हर सम्भव कोशिश कर रहे हैं, लेकिन फिर भी आनंद मिलता दिखाई नहीं देता। बाउल जीवन से मजे लेने की कोशिश नहीं कर रहा है। वह कुछ प्रयास कर ही नहीं रहा, वह केवल उसका आनंद ले रहा है और उसके पास मजे लेने के लिए कुछ है ही नहीं—वह तो तो बस सड़क का भिखारी है, लेकिन उसके पास कुछ चीज आंतरिक है, कुछ अज्ञात दीप्ति उसे चारों ओर से घेरे रहती है। उसका गीत केवल मात्र गीत ही नहीं है उसमें कुछ स्वाद और सुवास उस पार का भी उतर आता है। जब वह नाचता है, तो उसका केवल शरीर ही नहीं घूमता, कुछ चीज उसके अंदर गहरे में भी नाचती है। वह आनंद लेने की कोशिश कर नहीं रहा है। आनंद स्वयं घट रहा

इसे स्मरण रखें। जब कभी भी तुम आनंद लेने की कोशिश कर रहे हो, तुम चूकोगे। जब तुम प्रसन्नता प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हो, तुम चूकोगे ही। प्रसन्नता करने का प्रयास ही व्यर्थ है, क्योंकि प्रसन्नता यहां है ही, तुम उसे प्राप्त नहीं कर सकते। इस बारे में कुछ करने की जरूरत है ही नहीं, तुम्हें बस उसे स्वयं से होने देना है। वह तुम्हारे चारों ओर अपने आप घट ही रही है। तुम्हारे अंदर, तुम्हारे बाहर, केवल प्रसन्नता ही है। उसके अतिरिक्त और कुछ भी वास्तविक और सत्य नहीं है। निरीक्षण करो, संसार में गहरे उतर कर देखो, वृक्षों में पक्षियों में चट्टानों में बहती नदियों में, चमकते सितारों चांद और सूरज में, मनुष्यों और जानवरों में जरा गहरे झांक कर देखो, अस्तित्व जिस सामग्री से बना हुआ है वह है, प्रसन्नता, आनंद, सत—चिंतत, आनंद। वह परमानंद से ही ओतप्रोत है। उस सम्बंध में कुछ भी करने की जरूरत है ही नहीं। तुम्हारा कुछ करना ही अवरोध होगा। विश्रामपूर्ण रहो और वह तुम्हें आनंद से भर देगी, परम विश्राम में ही,वह तुम्हारे अंदर वेग से प्रविष्ट होती है, विश्राम करो, और वह अतिरेक से प्रवाहित होने लगती है।

बाउल विश्राममय है, और अमेरिकन तनाव में है। तनाव तभी उत्पन्न होता है, जब तुम किसी चीज का पीछा करते हो, और विश्राम तब घटित होता है जब तुम किसी चीज को प्रविष्ट होने की अनुमति देते हो। इसी वजह से मैं कहता हूं कि उसमें बहुत बडा फर्क है, और वह फर्क है गुणात्मक। यह प्रश्न मात्रा का नहीं है कि बाउलों के पास अमेरिकन लोगों से कुछ अधिक है, अथवा अमेरिकन लोगों के पास बाउलों की अपेक्षा कुछ कम है। नहीं, अमेरिकन लोगों के पास प्रसन्नता जैसा कुछ भी नहीं है, जो बाउलों के पास है, और अमरीकन लोगों के पास है ही क्या पीड़ाएं तनाव दुख और मानसिक विक्षिप्तता, और यह बाउलों के पास नहीं है। ये लोग तो पूरी तरह से भिन्न एक दूसरे ही आयाम में रहते हैं। बाउल का आयाम है— " यहीं और अभी किन्तु अमरीकन का आयाम है—' कहीं और '—' तब और वहां ' लेकिन यहां और अभी ' कभी नहीं।"

अमेरिकन पीछा कर रहा है, भागते हुए उसे पकड़ लेना चाहता है, जीवन से कुछ चीज पाने को सख्त कोशिश कर रहा है और उसका प्रयास है कि जीवन से सभी कुछ निचोड़ लिया जाये। लेकिन इससे कुछ भी तो नहीं मिलता, क्योंकि यह इसका तरीका ही नहीं है।

तुम जीवन से कुछ निचोड़ नहीं सकते, तुम्हें उसके प्रति समर्पण करना है। तुम जीवन पर विजय प्राप्त नहीं कर सकते। तुम्हें जीवन से हारने के लिए काफी साहसी बनना होगा। वहां पराजय ही विजय है, और जीतने के प्रयास से और कुछ सिद्ध होने नहीं जा रहा है, सिवाय अंतिम रूप से तुम्हारी हार और सफलता के।

जीवन पर विजय प्राप्त नहीं की जा सकती, क्योंकि खण्ड अखण्ड को जीत नहीं सकता। यह ठीक इसी तरह है जैसे मानो पानी की एक छोटी सी बूंद सागर पर विजय प्राप्त करने का प्रयास कर रही हो। हां छोटी सी बूंद सागर में गिरकर सागर तो बन सकती है, लेकिन वह सागर को जीत नहीं सकती। वास्तव में, सागर में गिरकर, उसमें खो जाना ही जीतने का तरीका है। अपने आप को विसर्जित कर दो। बाउल वही है, जो जीवन के सागर में घुल गया। उसने जीवन से पूरे हृदय से ' हां ' की, उसे स्वीकार किया। वह उससे कोई भी चीज निचोडने की कोशिश नहीं कर रहा है। वह बस प्रतीक्षा करता है निष्क्रिय, सजग बनकर, उपलब्ध रहता है। जब परमात्मा उसका दरवाजा खटखटाता है। उसका द्वार हमेशा खुला ही रहता है, सब कुछ केवल इतना ही है।

वह परमात्मा का पीछा नहीं कर रहा है। वह पीछा कर ही कैसे सकता है? हम उसे कहां, किन रास्तों पर और किस तरह खोज सकते हैं? या तो वह हर जगह है अथवा वह कहीं भी नहीं है। तुम परमात्मा की ओर से जीवन को सम्बोधित नहीं कर सकते। तुम उसमें से कोई लक्ष्य नहीं बना सकते। वह अखण्ड है। अखण्ड को लक्ष्य बनाया हीं नहीं जा सकता। तुम जहां कहीं भी दृष्टि उठाते हो, वह है। तुम जो कुछ करते हो, तुम उसमें होते हुए ही करते हो। जब तुम दुखी भी होते हो, तुम उसमें रहते हुए ही दुखी होते हो तुम दुख और वेदना में भी उसे कभी खोते नहीं हो। तुम उसे खो भी नहीं सकते। वह, जो खो सकता है, वह परमात्मा है ही नहीं। यही कारण है कि बाउल परमात्मा को 'आधार—मानुष' कहते हैं—सारभूत मनुष्य—सारभूत परम—चेतना। वह इतना अधिक महत्त्वपूर्ण और सारभूत है कि तुम उसे खो ही नहीं सकते। वही तुम्हारा आधार है, वही तुम्हारा अस्तित्व है। वह अपने शरीर में उत्सव आनंद मनाता है क्योंकि वह जानता है कि कोई एक है, जो उसके पार है, वह शरीर में ही अतिथि बनकर रह रहा है। शरीर ही उसका घर है, वह ही उसका मंदिर है। लेकिन वह खाली नहीं है। वह प्रकाश से आलोकित है, वह जीवन से भरपूर है और वहां ' परमात्मा ' विराजमान है। यह अनुभव करते हुए ही वह नाचता है, यह महसूस हुए ही वह गीत गाता है, यह अनुभव करते हुए ही मुस्कराता और रोता है और ढलकते अश्रुओं से उसका चेहरा भीग जाता है। यह चमत्कार देखकर " मैंने उसे अर्जित नहीं किया और वह यहां है मैंने उसे खोजा भी नहीं और वह यही है, और मैंने उससे कुछ मांगा ही नहीं है और फिर भी यह यहां है " उसके अंदर एक महान और अत्यधिक कृतज्ञता जन्मती है और इसी कारण बाउल नृत्य करता है।

अब मैं यह कहूंगा ही: अमेरिकन प्रसन्नता पाने और खोजने की कोशिश कर रहा है, इसीलिए उसका शरीर के साथ प्रगाढ़ सम्बन्ध और तादात्म्य है। उसके विचार ने उसे लगभग आक्रान्त कर दिया है। वह सम्बन्ध और आसक्ति की सीमाएं लांघ कर आवेशित हो गया है, और निरंतर शरीर के बारे में ही सोचता रहता है। यह करूं और वह करूं और सभी तरह की हर चीज आजमाऊं। वह शरीर के माध्यम से ही प्रसन्नता पाने का हर सम्भव प्रयास कर रहा है, और यह सम्भव नहीं है।

बाउल ने उसे प्राप्त किया है। उसने ' उसे ' अपने अंदर पहले ही देखा है, महसूसा है। उसने अपने ही शरीर में उसे गहरे झांक कर देखा है, मालिश के द्वारा नहीं, राल्फिंग के खेल के द्वारा नहीं,चंदन के सुवासित स्नान से नहीं। उसने प्रेम और ध्यान के द्वारा ही उसका अनुभव किया है, उसे वहां अपने अंदर पाया है और उस खजाने को अंदर ही छिपा पाया है। इसीलिए वह शरीर की पूजा करता है, इसीलिए वह शरीर की देखभाल करता है। क्योंकि यह शरीर ही उस दिव्यता का वाहन है।

क्या कभी तुमने इस बात का निरीक्षण किया है कि एक स्त्री जब गर्भवती होती है तो वह किस तरह चलती है। क्या तुमने एक स्त्री के चेहरे पर होने वाले उस रूप और आकृति के परिवर्तन को देखा है, जब वह गर्भवती बनती है। उसका चेहरा, आशापूर्ण नवजीवन और नई संभावना से स्पंदित होता है, उससे जैसे एक आलोक झरता रहता है।

जरा ' प्रफुल्ल ' की ओर देखो, अब वह गर्भवती है। जरा उसके चेहरे की ओर देखो—कितनी आकृति बदल गई है उसकी, वह कितनी प्रसन्न दिखाई देती है। वह अपने साथ एक महान सम्पत्ति, एक खजाना लिए चल रही है। उसके द्वारा एक नवजीवन का सृजन होने जा रहा है। वह बहुत सावधानी से चलती है, देखभाल कर आगे बढ़ती है। चूंकि वह गर्भवती है। इसलिए उसमें एक गरिमा और गौरव का जन्म हुआ है। अब वह अकेली नहीं है उसका शरीर एक मंदिर बन गया है। यह तुम्हारे लिए समझने जैसा है।

फिर उस बाउल के बारे में क्या कहा जाए? उसके अंदर वहां परमात्मा है। दिव्यता उसके गर्भ में है। वह प्रकाश से आलोकित हो रहा है। वह नाचता है और गीत गाता है। कुछ भी पास न होते हुए भी उसके पास सभी कुछ है, कुछ भी पास न होते हुए भी, वह संसार भर में सबसे अधिक धनी व्यक्ति है। एक तरह से वह सड़क का एक भिखारी है, और दूसरी तरह से वह सम्राट है। इसी के कारण उसके अंदर वह घटना घटी है कि वह उसके प्रति सजग हो गया है। वह अपने शरीर के साथ अति आनंदित है, वह अपने शरीर की देखभाल करता है और उससे प्रेम करता है। यह प्रेम पूरी तरह से भिन्न है।

और दूसरी बात यह है कि अमेरिकन का मन प्रतियोगी है। कोई जरूरी नहीं है कि वास्तव में तुम शरीर से प्रेम करते ही हो, तुम दूसरों के साथ केवल प्रतियोगिता कर रहे हो। क्योंकि जो कुछ दूसरे लोग कर रहे हैं, तुम्हें भी वही सब कुछ करना है। अमरीकी मन सबसे अधिक उथला और महत्त्वाकांक्षी मन है और ऐसा मन संसार में आज तक किसी और का नहीं रहा। यह बुनियादी रूप से वह पूरी तरह सांसारिक मन है। यही कारण है कि अमेरिका में व्यापारी सर्वोच्च वास्तविकता बन चुका है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक चीज पृष्ठभूमि में जाकर धुंधली हो चुकी है, व्यापारी व्यक्ति ही जो धन का नियंत्रण करता है वह ही एकमात्र सर्वोच्च वास्तविकता है।

भारत में ब्राह्मण ही सर्वोच्च स्थान पर प्रतिष्ठित थे वे परमात्मा के खोजी थे। योरोप में आभिजात्य वर्ग का सर्वोच्च स्थान था। वे लोग सुसंस्कृत, सजग, जीवन की कोमल और सूक्ष्म भावों के मर्मज्ञ, संगीत, कला, कविता, मूर्तिकला स्थापत्य कला, शास्त्रीय नृत्यों तथा ग्रीक और लैटिन भाषाओं के जानकार थे। जो अभिजात्य वर्ग था, उसे सदियों से जीवन के उच्च मूल्यों की स्थापना के लिए अनुशासन और आदतों के एक ढांचे में ढाला गया, और वही योरोप की सर्वोच्च वास्तविकता थी। सोवियत रूस में शोषित कुचले पददलित और सर्वहारा वर्ग का मजदूर

ही सर्वोच्च वास्तविकता है। अमेरिका में यह स्थान व्यापारी को प्राप्त है। जो धन पर नियंत्रण रखता है। धन ही सबसे अधिक प्रतियोगिता का क्षेत्र है। तुम्हें कला संस्कृति की कोई जरूरत नहीं है जरूरत है केवल धन की। तुम्हें संगीत और कविता के बारे में जानने की जरूरत नहीं है, तुम्हें प्राचीन साहित्य, इतिहास, धर्म और दर्शनशास्त्र के बारे में जानने की भी कोई जरूरत नहीं है। यदि तुम्हारे बैंक खाते में एक बड़ी धनराशि जमा है, तुम महत्वपूर्ण व्यक्ति हो। इसी वजह से मैं कहता हूं कि अभी तक पूरे विश्व में जितनी भी तरह के भी मन हैं, उनमें अमरीकी मन सबसे अधिक उथला है और इस मन ने हर चीज व्यापार की ओर मोड़ दी है। मन निरंतर एक प्रतियोगिता में व्यस्त है। यदि तुम वान गाग या पिकासो का कोई चित्र भी खरीदते हो, तो तुम उसे पिकासो के कारण नहीं खरीदते, तुम इसलिए उसे खरीदते हो, क्योंकि उसके चित्रों को पड़ोसियों ने खरीदा है। चूंकि उनके ड्राइंगरूम में पिकासो की पेंटिंग टंगी है, इसलिए तुम भी उसे रखने के लिए धन खर्च क्यों नहीं कर सकते? तुम्हारे पास भी होना ही चाहिए। तुम भले ही उसके बारे में कुछ भी न जानते हो। तुम भले ही यह भी न जानो कि उसे कैसे टांगा जाए उसके ऊपर और नीचे का भाग कौन सा है। क्योंकि जहां तक पिकासो का संबंध है, यह जानना कठिन है कि उसका चित्र उल्टा लटका है या सीधा? तुम्हें यह जानने की जरूरत नहीं है कि वह अधिकृत रूप से पिकासो की ही पेंटिंग है अथवा नहीं, लेकिन क्योंकि वह दूसरों के पास है और वे लोग पिकासो के बारे में बातचीत करते हैं, इसलिए तुम्हें भी अपना कला संस्कृति का प्रदर्शन करना ही है। लेकिन तुम केवल अपने धन का ही प्रदर्शन कर रहे हो। इसलिए जो कुछ भी कीमती होता है वही महत्त्वपूर्ण बन जाता है, वह चाहे कितना भी कीमती क्यों न हो, उसी के बारे में यह सोचा जाता है कि वही महत्त्वपूर्ण है।

ऐसा लगता है कि जैसे केवल धन और पड़ोसी ही प्रत्येक चीज को तय करने वाले मापदण्ड बन गए हैं, उनकी कारें, उनकी कोठियां, बंगले, उनकी पेंटिंग्स और उनके घरों की साज सज्जा। लोगों के पास सुंदर भव्य स्नानघर है, जिनमें सुवासित स्नान करने की व्यवस्था है, क्योंकि वे अपने शरीर से प्रेम करते हैं। वह आवश्यकता के रूप में जरूरी नहीं है, बल्कि वह एक ऐसी चीज है, जो घर के अंदर इसलिए होनी चाहिए क्योंकि वह प्रत्येक धनी व्यक्ति के पास है। यदि वह तुम्हारे पास नहीं है तो तुम्हें लगता है कि तुम निर्धन हो। यदि प्रत्येक धनी व्यक्ति की एक कोठी पहाड़ों पर है, तो तुम्हारी भी वहां एक होनी चाहिए। तुम भले ही यह न जानते हो कि पहाड़ों पर आनंद कैसे लिया जाता है। तुम हो सकता है वहां बोरियत का ही अनुभव करते हो अथवा तुम अपना टीवी. और रेडियो भी वहां ले जाते हो और ठीक उसी तरह सुनते हो, जैसे रेडियो को तुम अपने घर पर सुना करते थे और टीवी. के वही कार्यक्रम देखते हो, जैसे घर में देखा करते थे। इससे क्या फर्क पड़ता है, कि तुम कहां बैठे हुए हो, पहाड़ पर अथवा अपने घर के कमरे में? लेकिन चूंकि दूसरों के पास ऐसा है.....। चार कारों को रखने वाला गैरेज चाहिए तुम्हें, क्योंकि वैसे दूसरों के पास हैं। तुम्हें भले ही चार कारों की जरूरत भी न हो।

अमरीकी मन निरंतर दूसरों से प्रतियोगिता करने में लगा हुआ है। बाउल किसी का प्रतियोगी नहीं है। उसने प्रतियोगिता करना ही छोड़ दिया है। वह कहता है—'' मेरा इसके साथ कोई सम्बंध ही नहीं रह गया है कि दूसरे लोग क्या कर रहे हैं, मेरा सम्बंध स्वयं अपने से हैं कि मैं क्या हूं? मुझे इससे कोई मतलब ही नहीं कि दूसरों के पास क्या है, मेरा सम्बंध केवल अपने से ही है कि मेरे पास क्या है?" एक बार तुम इस तथ्य को समझ तो, तो जीवन बिना बहुत सी चीजों के ही आनदपूर्ण हो सकता है। तब उन चीजों की फिक्र करता कौन है?

यही सभी अंतरों में मूल अंतर है, भारत के त्यागी संन्यासियों और बाउलों के मध्य। बाउल भिखारी हैं, जैनियों के साधू भी भिखारी हैं, लेकिन दोनों में बहुत बड़ा अंतर है। जैन मुनियों के पास अमरीकी मन है। उन्होंने बहुत अधिक श्रमपूर्ण प्रयास करने के बाद संसार का त्याग किया है, क्योंकि उनके विचार में उस दूसरे संसार को प्राप्त करने और नैतिक गुणों को अर्जित करने का केवल यही एक तरीका है। लेकिन ये लोग रहे

व्यापारी ही। जैन भारत के सबसे बड़े और समृद्ध व्यापारी हैं। इसी वजह से मैं कहता हूं कि उनके पास एक अमरीकी मन है। उनके संन्यासी भी उन्हीं जैसे हैं।

बाउलों का त्याग पूरी तरह भिन्न है। उन्होंने यह संसार किसी दूसरे संसार को पाने के लिए नहीं छोड़ा है। उन्होंने धन सम्पत्ति इकट्ठा करने की बेवकूफी को देखते और समझते हुए उसे एक अनावश्यक बोझ मानते हुए ही इस संसार का त्याग किया है। उन्होंने यह समझ कर त्याग किया है कि तुम बहुत सी चीजों के बिना इतने अधिक प्रसन्न कैसे बने रह सकते हो, फिर उन चीजों को साथ ढोकर क्यों चला जाए? उन्हें साथ लिए चलने से उत्कंठा और व्यग्रता उत्पन्न होती है, जो तुम्हें बोझिल बनाती है और तुम्हारे परमानंद को नष्ट करती है। जैन मुनि दूसरे संसार के बारे में मोक्ष और स्वर्ग के बारे में सोचते हैं।

बाउल किसी दूसरे संसार के बारे में फिक्र करता ही नहीं। वह कहता है— " केवल यही एक संसार है। लेकिन तभी तथ्यों और बातों को समझ कर उसने एक साधारण सा सत्य जाना है, कि तुम्हारे पास जितना अधिक होगा, तुम्हें उतना ही कम आनंद मिलेगा। क्या तुम इसे नहीं समझ पाते? यह जीवन का साधारण सा गणित है। जितना अधिक तुम्हारे पास होगा तुम उतना ही कम आनंद पा सकोगे, क्योंकि तुम्हारे पास आनंद मनाने का समय होगा ही नहीं। पूरा समय रखने रखाने में चला जाएगा। यदि तुम्हारे पास बहुत सी चीजें होंगी तो तुम ढेर सारी चीजों में ही व्यस्त रहोगे। तुम्हारे अंदर का स्थान भी घिरा हुआ है। आनंद मनाने के लिए तुम्हें थोड़े से रिक्त स्थान की जरूरत है, आनंद मनाने के लिए तुम्हें थोड़ा भारमुक्त होने की जरूरत है, तुम्हें अपने धन सम्पत्ति और वस्तुओं को मूलने की जरूरत है और केवल होना भर है।''

बाउल जीवन से प्रेम करते हैं, इसीलिए वह सभी कुछ छोड़ते हैं। जैन मुनि जीवन से घृणा करते हैं और इसी कारण वे संसार का त्याग करते हैं। इसलिए कभी— कभी भावाभिव्यक्ति और मुद्राएं एक जैसी लगती है लेकिन जरूरी नहीं कि वे एक जैसी हों। आंतरिक महत्त्व पूरी तरह भिन्न हो सकता है।

मैंने सुना है:

वृद्ध ल्यूक और उनकी पत्नी का जोड़ा पूरी घाटी में व्यंग्यवाण छोड़ने के लिए जाना जाता था। ल्यूक के मरने के कुछ ही महीनों बाद उनकी पत्नी भी मृत्यु शैय्या पर पड़ी थी। उन्होंने अपनी पड़ोसिन को बुलाकर धीमी व कमजोर आवाज में कहा—'' रूढ़ी! मुझे मरने पर मेरी काली सिल्क के ड्रेस के साथ मुझे दफनाना, पर ड्रेस पहनाने से पहले उसके पीछे का भाग काट देना। और उस कपड़े से एक नई ड्रेस बना लेना, क्योंकि इस ड्रेस का कपड़ा बहुत अच्छा और महंगा है और उसे बरबाद करने से मुझे घृणा है।''

रूढ़ी ने कहा—'' यह मुझसे न हो सकेगा। जब आप और ल्यूक स्वर्ग की सोने की सीढ़ियों पर चढ़ेंगे तो आपकी ड्रेस में पीछे का भाग न होने पर आखिर देवदूत क्या कहेंगे?"

उसने कहा—'' वे मेरी ओर नहीं देख रहे होंगे। मैंने ल्यूक को बिना पतलून पहनाए दफन किया था।''

सम्बध हमेशा दूसरे से है— " ल्यूक बिना पतलून के होंगे, इसलिए प्रत्येक उन्हें देख रहा होगा। अमरीकी का सम्बंध भी दूसरे के ही साथ है।''

बाउल का सम्बंध बस स्वयं से ही होता है। इन अर्थों में बाउल बहुत स्वार्थी है। वह तुम्हारे बारे में फिक्र करता ही नहीं, वह किसी भी चीज के बारे में भी फिक्र नहीं करता, जो तुम्हारे पास है अथवा न उस चीज के बारे में कि तुमने उसके साथ कैसा व्यवहार किया। वह तुम्हारी जीवन गाथा के साथ कोई सम्बंध रखता ही नहीं। वह इसी पृथ्वी पर ऐसे रहता है, जैसे मानो वह अकेला हो। वास्तव में उसके पास और उसके चारों ओर बहुत विराट स्थान है, क्योंकि वह इसी पृथ्वी पर यों रहता है, जैसे मानो वह अकेला ही। वह इस पृथ्वी पर बिना दूसरों से कोई सम्बंध रखे और दूसरे लोग उसके बारे में क्या सोचते हैं, इसकी फिक्र किए बिना घूमता है।

वह अपना जीवन अपनी तरह से जीता है वह अपना ही काम करता है और वह उसे अपने अस्तित्व के लिए ही कर रहा है। वास्तव में वह एक छोटे बच्चे की भांति आनंदित है। उसकी खुशी बहुत साधारण और निर्दोष है। वह चतुराई या व्यवस्था से उत्पन्न नहीं हुई। वह बहुत सहज, सरल सारभूत और बच्चे जैसी मौलिक है।

क्या तुमने कभी किसी बच्चे को बस दौड़ते हुए चीखते चिल्लाते हुए अथवा बिना किसी बात के लिए अकारण नाचते हुए देखा है, क्योंकि उसके पास कुछ भी तो नहीं है? यदि तुम उससे पूछो—'' तुम इतने खुश क्यों हो?" तो वह तुम्हारे उत्तर देने में समर्थ न हो सकेगा वह वास्तव में यही सोचेगा कि तुम पागल हो। क्या खुश होने के लिए भी वहां किसी कारण की कोई जरूरत है? उसे तो इसी बात से चोट लगेगी कि यह क्यों शब्द उत्पन्न ही क्यों हुआ?

वह अपने कंधे उचकायेगा और अपने रास्ते आगे बढ़ते हुए फिर से नाचना और गाना शुरू कर देगा। बच्चे के पास कुछ भी तो नहीं है। वह अभी कहीं का न तो प्रधानमंत्री है, न अमेरिका का अध्यक्ष है और न रॉकफेलर जैसा धनी है। उसके पास कुछ भी तो नहीं है, हां थोड़े से शंख, सीपी अथवा थोड़े से पत्थर हो सकते है, जो उसने सागर तट से बटोरे हैं, बस सब कुछ यही उसकी सम्पत्ति है।

सब कुछ यही तो रखते हैं बाउल अपने पास थोड़े सी सीपिया, थोड़े से रंगीन पत्थर वे इन पत्थरों को पिरोकर एक माला बना लेंगे और पहन लेंगे, एक छोटा सा वाद्ययंत्र गीत गाने को, कुछ घंटियां अपने अंतर्तम के परमात्मा को बजाकर रिझाने के लिए एक तार वाला छोटा इकतारा क्योंकि एक तार ही काफी है उनके लिए और एक छोटी सी डुग्गी या ढफली, बस इतना ही सब कुछ।

एक बाउल संसार के बिना कोई नाता जोड़े हुए ही चैन से सोता है। वह संसारे से कोई नाता जोड़े बिना ही घूमता है। उसका परमात्मा हमेशा उसके ही साथ रहता है, इसलिए वह जहां कहीं भी होता है, वहीं उसका मंदिर और तीर्थ होता है। वह कभी किसी मंदिर में नहीं जाता, ऐसा नहीं कि वह उसके विरुद्ध है। वह कभी किसी मस्जिद में भी नहीं जाता, ऐसा नहीं कि वह उसके खिलाफ है। वह असली मंदिर तक आ पहुंचा है और अब उसे कहीं और जाने की कोई जरूरत ही नहीं। प्रेम, उसकी प्रार्थना और उसकी पूजा सारभूत अस्तित्व की ही है, कि ' वह ' है।

बाउल का जीवन मृत्यु होने पर समाप्त नहीं हो जाता, जब कि अमरीकन के मरते ही उसके जीवन का अंत हो जाता है। जब शरीर मर जाता है अमरीकन का अंत हो जाता है। इसीलिए अमेरिकन मृत्यु से बहुत भयभीत हैं। अमेरिकन अपने जीवन को लम्बा बनाने के लिए हर तरह की कोशिश में लगे हुए हैं। कभी—कभी तो जीवन बढ़ाने के लिए वे व्यर्थ के प्रयास कर रहे हैं। अब वहां बहुत से अमेरिकन ऐसे हैं, जो अस्पतालों और मानसिक चिकित्सालयों में बस निष्क्रिय लेटे हैं। वे जीवित नहीं हैं, वे काफी पहले ही मर चुके हैं। डॉक्टरों ने दवाओं ने और आधुनिक साजो समान ने उनके साँस चलने की व्यवस्था भर कर दी है। किसी तरह वे केवल सांस की डोरी से हिलगे हुए हैं।

मृत्यु का इतना अधिक भय है कि उन्हें : एक बार यदि तुम गए तो हमेशा के लिए चले जाओगे, कुछ भी जीवित न बचेगा और जो व्यक्ति मृत्यु से भयभीत है वह जीवन से भी डरेगा, क्योंकि जीवन और मृत्यु दोनों एक दूसरे के इतने अधिक साथ हैं कि यदि तुम मरने से डर रहे हो तो तुम जीवन से भी भयभीत बने रहोगे।

यह जीवन ही है जो मृत्यु लाता है, इसलिए यदि तुम मृत्यु से डर रहे हो तो तुम वास्तव में जीवन से कैसे प्रेम कर सकते हो? भय तो वहां बना ही रहेगा। यह जीवन ही है जो मृत्यु लाता है, तुम उसे समग्रता से जी नहीं सकते। यदि मृत्यु प्रत्येक चीज को समाप्त कर देती है, यदि यही तुम्हारे विचार और समझ है तब तुम्हारा जीवन तेजी से आगे भागते हुए पीछा करने वाला जीवन जैसा बन गया है। क्योंकि मृत्यु आ रही है इसलिए तुम

संतोषी बनकर बैठ नहीं सकते। इसीलिए अमेरिकन को रफ्तार का भूत सवार है। प्रत्येक चीज बहुत तेजी से करना है उसे, क्योंकि मृत्यु शीघ्र पहुंचने वाली है, इसलिए मृत्यु आये, इससे पूर्व ही जितनी अधिक से अधिक चीजों की व्यवस्था करने की कोशिश कर सको, जुटा लो। मरने से पहले अपने अस्तित्व को जितने अधिक से अधिक अनुभवों से गुजार सको, गुजारो और उन अनुभवों से उसे पूरी तरह भर दो, क्योंकि एक बार तुम मरे, तो बस मर ही गए। इससे एक बहुत बड़ी अर्थहीनता उत्पन्न होती है और वास्तविकता वेदना और व्यग्रता का जन्म होता है। यदि वहां कुछ भी ऐसा नहीं है जो शरीर को जीवित बनाये रख सके, तब तुम जो कुछ भी करते हो, वह बहुत गहरा नहीं हो सकता। तब तुम जो कुछ भी करो, वह तुम्हें संतोष नहीं दे सकता। यदि मृत्यु ही अंत है और कुछ भी जीवित नहीं रहता, तब जीवन का कोई अर्थ और महत्व नहीं रह जाता। तब वह एक मूर्ख की कही कहानी होती है—शोर और क्रोध से भरी हुई, जिसका कुछ भी मतलब नहीं होता है।

बाउल जानता है कि वह शरीर में है, लेकिन वह शरीर ही नहीं है। वह शरीर से प्रेम करता है, वह उसका घर है, उसका अपना आश्रय—स्थल उसका अपना मंदिर है। वह शरीर के विरुद्ध नहीं है, क्योंकि अपने ही घर के विरुद्ध होना मूर्खता है, लेकिन वह भौतिकतावादी नहीं है। वह जमीन से जुडा हुआ है, लेकिन पदार्थवादी नहीं है। वह बहुत सच्चा और वास्तविक है लेकिन वह यथार्थवादी नहीं है। वह जानता है कि उसे एक दिन मरना है लेकिन यहां कुछ भी नहीं मरता। मृत्यु आती है लेकिन जीवन चलता ही रहता है।

मैंने सुना है:

मुर्दे को दफन करने के सभी संस्कार पूरे होने के बाद कब्रिस्तान के केयर टेकर डेसमंड ने देखा कि एक काफी वृद्ध सज्जन उसकी बगल में ही खडे हुए हैं। उसने उनसे पूछा—'' क्या आप शोक—संतप्त परिवार के कोई सम्बंधी हैं?''

उस वरिष्ठ नागरिक और के व्यक्ति ने उत्तर दिया—'' हां! मैं सम्बंधी ही हूं उनका।''

'' आपकी आयु कितनी है?''

'' चौरानवे वर्ष।''

गला खखारते हुए डेसमण्ड ने कहा—'' फिर घर तक जाने का फेरा आपको बहुत महंगा पड़ेगा।''

लोगों का सारा सोच विचार शरीरगत जीवन के बारे में ही है। यदि तुम चौरानवे वर्ष के हो, तो बात खत्म हो गई। तब घर वापस लौटना महंगा है, इससे अच्छा है, अभी मर जाओ। तुम्हें भी उस मुर्दे के साथ दफन कर दिया जाये। घर वापस लौटने की आखिर क्या तुक है क्योंकि तुम्हें शीघ्र यहां फिर वापस आना होगा। यह शरीर अब क्या दे सकता है.....? जब मृत्यु ही अंतिम सत्य है, तब तुम चौरानवे वर्ष के हो या चौबीस वर्ष के इससे क्या फर्क पड़ता है? तब अंतर केवल थोड़े से वर्षों का ही तो है। तब बहुत युवा भी का अनुभव करना शुरू कर देता है और बच्चा जन्म से ही मृत होने का अनुभव करने लगता है। एक बार तुम यह समझ जाओ कि शरीर ही केवल मात्र जीवन है, तब फिर उसका महत्त्व क्या रह जाता है? तब उसे ढोये चले जाने से होता क्या है?

कामू ने लिखा है कि मनुष्य के लिए आधारभूत सूक्ष्मतम समस्या—केवल आत्महत्या करना है। मैं उससे सहमत हूं यदि केवल शरीर ही पूरी वास्तविकता है, तब फिर तुम्हारे अंदर ऐसा कुछ भी नहीं है जो उसके पार हो, तब वास्तव में इस बात पर विचार करना बहुत महत्वपूर्ण हैं, उस पर चिंतन और ध्यान करना बहुत जरूरी है। फिर तुम आत्महत्या क्यों नहीं कर लेते? चौरानवे वर्ष तक आखिर प्रतीक्षा क्यों करते हो? और फिर क्यों सभी तरह की पीड़ाएं और दुःख भुगतते हो? फिर क्यों इस तरह की समस्याओं का सामना करते हो? यदि कोई व्यक्ति मरने ही जा रहा है, फिर वह आज ही क्यों नहीं मर जाता? फिर क्यों कल सवेरे फिर जागना? यह सभी कुछ व्यर्थ दिखाई देता है।

इसलिए एक ओर तो अमरीकी मनुष्य निरंतर एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर दौड़ रहा है और किसी न किसी तरह अनुभवों को जैसे छीन लेना चाहता है, वह किसी की भांति किसी अनुभव से चूकना नहीं चाहता। वह पूरे विश्व में चारों ओर एक नगर से दूसरे नगर में एक देश से दूसरे देश में और एक होटल से दूसरे होटल में भागता फिर रहा है। वह एक चर्च से दूसरे पूजा घर में, एक गुरु से दूसरे गुरु के पास की खोज में भटक रहा है। क्योंकि मृत्यु चली आ रही है। एक ओर तो पागल की तरह निरंतर किसी के पीछे भागने की प्रवृत्ति और दूसरी और कहीं गहरे में एक चिंता और सोच कि यहां सभी कुछ व्यर्थ है क्योंकि मृत्यु सभी का अंत कर देगी इसलिए तुम भले ही समृद्धि भरा जीवन बिताओ या गरीबी में रहो, तुम चाहे बुद्धिमान बन कर रहो या मूर्ख बनकर, चाहे तुम एक महान प्रेमी बन कर रहो या प्रेम से चूक जाओ, आखिर इन सभी बातों से फर्क क्या पड़ता है?

अंत में मृत्यु आती है और प्रत्येक व्यक्ति को एक जैसा कर देती है बुद्धिमान और मूर्ख, संत और पानी, बुद्ध और बुद्ध सभी मिट्टी में मिलकर विलुप्त हो जाते हैं। इसलिए इन सभी चीजों की जरूरत क्या है? चाहे तुम बुद्ध या जीसस बनकर रहो या जुदास बनकर, आखिर इससे क्या फर्क पड़ता है? जीसस क्रॉस पर चढ़कर मर जाते हैं। जुदास अगले ही दिन आत्महत्या कर लेता है, दोनों ही पृथ्वी में समा जाते हैं।

इसलिए एक ओर तो यह भय है कि तुम चूक जाओगे और दूसरे लोग उसे प्राप्त कर लेंगे, और दूसरी ओर गहरे में यह चिंता भी है कि यदि तुमने उसे प्राप्त भी कर लिया, तो कुछ भी तो नहीं पाया। यदि तुम पहुंच भी गए तो भी तुम कहीं नहीं पहुंचते, क्योंकि मृत्यु आती है और प्रत्येक चीज को नष्ट कर देती है।

बाउल अपने शरीर में ही जीता है, अपने शरीर से प्रेम करता है, उत्सव आनंद मनाता है लेकिन यह शरीर नहीं है। वह उस सारभूत मनुष्य, उस ' आधार—मानुष ' को जानता है। वह जानता है वहां कुछ चीज उसके अंदर भी है, जो उसके मरने पर भी जीवित रहेगी। वह जानता है कि वहां उसमें कुछ चीज ऐसी है, जो शाश्वत है और समय भी उसे नष्ट नहीं कर सकता। ध्यान के द्वारा प्रेम और प्रार्थना के द्वारा वह इस अनुभव तक पहुंचा है। इसके द्वारा ही उसे अपने अंदर अस्तित्व में उसका अनुभव हुआ है। वह निर्भय है। वह मृत्यु से भयभीत नहीं है, क्योंकि वह जानता है कि जीवन क्या है और वह खुशी या आनंद के पीछे नहीं भाग रहा है, क्योंकि वह जानता है कि परमात्मा उसके पास आनंद मनाने के लाखों अवसर स्वयं भेज रहा है। उसे केवल उसे स्वीकार करना है।

क्या तुम यह देख सकते हो कि वृक्ष पृथ्वी में अपनी जड़े जमाये हुए हैं। वे कहीं और नहीं जा सकते और वे फिर भी प्रसन्न हैं। वे प्रसन्नता और आनंद के पीछे नहीं भाग सकते। निश्चित रूप से वे चलकर आनंद कहीं और खोज नहीं सकते। वे जड़ें जमाये जमीन पर खड़े हैं, वे चल फिर नहीं सकते, लेकिन क्या तुम उन्हें आनंद से झूमते हुए नहीं देखते। क्या तुम यह नहीं देख सकते कि जब मेह बरसता है तो खुशी से वे दीवाने हो जाते हैं, क्या तुम उनके अंदर उस संतोष और तृप्ति को नहीं देखते, जब तेज हवा में वे इधर से उधर शराबी की तरह झूमते हैं। क्या तुम्हें ऐसा नहीं लगता कि वे नाच रहे हैं?

अब नई खोजें यह बतलाती हैं कि जब माली वृक्षों और पौधों के निकट जाता है और क्योंकि वह उन्हें प्रेम करता है, तो उसके निकट आने पर वृक्ष और पौधे भी खुश होकर आनंद मनाते हैं। यदि तुम किसी वृक्ष से प्रेम करते हो और तुम उसके निकट जाओ तो वह खुशी मनाता है, जैसे मानो उसका कोई महान मित्र उसके पास आया हो। अब यहां इस बात की जांच करने के लिए वैज्ञानिक यंत्र भी है कि वृक्ष प्रसन्न है अथवा नहीं? एक भिन्न लय से वह स्पंदित होता है। जब उसका कोई शत्रु लकड़हारा या बढ़ई उसके निकट जाता है तो वृक्ष किसी उपद्रव होने की आशंका से बैचेन और भयभीत हो जाता है और जब तुम किसी वृक्ष को काटते हो, तो अब वैज्ञानिक बतलाते हैं कि उसके आसपास के वृक्ष भी रोते और चीखते हैं। केवल यह ही नहीं, कि तुम जिस वृक्ष

को काटो तो केवल वही वृक्ष रोता या चीखता है, उसके आसपास के सभी वृक्ष रोते और चीखते हैं। और ऐसा केवल वृक्षों के साथ नहीं है, बल्कि यदि तुम एक पक्षी भी मारो, तो भी सभी वृक्ष रोना शुरू कर देते हैं सूक्ष्म आंसू महान पीड़ा और वेदना के रूप में चारों ओर फैल जाते हैं। लेकिन वे जड़ें जमाये थिर खड़े हैं, वे कहीं भी आते—जाते नहीं। फिर भी जीवन उनमें स्पंदित हो रहा है।

यही बाउलों की भी समझ है कि कहीं और जाने की कोई जरूरत नहीं। यदि तुम एक वृक्ष के नीचे बैठना शुरू कर दो, तो जैसा कि बुद्ध को घटा, परमात्मा स्वयं उनके पास चलकर आया। वह कहीं भी नहीं जा रहे थे, बस वृक्ष के नीचे केवल बैठे हुए थे।

तुम बस वह क्षमता और योग्यता उत्पन्न करो, सब कुछ आता है, तुम बस उसे आने की अनुमति दो। जीवन पहले ही से तुम्हें सब कुछ देने को तैयार बैठा है। तुम ही इतनी सारी बाधाएं खड़ी कर रहे हो, और सबसे बड़ी बाधा जो तुम उत्पन्न कर सकते हो, वह है उसका पीछा करना, उसके पीछे भागना। क्योंकि तुम्हारे भागने और पीछा करने से जब भी जीवन आकर तुम्हारा दरवाजा खटखटाता है, वह तुम्हें कभी वहां पाता ही नहीं। तुम हमेशा कहीं और ही रहते हो। जब जीवन तुम्हारे पास वहां पहुंचता है, तुम वहां से कहीं और चले गए होते हो।

' प्रफुल्ल '। तुम काठमाण्डू में थी, जब ' जीवन ' काठमाण्डू पहुंचता है तो तुम गोआ में होती हो। जब तुम गोआ में हो और ' जीवन ' किसी तरह गोआ पहुंचता है तुम पूना में होती हो। और जिस समय वह पूना आयेगा तुम फिलाडेल्फिया में होगी। इसलिए तुम ' जीवन ' का पीछा करती रहो और जीवन तुम्हारा पीछा किए जाता है और मुलाकात कभी घटती नहीं।

बस जहां हो, वहीं बने रहो, केवल होना भर रह जाये, प्रतीक्षा करो और धैर्यधारण करो।

दूसरा प्रश्न :

प्यारे ओशो! आपके पास आने से पहले, मैं बौद्धों का एक ध्यान 'मैत्री भावना' किया करता था। वह स्वयं अपने से ही बात करने से शुरू करना होता था—"मैं ठीक बना रहूं, मैं प्रसन्न बना रहूं, मैं किसी से दुश्मनी करने से मुक्त बना रहूं, मैं स्वयं विरुद्ध, रुग्ण इच्छा और भावना से मुक्त बना रहूं, "इन भावों को अंदर गहरे में ले जाने से ये विचार, ध्यान का अगला— चरण उत्पन्न करते है, जिसमें मैं उन लोगों का खयाल करते हुए जिन्हें तुम प्रेम करते हो, उन तक यहीं शुभ भावना सम्प्रेषित करनी होती है? तब फिर तुम जिन व्यक्तियों से कम प्रेम करते हो, उन तक भी यही भाव सम्प्रेषित किए जाते हैं और यह तब तक करना होता है। जब तक तुम उन लोगों के लिए भी करुणा का अनुभव न करने लगो? जिनसे तुम घृणा करते हो।

इस ध्यान के द्वारा मुझे बहुत अच्छे अनुभव हुए, इसके द्वारा किसी तरह मैं दूसरों के लिए खुला और मैं अब भी यह अनुभव करता है कि उसमें वास्तव में कुछ बीज गहरी और आधारभूत है लेकिन जब मैं आपके सान्निध्य में आया तो मैने इस ध्यान को इसलिए करना छोड़ दिया क्योंकि मैंने इसमें एक तरह के आत्म सम्मोहन कर खतरा देखा।

मैं अब भी इस ध्यान का अनुभव करना चाहता हूं, लेकिन इस उलझन में हूं कि मुझे एक भिन्न रूप में इसे फिर से शुरू करना चाहिए अथवा इसका विचार ही छोड़ देना चाहिए।

क्या आप हम ध्यान के सम्बंध में मुझे बताने की अनुकम्पा करेंगे? मैं आपका बहुत कृतज्ञ होऊगा।

मैत्री भावना सबसे अधिक गहराई तक ले जाने वाले ध्यानों में से एक है। तुम्हें किसी भी तरह के आत्मसम्मोहन से भयभीत होने की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि यह आत्मसम्मोहन है ही नहीं। वास्तव में यह एक तरह के सम्मोहन से वापस होने या मुक्त होने की प्रक्रिया है। यह सम्मोहन जैसी लगती जरूर है,

क्योंकि यह सम्मोहन की उल्टी विधि है, तुम अपने घर से चलकर मेरे पास आ गए हो, तुमने पूरा रास्ता चलकर तै कर लिया है। अब तुम्हें वापस जाने के लिए उसी रास्ते पर चलना होगा। अंतर केवल इतना ही होगा कि अब तुम्हारी पीठ मेरी ओर होगी। रास्ता वही होगा, तुम भी वही होगे, लेकिन तुम्हारा चेहरा मेरी ओर था, जब तुम मेरी ओर आ रहे थे। अब तुम्हारी पीठ मेरी ओर होगी।

मनुष्य पहले ही से सम्मोहित है। प्रश्न उसके अब सम्मोहित किये जाने अथवा न किये जाने का नहीं है। तुम पहले से ही सम्मोहित हो। समाज की पूरी विधि ही एक तरह का सम्मोहन है।

किसी व्यक्ति से यह कहा जाता है कि तुम ईसाई हो और यह निरंतर इतनी बार दोहराया जाता है, कि उसका मन ईसाई अनुशासन और आदतों के ढांचे में आबद्ध अर्थात् कंडीशंड हो जाता है और वह सोचने लगता है कि वह एक ईसाई है। कोई व्यक्ति हिंदू है, कोई व्यक्ति मुसलमान है। यह सभी सम्मोहन हैं। यदि तुम सोचते हो कि तुम मुसीबत में हो, यह भी एक सम्मोहन है।

तुम पहले ही से सम्मोहित हो। यदि तुम सोचते हो कि तुम मुसीबत में हो। यह भी एक सम्मोहन है। यदि तुम सोचते हो कि तुम्हारी अनंत समस्याएं हैं, तो यह भी एक सम्मोहन है।

तुम जो कुछ भी हो, वह एक तरह का सम्मोहन है। समाज ने तुम्हें जो विचार दिए हैं और अब तुम उन विचारों और ' कंडीशनिंग ' से भरे हुए हो।

मैत्री— भावना, सम्मोहन से मुक्त करने का प्रयोग है। तुम्हारे मन को स्वाभाविक दशा में लाने और तुम्हें तुम्हारा मूल चेहरा वापस दिलाने का यह एक प्रयास है। यह तुम्हें उस बिंदु पर लाने का प्रयास है, जहां तुम जन्म लेने के समय थे और समाज ने तुम्हें भ्रष्ट नहीं किया था। जब एक बच्चा जन्म लेता है वह मैत्री भावना ही में रहता था। मैत्री— भावना का अर्थ है—मित्रता प्रेम और करुणा। जब एक बच्चा जन्म लेता है वह किसी घृणा को न जानकर, केवल प्रेम को जानता है। प्रेम के अंतर्निहित घृणा भी छिपी है यह वह बाद में सीखेगा। प्रेम में क्रोध भी छिपा है—यह वह बाद में सीखेगा। ईर्ष्या, मालकियत और किसी की उन्नति देखकर जलन, ये सभी कुछ वह बाद में सीखेगा। ये सभी वे चीजे हैं जो समाज उसे सिखायेगा: कैसे ईर्ष्यालु बना जाता है, कैसे घृणा की जाती है और कैसे क्रोध और हिंसा से भरकर पागल हुआ जाता है। ये सभी चीजें समाज द्वारा सिखाई जाएंगी।

जब बच्चे का जन्म होता है, वह केवल प्रेम ही होता है। उसे ऐसा होना ही होता है, लर' .क्योंकि इसके अतिरिक्ति वह और कुछ जानता ही नहीं। वह मां के गर्भ में उसका सामना किसी शत्रु से हुआ ही नही। वह नौ माह तक गहरे प्रेम में ही रहा है, चारों ओर से प्रेम से घिरे हुए प्रेम से ही उसका पोषण हुआ है। वह किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं जानता जो उससे शत्रुता रखता हो। वह केवल मां को जानता है और वह केवल मां के प्रेम को जानता है।

जब उसका जन्म हुआ, उसका पूरा अनुभव प्रेम का ही है, इसलिए तुम उससे यह आशा कैसे कर सकते हो कि वह कोई भी घृणा जैसी चीज भी जाने? यह प्रेम वह अपने साथ लेकर आता है, यह उसका मौलिक चेहरा है। बाद में वहां मुसीबतें भी आयेंगी, तब वहां बहुत से अन्य अनुभव भी होंगे। वह लोगों पर अविश्वास करना शुरू कर देगा। एक नया जन्म लेने वाला बच्चा केवल विश्वास के साथ ही जन्म लेता है।

मैंने सुना है:

एक व्यक्ति ने एक छोटे बच्चे के साथ एक नाई की दुकान में प्रवेश किया। जब उस व्यक्ति के बाल काट दिए गए दाढ़ी बनाकर उसका शैम्पू और पूरी साज सज्जा आदि पूरी हो गई, तो उसने अपनी कुर्सी पर बच्चे को बैठालते हुए नाई से कहा—'' मैं परेड के लिए एक हरी टाई खरीदने जा रहा हूं और कुछ ही मिनटों बाद वापस आ रहा हूं।''

जब बच्चे के बाल काटे जा चुके और वह व्यक्ति फिर भी वापस नहीं लौटा तो नाई से उससे कहा—'' ऐसा लगता है तुम्हारे पिता तुम्हारे बारे में सब कुछ भूल ही गए।''—'' वह मेरे डैडी नहीं थे।'' बच्चे ने उत्तर दिया।

वह बस टहल रहे थे उन्होंने मेरा हाथ पकड़कर मुझसे कहा—'' मेरे बच्चे! मेरे साथ आओ। हम लोग मुफ्त बाल कटवाने चल रहे हैं।''

बच्चे विश्वास करते हैं, लेकिन ज्यों—ज्यों वे यहां ऐसे अनुभवों से गुजरेंगे, जिनमें वे धोखे खाएंगे, जिनमें वे मुसीबतों का सामना करेंगे, जिनमें उनका विरोध होगा और जो उन्हें भयभीत कर देंगे, तो धीरे— धीरे वे संसार की सभी चाल बाजियां सीख जाएंगे। कम या अधिक ऐसा ही यहां प्रत्येक व्यक्ति के साथ घटता है। अब यह मैत्री— भावना पुन: वही स्थिति सृजित कर रही है यह प्रति सम्मोहन है। यह घृणा को समाप्त करने का एक प्रयास है। यह क्रोध, ईर्ष्या और निर्लज्जता से मुक्त होकर संसार में पुन: नया बनकर वापस आने का प्रयास है, जैसे तुम संसार में उत्पन्न होने वाले प्रथम व्यक्ति हो। यदि तुम यह ध्यान—प्रयोग करते ही जाओ, तो पहले तो तुम स्वयं अपने से प्रेम करना शुरू करोगे, क्योंकि किसी और की अपेक्षा तुम स्वयं ही अपने सर्वाधिक निकट हो। तब तुम अपने प्रेम अपनी मित्रता, अपनी करुणा, अपनी भावनाओं, अपनी शुभेच्छाओं, अपने आशीर्वादों और आनंद को उन लोगों पर बरसा दो, जिन्हें तुम प्रेम करते हो, जो तुम्हारे मित्र और प्रेमी हैं। तब धीमे— धीमे तुम इन्हीं भावनाओं का और अधिक लोगों में प्रसार करो, उन लोगों पर भी जिन्हें तुम अधिक प्रेम नहीं करते, तब ऐसे लोगों पर जिनके प्रति तुम निरपेक्ष हो, न उन्हें प्रेम करते हो और न घृणा— और तब धीमे— धीमे उन लोगों तक प्रसारित करो, जिन्हें तुम घृणा करते हो। धीमे— धीमे तुम अपने आपको सम्मोहन से मुक्त कर रहे हो। धीमे— धीमे तुम अपने चारों ओर प्रेम का एक गर्भ निर्मित कर रहे हो।

जब एक बुद्ध बैठा होता है, अस्तित्व में विराजमान वह ऐसा लगता है, जैसे पूरा अस्तित्व ही फिर से उसकी मां का गर्भ बन गया हो। उसकी किसी से भी कोई शत्रुता नहीं होती, जैसे वह अपने मूल स्वभाव और प्रकृति को उपलब्ध हो गया हो। उसने उस ' सारभूत ' मनुष्य को जान लिया है। अब तुम भले ही उसके प्राण ले लो, पर तुम उसकी करुणा को नष्ट नहीं कर सकते।

मरते समय भी वह तुम्हारे प्रति करुणा से भरा हुआ होगा। तुम उसकी भले ही हत्या कर दो, लेकिन तुम उसकी आस्था को नष्ट नहीं कर सकते। अब वह जानता है कि आस्था कोई ऐसी मूल चीज है, जिसे एक बार यदि तुम उसे खो दो, तो तुम सभी कुछ खो देते है, और यदि तुम आस्था नहीं खोते और शेष हर चीज खो जाती है, फिर भी तुम कुछ भी नहीं खोते। तुम उससे प्रत्येक चीज ले सकते हो, लेकिन उसकी आस्था नहीं ले सकते।

मैत्री— भावना बहुत सुंदर ध्यान है तुम उसे कर सकते हो। उसे छोड़ देने की कोई भी जरूरत नहीं है। वह अत्यंत सहायक सिद्ध होगा। वह तुम्हारा नव—निर्माण करेगा।

अहंकार बनता है घृणा शत्रुता और संघर्ष से। यदि तुम अहंकार छोडना चाहते हो। तो तुम्हें कहीं अधिक प्रेम भावना उत्पन्न करनी होगी। जब तुम प्रेम करते हो तो अहंकार विसर्जित हो जाता है। यदि तुम बहुत तीव्रता और गहनता से प्रेम करते हो और यदि तुम्हारा प्रेम बेशर्त है और तुम सभी को प्रेम करते हो, तब अहंकार रह ही नहीं सकता।

अहंकार सबसे अधिक मूर्खतापूर्ण चीज है, जो किसी स्त्री या किसी पुरुष को कभी भी हो सकता है। एक बार यह घट जाए तो इसे देख पाना बहुत कठिन होता है, क्योंकि यह तुम्हारी आंखों को बादलों की भांति ढक लेता है।

मैंने सुना है:

मुल्ला नसरुद्दीन और उसके दो मित्र आपस में एक दूसरे से अपनी— अपनी समान आकृति अथवा समरूपता के बारे में बातचीत कर रहे थे।

पहले मित्र ने कहा—'' मेरा चेहरा ठीक विंस्टन चर्चिल के चेहरे जैसा है। मैं प्राय: उन्हें देखकर गलती कर बैठता हूं।''

दूसरे ने कहा—'' मेरे मामलों में लोग मुझे देखकर प्रेसीडेंट निक्सन समझकर मुझसे ' आटोग्राफ ' मांग बैठते हैं।''

मुल्ला बोला—'' यह कुछ भी नहीं है। जहां तक मेरा अपना मामला है, मैं खुद को परमात्मा मानने की गली कर बैठता हूं।''

पहले और दूसरे मित्र ने एक साथ पूछा—'' वह कैसे?''

मुल्ला नसरुद्दीन ने कहा—'' ऐसा है, जब मुझे चौथी बार जेल जाने की सजा दी गई है और मैं जेल भेजा गया, तो मुझे देखते ही जेलर बोला—'' ओह परमात्मा! तुम फिर से आ गए?''

एक बार अहंकार खड़ा हो जाए फिर वह हर जगह से कुछ न कुछ, अर्थपूर्ण या व्यर्थ सब कुछ संग्रहीत करता जाता है बल्कि उसे स्वयं के महत्त्वपूर्ण होने का अनुभव होता जाता है। जब तुम किसी के प्रेम में होते हो, तो कहते हो—'' न केवल मैं, तुम भी महत्वपूर्ण हो।'' जब तुम किसी व्यक्ति से प्रेम करते हो, तो तुम क्या कह रहे हो उससे? तुम कुछ कह सकते हो और नहीं भी कह सकते, लेकिन वास्तव में तुम्हारे हृदय के गहरे में है क्या? क्या तुम कह रहे हो शब्दों में या मौन में '' तुम भी महत्त्वपूर्ण हो, उतने ही अधिक जितना मैं स्वयं हूं।''

यदि प्रेम विकसित होकर अधिक गहरा हो जाता है, तो तुम कहते हो—'' तुम मेरे लिए मुझसे से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण हो। यदि वहां ऐसी कोई स्थिति आ जाए। जहां केवल एक ही जीवित रह सकता है, तो मैं तुम्हारे लिए मर जाना पसंद करूंगा और चाहूंगा कि तुम जीवित रहो।'' दूसरा व्यक्ति महत्त्वपूर्ण बन जाता है। यही अर्थ है—' प्रेमी होने का ' तुम जिसे प्रेम करते हो, तुम उसके लिए स्वयं का बलिदान करने को तैयार हो और यदि भावना फैलती ही जाए ' मैत्री भावना ' द्वारा यह विस्तृत और निरंतर विस्तृत होती जाए तब धीमे— धीमे तुम विसर्जित होना शुरू हो जाते हो।

बहुत से क्षण ऐसे आएंगे, जब तुम वहां नहीं होंगे, पूरी तरह से मौन होगे, कोई भी अहंकार कहीं होगा ही नहीं, न उसका कोई केंद्र होगा, केवल शुद्ध शून्यता होगी। बुद्ध कहते हैं—'' जब स्थाई रूप से यह स्थिति प्राप्त हो जाती है और तुम्हारा इस शुद्ध शून्यता के साथ एकीकरण हो जाता है, तभी तुम बुद्धत्व को उपलब्ध हो जाते हो।''

जब अहंकार पूरी तरह खो जाता है, तुम बुद्धत्व को उपलब्ध हो जाते हैं। जब तुम इतने अधिक अहंकार शून्य हो जाते हो, कि तुम यह नहीं कह सकते—'' मैं हूं तुम यह भी नहीं कह सकते—मैं एक आत्मा हूं इस स्थिति के लिए बुद्ध एक शब्द का प्रयोग करते हैं ' अनन्ता ' हूं ही नहीं, अनस्तित्व, कोई आत्मा भी नहीं। तुम मैं शब्द का भी प्रयोग नहीं कर सकते। यह शब्द अधार्मिक या हिंसक बन जाता है। गहन प्रेम में भी मैं विसर्जित हो जाता है। तुम पूरी तरह मिट ही जाते हो।

जब बच्चे का जन्म होता है, वह बिना किसी ' मैं ' के आता है, वह केवल— होता है एक कोरे कागज की तरह, जिस पर कुछ भी नहीं लिखा हुआ है। अब समाज उस पर लिखना शुरू करेगा और समाज उसकी चेतना को संकुचित करते जाते, सिकोड़ने की शुरुआत कर देगा। फिर समाज धीमे— धीमे उसके लिए एक पात्र का अभिनय निश्चित कर देगा। उससे कहेगा—'' तुम्हें जीवन नाटक में इस पात्र का अभिनय करना है, और तुम बस यही हो— और तुम्हें उस अभिनय से जीवन भर चिपके रहना होगा। यह अभिनय तुम्हें कभी भी आनंदित होने

की अनुमति नहीं देगा, क्योंकि आनंदित होना केवल तभी सम्भव है, जब तुम अनन्त हो। जब तुम संकुचित या सिकुड़े होते हो, तो कभी भी आनंदित नहीं हो सकते।''

प्रसन्नता और आनंद का उत्सव संकीर्ण और संकुचित होकर नहीं मनाया जा सकता, आनंद को उत्सव के लिए अनंत स्थान चाहिए। जब तुम्हारे अंदर इतना अधिक खाली स्थान होता है कि अखण्ड अस्तित्व भी तुममें प्रविष्ट हो सके, केवल तभी तुम आनंदित हो सकते हो।

" मैत्री भावना " ध्यान बहुत अधिक सहायक बन सकता है तुम्हारे लिए।

तीसरा प्रश्न :

प्यारे सदगुरू! दूसरे दिन आपने कहा कि विश्वास अंधे व्यक्ति के हाथों में एक लालटेन की भांति होता है क्या मैं जान सकता हूं कि विश्वास या आस्था है क्या?

आस्था आंखों के समान होती है : तुम स्वयं अपने आप को देखते हो। विश्वास, अंधे व्यक्ति के हाथों में एक लालटेन की तरह है, वह देख नहीं सकता, वह जलती हुई लालटने का प्रयोग भी नहीं कर सकता। वह जलती हुई लालटेन उसके लिए ठीक एक बोझ की भांति होगी, जिसे उसे ढोना होगा और यदि लालटेन की रोशनी बुझ जाए तो उसे उसकी कभी खबर भी न होगी। विश्वास केवल यह

विश्वास करना है कि दूसरे लोग क्या कहते हैं कि उसके बारे में। यह आस्था या श्रद्धा है। श्रद्धा है—जानना, श्रद्धा होती है अस्तित्वगत, जब कि विश्वास होता है बुद्धिगत।

जो कुछ बुद्ध कहते हैं अथवा जो कुछ मैं कहता हूं तुम मुझे सुनते हो, वह तुम्हारी बुद्धि को ठीक लगता है। वह तुम्हारे तर्क को कायल कर देता है और तुम उस पर विश्वास करना शुरू कर देते हो। तब वह अंधे व्यक्ति के हाथों की एक लालटेन बन जाएगा। लेकिन यदि तुम मुझे सुनते हो, कुछ चीज तुम्हें ठीक लगती है और तुम अपनी बुद्धिगत समझ के साथ न ठहर कर उसे अपना अनुभव बना लेत हो

यदि मैं प्रेम की बात करता हूं और मुझे सुनते हुए तुम मेरे शब्दों में नहीं बंधते, बल्कि तुम प्रेम करने लगते हो, तुम प्रेम करने की जोखिम उठाते हो, तुम प्रेम के खतरे में उतर जाते हो। तब तुम उस समझ तक पहुंचोगे जो आंखों के समान होगी, वह तुम्हारी अंतर्दृष्टि बनेगी। यदि तुम केवल मुझे सुनते भर हो, तो यह बहुत सस्ता व्यापार है। केवल मुझे सुनकर यदि तुम सूचनाएं इकट्ठी करते हो, तुम कह सकते हो—हा! मैं प्रेम के बारे में बहुत कुछ जानता हूं तो तुम्हारा यह जानना एक धोखा बन जाएगा।

मैंने सुना है:

मुल्ला नसरुद्दीन और उसकी पत्नी अपनी छुट्टियां मनाने इजराइयल गए और तेल अबीब के एक नाइट बल्ब को देखने पहुंचे। स्टेज पर एक विदूषक अपना कार्यक्रम प्रस्तुत कर रहा था और उसके सभी संवाद हिबू भाषा में थे। उस विदूषक का अभिनय देखकर नसरुद्दीन की पत्नी तो बराबर खामोश बैठी रही लेकिन नसरुद्दीन प्रत्येक चुटकुले के समाप्त होने पर छत फाड़ ठहाके लगाता रहा।

जब विदूषक अपना अभिनय समाप्त कर चुका, मुल्ला की पत्नी ने उससे कहा—'' मुझे यह नहीं मालूम था कि तुम हिबू भाष भी समझते हो?"

" मैं हिबू नहीं समझता।'' नसरुद्दीन ने उत्तर दिया।'' फिर तुम उसके मजाकों और चुटकुलों पर इतने हंस क्यों रहे थे?" नसरुद्दीन ने उत्तर दिया— " ओह! मैंने उस पर विश्वास किया।''

तुम किसी भी चुटकुले पर उसे बिना समझे हुए भी हंस सकते हो, लेकिन यह किस तरह की हंसी होगी? यह तुममें स्वत' नहीं उठेगी, यह केवल एक बनावटी, चस्पा की गई हंसी होगी। यह केवल होंठों और मुंह की एक कसरत जैसी होगी। तुम्हारे अपने अस्तित्व में उसका कोई केंद्र न होगा। वह कहीं से भी नहीं आएगी,

क्योंकि तुम उस ' जोक ' को समझ ही नहीं रहे हो, तुम उस भाषा को ही नहीं समझ सकते, फिर तुम कैसे हंस सकते हो? मुल्ला कहता है—'' मैंने केवल उस पर विश्वास किया। वह जरूर कोई सुंदर हंसने जैसी बात कह रहा होगा। दूसरे भी तो हंस रहे हैं।''

बुद्ध जरूर ही कोई बात बहुत सुंदर कह रहे होंगे। बहुत लोग उनमें विश्वास करते हैं इसलिए तुम भी उन पर विश्वास करो। लेकिन तुम ' जोक ' समझे ही नहीं वह हंसी तुम्हारी नहीं है। वह तुम्हें थकायेगी, वह तुम्हें ताजगी नहीं देगी। जब तुम्हें हंसी घटती है, वह तुम्हारे अस्तित्व से चारों ओर फैलती है। वह तुम्हारे अस्तित्व के सबसे भीतरी केंद्र से सतह पर आती है। तुम्हारा पूरा शरीर उससे तरंगित हो उठता है, स्पन्दित होकर धड़कने लगता है। वह तुम्हें एक तरह से नहला देती है—'' तुम उसके बाद ताजगी से भर जाते हो। लेकिन यदि तुम केवल विश्वास करते हो, तो विश्वास करने से कोई सहायता तुम्हें मिलने नहीं जा रही। बहुत से लोग, कई सुंदर चीजों के बारे में केवल अपने विश्वासों द्वारा ही छले गए हैं।''

तुम सोचते हो कि तुम परमात्मा पर विश्वास करते हो, तुम सोचते हो कि तुम आत्मा पर विश्वास करते हो, तुम सोचते हो कि तुम इस और उस चीज में विश्वास करते हो और तुमने कोई भी चीज अपने अनुभव से नहीं जानी है। तब इससे अच्छा है कि तुम विश्वास ही न करो, क्योंकि यदि तुम विश्वास नहीं करते हो, यदि तुम जानते हो कि तुम नहीं जानते, तब इस बात की संभावना है कि तुम खोज सको और पा सको। तुम्हारा विश्वास ही तुम्हें खोजने की अनुमति नहीं देगा, क्योंकि तुम सोचते हो कि तुम उसे पहले ही से जानते हो।

विश्वास करना ही खतरनाक है। इससे अच्छा है कि कोई भी व्यक्ति नास्तिक हो अथवा उसे अस्तित्व या सत्य पर विश्वास ही न हो। सच्चे बने रहने के लिए तुम्हारा कुछ भी न जानना ही अच्छा है, क्योंकि तुम्हारे स्वीकार करने की यह ईमानदारी कि तुम नहीं जानते, तुम्हारी सहायता करेकी। यह ईमानदारी तुम्हें विकसित करेगी। एक न एक दिन तुम खोजना शुरू करोगे, क्योंकि कोई भी व्यक्ति अधिक लंबे समय तक गहरे अज्ञान में नहीं रह सकता। प्रत्येक व्यक्ति जानना ही चाहता है। जानने की ऐसी ऐसी स्वाभाविक प्रवृत्ति है मनुष्य में, कि यदि तुम प्रामाणिक हो तो उसे टाल नहीं सकते।

कृपया अपने विश्वासों को छोड़ दो जिससे तुम्हारा मन जो व्यर्थ के फर्नीचर और बेकार की चीजों से भरा हुआ है, तुम उसे देख और समझ सको कि तुम क्या जानते हो और क्या नहीं जानते हो।

ठीक से यह जाना कि कोई भी व्यक्ति क्या जानता है, और क्या नहीं जानता है ज्ञान की ओर उठाया गया बुनियादी कदम है। तुम्हें पूरी तरह स्पष्ट हो जाना है यह सब वह है, जिसे तुम जानते हो, और यह सब वह है जिसे तुम नहीं जानते हो। तुम इस स्थिति में बने नहीं रह सकते। तुम्हें अज्ञात की ओर बढ़ना शुरू करना ही होगा, क्योंकि खोजना और जानना मनुष्य का स्वभाव है।

प्रत्येक बच्चा अनंत जिज्ञासाओं और कौतूहल के साथ जन्म लेता है यही वजह है कि बच्चे अपने प्रश्नों से तुम्हें उबा कर तुम्हें मार ही देता है। वे पूछते ही चले जाते हैं। वे इस बात की भी फिक्र नहीं करते कि तुम उनके उत्तरों को देने या न देने में दिलचस्पी ले रहे हो या नहीं। वे बस पूछते ही चले जाते हैं। तुम उन्हें खामोश करना चाहते हो, लेकिन बार—बार उनमें नये—नये प्रश्नों के बुलबुले उठते ही रहते हैं। यह हो क्या रहा है? इतने अधिक प्रश्न आखिर कहां से आ रहे हैं? यह जानने की गहरी आकांक्षा है। लेकिन इस आकांक्षा को तुम्हारे विश्वास पंगु बना देते हैं।

जैसा कि तुम जानते हो, विश्वास तुम्हें एक आकृति देते हैं। वह ' यह मानो ' शब्द ही बहुत कीमती है।

मैंने सुना है:

स्टीम बोट के ड्राइवर ने जैसे ही नदी में चक्के को मोड़कर घुमाया, उसने पास खड़े घबराए हुए मुसाफिर को देखकर कहा—" किसी को भी फिक्र करने की कोई जरूरत नही है। मैं इस नदी में इतनी लम्बी अवधि से इस बोट को चला रहा हूं कि मैं नदी में छिपी हर चट्टान और उभरे हुए टीलों को भली भांति जानता हूं।" तभी बोट पानी में छिपे हुए किसी चट्टान से टकराई, और इतनी जोर का झटका लगा कि पूरी नाव बुरी तरह डोल उठी और उसके पीछे का भाग किसी सख्त चीज से टकराया।

ड्राइवर ने बड़ी शान से कहा—" मैं जिन अवरोधों का जिक्र कर रहा था, यह उनमें से एक है।"

यह किसी तरह की जानकारी है? यह किस तरह तुम्हारी सहायता करेगी? तुम्हारी तथाकथित सारी जानकारी जिसे तुम ज्ञान कहते हो, ठीक इसी तरह की है। इससे कोई भी सहायता नहीं मिलती। यह तुम्हें एक निश्चित अहंकार से भरा हुआ यह विचार देती है कि तुम जानते हो। लेकिन यह जीवन में सहायक नहीं है। इससे अपने मार्ग पर चलने में तुम्हें कोई सहायता नहीं मिलती, यह खंदकों और गड्ढों से दूर रखने में भी तुम्हारी कोई सहायता नहीं करती, यह तुम्हें सही दिशा की ओर आगे बढ़ने में भी मदद नहीं देती, और न यह किसी भी तरह से आपदाओं को रोकने में ही सहायक होती है। फिर भी तुम यह सोचे चले जाते हो कि तुम जानते हो। इस तथाकथित जानकारी से मुक्त हो जाओ। यह बोझा ढोना व्यर्थ है। इसे अब और अपनी खोपड़ी पर मत लादे रहो। एक बार तुमने इसे फेंक दिया तो तुम्हें एक ताजगी और नया हो जाने का अनुभव होगा।

मैंने सुना है:

एल्ड्रअस हक्सले के पास एक बहुत बड़ा पुस्तकालय था, वह उसके पूरे जीवन भर का प्रयास था। उसने बहुत ही दुर्लभ पुस्तकों का संग्रह किया था और एक दिन उसमें आग लग गई। पूरी लाइब्रेरी जल गई। उसमें उसकी बहुत सी मूल्यवान पाण्डुलिपियां भी जल गईं। बहुत सी मूल्यवान कलाकृतियां, मूर्तियां और पेटिंग्ज भी जल गईं। वह वास्तव में सुंदरतम वस्तुओं का एक महान खोजी था और वे सभी चीजें जलकर राख हो गईं। वह आग के सामने असहाय बना खड़ा हुआ था। और कुछ भी नहीं किया जा सकता था।

तभी किसी ने उससे पूछा—" आप जरूर ही बहुत बहुत उदासी का अनुभव कर रहे होंगे।"

उसने उत्तर दिया—" जो कुछ मुझे अनुभव हो रहा है, उससे मैं स्वयं आश्चर्यचकित हूं। मुझे स्वयं बहुत आश्चर्य हो रहा है। मुझे ऐसा महसूस हो रहा है जैसे बहुत सफाई हो गई, जैसे मानो पूरा बोझा हट गया। मुझे स्वयं आश्चर्य है क्योंकि मैं सोचता था कि मुझे बहुत अफसोस होगा, मुझे बहुत ही दुख और पीड़ा का अनुभव होगा, मैं वर्षों तक अपनी लाइब्रेरी और उन सभी चीजों को जिन्हें मैंने संग्रहीत किया था, कभी भी भूलने में समर्थ न हो सकूंगा लेकिन यह देखकर कि अचानक प्रत्येक चीज आग की लपटों में जल रही है, मैं अपने आपको बहुत हल्का, भाररहित और ताजा होने का अनुभव कर रहा हूं।"

जब तुम अपने विश्वासों को आग में फेंक दोगे, तुम्हें बहुत ताजगी का अनुभव होगा। यह केवल एक बोझा है। यह तुम्हारा नहीं है, यह तुम्हारी कुछ भी सहायता नहीं कर सकता।

हम जानते हैं कि क्या ठीक है, लेकिन जो गलत है,हम वही करते हैं। हम जानते हैं क्रोध करना बुरा है और हम बार—बार क्रोध किए चले जाते हैं। हम जानते हैं कि हमें क्या करना चाहिए। लेकिन हम उसे कभी करते नहीं—हम ठीक उसका उल्टा करते हैं। यह किस तरह का ज्ञान है? हम जानते हैं कि दरवाजा किधर है और हम हमेशा दीवार से होकर गुजरने की कोशिश करते हैं। हम आघात करते हैं टकराते हैं, अपने आप को नुकसान पहुंचाते हैं लेकिन फिर भी हर बार हम दीवार से ही गुजरने की कोशिश करते हैं। हम कहते हैं—हम जानते हैं कि दरवाजा किधर है, क्या यह सम्भव है कि तुम दरवाजे को जानते भी हो और फिर भी तुम दीवार

से निकलने की कोशिश में अपने को चोट पहुंचाते हुए अपना सिर फोड़ लेते हो। यह सम्भव ही नहीं है। तुमने बस दरवाजे के बारे में सुना भर है। उस दरवाजे का अस्तित्व केवल तुम्हारी कल्पना में है, यथार्थ में नहीं।''

तुम जो कुछ जानते हो, उसी के अनुसार तुम आचरण करते हो। इसी वजह से सुकरात की प्रसिद्ध घोषणा है—ज्ञान एक बड़ी अच्छाई और गुण है—लेकिन यह तुम्हारा ज्ञान नहीं है। वह कहता है एक बार कोई भी व्यक्ति यह जानता है कि कोई बात ठीक है तो वह उसे करता है। इसके अतिरिक्त कोई दूसरा रास्ता ही नहीं है। जब तुम जानते हो कि दो में दो जोड़ने से चार होते हैं, तुम उसे पांच नहीं बना सकते। क्या बना सकते हो? एक दिन कोशिश करके देखो—बस बैठ जाओ। लिखो—दो धन दो, और तब पांच लिखने की कोशिश करो। यह असम्भव होगा। यदि तुम पांच लिख भी दोगे, तो तुम हंसोगे, तुम मजाक कर रहे हो, तुम बेवकूफ बना रहे हो। एक बार तुम जान गए कि दो में दो जोड़ने से चार होते हैं, तो इसे भूलने का फिर कोई उपाय नहीं है। मूल बात यह है कि तुमने उसे स्वयं जाना है और ज्ञान को तुम्हारा अनुभव होना चाहिए अन्यथा तुम हमेशा तर्क वितर्क खोजते रहोगे।

मैंने एक छोटे से प्रसंग के बारे में सुना है। एक छोटे से शहर की गायन मंडली की एक लड़की की किसी बड़े थियेटर के स्टेज पर गाने की आकांक्षा थी। उसके माता पिता ने अंत में राजी होकर उसे न्यूयार्क शहर में जाकर कोशिश करने की अनुमति दो शर्तों पर दी ' पहली यह कि उसके कमरे में किसी पुरुष को प्रवेश करने की अनुमति नहीं होगी और दूसरी यह कि उसे कम से कम सप्ताह में एक बार घर फोन करना होगा। उसकी मां ने उससे कहा—'' याद रहे, मुझे तुम्हारे बारे में बहुत फिक्र रहेगी, इसलिए महेरबानी करके घर फोन करने की बात भूलना मत।'' परिचय पत्र के साथ लैस होकर वह एक एजेण्ट से मिलने गई। वह उसकी सहायता करने को तैयार हो गया और वह उसे शहर के प्रसिद्ध स्थानों और व्यक्तियों के बारे में बताने लगा। सप्ताह के अंत में उसने घर फोन मिलाया। देर होते जाने से उसकी मां बहुत परेशान थी।

" हनी!" उसकी मां बोली—''तुम जानती हो, तुमसे यह बात तै हुई थी कि तुम्हारे रहने वाले एपार्टमेंट में किसी भी पुरुष को प्रवेश करने की अनुमति नहीं होगी और और मैं पृष्ठभूमि में किसी पुरुष की आवाज सुन रही हूं।''

भावी अभिनेत्री ने उत्तर दिया—'' ओह मम्मी! यह आवाज मेरे बॉय फ्रेंड की है। लेकिन आप फिक्र न करें।'' उसने अपनी मां को शीघ्रता से आश्वस्त करते हुए कहा—'' हम लोग उसके एपार्टमेंट में हैं। फिक्र तो उसकी मम्मी को होना चाहिए।''

हम हमेशा रास्ते खोज सकते हैं, जिसे हम टालना चाहते हैं, उससे बचने के लिए और जो हम करना चाहते हैं, उसके करने के लिए तर्क वितर्क खोज सकते हैं। और यदि तुम्हारा ज्ञान केवल बुद्धिगत है, केवल वह शाब्दिक है, तब वास्तविक जीवन में उससे कोई सहायता नहीं मिल सकती तुम्हें। वास्तविक जीवन में वास्तविक ज्ञान की जरूरत होती है। यदि तुम कोई पुस्तक लिखना चाहते हो, फिर तो वह ठीक होगा। यदि तुम कोई भाषण देना चाहते हो, तो भी ठीक है। यदि तुम अपने मित्रों के साथ चर्चा—परिचर्चा करना चाहते हो, तो वह ठीक होगा, क्योंकि शाब्दिक जानकारी एक पुस्तक लिखने के लिए पर्याप्त है। वह एक भाषण देने और मित्रों से चर्चा करने के लिए भी काफी है। लेकिन यदि तुम उसे अपने जीवन में उतारना चाहते हो तो वह असम्भव होगा। जीवन उस पर विश्वास नहीं करता, जो कुछ तुमने बहुत सस्ते तरीके से बटोर कर इकट्ठा किया है। जीवन केवल उसमें विश्वास करता है जो तुमने कठिनता से अनुभव द्वारा अर्जित किया है।

मैंने एक सूफी रहस्यदर्शी बायजीद के बारे में सुना है। उसने वर्षों तक ध्यान किया और यह कहा जाता है कि परमात्मा उसके प्रति अत्यंत करुणावान था। उसने इतना अधिक विराट प्रयास किया—उसकी खोज बहुत

कठिन और श्रमपूर्ण थी और उसकी प्रार्थना में प्रबल शक्ति थी, इसलिए परमात्मा ने उसके पास अपना देवदूत भेजा। देवदूत ने आकर बायजीद से कहा—'' परमात्मा तुमसे बहुत प्रसन्न है और तुम कुछ भी मांगना चाहो, वह तुम्हें सभी कुछ देने को तैयार है। तुम केवल मांगो। तुम्हारी खोज और साधना अब पूरी हो गई।''

लेकिन बायजीद ने कहा—'' नहीं यह कोई भी ठीक तरीका नहीं है। मैं इसे इतने सस्ते में नहीं लेना चाहता, क्योंकि मैं भली भांति जानता हूं .इस सस्ती सम्भावना के कारण मैं अपने जीवन में बहुत धोखे खा चुका हूं। अब तुम मुझे धोखा नहीं दे सकते। परमात्मा से जाकर कहो कि मैं कठिन तरीके से उसे श्रमपूर्वक अर्जित करूंगा।''

लेकिन देवदूत ने कहा—'' तुम बेवकूफ हो। वह तुम्हारे अस्तित्व के अंदर गहराई में तुम्हारी अंतर्ज्योति जगाने के लिए तैयार है। तुम मांगो तो।''

लेकिन बायजीद ने कहा—'' बहुत बहुत धन्यवाद, और उसे भी मेरा धन्यवाद दीजिएगा, लेकिन मैं उससे कुछ भी मांगने नहीं जा रहा क्योंकि वह उधार लिया हुआ होगा, भले ही वह परमात्मा से ही क्यों न लिया गया हो। मुझे स्वयं उसे खोज कर पाने दो।''

देवदूत ने कहा—'' परमात्मा इससे नाराज होगा। ऐसा आज तक नहीं हुआ। उसकी भेंट तुम्हें स्वीकार करनी ही होगी।''

तब बायजीद ने अपने चारों ओर देखा—'' उसके पास एक छोटा सा दीया था और उसका तेल लगभग समाप्त हो रहा था। उसने कहा—'' यदि वह वास्तव में रोशनी जैसी ही कोई चीज देना चाहता है, तो उससे कहो कि मेरा यह दीया जलता ही रहे, कयोंकि इसका तेल लगभग समाप्त होने को है और रात बहुत अंधेरी है और मुझे अभी भी ध्यान करना है। बस इतना करना ही काफी होगा। तुम सिर्फ उनसे जाकर यही कहना कि वे मुझे एक ही आशीर्वाद दें कि मेरा दीये का तेल कभी समाप्त न हो, जिससे मैं पूरी रात ध्यान कर सकूं।''

उसने बस इतना ही मांगा और यह कहा जाता है कि परमात्मा बहुत प्रसन्न हुआ और उसने कहा—'' ठीक तरीका यही है।'' यदि उसने मांगा होता तो वह चूक गया होता यदि उसने वह भेंट स्वीकार कर ली होती, तो वह चूक गया होता— क्योंकि जो कुछ भी बिना अर्जित किए तुम्हारे पास आता है, वह तुम्हारा नहीं है। तुम्हारी अधिकृत सम्पदा वही है जिसे तुमने जीया और जाना है, जिसे तुमने श्रम से अर्जित किया है।

एक युवा लडका तैरना सीख रहा था। एक दिन दोपहर तेजी से घर में प्रवेश करते ही उसने बिना सांस लिए घोषणा की कि वह अब स्वयं ही ड्राइविंग बोर्ड से छलांग लगाने जा रहा है।

" यह बहुत अच्छी बात है जोनी।'' उसके पिता ने कहा—'' लेकिन मेरा खयाल है कि तुम मुझे पिछले सप्ताह बोर्ड से छलांग लगाने के बाबत बता रहे थे।''' मैं जानता हूं।'' लड़के ने कहा— " लेकिन पिछले सप्ताह किसी और ने मुझे बोर्ड से धक्का दिया था।''

स्वयं अपने आप ही छलांग लगाना वास्तव में पूरी तरह भिन्न बात है। जब कोई दूसरा तुम्हें पानी में धक्का देता है तो वह गुणात्मक रूप से भिन्न होता है, जब मैं तुम्हें कोई भी चीज देता हूं तो वह वैसी ही नहीं होती, जैसी कि तुम उसे स्वयं अर्जित करते हो। इसे स्मरण रखें। रास्ते में बहुत से प्रलोभन होंगे। जब चीजें बहुत सस्ते में आसानी से उपलब्ध हों तो उनसे दूर रहना। हमेशा स्मरण रहे कि प्रत्येक व्यक्ति को कठिन राह स्वयं ही चलनी है, क्योंकि केवल वही एक मार्ग है।

सभी पगडंडियां या छोटे रास्ते नकली और झूठे हैं और विश्वास करना, छोटी पगडंडी के रास्ते को पकड़ने जैसा है। आस्था और श्रद्धा ही वह कठिन माग है।

अंतिम प्रश्न :

सर्वाधिक प्रिय सदगुरू। इस सुबह मैं ज्यों ही आपके सामने बैठा मैं परमानंद और प्रकाश की बाढ़ में जैसे गहरे अभिभूत हो उठा! मुझे पता ही न चला कि आप वहां बैठे हैं। मेरा अन्त आकाश फैलता चला गया क्योंकि आप वहां थे।

अच्छा है, यह बहुत ही शुभ है। इसे ऐसा होना ही चाहिए। पारस के अंदर एक बाउल का जन्म हुआ है, और मैं आशा करता हूं कि तुममें से प्रत्येक के अंदर एक बाउल का जन्म होगा। परमात्मा प्रत्येक क्षण उपलब्ध है। केवल उसे अनुमति दो, उसे रोको मत, उसके रास्ते में अवरोध मत बनो। केवल अपने रास्ते पर बाहर निकल कर आओ और प्रत्येक व्यक्ति को यह घटना शुरू हो जाएगा।

इस सुबह मैं ज्यों ही आपके सामने बैठा, मैं परमानंद और प्रकाश की बाढ में जैसे डूब गया, और जैसे अनंत आकाश में उड़ने के लिए पंख मिल गए। मैं अभिभूत हो उठा। मुझे पता ही न चला कि आप वहां बैठे हैं। मेरा अन्त आकाश विस्तीर्ण होता चला गया, केवल आपके ही कारण।''

आज बस इतना ही।

नौवां प्रवचन

दो वृक्षों के जोड़े से उत्पन्न हुआ फल

दिनांक 29 जून; सन् 1976 श्री ओशो आश्रम पूना।

बाउलगीत:

जो व्यक्ति प्रेम के अनुभव से अनजाना है

उसके साथ सम्बंध जोड़कर तुम कैसे किसी निष्कर्ष परपहुंच सकते हो?

उल्लू सूर्य की किरणों से अंधा बना

बैठा हुआ आकाश को एकटक देखता रहता है।

मनुष्य एक अनवरत खोज है, एक शाश्वत तलाश है, और निरंतर बना रहने वाला एक प्रश्न है। यह खोज है उस ऊर्जा के लिए जो पूरे अस्तित्व को संभाले हुए है चाहे तुम उसे परमात्मा कहो, सत्य कहो, अथवा चाहे जिस नाम से पुकारो। कौन एक साथ इस अनंत अस्तित्व को धारण किए हुए है? इस सभी का केंद्र और इसका सबसे महत्त्वपूर्ण भाग कौन है?

विज्ञान, दर्शनशास्त्र और धर्म सभी एक ही प्रश्न पूछ रहे हैं। उनके दिए गए उत्तर भिन्न—भिन्न हो सकते हैं, लेकिन उन सभी के प्रश्न ठीक वही हैं। धर्म, उसे परमात्मा कहते हैं। वैज्ञानिक इस शब्द परमात्मा से सहमत नहीं है। यह नाम बहुत व्यक्तिगत दिखाई देता है। मनुष्य के रूप में यह परमात्मा के ही आरोप जैसा मनुष्य द्वारा ईजाद किया गया नाम जैसा लगता है। वे लोग इसे ' विद्युत ' अथवा ' चुम्बकीय ऊर्जा क्षेत्र ' कहते हैं, लेकिन केवल नाम ही अलग है। परमात्मा उनके लिए एक ' ऊर्जा ' क्षेत्र है।

दार्शनिक इसे विभिन्न नाम दिए चले जाते हैं, चट्टानों की पर्तों का बुनियादी स्वरूप, पूर्ण अथवा ब्रह्म। थेल्स से लेकर बर्टेन्ड रसेल तक, उन लोगों ने इस प्रश्न के अनेक उत्तर दिए हैं। कभी कुछ दार्शनिक कहते हैं—" वह जल है और उसमें तरलता और प्रवाह है, कभी कोई कहता है वह अग्नि है। लेकिन उनकी खोज शाश्वत बनी हुई है। ऐसा क्या है जो इस अनंत ब्रह्माण्ड को एक साथ धारण किए हुए है?"

बाउल इसे प्रेम पुकारते हैं और मेरे लिए भी उनका यह उत्तर सबसे अधिक संगत प्रतीत होता है। यह न तो व्यक्तिगत है और न अवैयक्तिक है। इसमें कुछ तत्व परमात्मा जैसा है और कुछ ऐसा है, जो चुम्बकीय है, जो दिव्य है और उसमें कुछ ऐसा है जिसमें पृथ्वी की सुवास है।

प्रेम के दो चेहरे होते हैं। यह इटली के प्राचीन देवता जानुस जैसा है। (जिसके आने जाने के दो द्वारों के प्रतीक स्वरूप आगे पीछे दो चेहरे होते थे।) एक चेहरा पृथ्वी की ओर नीचे देखता है और दूसरा चेहरा ऊपर आकाश की ओर। यह। एक ऐसा महान संश्लेषण है, जिसकी अभी तक धारणा की गई है। यह वासना से

जन्मता प्रार्थना की ओर जाता है। यह कीचड़ से उत्पन्न होता है और सूर्य की ओर देखते हुए एक कमल का पुष्प बन जाता है।

यह शब्द ' प्रेम ' समझने जैसा है। इस प्रेम शब्द से हम क्या अर्थ लेते हैं? एक चीज का तो निश्चित रूप से हम यह अर्थ लेते हैं कि उसमें अपनी ओर खींचने की एक महान शक्ति है। जब तुम किसी के प्रेम में पडते हो तो ऐसा नहीं है कि तुम कुछ करते हो। तुम खींच लिए जाते हो। उसमें एक चुम्बकीय शक्ति होती है। तुम अपने प्रेमपात्र की ओर आकर्षित होते हो, जैसे तुम असहाय होकर प्रेम पात्र की चुम्बकीय शक्ति से अपनी इच्छा के

विरुद्ध भी उसकी ओर खींच लिए जाते हो। उसमें एक खिंचाव और आकर्षण होता है, एक चुम्बकीय क्षेत्र होता है। यही कारण है कि हम उसे ' प्रेम में गिरना ' या ' प्रेम के लिए मर जाना ' कहते हैं। गिरना और मरना कौन चाहता है? लेकिन कौन प्रेमी उससे अपने को बचा सकता है? जब वह ऊर्जा तुम्हें पुकारती है तब तुम वही पुराने व्यक्ति नहीं रह जाते। कुछ चीज जो तुमसे बड़ी महान और दिव्य है वह तुम्हें अपनी ओर आमंत्रित कर रही है, जादू से अपनी ओर खींच रही है। यह चुनौती ऐसी है कि कोई भी व्यक्ति उसकी ओर सिर के बल दौड़ पड़ता है।

इसलिए पहली चीज जो समझने जैसी है वह यह है कि प्रेम में आकर्षण और अपनी ओर खींचने की एक महान शक्ति होती है। तुम अचानक ही वही सामान्य व्यक्ति नहीं रह जाते। चमत्कारिक रूप से तुम्हारी चेतना में कुछ चीज बदल जाती है। प्रेम तुम्हें रूपांतरित कर देता है। प्रेम में गिरकर एक हिंसक मनुष्य भी कोमल और दयावान बन जाता है। एक हत्यारा भी इतना अधिक करुणापूर्ण बन जाता है कि लगभग इस पर विश्वास करना ही असम्भव लगता है। प्रेम एक चमत्कार है—वह तुच्छ धातु को स्वर्ण में बदल देता है।

जब लोग प्रेम में पड़ जाते हैं, तब क्या तुमने उनके चेहरे और आंखों का निरीक्षण किया है? तुम विश्वास ही नहीं कर सकते कि ये लोग वही व्यक्ति हैं। जब प्रेम उनकी आत्माओं को अपने अधिकार में ले लेता है, उनकी आकृति बदल जाती है, जैसे वे किसी अन्य आयाम में चले जाते हैं और वह भी अचानक..... और वह भी स्वयं उनके बिना कोई प्रयास के। जैसे मानो वे परमात्मा के जाल में पकड़ लिए गए हो। प्रेम उन्हें निम्न तल से उच्च तल की ओर ले जाता है, वह पृथ्वी को आकाश में रूपांतरित कर देता है, वह मनुष्य को दिव्यता में बदल देता है।

ये दो चीजें है, पहली है—प्रेम एक ऊर्जा क्षेत्र है..... .वैज्ञानिक भी इससे सहमत है। दूसरी चीज हैं—प्रेम में एक रूपांतरित कर देने वाली शक्ति है। वह तुम्ह भारहीन होने में सहायता करती है, वह तुम्हें पंख देती है। तुम अनंत की ओर सभी के पार जा सकते हो। धार्मिक विचारक इससे सहमत होंगे कि प्रेम परमात्मा और विद्युत दोनों ही हैं। प्रेम एक दिव्य ऊर्जा है। बाउलों ने प्रेम को चुना है, क्योंकि यह मनुष्य के जीवन में होने वाला सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण अनुभव है। तुम भले ही धार्मिक हो अथवा नहीं, इससे कोई अंतर नहीं पड़ता। प्रेम मनुष्य के जीवन का केंद्रीय अनुभव बना ही रहता है। यह सबसे अधिक सामान्य और सबसे अधिक असामान्य है। यह कम या अधिक प्रत्येक व्यक्ति को घटता है और जब यह घटता है, यह आकृति और प्रकृति दोनों बदल देता है। यह सामान्य होकर भी असामान्य है। यह तुम्हारे और सर्वोच्च सत्ता के मध्य एक सेतु है।"

हमेशा तीन ' प ' का स्मरण रखो—प्रेम, प्रकाश और परिपूर्ण जीवन। परिपूर्ण जीवन तुम्हें अस्तित्व ने दिया है, तुम उसे जी रहे हो। प्रकाश तुम्हारे सामने मौजूद है लेकिन तुम्हें प्रकाश और अपने पूरे जीवन के मध्य एक सेतु बनाना है। यह सेतु ही प्रेम है। इन तीनों प को लेकर तुम पूरे जीवन का मार्ग बना सकते हो, अपने होने और अस्तित्व को एक नई दिशा दे सकते हो।

बाउल दार्शनिक नहीं है। वे लोग कवि अधिक हैं—वे गाते और नाचते हैं। वे सोच विचार नहीं करते। वास्तव में वे लगभग दार्शनिकता के विरोधी जैसे हैं, कयोंकि उनकी यह भली भांति समझ में आ गया है कि जब भी मनुष्य बुद्धि प्रधान अधिक हो जाता है वह प्रेम करने में असमर्थ हो जाता है और प्रेम ही सेतु बनने जा रहा है। एक मनुष्य जो बहुत अधिक बुद्धि प्रधान हो जाता है, हृदय से दूर चला जाता है और हृदय ही वह केंद्र है, जो प्रेम की पुकार का उत्तर देता है।

बुद्धिप्रधान व्यक्ति संसार से कटकर जैसे उससे दूर हो जाता है। वह रहता संसार में ही है, लेकिन वह ऐसे रहता है जैसे मानो किसी गहरी गफलत में हो। वह रहता संसार में ही है, लेकिन वह उस वृक्ष की भांति रहता

है, जिसने अपनी जड़ें खो दी हों। वह सिर्फ नाम भर को रहता है, कुछ यों रहता है जैसे उसमें जीवन का रस अब और प्रवाहित ही न हो रहा हो। जैसे सभी से सम्पर्क तोड़कर वह सभी ले टूट गया हो। जैसे उस पर से उसका स्वामित्व कहीं और हस्तांतरित हो गया हो।

आज का मनुष्य ऐसा अनुभव करता है, जैसे स्वयं पर से उसका स्वामित्व कहीं और हस्तांतरित हो गया है, वह यहां अपने आपको बाहरी व्यक्ति जैसा अकेला अनुभव करता है, उसे ऐसा नहीं लगता कि वह अपने घर में है, जीवन, अस्तित्व और इस संसार के साथ आराम से है। उसे ऐसा अनुभव होता है जैसे उसे इस संसार में फेंक दिया गया है और वह एक आशीर्वाद या वरदान की अपेक्षा एक अभिशाप कहीं अधिक है।

ऐसा आखिर हुआ क्यों है? बहुत अधिक बुद्धिप्रधान होने के कारण, मस्तिष्क को बहुत अधिक प्रशिक्षण दिए जाने से उसकी वे जडें ही कट गई हैं जो हृदय को उससे जोड़े हुए थीं। यहां बहुत से लोग हैं और मैंने यह निरीक्षण किया है कि हजारों लोग ऐसे हैं जो यह जानते भी नहीं कि हृदय है क्या? वे उसे छोड़ ही चुके हैं। हृदय उनका धड़कता जरूर है, लेकिन उसकी ऊर्जा उसके द्वारा प्रवाहित नहीं हो रही। वे उसे छोड़ कर आगे बढ़ गए है, वे सीधे खोपड़ी में चले गए हैं। जब वे प्रेम भी करते हैं, तो वे ' सोचते ' हैं कि वे प्रेम कर रहे हैं। जब वे कुछ अनुभव करते हैं तो ' वे सोचते हैं ' कि वे अनुभव कर रहे हैं। अनुभव करना अथवा भावपूर्ण होना भी सोचने के द्वारा ही होता है। वास्तव में यह नकली होना ही है।

सोचना—विचारना सबसे बड़ा धोखा और झूठ है, क्योंकि सोचना, मनुष्य का संसार को समझने का प्रयास है और प्रेम है परमात्मा का मनुष्य को समझने का प्रयास। मुझे इसे फिर दोहराने दो — जब तुम परमात्मा अथवा अस्तित्व अथवा सत्य को समझने का प्रयास करते हो, वह तुम्हारी अखण्ड और उस अनंत पूर्ण के एक भाग, एक बहुत छोटे से भाग को पकड़ने की कोशिश हैं। इस कोशिश को बरबाद होना ही है, वह असम्भव है। ऐसा होना वस्तुओं का स्वभाव नहीं है।

प्रेम तब जन्मा, जब परमात्मा ने तुम्हें पाया। प्रेम तब उपजा, जब परमात्मा के हाथ तुम्हें खोजने को टटोलते हुए आगे बड़े। प्रेम तब होता है, जब तुम अपने खोजने की परमात्मा को अनुमति देते हो। इसलिए तुम प्रेम की व्यवस्था नहीं कर सकते। तुम तर्क वितर्क करने की व्यवस्था कर सकते हो जहां तक तर्क वितर्क का सम्बंध है, तुम इसमें बहुत बहुत कुशल हो सकते हो। जिस क्षण प्रेम उमगता है, तुम पूरी तरह से अक्षम और नकारा बन जाते हो। तब तुम यह नहीं जानते कि तुम हो कहां, तब तुम यह नहीं जानते कि तुम क्या कर रहे हो, तब तुम यह नहीं जानते कि तुम कहां जा रहे हो, तब तुम किसी नियंत्रण को जानते ही नहीं। तर्क वितर्क को नियंत्रित किया जा सकता है, लेकिन प्रेम अनियंत्रित है। तर्क—वितर्क कुशलता से की जाने वाली व्यवस्था है, जब कि प्रेम होना एक घटना है। तर्क तुम्हें यह अनुभव कराता है कि तुम भी कुछ हो और प्रेम तुम्हें इस बात का अहसास देता है कि तुम कुछ भी हो नहीं हो।

तुममें प्रेम तभी उमगता है, जब तुम अपने अंदर परमात्मा को प्रवेश करने की अनुमति देते हो। जब तुम अपने से कोशिश कर रहे हो तो पूरा प्रयास ही व्यर्थ है।

मैंने सुना है:

अपनी लड़की के यहां एक सांध्यकालीन उत्सव में मुल्ला नसरुद्दीन को धकेलते हुए मुख्य अतिथि तक ले जाया गया। उसने सुना कोई उसे डॉक्टर कहकर सम्बोधित कर रहा है। अब उसने आत्मविश्वास के साथ कहा—'' डॉक्टर! क्या मैं आपसे एक प्रश्न पूछ सकता हूं?"

उसने कहा—'' निश्चय ही। आप अवश्य पूछिए।'' मुल्ला नसरुद्दीन ने कहा—'' कुछ देर से मेरे दिल के नीचे एक अजीब तरह का दर्द हो रहा है.....।'' मेहमान ने असहज होने का अनुभव करते हुए उसे टोका—''

मुझे बहुत बहुत अफसोस है मुल्ला! लेकिन सत्यता यह है कि मैं डॉक्टर ऑफ फिलासफी हूं।'' नसरुद्दीन ने कहा—'' ओह! मुझे बहुत अफसोस है।'' यह कहते हुए वह जाने के लिए मुड़ा, लेकिन फिर घूमकर अपनी उत्सुकता शांत करने के लिए उसने कहा—'' डॉक्टर! एक प्रश्न और, कृपया मुझे यह बतलाइये कि यह फिलासफी किस तरह की बीमारी होती है।''

हां। फिलासफी या दर्शनशास्त्र एक तरह की बीमारी ही है और वह किसी तरह की सामान्य बीमारी ही नहीं, वह कैंसर से भी कहीं अधिक अन्य शेष सभी बीमारियों को मिलाकर उनसे भी कहीं अधिक खतरनाक है। एक रोग केवल एक जड़ को काट सकता है। सभी बीमारियां मिलकर भी तुम्हें एक साथ अस्तित्व से पूरी तरह नहीं काट सकती। दर्शनशास्त्र तुम्हें बस पूरी तरह काट देता है, तुम पूरी तरह जड़ूमूल से उखड़ जाते हो।

यह रोग है क्या? जब अस्तित्व के साथ तुम्हारे सम्बंध का एक तार ढीला हो जाता है, तुम बीमार पड़ जाते हो। जब सिर से सम्बंध शिथिल होता है। तब वहां सिर दर्द होता है। जब से सम्बंध टूट जाता है तो पेट दर्द होता है। कहीं न कहीं तुम स्वतंत्र हो जाते हो, तुम एक दूसरे पर आश्रित रहने वाले अस्तित्व सागर में जब और नहीं रह पाते, तभी बीमारी प्रकट होती है। रोग की अपनी एक अलग स्वतंत्रता है। जब तुम्हारे अंदर कैंसर की कोशिकाएं विकसित होती हैं। वह विकास अपने आप में एक नया संसार हैं। उसका इस अस्तित्व के साथ कोई सम्बंध नहीं होता। एक रुग्ण मनुष्य वह है, जिसके कई तरह से अस्तित्व से सम्बंध नहीं रह गए। जब कोई रोग जटिल, पुराना और असाध्य हो जाता है, उसका साधारण सा अर्थ यही है कि उसकी जड़ें पूरी तरह नष्ट हो चुकी हैं। यहां तक कि पृथ्वी में उसे फिर रोपने की भी संभावना नहीं रह गई है। तुम्हें केवल आशिक रूप से जीवित रहना होगा, क्योंकि तुम्हारा एक भाग मृत ही रहेगा। किसी को लकवा मार जाता है, इसका क्या अर्थ है? शरीर ने अस्तित्व की ऊर्जा के साथ अपना सम्बन्ध तोड़ दिया है। अब वह लगभग एक मृत चीज है असम्बंधित। केवल लटका हुआ। अब उसमें जीवन रस प्रवाहित नहीं हो रहा है।

यही है वह, जिसे रुग्णता कहते हैं, तब दर्शनशास्त्र वास्तव में वह सबसे बड़ी बीमारी है जो यहां हो सकता है— क्योंकि यह तुम्हें अस्तित्व से पूरी तरह काट देती है और इतना ही नहीं यह तुम्हारा ऐसे तर्क से भी सम्बंध विच्छेद कर देती है जो तुम्हें कभी भी इस बात से सजग नही होने देता कि तुम रुग्ण हो। यह तुम्हारा सम्बंध ऐसे औचित्य और तार्किक समझ के साथ जोड़ देती है कि तुम कभी सजग नहीं हो पाते और तुम चूके चले जाते हो। यह स्वयं को न्यायसंगत ठहराने की बहुत बड़ी बीमारी है, जो अपना समर्थन किए चले जाती है। दर्शनशास्त्र का अर्थ कि मनुष्य पूरी तरह से बुद्धि के अधिकार में हो गया। वह अस्तित्व को प्रेम की दृष्टि के द्वारा न देखकर, तर्क की ही दृष्टि से देखता है।

जब तुम तर्क की दृष्टि के द्वारा देखते हो, तो तुम बहुत थोड़ी सी चीजें ही जानोगे, लेकिन वे थोड़ी सी चीजें तुम्हें सत्य और वास्तविकता की पूरी दृष्टि नहीं देंगी। वह केवल थोड़ा सा संक्षिप्त विवरण होगा।

जब तुम प्रेम के द्वारा देखते हो, तब तुम सत्य और वास्तविकता जैसी है, उसे यथार्थ रूप में जानते हो। प्रेम अस्तित्व के साथ मिलकर, एक साथ सहभागिता में बरस रहा है। वह सर्वोच्च आनंद का एक प्रपात जैसा है और तुम उसमें बहे जा रहे हो और अस्तित्व सदा से ही प्रवाहित हो रहा है और दोनों एक दूसरे, से मिलकर, एक दूसरे में समाहित होकर, जैसे दो सरिताओं का एक संगम बन गए हो। इस मिलन से एक महान संश्लेषण उत्पन्न हो रहा है। खण्ड, अखण्ड में मिल रहा है और अखण्ड खण्ड में समाहित हो रहा है। तब कोई ऐसी चीज उत्पन्न होती है जो खण्ड से कहीं अधिक होती है और जिसमें साथ ही अखण्ड भी होता है। यही है वह प्रेम। मनुष्य की सभी भाषाओं में प्रेम सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण शब्द है क्योंकि प्रेम की भाषा, अस्तित्वगत भाषा है।

लेकिन किसी न किसी प्रकार हम बचपन से ही अपंग बना दिए जाते हैं। हमारी जड़ें हृदय से काट दी जाती हैं। हमको बुद्धि की ओर बलपूर्वक धकेल दिया जाता है और हृदय तथा भाव की ओर जाने की अनुमति नहीं मिलती। यही वह चीज है जिससे मनुष्यता एक लम्बी अवधि से पीड़ित है, यही वह गहरा संकट है, जिसके कारण मनुष्य अभी भी प्रेम के साथ रहने में समर्थ नहीं हो पा रहा है।

इसके कुछ कारण हैं। प्रेम में बहुत बड़ी जोखिम है। प्रेम तुम्हें खतरों में ले जाता है क्योंकि तुम उसे नियंत्रित नहीं कर सकते, उसमें कोई सुरक्षा नहीं होती।

तुम्हारे हाथों में फिर कुछ भी नहीं रह जाता। तुम बेबस हो जाते हो। उसके बारे में पहले से कुछ भी नहीं कहा जा सकता, वह तुम्हें कहां किस ओर ले जाएगा, कोई भी नहीं जानता।

प्रत्येक स्थिति में वह कहीं ले ही जाएगा, यह भी कोई नहीं जानता। कोई भी व्यक्ति निपट अंधेरे में ही आगे बढ़ रहा होता है, लेकिन जड़ें अंधेरे में ही विकसित होती हैं। यदि एक वृक्ष की जड़ें ही अंधेरे से डरकर, पृथ्वी के अंदर न जाएं तो वृक्ष मर जाएगा। उन्हें अंधेरे में आगे बढ़ना ही होता है। उन्हें पृथ्वी की गहनतम और गहरी पर्तों की ओर बढ़ना होता है। जहां वे पोषित होने के लिए जल का स्रोत खोज सकें।

हृदय भी तुम्हारे अस्तित्व का सबसे अधिक अंधेरा भाग है, वह एक अंधेरी रात की भांति है। वह तुम्हारा गर्भ है। वही तुम्हारी पृथ्वी है। इसीलिए लोग अंधेरे में जाने से डरते हैं और वे प्रकाश में ही रहना चाहते हैं। कम से कम तुम यह देख तो सकते हो कि तुम हो कहां और क्या होने जा रहा है। तुम सुरक्षित और सही सलामत हो। जब तुम प्रेम में आगे बढ़ते हो, तुम होने वाली संभावनाओं का अनुमान नहीं लगा सकते तुम परिणामों का भी अनुमान नहीं लगा सकते। तुम परिणामों की ओर उन्मूख होकर किसी विशिष्ट दिशा में आगे नहीं बढ़ सकते। प्रेम के लिए भविष्य का कोई अस्तित्व है ही नहीं, केवल वर्तमान ही सामने रहता है। तुम इस क्षण में हो सकते हो, लेकिन तुम आने वाले अगले क्षण के बारे में कुछ भी सोच ही नहीं सकते। प्रेम में कोई योजना बनाना संभव ही नहीं है।

समाज, सभ्यता, संस्कृति और संगठित धर्म— यह सभी एक छोटे से बच्चे को, जो वे ठीक समझते हैं, उस पर विश्वास कर उसे करने को विवश करते हैं। वे सभी शक्तियों को उसकी बुद्धि में केंद्रित करने का प्रयास करते हैं। और एक बार सारी ऊर्जाएं और शक्तियां बुद्धि में केंद्रित हो जाये, फिर हृदय की ओर प्रवाहित होना बहुत कठिन हो जाता है। वास्तव में प्रत्येक बच्चा प्रेम की महान ऊर्जा के साथ ही जन्म लेता है, क्योंकि प्रेम की ऊर्जा से ही वह जन्मता है। बच्चा प्रेम और विश्वास से भरा हुआ होता है। क्या तुमने एक छोटे से बच्चे की आंखों में झांक कर देखा है? कितने विश्वास से भरी हुई है वे? बच्चा किसी भी बात पर विश्वास कर सकता है। बच्चा सांप के साथ भी खेल सकता है, बच्चा किसी भी व्यक्ति के साथ कहीं भी जा सकता है। बच्चा आग के भी इतने अधिक निकट जा सकता है कि वह उसके लिए खतरनाक भी हो सकता है क्योंकि बच्चे ने अभी तक संदेह करना नहीं सीखा है। इसलिए हम उसे संदेह करना सिखलाते हैं। हम उसे सत्य और प्रत्येक बात पर सन्देह और तर्क करना सिखलाते हैं। यह विषम परिस्थितियों में जीवित रहने की ओर उठाये गए कदम दिखाई देते हैं। हम उसे भयभीत होना, सावधानी बर्तना और समझदार बनना सिखलाते हैं और यह सभी चीजें मिलकर उसके प्रेम की संभावना की हत्या कर देती है।

मैंने सुना है :

डी. अब्राहम को मुल्ला नसरुद्दीन की दुकान पर उसे देखने बुलाया गया, जहां मुल्ला बेहोश पड़ा हुआ था। डॉक्टर अब्राहम ने एक लम्बे समय तक उसका इलाज और देखभाल की और उसे होश में ले आया।

होश में आने पर उसने मुल्ला से पूछा— " आखिर तुमने उस चीज को पिया ही क्यों? क्या तुमने उसकी शीशी पर लगे लेबिल पर यह पढ़ा नहीं कि वह विष है।''

नसरुद्दीन ने उत्तर दिया—'' जी हां डॉक्टर साहब! मैंने उसे पढ़ा तो, लेकिन उस पर विश्वास नहीं किया।''

डॉक्टर अब्राहम ने पूछा—'' आखिर क्यों?"

नसरुद्दीन ने उत्तर दिया—'' क्योंकि मैंने जब कभी भी किसी पर विश्वास किया, मैंने धोखा ही खाया।''

लोग धीमे— धीमे ही सीखते है—कि कैसे विश्वास न किया जाए और कैसे पक्का संदेही बना जाए। और यह इतनी अधिक धीमी गति और इतनी छोटी —छोटी खुराकें लेने के बाद घटता है, कि तुम कभी भी उसके प्रति सजग हो ही नहीं पाते, जो कुछ तुम्हें घट रहा है। जब वह घट चुकता है तो काफी देर हो चुकी होती है। यही वह चीज है, जिसे लोग अनुभव कहते हैं। वे लोग तभी उसी व्यक्ति को अनुभवी कहते हैं, जब वह हृदय के साथ अपना सम्बंध पूरी तरह तोड़ चुका होता है, वे कहते हैं—'' यह व्यक्ति बहुत अधिक अनुभवी, बहुत अधिक चतुर और चालाक है और इसे अब कोई भी व्यक्ति धोखा नहीं दे सकता।''

भले ही उसे कोई भी व्यक्ति धोखा न दे सकता हो, लेकिन उसने स्वयं अपने आप को ही धोखा दिया है। उसने वह सभी कुछ खो दिया था, जो बचाने जैसा है। उसने सभी कुछ खो दिया है। और वह बचा क्या रहा है?

तब एक बहुत विलक्षण घटना घटती है। लोग दूसरे व्यक्तियों से प्रेम नहीं कर सकते, क्योंकि लोग धोखेबाज हो सकते हैं। वे वस्तुओं से प्रेम करना शुरू कर देते हैं क्योंकि उसके स्थान पर प्रेम करने की बहुत अधिक जरूरत है, वे उसका विकल्प खोजने लगते हैं। कोई व्यक्ति अपने घर से प्रेम करने लगता है, कोई अपनी कार से प्रेम करने लगता है, कोई व्यक्ति कपड़ों से और अन्य कोई व्यक्ति धन से प्रेम करने लगता है। वास्तव में घर धोखा नहीं दे सकता, इस प्रेम में कोई खतरा नहीं है। तुम कार से प्रेम कर सकते हो, एक कार एक असली व्यक्ति की अपेक्षा कहीं अधिक विश्वसनीय है। तुम धन से प्रेम कर सकते हो, धन तो मृत है। वह हमेशा तुम्हारे नियंत्रण में रहता है। बहुत से लोग व्यक्तियों की अपेक्षा, वस्तुओं से क्यों अधिक प्रेम करते हैं? और यदि वे किसी व्यक्ति से प्रेम करते भी हैं, तो वे उस व्यक्ति को एक वस्तु की भांति तुच्छ और बेजान बना देते हैं। यदि तुम किसी स्त्री से प्रेम करते हो, तुम तुरंत उसे अपने अधीन कर अपनी पत्नी बनाने को तैयार हो जाते हो, जो वह है, तुम उसके कद को घटाकर उसे एक विशिष्ट पत्नी का रोल देने को तैयार हो जाते हो क्योंकि असली प्रेमिका की अपेक्षा उसके बारे में पहले ही से कुछ अधिक जाना जा सकता है। यदि तुम किसी पुरुष से प्रेम करती हो तो तुम उसे एक वस्तु की भांति अपने अधिकार में रखना चाहती हो। तुम चाहती हो कि वह तुम्हारा पति बन जाए क्योंकि प्रेमी में कहीं अधिक तरलता होती है, कोई भी नहीं जानता कि वह. एक पति कहीं अधिक ठोस दिखाई देता है। कम से कम उसके साथ कानून तो है, कचहरी और पुलिस तो है और उस बारे में राज्य सरकार भी है जो उसके पति पर उसके अधिकार को एक विशिष्ट दृढ़ता प्रदान करती है। एक प्रेमी तो स्वप्न सदृश दिखाई देता है, वह उतना अधिक वास्तविक नहीं है। शीघ्र ही प्रेम में पड़ने के बाद लोग विवाह करने के लिए तैयार हो जाते हैं। प्रेम से उन्हें इतना अधिक भय होता है। और जिससे भी हम प्रेम करते हैं हम उसे अपने नियंत्रण में लेने की कोशिश शुरू कर देते हैं। पति और पत्नी के बीच मां और बेटों के बीच, भाई और बहनों के बीच और मित्रों के मध्य भी यही संघर्ष चल रहा है : कि कौन किसे अपने अधिकार में रखने जा रहा है। इसका अर्थ है कौन किसे वस्तु बनाकर अपने अधिकार में करने जा रहा है, कौन किसे अपनी सीमा में आबद्ध करने जा रहा है? कौन मालिक बनेगा और कौन गुलाम बनेगा?

मुल्ला नसरुद्दीन शराब का जाम थामे उदास बैठा था और उसे देखकर उसके मित्र ने उससे पूछा—'' तुम आज अपना मुंह सिए हुए खामोश क्यों बैठे हो?" नसरुद्दीन ने कहा—'' मेरा मनोविश्लेषक कहता है कि मुझे अपने छाते से प्रेम हो गया है, और वही मेरी मुसीबतों का स्रोत है।''

" तुम अपने छाते के प्रेम में पड़ गए हो?"

" हां! पर क्या यह इतनी व्यर्थ की बात है? ओह! मैं अपने छाते को बहुत अधिक पसंद करता हूं उसका सम्मान करता हूं और उसे साथ रखने का आनंद लेता हूं। लेकिन प्रेम?"

लेकिन प्रेम और होता क्या है? यदि तुम अपने छाते को अपने साथ रखने में प्रसन्न होते हो, यदि तुम उसका सम्मान करते हो और तुम अपने छाते को चाहते हो, तो प्रेम आखिरकार इससे अधिक और क्या हो सकता है? प्रेम है किसी को सम्मान देना, अत्यधिक आदर देना। प्रेम एक गहरी चाहना है और जिसे तुम प्रेम करते हो, उसकी उपस्थिति में पूर्ण रूप से प्रसन्न रहना ही प्रेम है। इसके अतिरिक्त प्रेम और होता क्या है?

लेकिन लोग वस्तुओं से प्रेम करते हैं—किसी न किसी तरह उस खाली स्थान को किसी अन्य चीज से मरने की गहरी जरूरत है।

स्मरण रहे पहला संकट है कि कोई व्यक्ति बुद्धि प्रधान या सोच विचार करने वाला बन जाए। दूसरी महान विपदा यह है कि कोई व्यक्ति प्रेम करने के लिए किसी व्यक्ति का प्रतिस्थापन किसी वस्तु से करे। तब तुम भटक गए। किसी मरुस्थल में विलीन हो गये। तब तुम सागर तक कभी न पहुंच सकोगे। तब तुम बस बिखर कर नष्ट हो जाओगे। भाप बनकर उड़ जाओगे। तब तुम्हारा जीवन पूरी तरह बरबाद हो जाएगा।

जिस क्षण भी तुम्हें यह होश आ जाए कि जो कुछ हो रहा है, वह यही है तो हृदय के साथ जुड़ने के सभी सम्भव प्रयास करो, अपनी चाल का रुख बदल दो। यह वही है, जिसे बाउल प्रेम कहते हैं—हृदय के साथ फिर से सम्बंध जोड़ना तुम्हारे साथ समाज द्वारा जो कुछ भी किया गया है, उस किए को अनकिया करना। और जो समाज द्वारा तुम्हारे साथ नहीं किया गया है, वही सच्चा धर्म है। उन सभी व्यर्थ की चीजों को अनकिया करना है जो तुम्हारा भला चाहने वालों ने तुम्हारे साथ की है। वे सोचते होंगे कि वे तुम्हारी सहायता कर रहे हैं और वे जानबूझ कर तुम्हें बरबाद नहीं कर रहे होंगे। वे लोग स्वयं भी इसी तरह अपने माता—पिता और समाज के शिकार बने होंगे। मैं उनके विरुद्ध कोई भी बात नहीं कह रहा हूं। उन सभी के लिए अत्यधिक करुणा की आवश्यकता है।

गुरजियेफ अपने शिष्यों से कहा करता था कि एक व्यक्ति केवल तभी धार्मिक बनता है, जब वह अपने माता—पिता को क्षमा करने योग्य बन जाता है। क्षमा करना? हां! ऐसा कैसे हो होता है। इसे समझना बहुत कठिन है। जिस क्षण तुम सजग बनते हो, यह बहुत मुश्किल लगता है लगभग असम्भव ही कि तुम अपने माता—पिता को क्षमा कर सको, क्योंकि उन्होंने तुम्हारे साथ बहुत सी चीजें ऐसी की होंगी, और वास्तव में उन्होंने वे अनजाने और मूर्च्छा में ही की होगी, लेकिन फिर भी उन्होंने की है। उन्होंने तुम्हारे प्रेम को नष्ट कर दिया और उन्होंने तुम्हें मृत तर्क—वितर्क और विचार थमा दिए। उन्होंने तुम्हारी समझ और प्रज्ञा को नष्ट कर दिया और उसके प्रतिस्थापन के रूप में तुम्हें बुद्धि दी। उन्होंने तुम्हारे जीवन की जीवंतता नष्ट कर दी और तुम्हें रहने के लिए एक बंधा बंधाया ढांचा और एक योजना दे दी। उन्होंने तुम्हारी दिशा ही बिगाड़ दी और तुम्हें एक लक्ष्य अथवा एक मंजिल दे दी। उन्होंने तुम्हारे जीवन में उत्सव आनंद मनाने के क्षण नष्ट कर दिए और तुम्हें बाजार में बिकने वाली वस्तु बना दिया। बहुत कठिन है उन्हें क्षमा करना। इसीलिए तभी पुरानी परम्पराएं कहती हैं— अपने माता—पिता का सम्मान क्रो।

पर उनको क्षमा कर पाना बहुत कठिन है। और उनको आदर देना तो बहुत बहुत कठिन कार्य है। लेकिन यदि तुम इसे समझ गये हो, तो तुम उन्हें क्षमा कर दोगे, तुम ठीक वही कहोगे, जो जीसस ने क्रॉस पर कहा था—'' हे परमपिता! उन्हें क्षमा कर, वे नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं?" हां! ठीक यही शब्द थे वे। और यहां प्रत्येक व्यक्ति क्रॉस पर ही चढ़ा है और यह क्रॉस तुम्हारे दुश्मनों द्वारा तैयार नहीं किया गया है, लेकिन यह तुम्हारे माता—पिता और समाज द्वारा बनाया गया है, और प्रत्येक व्यक्ति क्रॉस पर लटका हुआ है।

यह मस्तिष्क इतना अधिक नियंत्रक बन गया है कि यह सहजता और स्वाभाविकता को निकट आने ही नहीं देता। वह तानाशाह बन गया है। वह हृदय को एक भी शब्द कहने की अनुमति ही नहीं देता। उसने हृदय को पूरी तरह खामोश रहने को विवश कर दिया है।

तुम्हें फिर से हृदय की आवाज को सुनना होगा। तुम्हें तर्क को थोड़ा— थोड़ा छोडना शुरू करना पड़ेगा। तुम्हें कुछ खतरे उठाने होंगे। तुम्हें कुछ जोखिम उठाकर जीना पड़ेगा। तुम्हें अज्ञात की ओर आगे बढ़ना होगा और तुम्हें वस्तुओं से प्रेम न कर व्यक्तियों से प्रेम करना होगा। तुम्हें इसके लिए अपने को तैयार करना होगा कि तुम किसी व्यक्ति पर अधिकार न जमाओ, क्योंकि जिस क्षण तुम उस पर अधिकार जमाते हो, वह व्यक्ति फिर वह रह ही नहीं जाता, वह एक वस्तु जैसा बन जाता है और किसी वस्तु पर ही अधिकार किया जा सकता है।

इसे जितनी अधिक गहराई से सम्भव हो सके, समझने का प्रयास करो, जिस क्षण तुम किसी व्यक्ति से प्रेम करने लगते हो, तुम्हारा आदतों और अनुशासन से आबद्ध ढांचा, उसे अपने अधिकार में लेने की कोशिश शुरू कर देता है। इस प्रलोभन को रोको, शैतान तुम्हें लालच दे रहा है—यह शैतान है समाज, यह शैतान है सभ्यता और तुम्हारा तथाकथित धर्म। यह शैतान धार्मिक लिबास पहने हुए शास्त्रों के उद्धरण दिए चले जा रहा है। उससे सावधान रहो।

तुम जब भी किसी को अपने अधिकार और नियंत्रण में लेने की कोशिश करते हो, तुम प्रेम—हत्या कर देते हो। इसलिए या तो तुम किसी व्यक्ति को अपने अधिकार में ले सकते हो, अथवा तुम किसी व्यक्ति से प्रेम कर सकते हो—दोनों साथ—साथ करना सम्भव नहीं है।

इसलिए दो चीजों में से एक को ही चुनना है — एक व्यक्ति जो बाउल बनना चाहता है, एक प्रेमी बनना चाहता है, उसे अपनी सारी पकड़ छोड़नी होगी। अधिकार के सम्बंध में सभी प्रलोभनों को छोड़ना होगा, क्योंकि यह प्रलोभन अहंकार से आ रहा है।

एक बार मुल्ला नसरुद्दीन ने मुझसे कहा— " श्रीमान! यह बात कितनी प्रशंसनीय है कि हम दोनों एक दूसरे के कितने अनुरूप हैं। जब कि व्यावहारिक रूप में हम लोगों में कुछ भी समान नहीं है।''

मैंने उत्तर दिया—'' ओह! हां, पर हम लोहों में एक बहुत ही समान महत्त्वपूर्ण बात है। मेरा ख्याल है कि तुम एक अद्‌भुत व्यक्ति हो और इस बारे में मेरे साथ सहमति रखते हो।''

अहंकार गलत चीजों के लिए सहमति दिए चले जाता है, क्योंकि गलत चीज के साथ ही अहंकार अस्तित्व में बने रह सकता है। गलत चीज ही उसका भोजन है। इसलिए तुम्हें जब भी यह महसूस हो कि तुम्हारा अहंकार तुष्ट हो गया है, सावधान हो जाओ तुमने किसी गलत चीज को भोजन बना लिया है। तुमने कोई गलत चीज निगल ली है। तुम्हें जब भी अहंकार शून्य होने का अनुभव होता है, तुम विश्रामपूर्ण हो जाते हो। अब तुमने किसी ऐसी चीज को आहार बनाया है जो तुम्हारी प्रकृति से मेल खाती है।

बाधाओं और मुसीबतों से ही अहंकार का जन्म होता है, लेकिन उसका अपना एक अलग तर्क है। वह यह कहे चले जाता है कि तुम महत्‌वपूर्ण हो, कि तुम संसार के सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति हो और तुम्हें इसे सिद्ध करना है। और हम सभी इसे एक या दूसरी तरह से करने की कोशिश कर रहे हैं कोई इसे अधिक धन

पाकर, कोई एक सुंदर स्त्री पर अधिकार प्राप्त कर, कोई इसे प्रतिष्ठा अथवा शक्ति पाकर, कोई राष्टाध्यक्ष या प्रधानमंत्री बनकर, कोई कलाकर अथवा कवि बनकर और कोई महात्मा बनकर, लेकिन हम सभी किसी न किसी तरह अपनी आंतरिक सनक द्वारा यह सिद्ध करने में जुटे हुए हैं कि हम ही संसार के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति हैं। तब तुम एक प्रेमी नहीं हो।

महत्त्वाकांक्षा, प्रेम के लिए एक विष है। प्रेमी को इसे सिद्ध करने की कोई आवश्यकता नहीं होती। वास्तव में वह जानता है कि उसे प्रेम मिल रहा है। और यही उसके लिए पर्याप्त है।

बहुत सावधानी से इस रोग को पहचानने की कोशिश करो। जब तुम्हें कोई प्रेम नहीं करता और यदि तुम स्वयं किसी से प्रेम नहीं करते तो तुम्हें किसी और का प्रेम कैसे मिल सकता है? जब तुम्हें प्रेम नहीं किया जाता और तुम भी किसी से प्रेम नहीं करते, तभी अकस्मात् संसार को कुछ करके दिखाने की, कि तुम बहुत महत्त्वपूर्ण हो और तुम्हारी आवश्यकता है संसार को, एक चाह उत्पन्न हो जाती है। उस स्थिति में एक बहुत बड़ी चाह होती है कि तुम संसार द्वारा चाहे जाओ। तुम्हें लगता है कि यदि तुम न चाहे गए तो तुम एक व्यर्थ, नपुंसक और अनुपयोगी व्यक्ति हो। यह चाह अपने आप में गलत नहीं है। यह एक प्रेम की चाह की आवश्यकता है। यदि एक स्त्री तुम्हें प्रेम करती है, तुम परिपूर्ण हो और तुष्ट हो कोई व्यक्ति तुम्हें चाहता है तुम किसी की जरूरत हो, तुम महत्वपूर्ण हो। तब तुम भीड के बारे में कुछ भी फिक्र नहीं करते।

तुम बाजार जाकर चीख—चीख कर यह नहीं कहते—'' मैं एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति हूं।'' तब तुम महत्त्वाकांक्षी नहीं होते, तब तुम्हें धन संग्रह करने की धुन नहीं होती।

यदि कोई भी व्यक्ति तुम्हें प्रेम करता है, तो उस प्रेम से तुम महिमामय हो जाते हो, तुम प्रभुत्व सम्पन्न बन जाते हो। प्रेम तुम्हें एक सम्राट, एक शासक बना देता है। प्रेम तुम्हें इतनी अधिक गहराई और श्रेष्ठता से तुष्ट करता है कि कोई भी कार्य अथवा कोई कलात्मक कार्य करने की जरूरत ही महसूस नहीं होती। प्रेम के साथ अहंकार रह ही नहीं सकता। लेकिन यदि यह चाह अधूरी रह जाती है तब तुम इसे किसी और तरह से पूरा करने की कोशिश करोगे, तुम एक सुप्रसिद्ध व्यक्ति बनना चाहोगे, जिससे बहुत से लोग तुम्हें चाहें।

लेकिन स्मरण रखें, किसी व्यक्ति द्वारा प्रेम किये जाना, और लाखों व्यक्तियों द्वारा चाहा जाना, समान बात नहीं है। अकेले एक व्यक्ति का भी प्रेम, और उसका एक प्रेम भरी दृष्टि से देखना ही यथेष्ट है, और तुम लाखों लोग इकट्ठे कर सकते हो, और वे सभी तुम्हारी ओर तुम्हें देख सकते हैं, लेकिन उससे तुम्हें संतोष न मिलेगा। यह है वह राजनीति और यही सब कुछ राजनीतिक लोग करने का प्रयास कर रहे .

है।

मैं अभी तक ऐसे किसी राजनीतिज्ञ के सम्पर्क में नहीं आया, जिसका हृदय कार्यरत हो। उसका हृदय पूरी तरह मृत है—लेकिन उसकी चाह है कि उसे औरों से प्रेम मिले, वह चाहा जाये, और कोई व्यक्ति उसकी ओर देखे। वह कहां करे? इसकी पूर्ति? वह भीड़ जुटाता है। किसी तरह भीड़ के द्वारा वह प्रेम की चाह को पूरा करने की कोशिश करता है। लेकिन भीड़ उसे प्रेम नहीं करती, भीड़ उसकी

कोई चिंता नहीं करती, भीड़ की अपनी जरूरतें और चाहें हैं। क्योंकि वह सत्ता में है, इसलिए वह महत्त्वपूर्ण प्रतीत होता है। वे लोग कुर्सी का सम्मान करते हैं और कुर्सी पर बैठने वाला धोखे खाता है। एक बार कुर्सी पर बैठने वाला व्यक्ति, कुर्सी से हट जाए तो भीड़ उसकी जरा भी फिक्र नहीं करती।

क्या कभी तुमने इस बात का निरीक्षण किया है कि एक बार राजनेता सत्ता से बाहर हो जाए तो उसे भुला दिया जाता है। कौन उसे याद करता है? वह तीस चालीस वर्ष तक जीवित रह सकता है, पर कोई भी व्यक्ति उसके बारे में कुछ भी नहीं जानना चाहेगा। धीमे— धीमे पीछे हटते हुए वह अंधकार में खो जायेगा।

केवल एक बार जब वह मर जाता है, तो अखबारों में एक छोटी सी खबर प्रकाशित हो जाती है कि भूतपूर्व राष्ट्रपति अथवा भूतपूर्व प्रधानमंत्री की मृत्यु हो गई।

लेनिन से पूर्व जिस व्यक्ति ने रूस पर शासन किया, वह केरेन्सकी, सत्ता से हटने के पचास वर्ष तक न्यूयार्क में एक छोटा सा परचूनिया बनकर जीवित रहा, और उसके बारे में कोई भी व्यक्ति कुछ भी नहीं जानता था। वह रूस का प्रधानमंत्री था, सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति—क्रांति हुई और वह सत्ता से बाहर फेंक दिया गया। वह रूस से पलायन कर गया। वह पचास वर्षों तक और जीवित रहा। केवल जब उसकी मृत्यु हुई लोगों ने जाना कि केरेन्सकी पचास वर्षों तक और जीवित रहा। सत्ता प्रेम की चाह को पूरा नहीं कर सकती। तुम महान साम्राज्य प्राप्त कर सकते हो लेकिन वह तुम्हारे प्रेम की चाह को पूरा नहीं करेगी। लेकिन यदि तुम्हारे पास एक हृदय है, जो तुमसे लयबद्ध होकर तुम्हारे साथ धड़कता है, तब तुम पूर्ण हो।

बाउल गाते हैं:

ओ मेरे हृदय! तू मुझे
उस लता कुंज में ले चल,
जहां कृष्ण लीला रचाते हुए
अपना प्रेम लुटा रहे हैं।
वहां हवा के आनंददायक झोंके
तुम्हारे जीवन को शीतल कर देंगे।
उस वनांचल में
पांच गंधों के शाश्वत फूल महकते हैं।
उनकी सुवास
तुम्हारे जीवन और आत्मा में
एक जादू जगा देगी
और देगी उन्हें
तीन लोकों का प्रभुत्व और गरिमा।

प्रेम के मंदिर में प्रवेश करो, और तुम उसमें हमेशा एक सम्राट की ही भांति प्रवेश करते हो। संसार में प्रवेश करो और वस्तुओं के संसार में जाओ, जहां तुम हमेशा एक भिखारी की तरह ही प्रवेश करते हो। संसार प्रत्येक व्यक्ति की गरिमा घटाकर उसे भिखारी ही बना देता है, और प्रेम प्रत्येक व्यक्ति की गरिमा बढ़ाकर उसे सम्राट बना देता है। प्रेम एक रासायनिक घटना है। यदि किसी का हृदय भी तुम्हारी ओर प्रवाहित हो रहा है तो उस हृदय के द्वारा परमात्मा ही तुम तक आ पहुंचा है। किसी ने प्रेम भरी चितवन से तुम्हें निहारा, उस क्षण परमात्मा ने ही तुम्हारी ओर अपनी दृष्टि उठाई है। जरा उन प्रेम से भरी आंखों की झील में देखो, वहां प्रेम ही प्रेम छलक रहा है और तुम वहां हर धड़कन में परमात्मा को धड़कता पाओगे क्योंकि जो हमेशा प्रेम करता है, वह परमात्मा ही तो है। प्रेम करना, परमात्मा ही बन जाना है। प्रेम घटने की अनुमति देना ही परमात्मा बन जाना है।

तुम जब भी प्रेम के शिखर से नीचे गिरते हो, तब वह कुछ और ही चीज होती है। तुम मालकियत जमाने लग जाते हो, तुम पति या पत्नी बन जाते हो। तब तुम परमात्मा की पकड़ से बाहर होते हो। बल्कि जब कभी भी तुम प्रेम के शिखर अनुभव पर पहुंचते हो। भले ही जब कभी अकेले एक क्षण के लिए ऐसा घटता हो, जब दो व्यक्ति पूरी तरह एक दूसरे से लयबद्ध हो जाते हैं, उनके बीच कोई अवरोध और बाड़ नहीं रह जाती, फिर वे दो

अलग— अलग केंद्रों पर न धड़कते हुए उस क्षण वे एक ही केंद्र बन जाते हैं। जब प्रेम घटता है तो परमात्मा ही घटता है। जब परमात्मा धरती पर अवतरित होता है तो उसका नाम प्रेम होता है।

प्रत्येक फल
जब दो वृक्षों के जोड़े से नीचे भूमि पर गिरता है।
तो उसके लिए दो सीमाएं
विस्मयजनक रूप से एक हो जाती हैं।
इसे ध्यान से सुनो.
प्रत्येक फल
जो दो वृक्षों के एक जोड़े से नीचे गिरता है
उसके लिए दो सीमाएं
विस्मयजनक रूप से एक हो जाती हैं।

क्या तुमने कभी किसी फल को क्या वृक्षों के एक जोड़े पर जन्मते देखा है? एक वृक्ष पर एक ही फल उत्पन्न होता है। एक फल के लिए दो वृक्षों की आवश्यकता नहीं होती। प्रेम ही वह फल है जो दो वृक्षों के एक जोड़े पर जन्म लेता है। वह कभी भी एक वृक्ष पर नहीं जन्मता।

प्रत्येक फल के लिए
दो सीमाएं, विस्मयजनक रूप से एक हो जाती हैं।
गहरे ध्यान में ही यह बोध
बिना किसी संदेह के होता है।

जब तुम किसी व्यक्ति से प्रेम करते हो और कोई व्यक्ति तुम्हें प्रेम करता है, तब एक क्षण ऐसा आता है, जब ये दो वृक्ष दो वृक्ष नहीं रह जाते, तब वह एक ही वृक्ष बन जाता है। वह वृक्ष, प्रेम का वृक्ष होता है, और प्रेम के उस वृक्ष पर पूर्णता और संतोष है, इच्छित वरदान को पाने का आनंद है, और एक खिलावट है।

वे दो, जब मिलकर
पूर्ण रूप से एक अखण्ड हो जाते हैं,
तभी प्रेम का वह फल उत्पन्न होता है
जिसे वह सद्गुरु को समर्पित कर सकें,
उन क्षणों में वे होशपूर्ण और सचेत होते हैं।
तभी तो वे प्रेम के फल को जन्म दे पाते हैं।

मैं फिर से दोहराना चाहता हूं वे दो जो वहां समग्रता से उपस्थित है..... .प्रेम में दो व्यक्तियों की एक दूसरे के लिए उपस्थिति ही पर्याप्त होती है और वे करते कुछ भी नहीं। प्रेम कुछ भी करना जानता ही नहीं। जब दो व्यक्ति गहरे प्रेम में होते हैं, उनका बस मौजूद होना ही एक दूसरे के लिए पर्याप्त होता है। दोनों के चेहरे एक दूसरे के सामने होते हैं, केवल वे उपस्थित भर होते हैं, जैसे दो दीये एक दूसरे के सामने जल रहे हों, अथवा दो दर्पण एक दूसरे के सामने रखे हुए एक दूसरे को लाखों रूप में प्रतिबिंबित कर रहे हों। दो प्रेमी ठीक एक दूसरे की उपस्थिति में दूसरे के घुल कर जैसे एक हो रहे हों, जैसे वे दोनों एक दूसरे में समाते जा रहे हों। उस स्थिति में एक क्षण ऐसा आता है, वह चरम शिखर पर पहुंचने का क्षण होता है— " जब उस प्रेम के फल का जन्म होता है, जब वे फिर दो नहीं रह जाते, जब सारे भेद मिट जाते हैं, जब अहंकार और अस्मिता बचती ही नहीं, जब उनकी शुद्ध उपस्थिति मात्र रह जाती है।"

तभी उस फल का जन्म होता है।

वे दो, जो वहां समग्रता और परिपूर्णता से

उपस्थिति भर होते हैं।

वे तभ उस प्रेम के फल को जन्म दे पाते हैं

जिसे सद्गुरु को भेंट करना है।

और वही वह फल है, जिसे सद्गुरु को, परमात्मा को भेंट में अर्पित करना है। वे उन क्षणों में होशपूर्ण और फल उत्पन्न करने में समर्थ होते हैं।

प्रेम के उस शिखर अनुभव में वे पूरी तरह से होशपूर्ण और फल उत्पन्न करने में समर्थ होते हैं। स्मरण रहे, प्रेम मूर्च्छा— जैसी कोई चीज नहीं है। साधारणतया जब। तुम प्रेम में होते हो तुम और अधिक मूर्च्छित हो जाते हो। तब वह वासना होती है। तब वह बहुत निम्र कोटि का प्रेम होता है। तब वह उसके सबसे अधिक नीचे का ही डंडा होता है। वास्तव में वह है सीढ़ी का ही एक डंडा, लेकिन वह सबसे अधिक नीचे का डंडा है। सीढ़ी के सबसे ऊंचे डंडे पर विराट चेतना होती है और यदि तुम अपने प्रेमी की उपस्थिति में पूर्ण सचेत और होशपूर्ण नहीं हो सकते, फिर तुम और कहां होशपूर्ण हो सकते हो? यदि तुम्हारे प्रेमी की उपस्थिति होशपूर्ण बनाने लायक नहीं है, फिर तुम चेतना का वह खजाना कहां और पा सकते हो?

यदि तुम वास्तव में सच्चा प्रेम करते हो, तो चेतना का एक शिखर निर्मित होता है। यदि हम इसे देखना चाहते हो तो क्या तुम अपने प्रेमी अथवा प्रेमिका के साथ एक शुद्ध उपस्थिति के रूप में रहना चाहोगे? ऐसा करने से वे अधिक से अधिक सचेत होने में एक दूसरे की सहायता करते हैं, क्योंकि जब उनमें से एक अधिक सजग और होशपूर्ण होता है, तो यह तुरंत दूसरे में भी प्रतिबिबित होता है। दूसरा और अधिक सचेत हो जाता है। और यह एक " चेन—रिएक्शन " की तरह कार्य करता है। वे आनंद और चेतना के उच्च से उच्चतम शिखर पर पहुंचते हैं और तब वहां एक क्षण ऐसा आता है जब फल का जन्म होता है। इसी फल को दैवी प्रेम कहते हैं, श्रद्धा कहते हैं। इसी प्रेम और श्रद्धा के फल को इस संसार के मालिक को तुम अर्पित कर सकते हो। किसी और तरह के फल से काम चलेगा नहीं।

"वे होशपूर्ण और प्रेम के फल को जन्माने में समर्थ होते हैं। और चेतना के उस सर्वोच्च शिखर पर ही वे फल को जन्म में समर्थ होते हैं। अन्यथा लोगों का जीवन फलविहीन होता है, लोग बिना फल उत्पन्न किए हुए ही जीवन बिता देते हैं। उनके कुछ उत्पन्न होता ही नहीं। वे बस रहते हुए ही मर जाते हैं। उनका जीना अर्थहीन और बिना किसी महत्त्व के होता है। जीवन महत्वपूर्ण तभी होता है जब दो वृक्ष मिलकर एक ही वृक्ष बन जाता है और उसी एक वृक्ष पर प्रेम के फल का जन्म होता है।

होशपूर्ण ओर फलप्रद।

कुंआ पानी में कभी भी नहीं डूबता।

बाउल कहते हैं—'' तुम देखते हो? जाओ और जाकर किसी पानी से भरे हुए

कुंए के अन्दर झांको लेकिन कुंआ कभी भी पानी में डूबता नहीं।

यह बहुत रहस्यपूर्ण है। जब तुम पहली बार दो से एक बनकर पूरी तरह से

उस अद्वैत में डूबते हो, तुम वास्तव में नहीं डूबते। तुम एक दूसरे में समाहित हो

जाते हो, सारी सीमाएं मिट जाती हैं, लेकिन तभी एक विरोधाभास घटता है? यह विरोधाभास है—पूरी तरह खोने और मिट जाने का और फिर भी पहली बार तुम्हारे स्वयं के अपने होने का भी। जब तुम पूरी तरह खो जाते हो, मिट जाते हो, तो तुम पहली बार अपने वास्तविक स्वरूप अथवा सत्य का अनुभव करते हो। तुम

अखण्ड होते हो चारों ओर से विराट ऊर्जा की बाढ़ से घिरे होते हो, लेकिन फिर भी उसमें डूबते नहीं। तुम उसमें मिलकर उसके साथ एक हो जाते हो, बल्कि पहली बार तुम्हारे दीये की ज्योति जलती है। बिना किसी अहंकार के तुम्हारा अस्तित्व प्रकट होता है।

बाउल गाते हैं:

फल में पूरी सुवास आने के लिए

उसे अपना समय आने तक पकने दो

एक हरे और कच्चे फल को

सख्ती से हथेली से दबाकर और गर्मी देकर

मुलायम तो बनाया जा सकता है, लेकिन उसमें मिठास नहीं आती।

और वे कहते हैं—'' इस प्रेम को तुम बलपूर्वक उत्पन्न नहीं कर सकते। इसे नियंत्रित करने का कोई तरीका है ही नहीं। इस बारे में वहां ऐसा कुछ भी नहीं है, जो तुम कर सकते हो। तुम बस इतना भर सकते हो कि उसे होने की अनुमति दो। एक दिन स्वयं पककर वह मीठा हो जाता है।

उसे स्वयं पकने दो।

अपना समय आने पर ही वह स्वयं पक जाएगा।

इसलिए बाउल लोग किसी तरह का योग नहीं करते। वे लोग योग के विरुद्ध हैं। इसी कारण मैंने तुमसे शुरू में ही कहा था कि यह लोग वेद और योग की परम्परा से सम्बंध न रखते हुए तंत्र की परम्परा के हैं।

वास्तव में बाउल की परम्परा, वेद और योग की परम्परा से भी कहीं अधिक प्राचीन है।

इतिहासकार कहते हैं कि तंत्र आर्य सभ्यता से पूर्व का है। जब आर्य भारत आये तो तंत्र वहां प्रचलित था और उसके देवता शिव थे। जब आर्य भारत में आये तो भारत भर में भ्रमण करते हुए उन्होंने यहां रहने वाले लोगों को युद्ध में पराजित किया। उनके धर्म को कुचल दिया गया। उनके शास्त्र जला दिए गए और धीमे—धीमे उनके देवता भी आर्यों के बहुदेववाद में समाहित हो गए। शिव उनके देवता थे। उन्हें स्वीकारने और अपना देवता बनाने में काफी लम्बा समय लगा। वे उनके लिए विदेशी थे, लेकिन उनके व्यापक प्रभाव को देखते हुए उन्हें शिव को स्वीकारना ही पड़ा। और जब उनके सभी अनुयायी भी आर्य—संसार में घुल मिल गए तो वे लोग अपने देवता को भी लेते आये।

तंत्र का सम्बंध शिव से है और बाउल उसी वृक्ष की एक शाखा है। तंत्र कहता है—'' प्रत्येक चीज अपना ठीक समय आने पर स्वयं होती है, तुम्हें बलप्रयोग करने की कोई जरूरत नहीं है। तुम्हें बल प्रयोग से कुछ भी सहायता नहीं मिलेगी।

वह प्रयास एक अवरोध ही बनेगा। वह उसे नष्ट भी कर सकता है और वह सृजनात्मक तो कभी भी नहीं हो सकता। एक व्यक्ति को उसके लिए बहुत प्रयास रहित और सहज होना होता है, उसे उसके साथ स्वीकार भाव से रहना होता है।''

फल में स्वाद और सुवास के लिए

उसे अपना समय लेते हुए स्वयं पकने दो।

एक कच्चे हरे फल को हथेलियों से दबाकर और गर्मी देकर

मुलायम तो बनाया जा सकता है

लेकिन उसे मीठा नहीं बनाया जा सकता।

बाउल कहते हैं—'' हम सांसारिक बन्धनों से मुक्त होने के लिए नहीं खोज रहे हैं। एक प्रेमी, एक प्रेम का खोजी, मुक्ति और स्वतंत्रता की भाषा में कभी बात करता ही नहीं।''

वह कहता है—' वह ' अत्यधिक सुंदर है। अस्तित्व में सभी कुछ जो भी है, वह पहले ही से बहुत सुंदर है। उससे मुक्त होने की कोई जरूरत ही नहीं है। वह सब कुछ जिसकी जरूरत है वह है कि उसमें हम कैसे बने रहे, उसमें कैसे तल्लीनता से एक हो जायें।''

बाउल के लिए यह संसार एक बन्धन नहीं है, और वहां रहते हुए उससे संघर्ष करने की भी कोई जरूरत नहीं है। वास्तव में बाउल कहता है—'' हम सांसिाकर बन्धनों से प्रेम करते हैं, क्योंकि ये बेड़ियां तुम्हारे लिए ही मेरे मालिक के द्वारा ही सृजित की गई हैं।''

हृदय कमल निरंतर सुरभित हो रहा है
युग के बाद युग बीत गए।
तुम उससे भ्रमर की भांति बंधे हुए हो
और ऐसा ही मैं भी बंधा हूं।
बाउल अपने परमात्मा से निवेदन करता है—
तुम भी उससे बंधे हुए हो,
और ऐसे ही मैं भी उससे बंधा हुआ हूं
और इससे भागना कहां है?

कमल पुष्प खिल रहा है, सुरभित हो रहा है, वह खिलता ही जाता है और इसके खिलने का कोई अंत नहीं है। लेकिन इन सभी कमल पुष्पों में

एक ही तरह का पराग, और एक ही तरह की मिठास है
जिसका एक विशिष्ट स्वाद है।
मधुमक्खी लालची बनी केवल उसी में उत्सुक है
और उसे छोड़ कर वह कहीं जा नहीं सकती।
इसीलिए तुम भी उससे बंधे हुए हो
और मैं भी उसके प्रेम में आबद्ध हूं।
तब कहां स्वतंत्रता?
और कैसी मुक्ति?

यह लुकाछिपी की एक बहुत बड़ी लीला है, जो उस ऊर्जा, जिसे परमात्मा या अस्तित्व कहते हैं और तुम्हारी ऊर्जा के बीच खेली जा रही है। इस महान छिपने और खोजने को लीला में समान ऊर्जाएं ही निमग्न हैं। यह एक विराट लीला है। इसका कहीं कोई अंत है ही नहीं। इन कमल के पुष्पों को खिलने दो, यह हमेशा—हमेशा खिलते ही रहेंगे। यह संसार बहुत सुंदर है, यही तंत्र की आधारभूत दृष्टि है। योग कहता है—'' एक एक व्यक्ति को मुक्त होने की आवश्यकता है। तंत्र पूछता है—'' आखिर क्यों और किससे मुक्ति? यह बंधन बहुत सुंदर है, क्योंकि यह तो परमात्मा के साथ बंधना है। योग कहेगा—'' छोड़ते चलो, धीमे— धीमे सारे बन्धनों और आसक्तियों को तोड़ते चलो, और अंत में उस व्यक्ति को प्रेम के भी पार जाना है। बाउल कहते हैं : सारे बन्धन बहुत सुंदर हैं। उनमें गहरे और गहरे डूबो, जिससे तुम परिधि पर न रहकर, उसके केंद्र तक पहुंच सको। परिधि पर ही बन्धन और आसक्ति है, केंद्र पर केवल प्रेम है।''

मधुमक्खी पराग के प्रलोभन से बंधी

उसे छोड़ कर जाने में असमर्थ है,

ऐसे ही तुम भी बंधे हुए हो

और मैं भी उससे बंधा हुआ हूं

तक कहां स्वतंत्रता?

और कैसी मुक्ति?

बाउल के लिए जीवन कोई गम्भीर बात नहीं है। इसके लिए यह एक लीला है। एक हास, परिहास है, एक आनंद है। इसलिए तुम बाउलों के संसार में, तथा कथित धार्मिक लोगों के लम्बे लटके चेहरे और धर्म स्थानों में पूजा प्रार्थना के लिए जाने वाले लोगों में गम्भीरता जैसी कोई भी चीज न पा सकोगे।

वे प्रेम करते हैं, हंसते हैं, वे प्रेम की लीलाएं रचाते हैं। वे छोटी—छोटी चीजों को भी बहुत सम्मान देते हैं, और उनमें आनंदित होते हैं। सामान्यता, सभी धर्मों में बहुत संयमी गम्भीर और लम्बे नीचे लटके चेहरों वाले लोग हैं, क्योंकि उन्हें जीवन के विरोध में होने के कारण ऐसा होना ही पड़ता है।

मैंने सुना है:

मुल्ला नसरुद्दीन के एक मित्र को यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि मुल्ला पुरस्कार जीतने वाले अपने बैल को जमीन के अंदर जमी जड़ों को उखाड़ने के लिए हल में जोते हुए अपने खेत में कठिन श्रम करने के लिए उसे निर्देशित कर रहा था। उसने कहा—'' मुल्ला! तुम कहीं पागल तो नहीं हो गए? वह बैल पच्चीस हजार रुपयों का है। तुम उससे यह हल क्यों चलवा रहे हो?"

" यह बैल, " मुल्ला ने कठोरता से कहा—'' इसे यही तो सीखना है कि जिंदगी आखिर कोई खेल तमाशा नहीं है।''

यहां ऐसे लोग हैं, जो तुम्हारे हंसते ही, उसी क्षण परेशान और व्याकुल हो उठते हैं, वे तुम्हें जैसे यह सिखाना चाहते हैं कि जीवन आखिर कोई खेल या हंसी मजाक नहीं है। ये लोग स्वयं तो रुग्ण हैं ही। यह लोग जीवन को चूके हुए हैं और यह नहीं चाहते कि कोई दूसरा भी जीवन में आनंद ले। सभी पुजारी और पुरोहित रुग्ण लोग हैं वे कभी नहीं चाहेंगे कि तुम आनंदित रहो। यह सभी चूके हुए और भटके हुए लोग हैं और वे तुमसे ईर्ष्या करते हैं। उन्होंने बहुत कुछ दांव पर लगाया हुआ है, उनके अहंकार केवल तभी तृप्त होते हैं, जब वे जीवन के विरुद्ध होने के कारण उसकी निंदा करें। उन्होंने जीवन से विरोध में अहंकार को चुना है। यदि तुम जीवन को चुनते हो, तो वे तुम्हारे विरुद्ध होंगे ही। वे तुम्हें रोकते प्रतिबंधित करते रहेंगे, वे तुम्हें निंदित किए जाएंगे और वे तुममें अपराधबोध उत्पन्न करेंगे। इससे बड़ा हादसा और इतना गहरा संकट मनुष्यता के लिए कभी नहीं घट सकता जितना इन सभी तथाकथित धर्मों द्वारा उत्पन्न किया गया है। गहरा संकट यह है कि उन्होंने तुम्हारे अंदर अपराध बोध उत्पन्न कर दिया है। इसलिए जब भी तुम प्रसन्न होते हो, तो कहीं गहरे में अपने अंदर तुम्हें यह महसूस होना शुरू जाता है कि जैसे तुम कोई अपराध कर रहे हो, जैसे मानो तुम कुछ चीज गलत कर रहे हो। तुम जब भी स्वस्थ होते हो, तुम्हें यह अनुभव होना शुरू हो जाता है कि कहीं कुछ गलत है। तुम जब भी नृत्य कर रहे हो होते हो, तुम्हें यह लगने लगता है कि तुम कुछ गलत कर रहे हो। तुम जब भी हंसते हो, तो कभी खुलकर उन्मुक्त रूप से हंसते भी नहीं, क्योंकि अपने गहरे में कोई चीज तुम्हें वापस अपनी ओर खींचते हुए जैसे तुमसे पूछ रही होती है—'' तुम आखिर यह क्या मूर्खता कर रहे हो?"

अपने बचपन में जब कभी तुम प्रसन्न होते थे, तो वहां कोई व्यक्ति तुम्हें यह सिखाता था कि जीवन कोई खेल या हंसी मजाक नहीं है, बंद करो खी—खी करते हुए दांत दिखाना। गम्भीर हो जाओ। आखिर तुम कब

परिपक्व बनोगे? विकसित होना सीखो। बहुत हो चुका यह सब कुछ। अब बचपने की यह सभी व्यर्थ आदतें छोड़ो।

कोई न कोई हमेशा ही तुम्हारे चारों ओर तुम्हें कुछ न कुछ शिक्षा देने के लिए मौजूद होता था। वे लोग स्वयं तो भटके हुए थे ही। वे स्वयं आनंदित हो ही नहीं सकते थे, इसलिए वे दूसरों को भी खुश होने की अनुमति नहीं दे सकते थे। इसी तरह से पीढ़ी दर पीढ़ी, ये बीमारियां एक दूसरे को हस्तांतरित की जाती रहीं।

तुम अपने स्वयं के जीवन को देखो, जरा आंखें खोल कर देखो। पूरा अस्तित्व उत्सव मना रहा है। ये वृक्ष उदास और गम्भीर नहीं है और न यह पक्षी ही गम्भीर है। नदियां और सागर आदिम उल्लास से उफन रहे हैं और हर कड़ी वहां एक लीला चल रही है, हर कहीं प्रसन्नता और आनंद है। जरा अस्तित्व का निरीक्षण करो, उसका एक भाग बनकर उसकी धड़कनें सुनो। तब तुम तुम एक बाउल बन जाओगे, तब तुम एक प्रेमी बन जाओगे, क्योंकि केवल इस लीला के प्रति एक गहरा सम्मान रखते हुए ही प्रेम जीवित रह सकता है। गंभीर मन के साथ प्रेम नहीं रह सकता। गम्भीर मन के साथ तर्क वितर्क की संगति बैठ जाती है। कभी भी गम्भीर या उदास मत रहो। मैं यह नहीं कह रहा कि तुम निष्कपट और ईमानदार मत बनो। ईमानदार बनो, लेकिन गम्भीर और उदास होकर नहीं। ईमानदारी और निष्कपटता कुछ और ही चीज है, और गम्भीरता पूर तरह एक अलग चीज है। ईमानदार और निष्कपट बनो अस्तित्व के साथ, तभी तुम एक सच्चे और प्रामाणिक बनोगे, तुम इस ब्रह्माण्डीय लीला के एक भाग बन जाओगे।

बाउल गाते हैं:

तुम प्रेम की राहों पर
अपने ऊपर चुराये हुए लूट का माल लादे हुए
बिना चोट खाये कैसे चल सकते हो?
इस वृंदावन में
(जहां लीला हो रही है)
प्रेम करना ही पूजा और आराधना है।

वृंदावन वह पावन भूमि है, जहां कृष्ण ने अपने प्रेमी मित्रों गोपों और गोपिकाओं के साथ लीलाएं कीं, जहां उन्होंने नृत्य किया, और जहां उन्होंने रास रचाया। यह शब्द ' रास ' बहुत सुंदर है। इसका अर्थ है दिव्य अक्ल और दिव्य नृत्य।

तुम प्रेम की राहों पर
अपने साथ चुराये हुए लूट का माल लिए हुए
बिना चोट खाए कैसे चल सकते हो?
इस वृंदावन में
प्रेम करना ही पूजा और आराधना है
जैसे अस्तित्व सभी भौतिक औरनैतिक प्रदूषणों से मुक्त होकर आकाश में विद्युत सा दीप्तिवान है।
वैसे ही प्रेम, वासना का अतिक्रमण कर परमानंद को जन्म देता है।
सांस की धौंकनी से जीवन की अग्नि में
अस्थिर पारे का शोधन करो।

पारे जैसे अस्थिर, द्रव्य का भी शोधन किया जा सकता है। इसलिए वासना को ही क्यों नहीं शुद्ध किया जा सकता है? फिक्र करो ही मत। तुम्हारे प्रेम का वहां एक केंद्र हो, एक लक्ष्य हो तुम्हारे तीर के लिए कोई

निशाना हो और वासना का अतिक्रमण ही प्रेम है। योग कहेगा—'' वासना से लडों तभी उसका अतिक्रमण हो सकेगा, तभी तुम उसके पार जा सकोगे। यह एक नकारात्मक पहुंच है। बाउल कहते हैं : प्रेम, और प्रेम के द्वारा ही तुम वासना के पार हो जाते हो। यह है विधायक पहुंच।''

ओ मेरे मौन सदगुरु।

ओ मेरे मालिक।

मुझे बताओ, वह कौन सी पूजा है।

जो मेरी प्रियतम के कंवल को खिलते देखने को

मेरी आंखों खोल दो?

चांद और सितोर भी

बिना कोई ध्वनि किए मौन शाश्वत रूप से उसकी प्रदक्षिणा कर रहे हैं

ब्रह्मांड का प्रत्येक घटना चक्र

इस अस्तित्वगत प्रेम के

महान आश्चर्य का स्वागत करते हुए

मौन बना उसकी प्रार्थना करता है।

यह वही है, जिसे भौतिक विज्ञानके विशेषज्ञ ' विद्युत—चुम्बकीय ऊर्जा— क्षेत्र ' कहते हैं। इसी को धार्मिक लोग, परमात्मा, और बाउल प्रेम कहते हैं।

ब्रह्मांड का प्रत्येक घटना चक्र

इस अस्तित्वगत प्रेम को आश्चर्य से निहारता

मौन बना उसकी प्रार्थना करता है।

वृक्ष, पृथ्वी के प्रेम में मदहोश हैं, और पृथ्वी वृक्षों से प्रेम करती है। पक्षियों को वृक्षों से प्रेम है और वृक्ष पक्षियों को प्रेम करते हुए उन्हें आश्रय देते हैं। पृथ्वी, आकाश के प्रेम में है और आकाश प्रेम में पृथ्वी को अता है। इस पूरे अस्तित्व में प्रेम का असीम सागर उफन रहा है। तुम भी प्रेम को अपनी पूजा बना लो और प्रेम को अपनी प्रार्थना बन जाने दो।

आज जो गीत गाना है, वह बहुत छोटा सा है, लेकिन वह एक बहुत कीमती हीरा है। और बाउल जानते हैं इसे ठीक से कैसे अभिव्यक्त किया जाए। पिछली रात ही में डिगौले की जीवनी पड़ रहा था। वह अपनी मेज पर एक सुत्र रखता था। मुझे वह बहुत प्यारा लगा। बाउल सुनते, तो वे भी उसकी प्रशंसा करते।

वह सूत्र है—'' संक्षेप में अपने को अभिव्यक्त करने की शैली हो, विचारों में परिपूर्ण शुद्धता हो और जीवन में निर्णय लेने की क्षमता हो।

जो व्यक्ति प्रेम के अनुभव से अनजाना है,

उसके साथ सम्बंध जोड़कर तुम कैसे किसी निष्कर्ष पर पहुंच सकते हो?

उल्व सूर्य की किरणों से अंधा बना

बैठा हुआ एकटक आकाश की ओर देखता रहता है।

बाउल कहते हैं—'' उसे अभिव्यक्त करना असम्भव है।''

जो व्यक्ति प्रेम के अनुभव से अनजाना हो

उसके साथ सम्बंध जोड़करतुम कैसे किसी निष्कर्ष पर पहुंच सकते हो? किसी ऐसे व्यक्ति से, जो प्रेम को नहीं जानता है, उसके साथ सम्बाद जोड़ना असम्भव है। हम उससे कैसे परमात्मा के बारे में बात कर सकते हैं?

हम कैसे उससे प्रार्थना के सम्बंध में अर्थपूर्ण बातचीत कर सकते हैं? हम कैसे उसके साथ सत्य के बारे में कुछ भी चर्चा कर सकते हैं? क्योंकि वह पूरी तरह अपने हृदय के बारे में अचेत है। वह अपनी खोपड़ी और बुद्धि में ही रहता आया है, वह उस भाषा को ही नहीं जानता। वह उस उल्ल की तरह है, जो सूर्य की किरणों से अंधा बना हुआ, बैठा हुआ एकटक आसमान में देखता रहता है।

भारतीय पौराणिक कथाओं में उल्लू को ज्ञान, विद्या और विद्वता और प्रतीक माना जाता है। जो व्यक्ति बहुत अधिक विद्वान हैं, बहुत अधिक बुद्धि जाल में उलझे हैं, जिन्होंने बहुत सी सूचनाएं और आंकड़े इकट्ठे किए हैं, वे लोग उल्लूओं के ही समान हैं। वे यह नहीं देख सकते कि सूर्योदय हो चुका है। वे लोग सूरज की ओर एकटक देखे चले जाते हैं। लेकिन फिर भी वे प्रकाश की किरणों से अनजाने बने रहते हैं।

बाउल कहते हैं, जो व्यक्ति केवल बुद्धि में उलझा है वह पंडित है और विद्वान है, जो मनुष्य केवल विचारों, सिद्धांतों, उपदेशों ओर मतों की भाषा में ही सोचता है, जिसने वेद कुरान और बाइबिल कंठस्थ कर लिए हों, वह व्यक्ति प्रेम के बारे में कोई भी बात समझने में समर्थ न हो सकेगा। यदि तुम उससे कुछ कहो भी, तो वह तुरंत उसे गलत ही समझेगा। यदि तुम उससे प्रेम के बारे में कुछ बातचीत करो, तो वह उसे एक सिद्धांत बना देगा और प्रेम की कभी भी सिद्धांत के रूप में व्यवस्था नहीं की जा सकी। यदि तुम उससे प्रार्थना के बाबत कुछ भी कहो, तो वह प्रार्थना को भी जांच का एक विषय बना देगा और प्रार्थना, जांचने वाला विषय है ही नहीं। एक तर्कशील व्यक्ति हमेशा प्रत्येक चीज को अपने तर्क के दायरे में ले जाता है।

मैंने सुना है—

प्रभु— भक्ति से एक पादरी जब जीसस की पवित्र भूमि गेलेली के समुद्र तट पर पहुंचा तो उसका हृदय बहुत रोमांचित था—'' शायद ये ही वे लहरें होंगी, जिन्होंने जीसस के चरणों को स्पर्श किया होगा। तभी एक नाविक उनके पास आया। पादरी ने अपने हाथों में ली हुई अरबी— अंग्रेजी भाषा कोष की सहायता से चुने हुए अरबी शब्दों में उससे बातचीत शुरू की।''

नाविक ने शिकायती लहजे में कहा—'' आखिर मामला क्या है? क्या आप अमेरिकन भाषा में बात नहीं कर सकते?"

वह नाविक एक अमरीकन ही था जो अपनी गुजर बसर के लिए नौका चालन के कार्य में लगा था।

पादरी ने हर्ष और आश्चर्य से चिल्लाते हुए कहा—'' तो यही है वह गेलेली का वह सागर, जहां हमारा मुक्तिदाता जीसस पानी के ऊपर चला था।''

" हां! यह यही स्थान है वह।''

" तुम ठीक उस जगह ले जाने के लिए मुझसे कितनी धनराशि लोगे?" देखने में जैसे कि आप एक पादरी दिखाई देते हैं मैं आपसे वहां तक जाने के लिए कुछ भी नहीं लूंगा।

उस स्थान पर पहुंचने के बाद, परम संतोष से पादरी ने अपने चारों ओर देखा।'

अपने साथ लाई बाइबिल के मूल पाठ और टिप्पणियों को पढ़ा और अंत में नाविक को संकेत से कहा कि अब उसे वापस ले चले।''

" आपको वापस तट तक ले जाने के लिए मैं आपसे बीस डालर लूंगा।''' लेकिन तुमने तो कहा था कि तुम मुझसे कुछ भी चार्ज नहीं करोगे।''' वह तो आपको यहां तक लाने के लिए कहा था।''

और तुम प्रत्येक से वापस ले जाने के लिए बीस डालर ही लेते हो?

" हां इतना ही था, या इससे और अधिक।''

" फिर ठीक है।" यह कहते हुए उसने फिर अपनी जेब में रखी बाइबिल को देखते हुए कहा—" कोई आश्चर्य की बात नहीं, कि हमारा मुक्तिदाता इन्हीं हालात में नाव से उतर कर पानी पर चला होगा।"

यहां प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक चीज का अपने— अपने तरीके से अर्थ निकाले जा रहा है। हमारी व्याख्याएं हमारी अपनी व्याख्याएं हैं।

एक दिन ऐसा हुआ : मुल्ला नसरुद्दीन ने ठीक आश्रम के गेट के ठीक सामने खड़ी टैक्सी को अभिवादन करते हुए कहा—" ड्राइवर! मुझे आश्रम ले चलो।" चालाक ड्राईवर ने एक पैर से फुदकते हुए मुल्ला को टैक्सी में बैठाकर घृणा से एक्सलेटर दबाया, और फिर दरवाजा खोलकर बाहर निकला और पैसे मांगते हुए कहा—" आप ठीक आश्रम के सामने खड़े हैं।"

" ठीक है।" झुंझलाते हुए मुल्ला ने कहा—" लेकिन अगली बार इतनी तेज रफ्तार से टैक्सी मत चलाना।"

यदि तुम शराब पिए हुए हो, तब तुम प्रत्येक चीज की व्याख्या अपनी मदहोशी के द्वारा ही करोगे। यदि तुम्हें बुद्धि और तर्क का नशा है, तो प्रेम, तुम्हारी खोपड़ी में प्रवेश न कर सकेगा। तब तुम्हारा सिर बहुत मोटी चमड़ी से ढका ठोस होना ही चाहिए। प्रेम के लिए उसमें प्रवेश करना असम्भव है। तब तुम उस उल्ल के ही समान हो।

बाउल कहते हैं कि संवाद होना तो तभी सम्भव है जब दोनों के बीच भाषा समान हो। इसलिए यदि तुम बाउलों को समझना चाहते हो तो तुम्हें किसी व्यक्ति से प्रेम करना होगा क्योंकि बिना प्रेम किए हुए प्रेम को समझने का और कोई रास्ता है ही नहीं। यदि तुम किसी प्रार्थना करने वाले व्यक्ति को समझना चाहते हो, तो प्रार्थना करो। प्रार्थना में उतर जाओ, उसका जरा स्वाद लो। सारे तर्क वितर्क उठाकर कर अलग रख दो। कभी यह कोशिश मत करो कि पहले तर्क के द्वारा प्रार्थना का औचित्य समझ लिया जाए तब तुम प्रार्थना करोगे, तब किसी व्यक्ति ने आज तक प्रार्थना की ही नहीं है क्योंकि पहली बात यह है कि ऐसा करना असम्भव है, इसे किया ही नहीं जा सकता है।

कोई भी व्यक्ति तर्क द्वारा तुम्हें यह नहीं समझा सकता कि प्रार्थना करना अर्थपूर्ण कृत्य है। तुम्हारे मन का तार्किक ढांचा तुम्हें ऐसा करने से रोकता है। इसलिए तुम एक असम्भव बात पूछ रहे हो। यदि तुम कहते हो—" पहले तुम्हें यह सिद्ध करना होगा कि प्रेम ही परमात्मा है, तभी मैं प्रेम करूंगा।" तब तुम्हें प्रतीक्षा करनी होगी, और यह प्रतीक्षा अनंत होगी। और वह कभी भी घटेगा नहीं। जिस दिन प्रेम होगा, वह उसी तरह से घटेगा, केवल जिस तरह वह घट सकता है, और उसके घटने का एक ही तरीका है कि तुम अपनी बुद्धि और तर्क एक ओर उठाकर अलग रख दो। तर्क करना अप्रासंगिक है। तुम बस प्रेम करो, जरा उसका स्वाद लो। प्रेमियों के संसार में जाकर रहो। अपने चारों ओर उन्हें नाचते हुए गीत गाने दो। उसे अपना अनुभव बनाओ, और वही प्रमाण बनेगा और वही बनेगा तुम्हारा दृढ़ विश्वास। तब तुम अपने तर्क का प्रयोग करना और तुम्हारा तर्क उसे सिद्ध करना शुरू कर देगा, लेकिन उससे पहले नहीं। पहले उसका स्वाद लो। उसका अनुभव करो, तब उसके बाद तर्क—वितर्क करो। तर्क—वितर्क एक बहुत अच्छा और भला सेवक है, लेकिन उसका मालिक होना बहुत बुरा है।"

जो व्यक्ति प्रेम के अनुभव से अनजाना है
उसके साथ सम्बंध जोड़कर
तुम कैसे किसी निष्कर्ष पर पहुंच सकते हो?
उल्लू सूर्य की किरणों से अंधा बना

बैठा—बैठा एकटक आकाश को देखता रहता है।

प्रेम, तुम्हारे अस्तित्व के गहनतम केंद्र में एक मौलिक परिवर्तन लाता है। सिर और बुद्धि तो परिधि पर हैं। बुद्धि तो सागर की लहरों की भांति है और प्रेम, सागर की गहराई जैसा है। सागर की गहराई में वहां कोई भी लहरें नहीं है और लहरों के अंदर कोई गहराई नहीं है। विचार, लहरों के समान हैं, जो केवल परिधि पर रहते हैं। लहर के लिए गहराई को जानने का लहर बने हुए ही कोई रास्ता है ही नहीं। लहर गहराई को जान सकती है, लेकिन तब उसे गहराई में खो जाना होगा। तब फिर वह एक लहर न रह सकेगी, जो वापस लौटकर फिर सतह पर आ सके। लेकिन तब वह लहर स्वयं एक बाउल बन जाएगी, कोई दूसरी लहर उसे न सुन सकेगी। दूसरी लहरें उस लहर को पागल कहेंगी, क्योंकि वह गहराइयों के बाबत बतलायेगी और लहरें तो केवल उथलापन ही जानती हैं, वे गहराई को नहीं जानती।

प्रेम एक अनुभव है—स्वाद के समान वह अस्तित्वगत है। यदि तुमने नमक को कभी नहीं चखा, तो उसे स्पष्ट करने का कोई तरीका है ही नहीं। यदि तुमने उसे चखा है, तो उसे भूल जाने का भी कोई रास्ता नहीं है। यदि तुमने उसे चखा भी है, तब भी किसी ऐसे अन्य व्यक्ति को जिसने उसे पहले कभी नहीं चखा, उसे स्पष्ट कर समझाने का कोई रास्ता है ही नहीं।

किसी भी ऐसे व्यक्ति को जिसने कभी भी नमक जैसी चीज जानी ही नहीं, तुम कैसे उसके बारे में कुछ बतला सकते हो? तुम कहोगे क्या? ऐसा नहीं कि तुम उसके बारे में जानते नहीं। तुम जानते हो, वह ठीक तुम्हारा जुबान की नोंक पर रखा है। तुम जानते हो कि खारापन का स्वाद कैसा है, लेकिन तुम दूसरे को उसे बताओगे कैसे? केवल एक ही काम किया जा सकता है कि तुम उसे थोड़ा सा नमक भेंट करो। लेकिन यदि वह कहता है—'' पहले मुझे समझा तो दो कि वहां नमक जैसी कोई चीज होती भी है, केवल तभी मैं उसे तुमसे लूंगा। यदि वह इतना सावधान है, तो उसके लिए उसे जानना असम्भव है। तब उसे नमक का अनुभव जाने बिना ही रह जाना पड़ेगा।''

और प्रेम का अनुभव किए बिना जीना, मृतक के समान जीना है— '' क्योंकि केवल एक प्रेमी ही अपनी मृत अहंकार और अपनी निजता को छोड़ता चला जाता है, क्योंकि केवल एक प्रेमी ही क्रियाशील होता है और वही निरंतर इधर उधर घूमता रहता है। तर्क मुर्दा है और प्रेम जीवंत है।''

मुझे ब्राउनिंग का एक सूत्र याद आ रहा है। वह कहा करता था— '' जीवन की प्रगति होती है। जब हम अपने मृत अहंकार की सीढ़ियों पर कदम रखते हुए उच्चतम चीजों को पाने के लिए आगे बढ़ते हैं।''

तर्क—वितर्क अतीत की सम्पत्ति है, और प्रेम का सम्बंध भविष्य से है। तर्क केवल पुराने घेरे में ही बार—बार घूमता रहता है। प्रेम नये—नये क्षेत्रों में गतिवान होता है। अपने आप में सीमित रहकर कभी जड़ मत बनो और प्रेम करते हुए भी कभी जड़ होकर न रहो। प्रेम हमेशा परमानंद देता है। थिर खड़े हुए रक्त प्रवाह रुक जाता है, जड़ता आती है, पर प्रेम तो परम आनंद में एक बरतन और रास है।

घूमते हुए नृत्य करते रहो। कोई कभी भी कहीं पहुंचता ही नहीं, यद्यपि एक है, जो हमेशा पहुंच रहा है।

आज बस इतना ही।

दसवां प्रवचन

वह गाता है, नाचता है और आंसू बहाता है

दिनांक 30 जून सन्1976; श्री ओशो आश्रम पूना।

प्रश्नसार:

पहला प्रश्न : प्यारे ओशो! बाउलों को किसने जन्म दिया? उनकी शुरुआत कब कैसे हुई?

कृपया स्पष्ट करने की अनुकम्पा करें।

बाउल जैसे लोगों को किसी ने जन्म नहीं दिया। बाउलों जैसे धर्म, धर्म से अधिक घटनाएं हैं। गुलाबों को किसने उत्पन्न किया? उन गीतों को किसने रचा, जो पक्षी हर सुबह गुनगुनाते हैं? नहीं, हमें ऐसे प्रश्न कभी पूछने ही नहीं चाहिए। ऐसा यहां हमेशा ही होता है।

दार्शनिक विचार धाराओं का जन्म होता है, तुम इस्लाम उसके अधिकृत उपदेशकों और धर्मों के जन्म के बारे में खोज कर सकते हो। बाउल का कोई धर्म या पंथ नहीं है। वह एक सहज स्वाभाविक जीवन—शैली है। लोग हमेशा से इसी तरह ही रहते आये हैं। जो लोग वास्तव में जीवन को जीते हैं वे हमेशा इसी तरह से रहते आये हैं। ऐसे लोग जो जीवंत बने रहते आए हैं किसी और तरह से रहते हुए जीवंत हो ही नहीं सकते थे। चाहे उन लोगों को बाउलों के रूप में जाना जाता रहा हो अथवा नहीं, यह बात व्यर्थ है। इस नाम का स्रोत कहीं भी हो सकता है, लेकिन मेरा उसके साथ कोई सम्बंध ही नहीं है।

इस शब्द का एक ही अर्थ है—'' पागल मनुष्य अस्तित्व के प्रेम में बावरा व्यक्ति, जीवन रस में पागल मनुष्य लेकिन यह दीवानापन उसमें हमेशा ही से रहा है। और यह अच्छा है कि कुछ लोग ऐसे दीवाने हमेशा ही से रहे हैं जिससे हम लोगों ने अस्तित्व की जड़ों के साथ अपना सम्बंध नहीं खोया है। यह उन लोगों के कारण है, अन्यथा हम, हम न होते। वे लोग गीत गा सकते हैं, नाच सकते हैं और प्रेम से जी सकते हैं। यह लोग ही अपने केंद्र पर होते हुए सच्चे और प्रमाणिक हैं।'' इसलिए मैं नहीं जानता उन लोगों की शुरुआत कब से हुई। यदि वहां कोई प्रारम्भ था तो आदि काल से ही उन्होंने जरूर ही शुरुआत की होगी।

पहले मनुष्य के साथ जरूर रूप से यह शुरुआत हुई होगी, क्योंकि उनकी पूरी शिक्षा सारभूत मनुष्य के बारे में ही है। वास्तव में धीमे— धीमे वे विलुप्त हो गए। शुरू में वे लोग जरूर ही बहुत रहे होंगे, लेकिन धीमे—धीमे वे कम होते गए। दिन प्रतिदिन उनकी संख्या कम होने लगी, निरंतर कम और कम होती गई, क्योंकि यह संसार अधिक सांसारिक होता गया, और बहुत अधिक चालाक और बेईमान बनता गया। ऐसा संसार सहजता सरलता से हृदय में जीने की अनुमति देता ही नहीं। यह संसार बहुत अधिक महत्वाकांक्षी और प्रतियोगितात्मक बन गया है। वह उस सब को भुला बैठा है, जो सुंदर है, वह उसे भी भुला बैठा है जिसका उत्पादन नहीं किया जा सकता है। वह भूल बैठा है कि कैसे समर्पित होकर उस शाश्वत सत्य को संयम से घटित होने की स्वतंत्रता दी जाए। वह परमानंद की भाषा ही भूल चुका है।

हम जितना अधिक वापस पीछे की ओर चलें, हमें उतने ही अधिक बाउल मिलेंगे। शुरू—शुरू में तो पूरी मनुष्यता ही बाउलों जैसी निश्चित रूप से रही होगी। तुम अब भी इसे देख सकते हो। प्रत्येक बच्चा जन्म से बाउल जैसा ही होता है, और तब बाद में वह प्रदूषित हो जाता है। वह जीवन के साथ प्रेम में पागल होकर ही फिर से जन्म लेता है, लेकिन हम उसका विकास करते हैं, उसकी कांट —छांट करते हैं और उसके अस्तित्व को

सरलता और सहजता से खिलने की अनुमति नहीं देते। हम उसे आदतों और नैतिक अनुशासन के ढांचे में ढालकर उसे एक विशिष्ट चरित्र देते हैं।

बाउलों के पास चरित्र नहीं होता। वे चरित्र से नहीं, चेतना से जीने वाले मनुष्य हैं। वास्तव में एक होशपूर्ण व्यक्ति का कभी कोई चरित्र होता ही नहीं। चरित्र एक जड़ता है, चरित्र, पूर्व धारणाओं और भ्रमों से भरी एक चित्तवृत्ति है, और चरित्र एक कवच है। तुम्हें केवल वही कार्य करना है, जिसकी चरित्र तुम्हें अनुमति दे। चरित्र कभी भी सहज स्वाभाविक नहीं हो सकता। चरित्र हमेशा वर्तमान पर अतीत के द्वारा थोपा जाता है। तुम्हें जीवन को अपने ढंग से जीने और प्रति उत्तर देने की स्वतंत्रता नहीं होती, तुम केवल तदनुसार कार्य करते हो।

बाउल स्वयं प्रवर्तित सहज मानुष में विश्वास करते हैं बाउल कहते हैं, सारभूत मनुष्य के लिए स्वयं प्रवर्तित और स्वाभाविक बनना ही एकमात्र मार्ग है। स्वाभाकि बनना ही उस मार्ग पर चलने जैसा है, जो सारभूत मनुष्य तक जाता है। प्रत्येक बच्चा बाउल ही होता है। इसलिए जैसाकि मैं देखता हूं कि शुरू—शुरू में, यदि वहां इसकी शुरुआत हुई होगी, पूरी मनुष्यता बाउलों जैसी ही सच्ची, प्रमाणिक, ईमानदार और गहरे प्रेम में जरूर ही पागल रही होगी और उत्सव आनंद बनाने की परमात्मा द्वारा दी गई भेंट और अवसर को पाकर खुश होगी।

जीवन पर हमारा कोई दावा नहीं है। क्या तुमने कभी इस बात पर गौर किया है कि हमारे पास दावा करने जैसा कुछ है ही नहीं। यदि हम थे ही नहीं, तो न तो हमारे वहां होने का ही कुछ उपाय होता और न किसी तरह की अपील करने का कोई रास्ता होता। उसके विरुद्ध शिकायत करने का भी कोई उपाय न होता। यदि तुम दो ही नहीं, तो तुम नहीं हो। अगले ही क्षण तुम विलुप्त हो सकते हो। जीवन बहुत नाजुक है, और बिना किसी दावे का है। हमने इसे अर्जित नहीं किया है। जब हम कहते हैं कि यह एक उपहार है, तो यही इसका अर्थ है। उपहार कुछ इस तरह की चीज होता है, जिसे तुम अर्जित नहीं करते और इसीलिए तुम्हारा उस पर कोई अधिकार नहीं होता। तुम यह नहीं कह सकते कि उसे पाने का तुम्हें कोई अधिकार है। एक उपहार तो कुछ ऐसी चीज है, जो तुम्हें दी गई है।

जीवन एक उपहार है। वह तुम्हें बिना किसी कारण दिया गया है। तुम उसे अर्जित नहीं कर सकते थे क्योंकि तुम थे ही नहीं, तो तुम अर्जित करते कैसे? जीवन एक उपहार है, लेकिन हम इसे भूले चले जाते हैं। और हम उसके प्रति धन्यवाद तक प्रकट नहीं करते। हम उसके प्रति कृतज्ञ भी नहीं होते। निश्चित रूप से हम एक हजार एक शिकायतें करते हैं, जिनके बाबत हम यह सोचते हैं कि हम जीवन में उन्हें चूके जा रहे हैं, लेकिन हम कभी भी स्वयं जीवन के प्रति अहोभाव का अनुभव नहीं करते।

तुम्हें यह शिकायत हो सकती है कि तुम्हारा घर अच्छा नहीं है बरसात आ गई है और वह टपक रहा है। तुम्हें शिकायत हो सकती है कि तुम्हारा वेतन पर्याप्त नहीं है। तुम्हें शिकायत हो सकती है कि तुम्हारे पास एक सुंदर शरीर नहीं है। तुम शिकायत कर सकते हो कि तुम्हारे साथ ऐसा या वैसा क्यों नहीं हो रहा? तुम्हारी एक हजार एक शिकायतें हो सकती हैं। लेकिन क्या कभी तुमने इस बात पर ध्यान दिया है कि तुम्हारे पूरे जीवन की सभी संभावनाएं कि तुम ठीक से सास ले सकते हो, देख, सुन और समझ सकते हो, स्पर्श कर सकते हो, प्रेम कर सकते हो और प्रेम पा सकते हो, क्या यह सब कुछ बहुत बड़ा उपहार नहीं है? यह सब कुछ तुम्हें दिया गया है, क्योंकि परमात्मा के द्वारा बहुत कुछ तुम्हें दिया गया है, क्योंकि परमात्मा के पास बहुत कुछ देने को है, यह इस कारण नहीं है कि तुमने इसे अर्जित किया है।

बाउल एक कृतज्ञता और अहोभाव से जीता है। वह गाता और नाचता है— यही उसकी प्रार्थना है। वह प्रेम में रोता है। वह आश्चर्य करता है कि उसे यह जीवन क्यों और किसके लिए दिया गया है, आखिर ऐसा क्या है, जो उसे आकाश में इन्द्रधनुष, और पृथ्वी पर खिलते फूल और सुंदर तितलियों को देखने का सौभाग्य मिला है, आखिर ऐसा क्या है जिससे उसे बहती सरिताओं, चट्टानों, और इतने लोगों से मिलने की अनुमति मिली हुई है? आखिर क्यों और किसलिए? क्योंकि जीवन इतना अधिक सरल और स्पष्ट है और उसमें छिपी हुई अनंत भेटों को भूलने की तुम्हारी प्रवृत्ति बन गई है।

एकदम शुरुआत में प्रत्येक व्यक्ति निश्चित रूप से बाउल ही रहा होगा, क्योंकि तब वहां मनुष्य को प्रदूषित करने, सभ्यता का जन्म नहीं हुआ था, उसे बरबाद करने के लिए वहां कोई समाज न था। वहां पुरोहित और पूजाघर नही थे, जो तुम्हें चरित्र देकर तुम्हारी राहें तंग कर देते। शुरू—शुरू में तो जीवन जरूर ही प्रवाहमान रहा होगा। प्रत्येक व्यक्ति जरूर ही स्वयं अपने छंद से स्वच्छंद जीता होगा इसीलिए नहीं कि वह परमात्मा के दस आदेशों अथवा किन्हीं शास्त्रों का पालन कर रहा था। तब न कहीं कोई धर्म ग्रंथ या शास्त्र थे और न दस—दैवी आदेश ही थे। तब तक दस आज्ञाएं ग्रहण करने वलो मोजेज का जन्म भी न हुआ था। तो शुरू—शुरू में प्रत्येक व्यक्ति जरूर बाउल ही रहा होगा और अब भी प्रत्येक बच्चा, जब वह जन्मता है, बाउल ही होता है। एक बच्चे का निरीक्षण करते हुए समझो कि एक बाउल बनना होता क्या है, वह कितनी उल्लेखनीय घटना है अस्तित्व की? देखो, बच्चे बिना किसी कारण खुश हो रहे हैं, आनंद से किलाकारियां भर रहे हैं। अतिरेक से बहती ऊर्जा से इधर—उधर कुलाचें भर रहे हैं। जब तुम एक बाउल बनते हो तो फिर एक छोटे बच्चे जैसे हो जाते हो।

एक बाउल बनना एक आदिम मनुष्य जैसा है। बाउल बनने से व्यक्ति अपनी आदिम मूल प्रवृत्तियों का फिर से दावेदार बनता है। उसका फिर से नया जन्म होता है, पुनर्जन्म होता है। उसमें एक बचपन घटता है। तुम्हारा शरीर और मन पुराना हो सकता है लेकिन तुम्हारी चेतना, शरीर और मन के बन्धनों से मुक्त हो जाती है। तुम्हारा एक अतीत है और तुम्हारे पास बहुत से पुराने अनुभव भी होंगे लेकिन फिर वे तुम्हारे लिए बोझ नहीं बनते। तुम उन्हें उठाकर एक तरफ रख देते हो। जब आवश्यकता होती है, तुम उनका प्रयोग कर लेते हो। अन्यथा चौबीस घंटे तुम उनको सिर पर निरंतर लादे घूमते नहीं, यही है वह मुक्ति : यह तुम्हें अस्तित्व से जीवन से पुष्पों और प्रेम से मुक्त नहीं करती, यह तुम्हें मुक्त करती है तुम्हारे अतीत से। वास्तव में तुम जितने अधिक मुक्त होते हो, तुम उतने ही अधिक परमात्मा के प्रेम में डूबते हो। तुम जितने अधिक मुक्त होते हो तुम उतने अधिक प्रेम करने और उत्सव आनंद मनाने में समर्थ होते हो।

इसलिए मुझसे यह पूछो ही मत, किसने जन्म दिया बाउलों को। ऐसे लोगों को कोई भी जन्म देने वाला होता नहीं। मेरा पूरा जोर स्वाभाविकता और सहजता पर है। वास्तव में आइंस्टीन के सापेक्षवाद के सिद्धान्त के लिए आइस्टीन जैसे व्यक्ति की ही जरूरत होती है। बिना उस जैसे व्यक्ति के ऐसे सिद्धान्तों का जन्म हो ही नहीं सकता, बिना उस जैसे व्यक्ति के ऐसे सिद्धान्त अस्तित्व में होते ही नहीं। सापेक्षवाद जैसे जटिल सिद्धान्त के लिए एक बहुत अधिक जटिल और सूक्ष्म मन की आवश्यकता होती है।

बाउल कोई सिद्धान्त नहीं होते। वे बस कहते हैं—'' तुम्हें जिन सब चीजों की जरूरत है वे सब कुछ तुम्हारे पास पहले से ही हैं।'' यह प्रश्न बहुत होशियार बनने का नहीं है, यह प्रश्न तो बस सरल और सहज बनने का है। बाउल बनने के लिए किसी प्रतिभा की कोई जरूरत नहीं है। यही इसका सौंदर्य है। कुशाग्र बुद्धि होने की कोई जरूरत नहीं है। एक बच्चा बनने के लिए किसी बुद्धि की जरूरत होती ही नहीं। संत और बेवकूफ सभी बच्चे

के रूप में ही जन्म लेते हैं। इसके किसी प्रतिभा की कोई जरूरत नहीं होती। बचपना, प्रत्येक व्यक्ति का बस सहज स्वभाव है।

बाउल बनने के लिए कुछ भी नहीं चाहिए। वास्तव में जिस क्षण, जब तुम्हें किसी चीज की जरूरत नहीं होती, तुम बाउल बन जाते हो। जिस क्षण तुम भारमुक्त और भारहीन होते हो और तुम अपने पास कोई भी चीज नहीं रखते, तुम्हारा कोई अतीत नहीं होता, तुम एक बाउल होते हो। नहीं इस तरह की चीजें और इस तरह के व्यक्ति कभी पैदा नहीं किए जाते। कोई भी व्यक्ति उन्हें गढ़ता नहीं, वे तो स्वयं से एक घटना की तरह घटते हैं, वे बस होते हैं। वे प्रकृति के एक भाग हैं।

दूसरा प्रश्न :

प्यारे ओशो कई बार मैं आपके शब्दों को समझ नहीं याता, क्योंकि आपके शब्दों की ध्वनि झरने की भांति मेरे ऊपर झरती और बरसती है। आपकी ध्वनि ऊर्जा मुझ पर आधात करती हुई पूरी तरह मेरे अंदर मुझे भर देती है, मैं अपने मेरुदण्ड में एक धक्के की भाति एक उत्तेजन, कंम्पनों और तरंगों का अनुभव करता हूं! क्या आपके शब्दों के अर्थ के लिए मुझे सावधानी से सजग बनना चाहिए।

ऐसी स्थिति में शब्दों के अर्थ के सम्बंध में तुम्हें सावधान बनने की कोई जरूरत नहीं है, यह एक अवरोध ही बनेगी। यदि तुम मेरे शब्दों की ध्वनि के साथ लयबद्ध होने का अनुभव करते हो, तो वही उसका अर्थ है। यदि तुम महसूस करते हो कि तुम नूतन ऊर्जा में सान कर रहे हो और यदि तुम्हें रोमांच, कम्पन और स्पंदन का एक नया अनुभव हो रहा है, जिसे तुमने पहले कभी जाना नहीं, और यदि तुम अपने अस्तित्व में एक नए तरह के आयाम को उठता हुआ अनुभव कर रहे हो, और वह मेरे शब्दों की ध्वनि के कारण है तो मेरे बारे में भी सभी कुछ भूल जाओ। तब कुछ और की कोई आवश्यकता ही नहीं, तुम पहले ही उनका अर्थ पा गए।

उस ध्वनि के प्रपात में खान करना ही उसका अर्थ है, मेरुदण्ड में वह सिहरन और कम्पन ही उसका अर्थ है, वे स्पंदन और तरंगें जो तुम्हें ताजा बना रही हैं, वही उसका अर्थ है। तब शब्दों के सामान्य अर्थ के बारे में फिक्र करने की कोई जरूरत ही नहीं। तब तुम उसका गहन अर्थ पा रहे हो, तब तुम अर्थ के एक उच्चतम शिखर पर पहुंच रहे हो। तब तुम वास्तव में शीशी को नहीं, उसमें रखे रस को प्राप्त कर रहे हो। मेरे शब्दों का अर्थ तो, बस उस शीशी में रखा सार तत्व है।

यदि ऐसा तुम्हें घट रहा है, तो मेरे शब्द फिर तुम्हारे लिए शब्द ही नहीं रह गए वे अस्तित्वगत बन गए हैं। तब वे जीवंत हैं और एक हस्तांतरण बन गए हैं। तब मेरी और तुम्हारी ऊर्जा के बीच कोई चीज घट रही है। तब वहां कुछ ऐसी चीज हो रही है जिसे बाउल ' प्रेम ' कहते हैं।

उसे होने दो। शब्दों और उनके अर्थों के बारे में तुम सब कुछ भूल ही जाओ। इनको तुम उन बेवकूफ लोगों के लिए छोड़ दो, जो केवल शब्दों का संग्रह करते हैं और कभी उनके सारतत्व के सम्पर्क में नहीं आते। शब्द तो ठीक बाहर के खोलों जैसे हैं, उनके पीछे छिपा हुआ मैं तुम्हें एक महान संदेश भेज रहा हूं। ये संदेश बुद्धि से नहीं समझे जा सकते, सन्देशों में छिपा रहस्य तुम्हें अपने पूरे अस्तित्व से खोलना होगा। यह जो कुछ घट रहा है—'' यह सिहरन, कम्पन, स्पंदन और एक नई ताजा ऊर्जा का बरसना, यह सभी कुछ तुम्हारे अस्तित्व द्वारा उसी संदेश के रहस्य की गुत्थी को सुलझाने जैसा ही है। यही सच्चा श्रवण या सम्यक श्रवण है। यही है वास्तव में मेरे सान्निध्य में मेरे साथ होकर रहना, मेरी उपस्थिति में बस ' होना' भर।''

एक बार मैं अपने मित्र के साथ ठहरा हुआ था। उसके बगीचे में एक बहुत बडा पिंजरा था, और उस पिंजरे में उसके पास एक गरुड़ था। वह मुझे पिंजरे के पास ले गया और कहा—'' देखिए! कितना सुंदर गरुड़ पक्षी है? गरुड वास्तव में बहुत सुंदर था, लेकिन मैंने उसके लिए हृदय में एक पीड़ा महसूस की।''

मैंने अपने मित्र से कहा—'' यह असली गरुड़ पक्षी नहीं है।''

उसने कहा—'' आखिर आपके कहने का मतलब क्या है? यह असली गरुड़ है। क्या आप गरुड़ पक्षी को पहचानते नहीं?"

मैंने कहा—'' मैं उन्हें भली भांति जानता हूं लेकिन मैंने उन्हें आकाश में स्तवंत्र हवा के विरुद्ध, ऊंचे स्वर्ग की ओर उड़ते हुए ही जाना है। जिन्हें मैंने जाना है वे लगभग इस संसार के जैसे थे ही नही, वे अपने भार का संतुलन साधे स्वतंत्र

मुक्ताकाश के गहरे प्रेम में जैसे बह रहे थे। मैंने उन्हें परम स्वतंत्रता से सिर्फ उड़ते ही देखा है। यह गरुड़ तो गरुड़ ही है नहीं। क्योंकि पिंजरे में बंद गरुड़ के पास खुला आकाश कहां है और बिना स्वर्ग जैसी ऊंचाइयों पर बिना संतुलन साधे स्वतंत्रता से हवा में उड़ता हुआ यदि गरुड़ न हो, तो वह असली गरुड़ होता ही नहीं। उसकी वह पृष्ठभूमि कहां है पिंजरे में—मैं कहता हूं कि यह उसकी आकृति भर है।''

पिंजरे में बंद गरुड़ का असलीपन तो नष्ट हो गया। तुम पिंजरे में असली गरुड़ को कैद कर ही नहीं सकते, क्योंकि असली गरुड़ तो अत्यधिक स्वतंत्रता के साथ रहता है। इस पिंजरे में वह स्वतंत्रता कहां है? इसकी आत्मा तो जैसे है ही नहीं। सारभूत अस्तित्व तो लुप्त हो गया, जो यहां रह गया वह तो असार है। यह तो जैसे एक मृत गरुड़ है मृत गरुड़ से भी कहीं अधिक मृत और असहाय। इसे पिंजरे से मुक्त करने इसे सच्चा गरुड़ बनने का अवसर दो।''

जब मैं तुमसे बातचीत करता हूं तो मेरे शब्द गरुड़ के पिंजरे जैसे हैं, मेरे शब्द जैसे एक कैद में हैं। यदि तुम वास्तव में मुझे सुनते हो, तुम शब्दों के पिंजरे में से उसके सारभूत असली गरुड़ को मुक्त कर दोगे।

यह जो घट रहा है..... .यह रोमांच। तुम्हें स्वतंत्रता मिल रही है, तुम गरुड़ बनकर ऊंचे और ऊंचे चेतना के शिखर पर पहुंचो। तुमने पृथ्वी बहुत दूर छोड़ दी है। तुम उसके बारे में सब कुछ भूल चुके हो। जो साधारण था, वह पीछे छूट गया। खोल या पिंजरा छोड़ दिया तुमने और अब पूरा आकाश तुम्हारे सामने खुला है, तुम, तुम्हारे पंख और यह आकाश..... और इसका कोई अंत ही नही है। अब तो शाश्वत यात्रा हो चुकी है।

शब्दों और उनके अर्थों के बारे में सब कुछ भूल ही जाओ, अन्यथा पिंजरे से तुम्हारा सम्बंध अधिक रहेगा और तुम स्वयं अपने ही अंदर उस गरुड़ को मुक्त करने में समर्थ न हो सकोगे।

तीसरा प्रश्न :

प्यारे ओशो! प्रत्येक बार मैने किस?ई व्यक्ति से प्रेम किया और उसके बाद उसे दफन कर दिया मैने पाया कि वह प्रेम जैसा कुछ था ही नहीं वह प्रेम के नाम पर कुछ और ही चीज थी इस तरह अब मुझे प्रेम पर कोई विश्वास नहीं रहा मैं यह विश्वास नहीं कर सकता कि हम जैसे है, वैसे प्रेम भी कर सकते हैं।

प्रश्नकर्त्ता कह रहा है कि और ठीक ही कहता है वह कि जब भी वह प्रेम में पड़ा है उसने प्रेम को नकली प्रदर्शन या दिखावा भर ही पाया है और वह प्रेम पर अपनी आस्था खो बैठा है।

इसका पहला भाग तो पूरी तरह ठीक है, यदि तुम गहराई से निरीक्षण करो तो पाओगे, कि प्रेम के पीछे हमेशा ही वह कुछ झूठ या नकली चीज छिपा रहा है। लेकिन नकली चीज का भी अस्तित्व केवल तभी हो सकता है क्योंकि असली सिक्के भी हैं। यदि वहां असली सिक्के न हों, तो नकली सिक्के भी कैसे अपना अस्तित्व बनाये रख सकते हैं? कभी—कभी यह अधिकार जमाने की इच्छा होती है, जो प्रेम के पीछे अपने को छिपाती है कभी यह वासना और कभी—कभी यह ईर्ष्या जैसी कुछ और चीज होती है।

लेकिन वे उसे प्रेम के पीछे क्यों छिपाते हैं? क्योंकि वे प्रेम को असली सिक्के की तरह महसूस करते हैं, और तुम उसे पीछे छिपा सकते हो, बहाने बना सकते हो, क्योंकि तुम प्रेम के पीछे सुरक्षित बने रह सकते हो। जब भी

तुम अपने को कहीं भी छिपाते हो, तो इससे यही प्रकट होता है कि कहीं स्थान सुरक्षित है और वह तुम्हारे चारों ओर एक कवच बन सकता है।

प्रत्येक चीज प्रेम के पीछे ही क्यों छिपना चाहती है? क्योंकि संसार में प्रेम ही सबसे बड़ी सुरक्षा है, वही संसार की सबसे बड़ी वास्तविकता है और वही ऊर्जा भी है। इसके सिवा प्रत्येक चीज नकली है केवल प्रेम ही सच्चा और प्रामाणिक है। वह सब कुछ जो प्रेम नहीं है, नकली है और कुछ भी तुम कर रहे हो, वह प्रेम न होकर मात्र छीजन है। वह सब कुछ जो प्रेम है, वही यथार्थ वास्तविकता है और प्रेम के रास्ते में तुम जो कुछ भी करते हो, उससे तुम्हारा अस्तित्व विकसित होता है, वह तुम्हें अधिक विश्वसनीयता देता है, और वह कहीं अधिक प्रामाणिक बनाता है। इसे जानकर ही प्रत्येक चीज अपने को प्रेम के पीछे छिपाती हैं, क्योंकि प्रेम सुरक्षा दे सकता है। प्रेम इतना अधिक सुंदर है कि कुरूप चीजें भी उसके पीछे छिप सकती हैं और सुंदर होने का बहाना बना सकती हैं।

मैं शेपर्ड की एक पुस्तक बियान्ड सेक्स थैरेपी (सेक्स उपचार के पार) पढ़ रहा था। उसमें इससे सम्बंधित वह एक प्रसंग का जिक्र करता है।

वह एक युवा स्त्री के प्रेम में पड़ गया था। कुछ मित्र उससे मिलने के लिए आए लेकिन वह पूरे समय उस स्त्री के साथ बातचीत करता हुआ उसके ही साथ बना रहा, जैसे मानो मित्रों में उसकी कोई दिलचस्पी ही न हो। उन्होंने कुछ अपमान का अनुभव करते हुए उस स्त्री से कहा—'' हम आपकी अपेक्षा शेपर्ड को अधिक अच्छी तरह से जानते हैं। यह कई स्त्रियों के साथ प्रेम करता रहा है, एक स्त्री जाती थी और दूसरी आती थी। इसलिए स्मरण रखियेगा कि देर—सबेर यह किसी दूसरी स्त्री में दिलचस्पी लेने लगेगा, तब आप क्या करेंगी?''

उस स्त्री ने कहा—'' मैं ईर्ष्या का अनुभव करूंगी, लेकिन वह मेरी अपनी समस्या होगी, लेकिन मैं यह चाहती हूं कि यह मेरा आदमी हर तरह के प्रेम को जाने, अपने मरने से पूर्व, जो कुछ भी सम्भव है, वह सभी कुछ जाने। मैं यदि ईर्ष्या भी करूंगी तो वह मेरी अपनी समस्या है। उसे मुझे सुलझाना होगा और उससे बाहर आना होगा। उससे उनका कुछ भी लेना—देना नहीं होगा। जहां तक उनका सम्बंध

है, मेरी यही इच्छा है कि उन्हें सब कुछ जानना चाहिए जो वह मृत्यु से पहले जानना चाहते हैं, क्योंकि एक बार जो जाता है वह बस हमेशा के लिए ही चला जाता है। मैं चाहती हूं कि जितना भी सम्भव हो, वह उतनी ही अधिक अनुभव की सम्पदा लेकर जीये। यदि ईर्ष्या जैसी या अन्य जो भी समस्याएं आती हैं, तब वे मेरी अपनी समस्याएं होंगी।''

यही है वह, जिसे प्रेम कहते हैं। वह प्रेम और ईर्ष्या के बीच का अंदर भली भांति जानती है। इस बारे में उसे कोई भ्रम नहीं है। ईर्ष्या उसके प्रेम के पीछे छिप नहीं सकती, वह प्रेम बनने का बहाना नहीं बना सकती।

इसलिए पहली चीज तो ठीक है, प्रश्नकर्त्ता पूरी तरह ठीक है।'' प्रत्येक बार मैंने किसी से प्रेम किया और बाद में उसे दफन कर दिया, मैंने पाया कि वह प्रेम था ही नहीं। वह कुछ और ही था..... '' यह पूरी तरह ठीक और सत्य है.....'' प्रेम के नाम पर इस तरह मेरी अब कोई आस्था ही नहीं रही..... .यही गलत है क्योंकि तुमने प्रेम को अभी तक जाना ही नहीं। तुम उस प्रेम पर आस्था कैसे खो सकते हो, जो तुमने अभी जाना ही नहीं? तुम ईर्ष्या पर से अपना विश्वास खो सकते हो, तुम अपने अधिकार जमाने और पकड पर विश्वास खो सकते हो, तुम अपने क्रोध और अपनी वासना पर विश्वास खो सकते हो, लेकिन तुमने अभी तक उस सच्चे प्रेम का स्वाद पाया ही नहीं, फिर तुम कैसे उस पर विश्वास खो सकते हो? विश्वास खोने और आस्था पाने के लिए कम से कम प्रेम का कुछ अनुभव होना तो बहुत आवश्यक है और तुम अभी तक ऐसे से होकर नहीं गुजरे हो।

अपने अंदर थोड़ी सी खुदाई और करो और फिर तुम छांटने में समर्थ हो जाओगे कि ईर्ष्या क्या होती है? फिर तुम जानोगे किसी पर अधिकार जमाना या मालकियत क्या होती है। यह अच्छा है कि तुम विकसित हो रहे हो। इसी तरह से प्रत्येक व्यक्ति को विकसित होना है। शुरू में हर चीज मिली हुई गड्डमड्ड होती है जैसे सोने की धूल में मिट्टी और कबाड़ मिला हुआ हो। तब उस सोने की धूल को कोई व्यक्ति आग पर जलाता है, उसमें जो कुछ सोना नहीं है, वह सब कुछ जल जाता है और केवल शुद्ध स्वर्ण ही निकल कर आग के बाहर आता है। होश और चेतना ही वह अग्नि है, प्रेम ही वह कुंदन या शुद्ध स्वर्ण है, ईर्ष्या, मालकियत, घृणा, क्रोध और वासना ही वह अशुद्धियां हैं। अब तुम अधिक होशपूर्ण बन रहे हो। अब तुम देख रहे कि ईर्ष्या क्या है और तुम यह भी देख सकते हो कि यह प्रेम नहीं है। तुमने आधी लड़ाई तो जीत ली, पचास प्रतिशत लड़ाई तो पूरी हो गई। अब तुम ईर्ष्या को पहचान सकते हो। लेकिन अभी तक तुमने यह नहीं जाना कि प्रेम क्या होता है। तुम ठीक रास्ते पर चल रहे हो। लेकिन निराश मत होओ, न अपना साहस खोओ और न प्रेम पर से अपनी आस्था, क्योंकि देर—सवेर तुम जानने में जरूर समर्थ होगे कि प्रेम क्या है। तुम धीमे— धीमे अपने घर के निकट उग रहे हो।

इतने जल्दबाज मत बनो। सच्चाई अपना घूंघट स्वयं उघारती है। सत्य प्रकट होता ही है। वह एक दैवी प्रेरणा है। तुम बस उसे ढूंढते खोजते और तलाशते रहो। इसमें बहुत सी भूलें भी होंगी। लेकिन विकसित होने के लिए अन्य कोई दूसरा रास्ता है ही नहीं। जांच करो और गलियां करो, केवल यही एक मार्ग है। कम से कम गलियां हों और अधिक से अधिक शुद्धता उपलब्ध होती रहे। बीच में कहीं रुको मत।

मैंने सुना है:

मुल्ला नसरुद्दीन को बैंक में नौकरी मिल गई। खजांची ने उसकी ओर सौ रुपयों के नोटों की एक गड्डी उछालते हुए कहा—'' इन्हें चैक कर गिनो कि यह पूरे सौ ही हैं।''

मुल्ला ने गिनना शुरू किया। उसने पचपन तक गिने, वे ठीक थे, वह गिनता गया..... .छप्पन, सत्तावन और फिर उसने उस गड्डी को ड्राअर में फेंकते हुए अपने आगे बैठे व्यक्ति से कहा—'' यहां तक जब यह गिनती में ठीक निकले, तो शायद आगे भी यह ठीक ही होंगे।''

इतनी शीघ्रता मत करो। यदि तुम्हारा अनुभव अभी तक गलत रहा तो यह मत सोचो कि पूरे रास्ते भर वह गलत ही रहेगा। सौ डिग्री पर..... अचानक ठीक दिशा मिल जाती है। एक व्यक्ति को सभी अशुद्धियों तक गहरे पहुंचना होता है। लेकिन तुम सही रास्ते पर चल रहे हो, इसलिए तुम्हें खुश होना चाहिए।

और प्रेम की गहरी चाह के कारण ही तुम यह पहचानने में समर्थ हो सके कि प्रेम में क्या नहीं होता। अन्यथा तुम इसे पहचानते कैसे? यह चीज स्वर्ण नहीं है, तुम उसे तभी तो पहचान सकते हो, जब स्वर्ण का अस्तित्व होता है। अन्यथा यह जानने का वह कौन सा मापदण्ड है कि वह प्रेम नहीं है। तुममें कुछ ऐसी समझ अंतर्निहित है जो अभी तक सचेतन नहीं है, वह मूक है, अभी गहरे में छिपी है। समझ या ' अंडरस्टैंडिंग ' का यही अर्थ होता है कि जो अंदर या नीचे खड़ा हुआ हो। तुम्हारे पास एक मूक अंतर्निहित समझ है, तुम्हारे गहरे में कोई ऐसी अंतर्धारा चल रही है जो यह जानती है कि प्रेम क्या होता है। यही कारण है कि तुम उसे खोज सकते हो—कि यह प्रेम नहीं है, और यह प्रेम है। अच्छा है, तुम ठीक रास्ते पर चल रहे हो। बड़े चलो, तुम्हें पूरे रास्ते, आखिर तक जाना है।

प्रेम की सम्भावना के कारण ही तुम ईर्ष्या, मालकियत क्रोध, वासना और अपनी कामनाओं को तुष्ट करने की आकाक्षा के प्रति सजग बने और कृतज्ञता के साथ एक हजार एक चीजों के प्रति भी तुम्हारी सजगता बढ़ी है। लेकिन तुम्हारा सबसे महत्त्वपूर्ण केंद्रीय भाग, प्रेम की मौन समझ पर ही आश्रित है। सत्य की प्रवृत्ति स्वयं अपने रहस्य प्रकट करने की होती है।

मैं कुछ प्रसंगों के बाबत चर्चा करना चाहता हूं।

मुल्ला नसरुद्दीन की पत्नी की शवयात्रा के जुलूस की तैयारियां की जा रही थीं। उसने अवसर के अनुकूल गहरे काले रंग के वस्त्र पहने थे। शवयात्रा के निर्देशक ने आदरपूर्वक मुल्ला के कान में फुसफुसाते हुए कहा—'' और आप सबसे आगे चलने वाली कार में अपनी सास के साथ बैठेंगे।''

मुल्ला ने त्यौरी चढ़ाते हुए कहा—'' मैं और अपनी सास के साथ?"

" हां! निश्चित ही आपको उनके साथ ही बैठना चाहिए।''

" क्या यह जरूरी है?"

" हां! यह बहुत आवश्यक है अपने पति और अपनी मां से बिछुड़ कर जाने वाली मृतात्मा को दो सबसे नजदीकी रिश्तेदारों को एक साथ बैठना चाहिए।'' मुल्ला नसरुद्दीन ने अपनी सास के लम्बे लटके हुए गम्भीर चेहरे की ओर देखते हुए कहा—'' फिर ठीक है। लेकिन मैं पहले ही से ठीक अभी यह कह देना जरूरी समझता हूं कि तुम मेरे इस अवसर के आनंद को बरबाद करने जा रहे हो।''

तुम्हारी शोक प्रकट करने वाली काली पोशाक सत्य को छिपा नहीं सकती, तुम्हारे आंसू भी सत्य को नहीं छिपा सकते। अपने गहरे में मुल्ला खुश हो रहा है और अब वह स्वतंत्र हुआ अब उसे फिर उसी स्त्री के बंधन में न फंसना पडेगा। केवल ऊपर ही ऊपर वह पत्नी से बिछुड़ने के दुख का प्रदर्शन कर रहा है।

सत्य की अपने को स्वयं प्रगट करने की प्रवृत्ति होती है। यदि तुम बस थोड़े से सजग रहो तो तुम हमेशा जान लोगे कि सत्य क्या है। सत्य को सीखने की कोई जरूरत नहीं है, सिर्फ उस व्यक्ति को थोड़ा सा सजग होने की आवश्यकता है, और तब सत्य स्वयं सामने आ जाता है। उसका प्रकट होना सत्य में अंतर्निहित होता है। और जब सत्य सामने आता है तो उसी के साथ एक हजार एक झूठ भी खुलते हैं। वे सभी झूठ, सच होने के बहाने तभी तक बन सकते थे, जब तक सत्य जाना नहीं गया था।

एक बार ऐसा हुआ : मुल्ला नसरुद्दीन का मित्र अब्दुल रहमान बहुत बीमार पड़ा। प्रत्येक व्यक्ति उसकी बीमारी के बारे में चिंतित था।

वास्तव में वह बहुत अधिक बीमार था और उसके मित्र उसे बारी—बारी से देखने आते थे जिससे वह उसे हिम्मत बंधाते रहे।

रात जब मुल्ला उसे देखने गया तो उसे पहले ही से सावधान किया गया कि अब्दुल रहमान क्योंकि बहुत अधिक अवसाद में है, इसलिए उसे हतोत्साहित करने जैसी उससे बात न कही जाए। नसरुद्दीन बातचीत बहुत खूबसूरती से कर रहा था और उनकी सुनाई कई कहानियों पर रहमान मुंह दबाकर हंसा और मुस्कराया भी। लेकिन अचानक मुल्ला रुका और जोरों से अपना सिर हिलाने लगा।

रहमान ने उत्सुकता से पूछा—'' मुल्ला! यह तुम क्या कह रहे हो?" आखिर मामला क्या है?

नसरुद्दीन ने जवाव दिया—'' मैं सोच रहा था इस घर की मोड़ भरी सीढ़ियों से होकर पवित्र पैगम्बर के नाम पर वे लोग जनाजे को आखिर कैसे निकालते होंगे?"

अब ऊपर से तो वह उस व्यक्ति को साहस बंधा रहा है, लेकिन अपने अंदर गहरे में वह भली भांति यह जानता है कि वह मरने जा रहा है और उसके अंदर यह विचार चल रहा है कि जब सीढ़ियों में इतने अधिक मोड़ हैं तो लोग उसके जनाजे को नीचे से ऊपर कैसे ले जाएंगे?"

सत्य की यही प्रवृत्ति है कि वह स्वयं प्रकट हो जाता है। बस थोड़ा सा सजग बनो और तुम्हारा हृदय तुम्हें रास्ता दिखलायेगा। और तब प्रेम के पीछे कुछ भी छिपाने में तुम समर्थ न हो सकोगे। प्रेम के पीछे जो तुम्हें जीवंत बनाये हुए है। विश्वास खोना ही है। चीजें छिपाई जा सकती हैं, क्योंकि तुम मूच्छिर्त हो। यह कुसूर प्रेम

का न होकर तुम्हारी मूर्च्छा का है। इसलिए प्रेम पर अविश्वास मत करो। प्रेम पर आस्था मत खाओ, क्योंकि प्रेम ने तुम्हारे साथ कुछ भी नहीं किया है। इस सभी के बावजूद वास्तव में यह प्रेम ही है जो तुम्हें जीवंत बनाए हुए हैं। मैं इसे पुन— दोहराना चाहता हूं तुम जो भी हो, उसके बावजूद भी वह प्रेम ही है तो अपनी मूर्च्छा पर खोओ। यदि तुम होशपूर्ण हो तो तुम प्रेम के पीछे कुछ भी नहीं छिपा सकते। तब कोई भी नकली चीज तुम्हें धोखा नहीं दे सकती।

तुम कहते हो—'' प्रेम के नाम पर वह हमेशा कुछ और ही चीज होती है और इस तरह प्रेम पर मेरी कोई आस्था नहीं रह गई है।''

यह व्यर्थ की बात है। यह तर्क ही गलत है। तुम अभी तक प्रेम के सम्पर्क में ही नहीं आये, फिर तुम प्रेम में आस्था कैसे खो सकते हो?

कुछ और अधिक खुदाई करो, उसके अंत तक जाओ तुम अपने अंदर जितने अधिक गहराई में जाओगे, तुम शुद्धतम कुन्दन पाओगे।

यह ठीक एक कुंआ खोदना जैसा है तुम कुंए के लिए खुदाई करते हो, पहले तुम्हें केवल पत्थर, चट्टानें और कूड़ा कबाड मिलता है। उसके बाद अधिक शुद्ध मुलायम मिट्टी की पर्त मिलती है, उसके बाद गीली मिट्टी, उसके भी नीचे कीचड़ भरा गन्दा पानी और तब सबसे आखीर में शुद्धतम जल मिलता है। तुम जितनी अधिक गहराई में जाते हो, उतने ही शुद्धतम जल के तुम्हें झरने और स्रोत मिलते हैं। और ऐसा ही तुम्हारे हृदय के अंदर भी है। ऊपरी सतह पर तो केवल, धूल, धमास और चट्टाने हैं, तब सूखी जमीन फिर गीली मिट्टी आती है—लेकिन अपनी आस्था मत खोना, तब कीचड़ भरा जल आता है तब भी आस्था मत खोना, तुम अपने घर के निकट आते जा रहे हो, और तभी शुद्ध जल मिल जाता है।

" मैं कभी यह विश्वास कर ही नहीं सकता कि हम जैसे जो हैं, वैसे ही बने रहकर कभी प्रेम भी कर सकते हैं।''

तुम्हारा यह कहना ठीक है कि तुम जिस तरह के हो, वैसे बने हुए तुम प्रेम नहीं कर सकते। लेकिन तुम जैसे हो, उसी रास्ते पर बने रहने का चुनाव करने की जरूरत क्या है, तुम्हें अपने ढांचे से बांधे रहने की जरूरत क्या है? तुम उसे बदल सकते हो। तुम उस ढांचे को फिर से नया बना सकते हो।

मैं यहां यही सभी कुछ तो कह रहा हूं हम लोग एक साथ मिलाकर जो कुछ भी करने का प्रयास कर रहे हैं, वह तुम्हारा पुनर्निर्माण ही तो कह रहे हैं, जिससे तुम अपना संयोजन फिर से करते हुए प्रामाणिक बन सकते, जिससे तुम्हारा पुराना रूप नष्ट हो जाए और नये का जन्म हो।

यह सत्य है—तुम जिस तरह के हो, उसी रूप में प्रेम नहीं कर सकते, लेकिन प्रेम पर आस्था खोने का यह कोई भी कारण नहीं है। तुम अपने अहंकार पर विश्वास नहीं खोते, तुम स्वयं पर से विश्वास नहीं खोते। यदि वह ' तुम ' हो, जो तुम्हें प्रेम करने से रोकता है तो इस अपने ' तुम ' को क्यों नहीं छोड़ते तुम? क्योंकि प्रेम मूल्यवान है, इसलिए लाखों तुमों का भी प्रेम के एक क्षण जितना भी मूल्य नहीं है। अपने ढांचे को गिरा कर पुनर्निर्माण करो। आकाश को कह रहे हो कि तुम हो, यह ' तुम ' और कुछ भी नहीं बल्कि एक पिंजरा है। तुम अपने जिस ' तुम ' का अनुभव कर रहे हो, यह और कुछ भी नहीं है, बल्कि समाज के द्वारा दिया गया एक पिंजरा है। खुले आकाश को चुनो और पिंजरे को तरंत छोड़ दो।

चौथा प्रश्न :

प्यारे ओशो! दो दिन पूर्व मैं आपके प्रवचन में पूरा समय सोता रहा और उसके समाप्त होने के समय आपका एक शब्द " केवल अकेला एक मन " सुनते हुए ही मैं जागा इसलिए अब मैं क्या करूं?

केवल एक मन के साथ जियो। यह संदेश इतना अधिक स्पष्ट कि इसमें पूछने जैसा है ही क्या? तुम्हारे ही अस्तित्व ने तुम्हें एक महान संदेश दे है।

कभी—कभी ऐसा होता है कि गहरी नींद के बाद तुम अपने आrस्तत्व के गहरे केन्द्र से संदेश पाते हो। सुबह उठते ही अपने मन में आने वाले पहले विचार को सुनने का प्रयास करो, क्योंकि नींद से जागते ही तुम अपने अस्तित्व के बहुत निकट होते हो। जागने के दो या तीन सेर्किड में इस बात की अधिक सम्भावना होती है कि तम अपने अस्तित्व की गहराई की कुछ झलक या संदेश पा सको। दो या तीन क्षणों के बाद ही तुम्हारा उसके साथ सम्बंध टूट जाता है। तुम फिर से इसी संसार में फेंक दिए जाते हो। लेकिन कभी—कभी ऐसा भी होता है और ऐसा बहुत थोड़े से लोगों को ही होता है, कि मुझे सुनते ही वे सो जाते हैं। यहां भिन्न—भिन्न तरह के व्यक्ति हैं।

उदाहरण के लिए ठीक अभी शीला गहरी नींद में है, लेकिन उसकी नींद वास्तव में बहुत सुंदर है, यह नींद न होकर एक तरह के परमानंद की स्थिति है। वह केवल परम विश्राम में है। मुझे गहरे में सुनते हुए वह तनावग्रस्त नहीं हो सकती थी। उसका सारा तनाव दूर हो गया, इसिलए वह विश्राम में चली गई अपने अस्तित्व की गहरी पर्त में वह विश्राम कर रही है। बाहर से देखने वाले सभी लोगों को वह गहरी नींद में सोती हुई दिखेगी। जब वह जागेगी तो वह स्वयं नहीं समझ पाएगी कि आखिर हुआ क्या, क्योंकि उसे भी वह नींद ही दिखाई देगी, यह नींद नहीं है यह विशिष्ट दशा है योग में हम इसे तंद्रा कहते हैं। यह जागृति और निद्रा के बिना स्वप्नों की मध्य की स्थिति है।

इसलिए गहरी निद्रा और जागरण के मध्य वहां दो तल होते हैं। यदि तुम दोनों के मध्य की स्थिति में हो, तो स्वप्न देखने की सामान्य दशा होती है, जब तुम सपने देखते हो।

या तो तुम जागे हुए हो, अथवा तुम गहरी नींद में हो, अथवा तुम स्वप्न देख रहे हो। और सपने, जागने और सोने के ठीक बीच में होते हैं। यह दोनों के बीच एक गलियारा है। सामान्य रूप से होता ही होता है।

लेकिन यदि तुम्हारा ध्यान गहराई तक जाता है, अथवा तुम्हारा प्रेम बहुत गहरे में जाता है, तो तुम्हारी चेतना में जो पहला परिवर्तन घटित होता है। वह मध्य की स्थिति में होता है और स्वप्न आना बंद हो जाता है। अब यह कहना बहुत कठिन है कि यह क्या है। तुम इसके बारे में यह सोच सकते हो कि यह निद्रा है अथवा यह जागृति है। यह दोनों जैसे साथ—साथ हैं यह ठीक दोनों के बीच का संतुलन है, यह एक बहुत संतुलित दशा है।

तंद्रा पहली झलक है। यह सतोरी की शुरुआत है। सपने पहले मिटते हैं। तब अगले कदम में नींद भी मिट जाती है और तब तीसरे चरण में जिसे तुम जागृति कहते हो, वह भी चली जाती है। और जब यह तीनों चीजें विलुप्त हो जाती हैं, तब जो स्थिति उत्पन्न होती है उसी को हम वास्तविक जागरण कहते हैं। तब कोई भी बुद्धत्व को, या बोध को उपलब्ध होता है। तंद्रा पहला चरण है सपने विलुप्त हो रहे .

है।

इसलिए कभी—कभी ऐसा होता है कि लोग यहां सो जाते हैं, वे परम आनंद और विश्राम की स्थिति में पहुंच जाते हैं। इस स्थिति को तंद्रा कहा जा सकता है। सभी व्यवहारिक कार्यों के लिए ये लोग सोये हुए हैं, ये लोग मेरे शब्दों को याद न रख सकेंगे। लेकिन जब वे वापस आते हैं, तब उन्हें यह स्मरण आएगा कि कोई चीज बहुत गहरे मौन में घटित हुई है किसी चीज का उनकी ऊर्जा में परिवर्तन हुआ है। यह बहुत गहरे विश्राम की स्थिति है। इसी गहन विश्राम की स्थिति में कोई संदेश मिलता सा लगता है, इसे बहुत सावधानी से सुनो।

तुम कहते हो—'' दो दिन पूर्व मैं आपके प्रवचन में पूरे समय सोता रहा, और उसके समाप्त होने के समय आपका केवल एक शब्द—केवल अकेला एक ही मन बचे—सुनते हुए ही मैं जागा। उस सुबह मैं अकेले एक मन के बाबत ही चर्चा कर रहा था।

यह प्रश्न बहुत पुराना है। यह प्रश्न झेन बोध कथा माला से सम्बंधित है। मैं उस समय केवल एक ही मन, एक अकेले मन होने के बाबत चर्चा कर रहा था। तुमने सम्भवत उसे नहीं सुना होगा। तुम तंद्रा में थे जो कुछ मैं कह रहा था, उसके प्रति सम्मोहित दशा में थे। लेकिन मैं तुम्हें जो कुछ सम्प्रेषित करना चाहता था, वह सम्प्रेषित हो गया। तुम्हारे अस्तित्व ने उसे सुना, तुम्हारे पूरे शरीर के प्रत्येक रोम—रोम ने उसे सुना, तुम मुझे पूरी तरह पी ही गए जो कुछ मैं कह रहा था और वहां जो मेरी उपस्थिति थी, तुमने उसे अपने में जज्व कर लिया। और जब वापस आए तो जैसे तुम्हें घनीभूत संदेश मिला, तुम्हारी परिधि को अपने गहरे केंद्र से जैसे एक उपहार मिला। एक अकेला शब्द है।

'केवल एक ही मन बचे ' —तुम्हारी चेतना में उत्पन्न हुआ। अब तुम पूछते हो क्या किया जाए? बस केवल अकेला एक ही मन बचे।

और जब मैं कहता हूं केवल अकेला एक ही मन बचे, तो आखिर इसका अर्थ क्या है? वास्तव में यह कहना कि चित्त अकेला एक ही रहे इसका लगभग यही अर्थ है— अमन में रहो क्योंकि मन का अस्तित्व केवल संघर्ष की ही स्थिति में होता है। मन केवल अनेक होकर जीता है। जब बहुत से विचारों की भीड वहां नहीं रह जाती, तब हम उसे केवल एक अकेला चित्त कहते हैं अथवा तुम उसे अमन कह सकते हो, क्योंकि मन विसर्जित हो चुका है। मन तो अनेक ही होते हैं अकेला एक मन का अर्थ ही है— अब जब तुम अकेले एक हो, एक साथ हो— अंदर कहीं कोई संघर्ष नहीं है। कोई विभाजन नहीं है, सारे शैतान बिदा हो गए। तुम अविभाजित बन गए प्रत्येक चीज कहीं गहरे में आपस में जुड़ गई, लयबद्ध हो गई एक दूसरे से आपस में जुड़ गईं, लयबद्ध हो गईं, एक दूसरे से मिलकर एक अकेली आरकेस्ट्रा की एक धुन रह गई, तब उसे ही अमन कहते हैं।

' अकेला एक चित्त ' यह शब्द योग की परम्परा का है। अमन का भी यही अर्थ होता है, लेकिन यह दूसरी परम्परा का पारभाषिक शब्द है, जो झेन की परम्परा है। लेकिन दोनों का एक ही अर्थ है भीड़ बनकर भीड़ में मत रहो, बहुचित वादी बनकर मत रहो। केवल अकेले एक संयुक्त चित्त के होकर रहो।

पांचवां प्रश्न :

प्यारे ओशो! मैं बोधमय आत्म प्रेम और अहंकार—ग्रस्त प्रेम के अंतर को कैसे पहचान सकता हूं?

अंतर बहुत सूक्ष्म है, लेकिन कठिन न होकर बहुत स्पष्ट है। सूक्ष्म अवश्य है, लेकिन कठिन नहीं हे। यदि तुम अहंकार ग्रस्त हो, तो तुम अपने लिए अधिक से अधिक दुख सृजित करोगे। तुम्हारे दुख और पीड़ाए ही इंगित करेंगी कि तुम रुग्ण हो। अहंकारी बन कर रहना एक रोग है, यह आत्मा का कैंसर है। अहंकारग्रस्तता तुम्हें अधिक से अधिक तनावग्रस्त बनायेगी, वह तुम्हें अधिक से अधिक घबडाहट देगी और तुम्हें किसी भी तरह विश्राम में जाने ही नहीं देगी। वह तुम्हें पागलपन की ओर ले जाएगी।

आत्म प्रेम, अहंकारग्रस्तता से ठीक विपरीत है। आत्म प्रेम में अपना ' मैं ' अपना अहम नहीं होता, केवल प्रेम होता है। अहंकारग्रस्त होने पर वहां कोई भी प्रेम नहीं होता, केवल अपनी वैयक्तिकता और अपना ही हित है। आत्म—प्रेम में तुम अधिक से अधिक विश्राममय होना शुरू हो जाओगे। एक व्यक्ति जो स्वयं से प्रेम करता है पूर्णरूपेण विश्राम मय होता है। किसी दूसरे से प्रेम करने में थोड़ा सा तनाव उत्पन्न हो सकता है, क्योंकि यह जरूरी नहीं कि दूसरा व्यक्ति हमेशा तुमसे लयबद्ध होकर रहे। दूसरे की स्वयं अपनी पसंद और उसके अपने विचार हो सकते हैं। दूसरा व्यक्ति एक अलग संसार है। वहां टकराव और संघर्ष की पूरी संभावना है। वहां

तूफान आने और बिजली गिरने की पूरी सम्भावना है, क्योंकि दूसरे व्यक्ति का अपना एक अलग संसार है। वहां हमेशा एक सूक्ष्म संघर्ष चलता ही रहता है। लेकिन जब तुम स्वयं से प्रेम करते हो, वहां अन्य कोई दूसरा नहीं होता। वहां कोई संघर्ष नहीं होता वहां शुद्ध जीवंत मौन होता है, वहां अत्यधिक प्रसन्नता होती है। तुम अकेले ही होते हो, कोई भी परेशान करने वाला नहीं होता। किसी दूसरे व्यक्ति की जरा भी आवश्यकता नहीं होती। और मेरे देखे एक व्यक्ति जो स्वयं से इतना गहरा प्रेम करने में समर्थ हो जाता है वह दूसरों से भी प्रेम करने में समर्थ होता है। यदि तुम स्वयं से प्रेम नहीं कर सकते, तो तुम दूसरों से प्रेम कैसे कर सकते हो? पहले तो इसका अपने ही निकट आसपास होना जरूरी है, पहले तो इसका स्वयं में घटना जरूरी है, तभी यह दूसरों की ओर फैलता है।

लोग दूसरों को प्रेम करने का प्रयास करते हैं, इस बात के प्रति सजग हुए बिना, कि अभी तक उन्होंने स्वयं से ही प्रेम नहीं किया है। फिर तुम दूसरों से कैसे कर सकते हो प्रेम? जो कुछ तुम्हारे पास स्वयं नहीं है, तुम उसे दूसरों को कैसे बांट सकते हो? तुम दूसरों को केवल तभी दे सकते हो, जब वह पहले से ही तुम्हारे पास स्वयं हो।

इसलिए प्रेम की ओर जो सबसे अधिक बुनियादी और पहला कदम उठाना जरूरी है, वह है स्वयं से प्रेम करना, लेकिन इसमें कोई अहम् नहीं होता। मैं तुम्हारे लिए मैं इसे और स्पष्ट करना चाहूंगा।

' मैं ' का जन्म केवल ' तुम ' की तुलना में ही होता है।' मैं ' और तुम का अस्तित्व एक दूसरे के साथ होता है।' मैं ' केवल दो आयामों में रह सकता है। पहला आयाम है—' मैं वह हूं ' तुम _ तुम्हारा घर, तुम, तुम्हारी कार, तुम, तुम्हारा धन—' मैं '' वह हूं '। जब वहां यह ' मैं ' होता है, यह ' मैं वह हूं ' का ही ' मैं ' हैं, तुम्हारा ' मैं ' लगभग एक वस्तु की भांति होता है। यह चेतना नहीं होती, यह गहरी नींद में भयानक स्वप्न देखने जैसी स्थिति होती है। तुम्हारी चेतना नहीं होती वहां।

तुम केवल वस्तुओं की भांति होते हो, अनेक वस्तुओं के बीच एक वस्तु की भांति, होते हो, तुम अपने घर के एक भाग होते हो, अपने फर्नीचर अथवा अपने धन के एक छोटे से हिस्से होते हो।

क्या तुमने इसका निरीक्षण किया है? एक व्यक्ति, जो धन के बारे में बहुत अधिक लालची होता है। धीमे— धीमे उसमें धन के बहुत से गुण प्रकट होना शुरू हो जाते हैं। वह धन मात्र होकर ही रह जाता है। वह अपनी आत्मा खो देता है, उसके पास कोई आत्मा रह ही नहीं जाती। वह घट कर एक वस्तु जैसा हो जाता है। यदि तुम धन से प्रेम करते हो, तो तुम धन जैसे ही बन जाओगे। यदि तुम अपने घर से प्रेम करते हो, तो धीमे— धीमे तुम एक पदार्थ जैसे बन जाओगे। तुम जिससे भी प्रेम करते हो, तुम वैसे ही हो जाते हो। प्रेम एक रासायनिक प्रक्रिया है। कभी भी गलत चीज से प्रेम मत करो, क्योंकि वह तुम्हें रूपांतरित कर देगी प्रेम जैसा रूपांतरण करने वाला और कुछ भी नहीं है। प्रेम कुछ ऐसी चीज है जो तुम्हें ऊंचे से ऊंचे शिखर तक पहुंचा सकती है। प्रेम कुछ ऐसी चीज है, जो तुम्हारे पार है। धर्म का पूरा प्रयास यही है। तुम्हें परमात्मा जैसी कोई चीज दे दी जाए जिससे फिर वहां नीचे गिरने का कोई मार्ग न बचे। एक व्यक्ति को उससे ऊपर उठना होता है।

तो एक तरह के ' मैं ' का अस्तित्व, ' मैं ' वह हूं जैसा होता है, और दूसरी तरह के ' मैं ' का अस्तित्व—' मैं तू हूं ' जैसा होता है। जब तुम किसी व्यक्ति से प्रेम करते हो तो तुम्हारे अंदर एक दूसरी तरह के ' मैं ' का जन्म होता है।' मैं तू हूं।' तुम एक व्यक्ति से प्रेम करते हो, तुम वह व्यक्ति ही बन जाते हो।

लेकिन ' स्वप्रेम ' के बारे में मैं क्या होता है? वहां कोई वस्तु नहीं है और वहां कोई दूसरा व्यक्ति ' तू ' नहीं है। मैं विसर्जित हो जाता है, क्योंकि ' मैं ' केवल दो संदर्भों में रहता है _ ' वह वस्तु ' और दूसरा व्यक्ति या तू ' मैं ' एक आकृति है।' वह वस्तु ' और ' तू ' एक क्षेत्र की तरह कार्य करते हैं। जब यह क्षेत्र मिट जाता है तो ' मैं

' भी मिट जाता है। जब तुम अकेले छोड़ दिए जाते हो, तो बस तुम ही होते हो, लेकिन तुम्हारा ' मैं ' तुम्हारे साथ नहीं होता, तुम किसी भी ' मैं ' का अनुभव नहीं करते। तुम बस गहरे में होते, मात्र हो। सामान्यत हम कहते हैं'' मैं हूं ' उस स्थिति में जब तुम अपने स्वयं के गहरे प्रेम में होते हो, मैं विसर्जित हो जाता है। केवल ' होना मात्र ', शुद्ध अस्तित्व या शुद्ध उपस्थिति मात्र रह जाती है। यह स्थिति तुम्हें अत्यधिक आनंद से भर देगी। यह तुम्हें उत्सव आनंदमय बना देगी। तब वहां इन दोनों के बीच अंतर कर पहचानने में कोई समस्या नहीं होगी।

यदि तुम अधिक से अधिक कष्ट पा रहे हो और दुखी हो तो समझ लो कि तुम अहंकार की यात्रा पर हो। यदि तुम अधिक से अधिक शांत, मौन, प्रसन्न और सभी को साथ लेकर चल रहे हो, तो तुम किसी और ही यात्रा पर हो, और वह यात्रा पथ है—' स्वप्रेम ' का। यदि तुम अहंकार की यात्रा पर हो तो तुम दूसरों के लिए विध्वंसात्मक होंगे क्योंकि अहंकार दूसरे को ' तू ' को नष्ट करने की कोशिश करता है। यदि तुम स्वप्रेम की ओर बढ़ रहे हो, तो अहंकार लुप्त हो जाएगा। और जब अहंकार विसर्जित होता है तो तुम दूसरे को अनुमति देते हो कि वह अपने ' स्व ' में जी सके। तुम उसे पूर्ण स्वतंत्रता देते हो। यदि तुम्हारे अंदर अंहकार नहीं है, तो तुम दूसरे के लिए जिसे तुम प्रेम करते हो, तुम पिंजरा बनाकर उसमें बंदी बनाकर नहीं रख सकते। तुम दूसरे को अनुमति देते हो कि वह एक गरुड़ पक्षी बनकर उड़ते हुए स्वर्ग की ऊंचाईयों तक पहुंचे। तुम दूसरे को अनुमति देते हो कि वह स्वयं अपने छंद से जी सके, तुम उसे परिपूर्ण स्वतंत्रता देते हो।

प्रेम पूरी स्वतंत्रता देता है। प्रेम एक स्वतंत्रता ही है। तुम्हारे लिए भी स्वतंत्रता और तुम्हारे अपने प्रेमपात्र के लिए भी स्वतंत्रता। अहंकार एक बंधन है तुम्हारे लिए भी बंधन और बंधन उसके लिए भी जो तुम्हारा शिकार है। लेकिन अहंकार तुम्हारे साथ बहुत गहरी चालें चल सकता है। वह बहुत चतुर है, और उसके रास्ते बहुत सूक्ष्म है। वह स्वप्रेम में होने का बहाने बना सकता है।

मैं तुम्हें एक प्रसंग के बारे में बताना चाहता हूं। मुल्ला नसरुद्दीन ने जैसे ही उस व्यक्ति को पहचाना, जो मेट्रो रेलमार्ग की सीढ़ियां चढ़ता हुआ उसकी ओर चला आ रहा था, वैसे ही उसका चेहरा चमक उठा।

उसने बहुत हार्दिकता से उसकी पीठ पर ऐसी धौल जमाई और वह व्यक्ति नीचे गिर पड़ा। मुल्ला हर्ष से चिल्लता हुआ बोला—'' गोल्डबर्ग! मैं तुम्हें बहुत मुश्किल से पहचान सका। जब मैंने तुम्हें पिछली बार देखा था तब से तुमने अपना तीस पौंड वजन क्यों बढ़ा लिया है? और तुम्हारी नाक ने भी मुझे द्विविधा में डाल दिया, और मैं कसम खाकर कहता हूं कि तुम पहले से दो फीट लम्बे भी हो गए हो।''

वह मनुष्य उसकी ओर क्रोध से देखता हुआ बहुत ठंडी आवाज में बोला— '' लेकिन मैं गोल्डबर्ग हूं ही नहीं।''

मुल्ला नसरुद्दीन ने कहा—'' आहा! तो तुमने अब अपना नाम भी बदल लिया है?''

अहंकार बहुत चतुर होता है, अपने आप को पूरी तरह न्यायसंगत ठहराता है। यदि तुम बहुत अधिक सजग नहीं हो, तो वह अपने आपको अपने स्वप्रेम के पीछे छिपा सकता है। यह' शब्द ' स्व ' ही उसके लिए सुरक्षा—कवच बन जायेगा। वह कह सकता है—मैं ही तुम्हारा घनिष्ट मित्र हूं। वह उसका वजन बदल सकता है, वह उसकी ऊंचाई बदल सकता है और वह उसका नाम भी बदल सकता है। और क्योंकि वह केवल एक विचार है, उस बारे में उसके लिए कोई समस्या ही नहीं। वह छोटा भी बन सकता है और बड़ा भी बन सकता है। वह केवल तुम्हारी कल्पना मात्र है।

बहुत अधिक सावधान रहो। यदि तुम वास्तव में प्रेम में विकसित होना चाहते हो, तो बहुत अधिक सावधानी की जरूरत होगी। प्रत्येक कदम बहुत गहरी सजगता के साथ उठाने की जरूरत होगी, जिससे अहंकार कोई छिद्र पाकर अपने को उसके पीछे छिपा न सके।

तुम्हारा सच्चा और वास्तविक आत्म या ' स्व ' न तो ' मैं ' है और न ' तू ', वह न तो ' तुम ' है और न अन्य दूसरा ही। तुम्हारा वास्तविक ' आत्म ' तो पूरी तरह सभी का अतिक्रमण कर सभी के पार है। जिसे तुम ' मैं ' कहते हो, वह तुम्हारा असली आत्म नहीं है।' मैं ' तो वास्तविकता पर आरोपित है। जब तुम किसी व्यक्ति को ' तुम ' कहते हो, तो तुम उस दूसरे व्यक्ति के असली आत्म को सम्बोधित नहीं कर रहे हो। तुमने फिर उसके ऊपर एक लेबिल लगा दिया है। जब लगाये गये सभी लेबिल हटा दिए जाते हैं, तभी असली आत्म बचता है और यह असली आत्म जितना अधिक तुम्हारा है, उतना ही वह दूसरों का भी है। असली आत्म तो एक ही है।

यही कारण है कि हम यह कहे चले जाते हैं कि हम एक दूसरे के अस्तित्व के लिए सम्मिलित होकर कार्य करते हैं। हम हर दूसरे के साथ एक ही समाज के सदस्य हैं। हमारी असली वास्तविकता और सत्य हमारे अंदर का परमात्मा है। हम सभी सागर में तैरते हुए हिमखण्डों जैसे हैं, जो सभी अलग— अलग दिखाई देते हैं। लेकिन जब हम पिघलेंगे तो कुछ भी नहीं बचेगा। परिभाषाएं खो जायेंगी, सीमाएं विलुप्त हो जायेंगी और वे बर्फ के तैरने हिमखण्ड फिर वहां नहीं होंगे, वे सभी पिघल कर सागर का ही भाग बन जाएंगे।

अहंकार ही वह हिमखण्ड है। उसे पिघलने दो। वह गहरे प्रेम में ही पिघलता है और विलुप्त हो जाता है और तुम अस्तित्व सागर के एक भाग बन जाते हो। मैंने सुना है:

वह न्यायाधीश बहुत कठोर दिखाई देता था।

उसने मुल्ला से कहा—'' तुम्हारी पत्नी कहती है कि तुमने बेस बॉल के बल्ले से प्रहार किया और उसे उछालते हुए सीढ़ियों के नीचे फेंक दिया है। तुम इस सम्बंध में अपने बारे में क्या कहना चाहते हो?"

मुल्ला नसरुद्दीन ने अपने हाथ से अपन नाक को एक ओर से दबाते हुए जैसे ध्यान किया और अंत में उत्तर दिया—'' श्रीमान! मेरे अनुमान मे इस मामले के तीन पहलू हैं—मेरी पत्नी की कहानी, मेरी कहानी और सत्य।''

" हां! वह पूरी तरह ठीक ही कह रहा है।''

" आपने वास्तविक यथार्थ के दो पहलुओं के बारे में ही सुना होगा।'' उसने कहा—'' वहां उसके तीन आयाम होते हैं।" और वह बिलकुल ठीक कह रहा है। वहां तुम्हारी कहानी है मेरी कहानी है और वास्तविक यथार्थ है, मैं और तुम और वास्तविक सच्चाई।

सत्य कभी भी न तो ' मैं ' होता है, और न ' तू '। सत्य के अनंत विस्तार में ' मैं ', और ' तू ' तो आरोपण हैं।' मैं ' नकली है, ' तू ' भी नकली हैं। इनकी उपयोगिता है संसार में, ये उपयोगी हैं। बिना ' मैं ' और ' तू ' के संसार में व्यवस्था करना कठिन हो जायेगा। वे अच्छे हैं, ठीक है, उनका उपयोग करो लेकिन वे संसार में काम चलाने के लिए केवल साधन हैं। वास्तविकता और सत्य में वहां न तो ' तू ' होता है। और न ' मैं '। वहां कोई चीज कोई व्यक्ति या कोई ऊर्जा होती है अस्तित्व में, जिसकी कोई सीमाएं और सरहदें नहीं होतीं। हम सभी वहीं से आते हैं और उसी के अंदर विलुप्त हो जाते हैं।

छठा प्रश्न :

प्यारे ओशो! कभी—कभी प्रेम जैसी भावना मेरे हृदय में भी उठती है? लेकिन तुरंत ही अगले ही क्षण मुझे ऐसा लगना शुरू होने लगता है कि यह प्रेम नहीं है? कम से कम यह तो प्रेम नहीं ही है, यह सभी कुछ सेक्स के लिए मेरी छिपी हुई आकांक्षा ही है।

आखिर इसमें गलत क्या है? वासना ही से तो प्रेम का जन्म होता है। यदि तुम वासना से बचोगे, तो तुम स्वयं प्रेम की पूरी सम्भावना को टाल दोगे। प्रेम वासना नहीं है, यह सच है। लेकिन प्रेम, बिना वासना के भी नही होता—यह भी तो सत्य है। प्रेम, वासना का उच्चतम तल है, लेकिन यदि तुम वासना को पूरी तरह मिटा दोगे, तो तुम कीचड़ से कवल उत्पन्न होने की सम्भावना को ही नष्ट कर दोगे। प्रेम, कमल का पुष्प है और वासना कीचड़ है, कमल, कीचड़ से ही उत्पन्न होता है।

इसे स्मरण रखें, अन्यथा तुम कभी भी प्रेम को उपलब्ध न हो सकोगे। अधिक से अधिक तुम यह बहाना बना सकते हो कि तुमने वासना का अतिक्रमण कर लिया है। पर कोई भी व्यक्ति बिना प्रेम के वासना का अतिक्रमण नहीं कर सकता। तुम उसका दमन कर सकते हो। दमन करने से वह अधिक विषैला हो जाता है। वह तुम्हारे पूरे अस्तित्व में फैल जाता है, वह जहरीला बन जाता है और तुम्हें बरबाद कर देता है। वासना ही प्रेम में रूपांतरित होकर तुम्हें दीप्तिवान बनाती है। तुम्हें चमकाती है। तुम भारहीन होकर एक प्रकाश का अनुभव करना शुरू कर देते हो। जैसे तुम उड़ सकते हो। तुम्हें पंख लगने जैसी अनुभूति होना शुरू हो जाती है। जब कि दमित वासना के साथ तुम जैसे वजनी बन जाते हो, जैसे मानो तुम एक बोझ या भारी भार लिए हुए चल रहे हो जैसे मानो एक बड़ी चट्टान तुम्हारी गर्दन के चारों ओर लटकी हुई है। दमित वासना के साथ तुम आकाश में उड़ने के सभी अवसर खो देते हो। वासना का प्रेम में रूपांतरण होते ही जैसे तुम अस्तित्व द्वारा ली गई परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाते हो। तुम्हें जैसे कार्य करने के लिए ही अस्तित्व द्वारा एक कच्चा पदार्थ दिया गया है, जिससे तुम सृजनात्मक बनो, और वासना ही वह कच्चा पदार्थ है।

मैंने सुना है:

बरकोवित्व और माइकलसन जो केवल व्यापारिक—साझीदार ही नहीं, बल्कि जीवन पर्यंत के लिए एक दूसरे के मित्र भी थे, उन दोनों ने आपस में करार किया उनमें से जो भी पहले मर जाएगा, वह वापस लौटकर दूसरे को यह बतायेगा कि स्वर्ग जैसा अनुभव होता क्या है।

छ: महीने बाद बरकोवित्व की मृत्यु हुई। वह संत जैसा बहुत नैतिक व्यक्ति था, एक कट्टर धार्मिक व्यक्ति, जिसने कभी भी कोई गलत कार्य कभी किया ही नहीं था, जो हमेशा सेक्स और वासना से भयभीत रहता था। माइकलसन ने अपने से अलग हुए अपने प्यारे पवित्र मित्र की ओर से कुछ ऐसे संकेत पाने की प्रतीक्षा की, जिससे वह अपने पृथ्वी पर लौटने को प्रकट करे। माइकलसन ने बरकोवित्व की ओर से संदेश पाने की आतुरता और बैचेनी से प्रतीक्षा करते हुए वह समय गुजारा। तब अपनी मृत्यु के एक वर्ष बाद बरकोवित्व ने माइकलसन को अपना संदेश दिया। रात काफी गुजर चुकी थी और माइकलसन अपने बिस्तरे पर लेटा हुआ था तभी बरकोवित्स की आवाज गंजी— " माइकलसन! माइकलसन!"

" क्या यह तुम बोल रहे हो बरकोवित्व?"

" हां! "

" तुम कैसे हो? कहां से बोल रहे हो?"

" हम नाश्ता करते हैं, उसके बाद हम प्रेम करते हैं, फिर हम लंच लेते हैं उसके बाद हम फिर प्रेम करते हैं और तब डिनर लेने के बाद भी हम प्रेम करते हैं।''

" क्या यह वही है स्वर्ग जैसा?" माइकलसन ने पूछा।

" स्वर्ग के बारे में कौन बता रहा है यह सब कुछ?" बरकोविल्ल ने कहा— " मैं तो बिस्कोनसिन में हूं और मैं एक सांड हूं।''

याद रखें, यह सब कुछ उन लोगों के साथ घटता है, जो सेक्स का दमन करते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ और घट ही नहीं सकता क्योंकि पूरी दमित ऊर्जा एक बोझ बन जाती है, जो तुम्हें नीचे की ओर खींचती है। तुम अपने अस्तित्व के निम्न धरातल की ओर गतिशील होते हो। यदि प्रेम का जन्म वासना से हुआ है, तो तुम अपने अस्तित्व के उच्चतम तल की ओर उठना शुरू हो जाते हो।

इसलिए स्मरण रहे, तुम क्या बनना चाहते हो—एक बुद्ध अथवा एक सांड— यह सब कछ तुम्हीं पर निर्भर है। यदि तुम एक बुद्ध बनना चाहते हो, तो सेक्स से कभी भयभीत नहीं होना है। उसमें उतरो, उसे भली भांति जानो, उसके बारे में अधिक से अधिक सजग बनो। सावधान रहो, क्योंकि यह अत्यधिक मूल्यवान ऊर्जा है। इसे एक ध्यान बनाओ, और इसे रूपांतरित करो, धीमे— धीमे यही प्रेम बन जाती है। यह कच्चे माल की तरह है, खदान से निकले हीरे की तरह है, तुम्हें इसे काटना है, इस पर पालिश करनी है। तब यह अत्यधिक मूल्यवान बन जाता है। यदि कोई भी व्यक्ति तुम्हें बिना पालिश किया हुआ बिना तराशा, खदान से निकला हीरा देता है तो तुम उसे पहचान भी नहीं सकते कि वह एक हीरा हैं। यहां तक कि कोहिनूर भी खदान से निकलने पर कच्चे पदार्थ के रूप में बदशक्ल था। वासना ही वह कोहिनूर है, जिसे तराशकर उस पर पालिश की जानी है, यह बात भली भांति समझने जैसी है।

प्रश्नकर्त्ता भयभीत और विरोधी सिद्धांत से आक्रांत प्रतीत होता है। तभी वह कहता है—'' यह सभी कुछ सेक्स के लिए मेरी छिपी हुई आकांक्षा ही है।'' उसके प्रति उसमें निंदा का भाव है। इसमें कुछ भी गलत नहीं है, मनुष्य एक कामुक पशु है। हम सब लोग ऐसे ही हैं। यही है वह जीवन का रास्ता, हमारे यहां होने का यही अर्थ है। इसी रास्ते से होकर ही हम सभी को अपने यहां पाते हैं।

उसके अंदर उतरो। बिना उसमें जाये हुए तुम कभी भी उसे रूपांतरित करने में समर्थ न हो सकोगे। मैं केवल वासना की तुष्टि की बात नहीं कह रहा हूं। मैं उसमें गति करते हुए गहरे ध्यान के साथ उस ऊर्जा को समझने के बाबत कह रहा हूं कि उसे जानो कि वह है क्या उसे कुछ ऐसी मूल्यवान चीज जरूर होना ही चाहिए क्योंकि तुम सभी का जन्म उसी ऊर्जा से हुआ है, क्योंकि पूरा अस्तित्व उसका आनंद ले रहा है, क्योंकि पूरा का पूरा अस्तित्व ही कामवासना से भरा हुआ है। परमात्मा ने इस संसार में बने रहने के लिए सेक्स का ही मार्ग चुना है। भले ही ईसाई कितना भी क्यों न कहे चले जायें कि जीसस एक कुंवारी स्त्री से उत्पन्न हुए थे। यह सभी मूर्खतापूर्ण बात है। वे केवल बहाने गढ़ते हैं कि जीसस के जन्म में काम क्रीड़ा या सेक्स नहीं हुआ। वे लोग सेक्स से इतने अधिक भयभीत हैं कि वे इसी तरह की बेवकूफी की कहानियां गढ़ते हैं कि जीसस का जन्म कुंवारी मेरी से हुआ। मेरी बहुत ही पावन और पवित्र स्त्री जरूर रही होगी, यह सभी सच है कि वह जरूर ही आत्मिक रूप से कुंवारी ही रही होगी। लेकिन बिना सेक्स ऊर्जा से गुजरे हुए जीवन में प्रवेश करने का अन्य कोई रास्ता है ही नहीं। शरीर कोई दूसरा नियम जानता ही नहीं। और प्रकृति में सभी कुछ सम्मिलित है, वह अपवादों में कोई विश्वास नहीं करती, वह अपवादों को स्वीकारती ही नहीं। सेक्स के द्वारा ही तुम्हारा जन्म हुआ है और तुम सेक्स ऊर्जा से लबालब भरे हुए हो। लेकिन यह उसका अंत नहीं है, यह उसकी शुरुआत हो सकती है। सेक्स एक प्रारम्भ है, लेकिन वह अंत नहीं है।

यहां तीन तरह के लोग होते हैं। एक तरह के व्यक्ति सोचते हैं कि सेक्स पर ही सब कुछ समाप्त हो जाता है। यह ऐसे लोग हैं जो अपनी इच्छाओं को तुष्ट करते हुए जीते हैं। ऐसे लोग यह भूल जाते हैं कि सेक्स प्रारम्भ तो है पर अंत नहीं है। तब यहां ऐसे लोग हैं जो इच्छाओं को तुष्ट करने के विरोध में है। ये लोग दूसरे विपरीत ध्रुव या अति पर चले गए हैं। ये लोग प्रारम्भ में भी सेक्स नहीं चाहते, इसलिए वे उससे कटना शुरू हो जाते हैं।

उससे कटकर दूर होकर वे स्वयं को घायल कर लेते हैं, बरबाद कर लेते हैं। अपने आप नष्ट करके वे मुरझा कर सूख जाते हैं। ये दोनों ही व्यवहार मूर्खतापूर्ण है।

यहां एक तीसरी भी संभावना है, वह संभावना है उन प्रज्ञावान लोगों की जो जीवन को ध्यान से देखते हैं, जिनके पास जीवन पर बलात् थोपने के लिए कोई सिद्धांत नहीं होते, जो केवल उसे समझने का प्रयास करते हैं। वे समझ कर यह देख पाते हैं कि सेक्स प्रारम्भ तो है, लेकिन वह अंत नहीं है। सेक्स केवल विकसित होकर उसके पार जाने का एक अवसर है, लेकिन उसे उसके द्वारा गुजरना ही होता

अंतिम प्रश्न :

प्यारे ओशो! पहले मैं सोचा करता था कि मैं जानता है कि समर्पण क्या होता है, अब मैं उसे समझ रहा हूं, कि वह सम्बंधों को जोड़ने के लिए मन की एक राजनैतिक खेल भरी यात्रा थी। अब यहां उसके खड़े रहने के लिए कोई स्थान ही नहीं है, लेकिन जहां मैं हूं अब मुझ पर चारों से परमानंद बरस कर मुझमें प्रविष्ट हो रहा हो आपने मेरी दिशा मोड़कर मुझे स्वयं का स्वाद दे दिया, बहुत बहुत धन्यवाद।

यह बहुत अधिक महत्त्वपूर्ण है कि यह बात तुम्हारी समझ में आ गई कि समर्पण क्या होता है। यह सभी कुंजियों में से एक कुंजी है, लेकिन लोग इसका प्रयोग करने से बहुत डरते हैं क्योंकि यदि तुम समर्पण करते हो, सारे अवरोध हटा कर मिट जाते हो, पूरी तरह खो ही जाते हो, तो वह मृत्यु जैसा होता है। यह कुछ ऐसा होता है, जैसे मानो किसी ने आत्मघात कर लिया हो। इसलिए लोग दूसरी चीजें किए चले जाते हैं और वे उसे समर्पण कहते हैं।

इसकी एक झलक पाकर और उसे समझ लेने के बाद कि तुम अभी तक समर्पण के बारे में जो भी सोचा करते थे वह असली चीज नहीं है। यह रूपांतरण की ओर उठा हुआ बहुत बड़ा कदम है। एक बार तुमने नकली चीज का नकली होना समझ लिया, तुम असली चीज को असली जानने में समर्थ हो गए हो। नकली चीज को नकली समझना ही, असली को असली समझने की शुरुआत है। छो का पर्दाफाश होना ही चाहिए। एक बार झूठ या असत्य प्रकट हो जाता है, तो नग्न सत्य निरावरण, प्रकट हो जाता है।

आज बस इतना ही।